❁ यं शैवाः समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्त्तेति नैयायिकाः ❁ तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योगः करणमेव च ❁ श्रीगणेशाय नमः ❁ लक्ष्मीः स्यादचला तिथिश्रवणतो वारात्तथायुश्चिरं नक्षत्रं कृतपापतापशमनं योगो वियोगापहः ❁ गणाधिपोऽर्कश्च शशी धरासुतो बुधो गुरुर्भार्गवसूर्यनन्दनौ ❁

❁ अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्मेति मीमांसकाः सोऽयं वो विदधातु वाञ्छितफलं त्रैलोक्यनाथो हरिः ❁ पञ्चाङ्गस्य फलं श्रुत्वा गङ्गास्नानफलं लभेत् ❁ मकरन्दानुसारि ❁ सर्वाभीष्टकरन्तथैव करणं पञ्चाङ्गमेवं स्फुटं श्रोतव्यं गणकाननात्प्रतिदिनं श्रेयस्करं सिद्धिदम् ❁ राहुश्च केतुश्च परं नवग्रहाः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथान् सदा ❁

❁ तिथ्यम्बुवृद्धं करणारविन्दं पर्वप्रवालं सुकरावतारम् ❁ ❁ विदेहजाजन्मभुवोऽन्तराले कामेश्वरीये सदनेऽतिरम्ये ❁ ❁ अपेक्षितं सर्वमिहोपदिष्टं विसृष्टमन्यन्न नृणां यदिष्टम् ❁

❁ योगोपबन्धं मनुजैरजस्रं सरोऽवगाह्यं तिथिपत्रमेतत् ❁ ❁ गिरोनिकेते निरतैर्निबद्धं बुधैर्विबृद्धिं लभतां सदेदम् ❁ ❁ ततोऽधिदेशं विततं मुदेऽदो विपश्चितामर्चनमातनोतु ❁

श्रीसीतारामाभ्यान्नमः

विश्वविद्यालय–पञ्चाङ्गम्

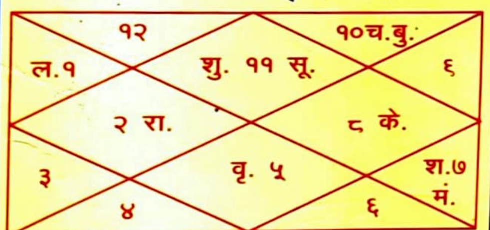
शकाब्दः १९४०-४१

M.Katyayana



दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे च जनकात्मजा ।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम् ॥

जगल्लग्नम्-२।१६



विक्रमसंवत्	२०७५-७६
लक्ष्मणसंवत्	९०९-९१०
कलिसंवत्सरः	५१२०

राजा-बुधः
वर्षा-११

मन्त्री-शनिः
धान्यम्-७

मार्गे महाकुम्भयोगः कुरुक्षेत्रे

सन् १४२६ साल

कामेश्वरसिंहदरभङ्गासंस्कृतविश्वविद्यालयप्रकाशितम्

प्रधानसम्पादकः-पं. श्रीरामचन्द्र झा

पूर्वप्राचार्यः विभागाध्यक्षः संकायाध्यक्षश्च
स्नातकोत्तरज्यौतिषविभागस्य
चलदूरवाणी-9430063648

वर्ष लग्नम्-५।०७



शालिवाहनशकाब्दः	१९४०-४१
भारतीयस्वतन्त्रताब्दः	७१-७२
खृष्टाब्दः	२०१८-१९



संवत् २०७५-२०७६

* प्रवर्त्तकः- डॉ० रामकरण शर्मा, पूर्वकुलपतिः * संरक्षकः-डॉ० सर्वनारायण झा, कुलपतिः * निदेशकः- डॉ० हरेन्द्रकिशोर झा

सहसम्पादकः - पं श्रीशिवाकान्त झा * गणितकर्त्ता सम्पादकश्च - पं.श्रीराकेशकुमार झा, पं.श्रीवरुणकुमार झा

आनन्दादियोगचक्रम्

योगनाम	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	फलम्
आनन्दः	अश्वि.	मृग.	आश्ले.	ह.	अनु.	उषा.	शत.	**सिद्धिः**
कालदण्डः	भ.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अभि.	पूभा.	**मृत्युः**
धूम्रः	कृ.	पुन.	पूफ	स्वा.	मू.	श्रवणा	उभा.	**दुखम्**
धाता	रो.	पु.	उफ	वि.	पूषा.	धनि.	रे.	**शुभः**
सौम्यः	मृ.	आश्ले	ह.	अनु.	उषा.	शत.	अश्वि.	**सुखम्**
ध्वांक्षः	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अभि.	पूभा.	भ.	**हानिः**
केतुः	पुन	पूफ.	स्वा.	मू.	श्रवणा	उभा.	कृ.	**दुःखम्**
श्रीवत्सः	पु.	उफ.	वि.	पूषा.	धनि.	रेवती	रो.	**सम्पत्तिः**
वज्रः	आश्ले.	ह.	अनु.	उषा.	श.	अश्विनी	मृ.	**हानिः**
मुद्गरः	म.	चि.	ज्ये.	अभि.	पूभा.	भरणी	आ.	**नाशः**
क्षत्रम्	पूफ.	स्वा.	मू.	श्रवणा	उभा.	कृतिका	पुन.	**सम्मानः**
मित्रम्	उफ.	वि.	पूषा.	धनि.	रे.	रोहिणी	पु.	**पुष्टिः**
मानसम्	ह.	अनु.	उषा.	श.	अश्वि.	मृगशिरा	आश्ले.	**सुखम्**
पद्मः	चि.	ज्ये.	अभि.	पूभा.	भ.	आर्द्रा	म.	**लाभः**
लुम्बः	स्वा.	मू.	श्रवणा	उभा.	कृ.	पुनर्वसु	पूफ	**हानिः**
उत्पातः	वि.	पूषा.	धनि.	रे.	रो.	पुष्य	उफ	**नाशः**
मृत्युः	अनु.	उषा.	श.	अश्वि.	मृ.	आश्लेषा	ह.	**मृत्युः**
काणः	ज्ये.	अभि.	पूभा.	भ.	आ.	मघा	चि.	**क्लेशः**
सिद्धिः	मू.	श्रवणा	उभा.	कृ.	पुन.	पूफ.	स्वा.	**सिद्धिः**
शुभः	पूषा.	धनि.	रे.	रो.	पु.	उफ.	वि.	**शुभः**
अमृतम्	उषा.	श.	अश्वि.	मू.	आश्ले.	हस्त	अनु.	**सम्मानं**
मुशलम्	अभि.	पूभा.	भ.	आ.	म.	चित्रा	ज्ये.	**लाभ**
गदः	श्रवणा	उभा.	कृ.	पुन.	पूफ.	स्वाती	मू.	**हानिः**
मातंगः	धनि.	रे.	रो.	पु.	उफ.	विशाखा	पूषा.	**वृद्धिः**
राक्षसः	श.	अश्वि.	मृ.	आश्ले.	ह.	अनुराधा	उषा.	**कष्टम्**
चरः	पूभा.	भ.	आ.	म.	चि.	ज्येष्ठा	अभि.	**सिद्धिः**
सुस्थिरः	उभा.	कृ.	पुन.	पूफ.	स्वा.	मूल	श्रवणा	**शुभः**
प्रवर्द्धमानः	रे.	रो.	पु.	उफ.	वि.	पूषा.	धनि.	**सुखम्**

पञ्चाङ्ग देखने की विधि

इस पञ्चाङ्ग में सर्वप्रथम तिथि उसके बाद सूर्यादि दिन का नाम एवं तिथि का दण्डपलात्मक मान, तिथि का घंटा मिनट, उसके बाद नक्षत्र का नाम, दण्डपल एवं घंटा मिनटात्मक मान, उसके बाद क्रमशः योग एवं करण के दण्डपलात्मक मान, मेषादि राशि में चन्द्रमा की अवस्थिति दण्डपल एवं घंटामिनटात्मक समय, उसके आगे क्रमशः सूर्य का मिश्रमानकालिक (मध्यरात्रि)कालिक स्पष्टराश्यादि, दण्डपलात्मक दिनमान, घण्टामिनटात्मक सूर्योदयास्त तथा राष्ट्रिय, सौर (गते) एवं अंग्रेजी तिथियाँ हैं। उसके बाद उस दिन के मुहूर्त्त एवं पर्वादि दिए गए हैं। यथा–श्रावणकृष्ण १ शनि को प्रतिपदा तिथि का दण्डात्मक मान ५३।२३ (रात्रि घंटा २ मिनट ४०) तक, श्रवणा का दण्डपल ५४।५५ (रात्रि घंटा ३ मिनट १७) तक, आदि सारी बातें इसी तरह जाननी चाहिये। पञ्चाङ्ग के निचले भाग में निशीथ (मिश्रमान) कालिक दैनिक स्पष्टग्रह एवं दण्डपलात्मक मिश्रमान दिया गया है। यथा–श्रावणकृष्ण १ शनि को मिश्रमानकालिक स्पष्टमंगल ६।०४।३६।३६ तथा स्पष्ट बुधराश्यादि ३।१८।५५।१७ आदि। दो दिनों के स्पष्टग्रहों का अन्तर ग्रह की दैनिक गति होती है। यथा–श्रावणकृष्ण दशमी सोम एवं एकादशी मंगल के स्पष्ट मंगल का अन्तर ११।४६ कलादि दैनिक गति मंगल की हुई। इसी तरह अन्य ग्रहों की भी गति समझनी चाहिये। इसके बाद इसी चक्र के अन्तिम भाग में दैनिक लग्नसारिणी दी गई है। सुविधा की दृष्टि से प्रतिदिन मेष से आरम्भ कर मीन तक लग्नों का मान रेलवे घड़ी के अनुसार लिखे गये हैं। अर्थात् १३, १४ आदि घण्टे से दिन के १, २ आदि घण्टे तथा शून्य घंटे से २४ यानि १२ बजे रात्रि समझना चाहिये। यथा–श्रावणकृष्ण प्रतिपदा शनि को रात्रि २२।४८ बजे से ०।२४ तक मेष, ०।२५ बजे से २।२० तक वृष, २।२१ से ४।३३ तक मिथुन, ४।३४ से ६।५१ दिन तक कर्क, ६।५२ से ६।०७ तक सिंह, ६।०८ से ११।२२ दिन तक कन्या, ११।२३ बजे दिन से १३।३६ तक तुला, १३।४० से १५।५६ तक वृश्चिक, १५।५७ दिन से १८।०१ सायं तक धनु, १८।०२ से १६।४७ रात्रि तक मकर, १६।४८ से २१।१८ रात्रि तक कुम्भ एवं २१।१६ से २२।४७ रात्रि तक मीन लग्न रहेगा। इसी तरह प्रतिदिन समझना चाहिये। पाक्षिक विषयों के साथ-साथ अन्य उपयोगी विषय 'विविध विषयाः' में दिये गये हैं। उसके बाद पाक्षिक वातावरण एवं ग्रहस्थिति (ग्रहों के उदय, अस्त, वक्र या मार्ग) लिखी गई है। शुद्धादि विषयों की सुविधापूर्वक जानकारी के लिए प्रत्येक पक्ष में पञ्चाङ्ग के ऊपरी भाग दाईं ओर शुद्धादि विवरण दिये गये हैं, ताकि सामान्य जानकारी रखनेवालों को भी सुविधा हो। यात्रादिमुहूर्त्त अर्द्धप्रहररहित नहीं है। अतः अर्द्धप्रहर एवं आनन्दादियोग का विचार कर लेना चाहिए। शमिति।

मिश्रमान (निशीथ) कालिकग्रह से इष्टकालिकग्रहस्पष्टीकरण– यथा–श्रावणकृष्ण ०७ शनि को ३०।४१ दण्डादि पर स्पष्ट मंगल बनाना है तो मिश्रमानवारादि ०।४६।३१ एवं इष्टकालवारादि ०।३०।४१ का अन्तर १६।१० मिश्रेष्टान्तर ऋणदण्डादि। तथा (६।०३।०४।१८)–(६।०२।४८।५५) = १५।२३ मंगल की गति कलादि। अतः (१६।१०)×(१५।२३)=०४।०६ कलादि फल। अब ६।०२।४८।५५) + (०।०।४।६) = ६।०२।५३।०४ इष्टकालिक मंगल। वक्रत्वात् फल धन हुआ। इसी तरह सभी ग्रह बनावे।

समर्थका विद्वांसः

पं. श्री विद्येश्वर झा, वेद – विभागाध्यक्षः
पं. श्री शक्तिनाथ झा, साहित्य – विभागाध्यक्षः
पं. श्री मोहन मिश्र, दर्शन – विभागाध्यक्षः
पं. श्री हरेन्द्रकिशोर झा, ज्यौतिष – विभागाध्यक्षः
पं. श्री शशिनाथ झा, व्याकरण – विभागाध्यक्षः
पं. श्री पुरेन्द्र वारिक, धर्मशास्त्र – विभागाध्यक्षः

पं. श्री कालीकान्त मिश्र
पं. श्री हृषीकेश झा
पं. श्री रामजीवन मिश्र
पं. श्री उपेन्द्र झा
पं. श्री महाकान्त पाठक
पं. श्री किशोरनाथ झा
पं. श्री उमारमण झा
पं. श्री मीना कुमारी
पं. श्री अच्युतानन्द झा
पं. श्री हरिहर झा
पं. श्री गणेशकान्त झा
पं. श्री रामविलास चौधरी
पं. श्री चन्द्रनाथ मिश्र
पं. श्री हंसधर झा
पं. श्री अर्कनाथ चौधरी
पं. श्री शचीन्द्रनाथ मिश्र
पं. श्री कुलानन्द झा

पं. श्री श्यामानन्द झा
पं. श्री शिवकान्त झा
पं. श्री सुरेश्वर झा
पं. श्री लक्ष्मीनाथ झा
पं. श्री भोला झा
पं. श्री रवीन्द्र ना. झा
पं. श्री रामजी ठाकुर
पं. श्री इन्द्रमणि दास
पं. श्री काशीनाथ मिश्र
पं. श्री चण्डेश्वर झा
पं. श्री राधाकान्त ठाकुर
पं. श्री कालिकादत्त झा
पं. श्री मदनमोहन पाठक
पं. श्री भागीरथ मिश्र
पं. श्री श्रीपति त्रिपाठी
पं. श्री सुप्रसन्न मिश्र
पं. श्री विधाधर मिश्र

पं. श्री चक्रधर झा
पं. श्री गोविन्द चौधरी
पं. श्री देवनारायण झा
पं. श्री श्रुतिधर झा
पं. श्री शशिकान्त झा
पं. श्री वौआनन्द झा
पं. श्री उद्दिष्ट ना. झा
पं. श्री कमलेश झा
पं. श्री विकाऊ झा
पं. श्री विश्वनाथ झा
पं. श्री चित्रधर झा
पं. श्री वाचस्पति त्रिपाठी
पं. श्री दामोदर झा
पं. श्री जयकान्त मिश्र
पं. श्री शोभाकान्त झा
पं. श्री शंकरजी झा
पं. श्री दिलीप कुमार झा

पं. श्री महेश झा
पं. श्री हेमनारायण चतुर्वेदी
पं. श्री सत्यनारायण झा
पं. श्री ताराकान्त झा
पं. श्री विन्ध्याचल ठाकुर
पं. श्री शोभाकान्त मिश्र
पं. श्री जगन्नाथ झा
पं. श्री रामगुलाम मिश्र
पं. श्री वीरचन्द्र राय
पं. श्री अमरनाथ झा
पं. श्री चन्द्रमोहन झा
पं. श्री धनेश्वर झा
पं. श्री राजनाथ झा
पं. श्री पारसनाथ मिश्र
पं. श्री राजेन्द्र प्र. दूबे
पं. श्री रामनारायण झा
पं. श्री स्वतन्त्रेश्वर झा
पं. श्री हरिनारायण झा
पं. श्री सिंहेश्वर झा
पं. श्री धीरेन्द्र झा
पं. श्री देवेन्द्र झा
पं. श्री विजय कुमार मिश्र
पं. श्री सच्चिदानन्द झा
पं. श्री रामनिहोरा राय
पं. श्री गुणानन्द झा
पं. श्री वेचनेश्वर झा
पं. श्री सुन्दर झा
पं. श्री शिवलोचन झा
पं. श्री ब्रह्मदेव शर्मा
पं. श्री थानेश्वर झा
पं. श्री चौठी सदाय
पं. श्री सुधीर कुमार झा
पं. श्री द्वारिकानाथ झा
पं. श्री वामदेव झा
पं. श्री गौरीनाथ राय
पं. श्री जगन्नाथ झा
पं. श्री दुर्गानाथ झा

पं. श्री दिगम्बर मिश्र
पं. श्री विघ्नेश झा
पं. श्री फणीन्द्र चौधरी
पं. श्री गंगाधर झा
पं. श्री शम्भुनाथ झा
पं. श्री सूर्यकान्त झा
पं. श्री इन्द्रनाथ झा
पं. श्री तारणीश झा
पं. श्री महेश मिश्र
पं. श्री श्रीधर त्रिपाठी
पं. श्री रघुपति झा
पं. श्री शशिधर झा
पं. श्री लक्ष्मीश्वर झा
पं. श्री शंकर कु. मिश्र
पं. श्री विनय कु. मिश्र
पं. श्री हरेराम शर्मा
पं. श्री रेणुका सिन्हा
पं. श्री वायुनन्दन मिश्र
पं. श्री विश्राम तिवारी
पं. श्री दयानाथ झा
पं. श्री रामलखन झा
पं. श्री राजकुमार झा
पं. श्री विघ्नेशचन्द्र झा
पं. श्री राधारमण झा
पं. श्री मोहनजी झा
पं. श्री ओंकारनाथ मिश्र
पं. श्री रामप्रपन्न शर्मा
पं. श्री अभयकान्त ठाकुर
पं. श्री ब्रह्मदेव मिश्र
पं. श्री उमेश मिश्र
पं. श्री गोविन्द झा
पं. श्री सीताचरण झा
पं. श्री उग्रानन्द प्रतिहस्त
पं. श्री रामलखन शर्मा
पं. श्री कुणाल कु. झा
पं. श्री चिरंजीव झा
पं. श्री काशीनाथ झा
पं. श्री बटोही झा
पं. श्री देवर्षि पाण्डेय
पं. श्री राजेन्द्र प्रतिहस्त

पं. श्री शशिधर मिश्र
पं. श्री गुंजन चौधरी
पं. श्री भूपेन्द्र झा
पं. श्री गंगेश ठाकुर
पं. श्री धनेश झा
पं. श्री फूलेन्द्र झा
पं. श्री कामेश्वर मिश्र
पं. श्री देवोत्तम ठाकुर
पं. श्री भोलानाथ मिश्र
पं. श्री रामकृष्ण झा
पं. श्री इन्द्रदेव झा
पं. श्री सुशीलकान्त मिश्र
पं. श्री उमेशचन्द्र झा
पं. श्री लक्ष्मीकान्त झा
पं. श्री अभिराम झा
पं. श्री शिवानन्द झा
पं. श्री भवनाथ झा
पं. श्री घनश्याम मिश्र
पं. श्री जगन्नाथ मिश्र
पं. श्री चन्द्रकृष्ण मिश्र
पं. श्री सदानन्द झा
पं. श्री मदन कुमार झा
पं. श्री मुनीन्द्र झा
पं. श्री शुकदेव शर्मा
पं. श्री राजेश्वर झा
पं. श्री प्रेमकान्त झा
पं. श्री सुजीतकुमार मिश्र
पं. श्री खगेन्द्रनाथ झा
पं. श्री बबुआजी झा
पं. श्री कामेश्वर चौधरी
पं. श्री महानन्द ठाकुर
पं. श्री उमेश झा
पं. श्री महाकान्त ठाकुर
पं. श्री विजय कान्त झा
पं. श्री विनोदानन्द झा
पं. श्री अरुणकु.उपाध्याय
पं. श्री गंगानाथ झा
पं. श्री सत्यवान
पं. श्री सुरेश झा

पं. श्री कमलकान्त मिश्र
पं. श्री श्रीरामकुमार शर्मा
पं. श्री भूपनारायण मिश्र
पं. श्री तेजनारायण झा
पं. श्री राजेन्द्र झा
पं. श्री रतीशचन्द्र झा
पं. श्री विष्णुदेव झा
पं. श्री दिनेश ओझा
पं. श्री हर्षनाथ झा
पं. श्री बाबूलाल मिश्र
पं. श्री रामदेव झा
पं. श्री वैद्यनाथ झा
पं. श्री नवीनचन्द्र ठाकुर
पं. श्री राजेश्वर झा
पं. श्री चन्द्रनाथ झा
पं. श्री कृष्णकान्त मिश्र
पं. श्री भुवनेश्वर झा
पं. श्री फूलचन्द्र मिश्र
पं. श्री मदनानन्द झा
पं. श्री श्रीकान्त प्रतिहस्त
पं. श्री श्रवणकुमार चौधरी
पं. श्री रतन मिश्र
पं. श्री कलाधर झा
पं. श्री विनयनाथ झा
पं. श्री रघुवीर झा
पं. श्री विश्वनाथ झा
पं. श्री हरिनारायण ठाकुर
पं. श्री गोपालकृष्ण झा
पं. श्री इन्दुनाथ ठाकुर
पं. श्री मनोज कुमार
पं. श्री कृपानाथ महापात्र
पं. श्री इन्द्रनारायण झा
पं. श्री भुवनेश्वर मिश्र
पं. श्री पवनकुमार मिश्र
पं. श्री विन्ध्यनाथ मिश्र
पं. श्री भगलू झा
पं. श्री इन्द्रकान्त झा
पं. श्री शक्तिनन्दन झा
पं. श्री विद्याकान्त झा



श्रीमङ्गलमूर्त्तये नमः ▪ श्रीसरस्वत्यै नमः



कलिसंवत् ५१२०, **शकाब्दः** १६४०–४१, **विक्रमसंवत्** २०७५–७६, **सन्** १४२६ **साल, लक्ष्मणसंवत्** ६०६–१० खृष्टाब्दः २०१८–१६ ई. तत्र **प्रभवादिबार्हस्पत्यगताब्दादयः** ४५।००।१८।२५।५५।। भोग्याब्दादयः १४।११।११।३४।०५।। अत्र विद्यमाने खवेदनवेन्दुमिते शकाब्दे **रुद्रविंशतिकायां** सोमदैवतयुगे पञ्चचत्वारिंशद् **विरोधीनामकमध्यमगुरुसंवत्सरफलम्**—

वर्षन्ति वारिदा देवि देशे भूखण्डमण्डले। कान्यकुब्जे ह्यहिक्षेत्रे विरोधी कृषिनाशकः।।

वर्षेश (राजा) बुधफलम्

राजानो मुदिता भवन्त्यतिबलाः कीर्तिप्रतापान्विताः
गीते नृत्यरताःसदा विजयिनः कान्तामुखे षट्पदाः।
वष्टिः शस्यकरी घनाम्बरयुता विप्राश्च पूर्णालयाः
रोगानाञ्च विनाशनं नरपशोश्चन्द्रात्मजेऽब्दाधिपे।।

संवाहक (मन्त्री) शनिफलम्

मेघो घोररवं करोति विविधं स्वल्पं प्रयच्छेज्जलं
दुष्टानां विजयो महाजनपदा विख्यातनाशास्पदाः।
धर्माणां खलु विप्लवो नरपतिः संक्षोभलोभाकुलः
सर्पश्वापदवेष्टिता च वसुधा संवाहके सूर्यजे।।

पालक-शुक्रफलम्

मेघाः काले स्वकीये बहुसलिलमुचश्चारुकीर्त्यान्विताः स्युः
लोकाः सम्पन्नवित्ता नयविनययुताः कीर्त्तिभावं वहन्ति।
राजानः शिष्टपक्षैः प्रमुदितहृदया दानदाक्षिण्ययुक्ताः
स्वस्था विज्ञानशीलाः प्रतिदिनमुदिताः पालके भार्गवे च।।

मेघेशमंगलफलम्— सदा जलचाराः खिन्नाः स्वल्पवृष्टिकराः कुजे।।
तोयेशबुधफलम्— शस्ययुक्ता मही नित्यं मुदिताश्च बुधे नराः।
शस्येशचन्द्रफलम्— पृथ्वी शस्यसमाकीर्णा जलदा भूरि तोयदाः।
नन्दन्ति मानवाः सर्वे शस्येशे च निशाकरे।।
लोकेशसूर्यफलम्— वायवो दुस्सहा वान्ति लोकसन्तापकारिणः। विनाशविकला लोका मनुष्येशे दिनाधिपे।।
पुष्करमेघफलम्— पुष्करे चित्रितं विश्वं चित्रिता जलदाः सदा। चित्रिता तु भवेद्वृष्टिः शस्यवृद्धिस्तु चित्रिता।।
तटगतरोहिणीफलम्— तटगता यदि सा शुभवृष्टिदा ।।
चैत्रशुक्लप्रतिपद्रविफलम्— चैत्रस्य शुक्लप्रतिपत्तिथौ चेद्वारो रवेश्चित्रितवृष्टिरब्दे।
पौषामाशनिफलम्— रविकुजार्कजवासरकेषु चेत्सहसि दर्शतिथिर्गिरिजेऽखिला।
बहुधनैर्धरणी परिपूरिता सकलशस्ययुता मुदितप्रजा।।

वायुः—प्रवहः। **आर्द्राप्रवेशफलम्**—शोभनम्। **दीपावलीफलम्**—शोभनम्। **मेषसंक्रान्तिफलम्**—मध्यमम्। **शकाब्दफलम्**—स्वल्पवृष्टिः सुभिक्षञ्च। **विक्रमसंवत्फलम्**—मध्यमसुखं विरोधश्च। **जलाढकमानम्**—५०। **समुद्रे** २५ **पर्वते** १५ **भूमौ** १०।।

वर्षादिविश्वाः

वर्षा ११ धान्यं ७ शीतं १३ तृणं ७ ऊष्णं १७ वायुः १३ प्रजावृद्धिः १५ प्रजाक्षयः १५ विग्रहः ११ क्षुधा ६ तृष्णा ३ निद्रा ११ आलस्यं ५ उद्यमः ११ शान्तिः १३ क्रोधः ११ दण्डः ३ मैत्री १ उत्सवः १३ पापं ७ पुण्यं ११ रसादि ६ उग्रत्वं ११ रसोत्पत्तिः ११ फलोत्पत्तिः १७ रोगः १७ रोगक्षयः १५ आचारः १५ अनाचारः ३ मरणं १७ जननं ६ चौरभयं १५ चौरशान्तिः ३ अग्निभयं ६ अग्निशान्तिः १६ ।

मेषादिराशीनां सफलमायव्ययचक्रम्

राशिः	मेषः	वृषः	मिथुनं	कर्कः	सिंहः	कन्या	तुला	वश्चिकः	धनुः	मकरः	कुंभः	मीनः
आयः	५	१४	२	११	१४	२	१४	५	८	११	११	८
व्ययः	५	११	११	८	२	११	११	५	११	५	५	११
फलं	लाभः	हानिः	रोगः	सौख्यं	विजयः	रोगः	हानिः	लाभः	सौख्यं	विजयः	विजयः	सौख्यं

सन् १४२६ साल, १६४०-४१ शकाब्दीय शुद्ध्यशुद्धी

तत्र श्रावणकृष्णप्रतिपच्छनिवासराच्छ्रावणशुक्लसप्तम्यां शुक्रे ४०।५६ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि ०।२०।४०।५६। ततः सिंहादित्यदोषाद् भाद्रशुक्लाष्टम्यां चन्द्रे ४०।२६ यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि ०१।००।५६।०३।। तत आश्विनशुक्लचतुर्थ्यां शनौ १०।२७ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि ००।२५।२६।५८।। ततः कार्तिककृष्ण द्वितीयायां शुक्रे ५२।२६ यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि ००।१३।४२।०२।। ततः कार्त्तिकशुक्लचतुर्थ्यां रवौ ४५।२५ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि ००।१५।५२।५६।। ततो गुरुक्षैण्यास्तबाल्यदोषेभ्यो मार्गशुक्लाष्टम्यां शनौ २४।५६ यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि १।३।३६।३१।। ततो मार्गशुक्लनवम्यां रवौ २७।५७ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि ०।१।०३।१।। ततो धनुरादित्यदोषात्पौषशुक्लाष्टम्यां चन्द्रे ४७।१७ यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि ०।२६।१६।२०। तत आषाढशुक्लद्वादश्यां शनौ ४३।२ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि ५।२६।५५।४५। ततः शुक्रक्षैण्यास्तदोषाभ्यामाषाढी यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि ०।३।१६।५८ अतो वर्षे शुद्धसमयमानं मासादि ८।३।२।३६। अशुद्धसमयमानं मासादि ३।२०।५७।२१। तेन वर्षपूर्त्तिदिनानि ३५४।

सन् १४२६ साल, १६४०-४१ शकाब्दीय शुद्धादि

कार्तिके कार्त्तिकाकाशदीपतुलसीव्रतोद्यापनदिनाभावः। मार्गे विवाहदिनाभावः। माघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठाषाढमासेषु विवाहदिनानि। माघादिषूपनयनदिनानि। माघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठेष्वेकादशीव्रतोद्यापनानि। माघादिषु देवादिप्रतिष्ठा तडागादिखननयज्ञादिमुहूर्त्ताः। मार्गफाल्गुनवैशाखेषु पूर्वोदितः शुक्रः तेन तत्र दक्षिणपश्चिम दिशोस्तृतीयादिविषमवर्षीय द्विरागमनदिनानि बहूनि, तदितर पूर्वोत्तरदिशोस्तु शुक्रान्ध (रे.अ.रो.मृ.) नक्षत्रेष्वेव परञ्च वैशाखे पूर्वदिग्द्विरागमनादिनाभावः।

सन् १४२७ साल, १६४१-४२ शकाब्दीय संक्षिप्त शुद्धादि

कार्तिकमार्गमाघाद्याषाढमासेषु समयशुद्धिः । ज्येष्ठाषाढयोर्मध्यभागे पश्चिमास्तशुक्रत्वात् समयाशुद्धिः। कार्त्तिके कार्त्तिकाशदीपदानतुलसीव्रतोद्यापनानि। मार्गादिषु विवाहमुहूर्त्ताः। माघादिषूपनयन–एकादशीव्रतोद्यापनानि। मार्गफाल्गुनवैशाखेषु पश्चिमोदितः शुक्रः। गुरुस्तदानीं धनुमकरराशौ। पौषे गंगासागरे महाकुंभयोगः।

वर्षफलम्

इस वर्ष के राजा बुध, मन्त्री शनि, पालकेश शुक्र, मेघपति मंगल, जलपति बुध, शस्यपति चन्द्रमा, लोकपति सूर्य, पुष्कर मेघ तथा रोहिणीवास तट में है । विरोधी परिधावी नामक वार्हस्पत्यवर्ष है। वर्षा ११ विश्वा, धान्य ७ विश्वा, प्रवहनामक वायु तथा जलाढक विश्वा १० है । जगल्लग्न, वर्षलग्न, राजा–मन्त्री में सम–मित्र भाव, जगल्लग्नेश–बुध कर्मस्थ नीचगत शुभयुक्त पापदृष्ट, उच्चगत सूर्य आयस्थ, मंगल–शनियोग, पञ्चमस्थ बृहस्पति से सप्तमगत आयस्थ सूर्य–शुक्र, वर्षलग्नेश बुध सप्तमस्थ नीचगत–चन्द्र–शुक्र–सूर्ययुक्त, गुरु–मंगल में गृह परिवर्त्तन, चतुर्थ मंगल–शनि योग, पञ्चमकेतु एवं राहु आयस्थ हैं। अधिकारियों में शुभग्रहों की अधिकता है। अतएव वैमनस्य–बाधा के बावजूद देश आर्थिक अभ्युन्नति एवं मजबूत विदेश नीति की ओर अग्रसर रहेगा। वैज्ञानिक उपलब्धि, सञ्चार, उर्जा, रक्षा, जलवायु, शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्रों में नवीन कार्यों से लाभ होगा। कृषि क्षेत्र में सुधार होंगे। उद्योग एवं व्यापार का क्षेत्र विकसित होगा। विविध–विकासात्मक कार्य होंगे। उपर्युक्त कुछ बाधक ग्रहस्थिति के कारण विद्युदग्निभय, हिंसा, अपराध, चक्रवात–तूफान–हिमपात भूस्खलन आदि प्राकृतिक आपदाओं से क्षति संभावित है। कहीं–कहीं अतिवृष्टि, कहीं असमय वृष्टि तथा कहीं वृष्टि के अभाव से कृषि प्रभावित हो सकती है। चैत्री भादी एवं अगहनी फसल की उपज क्रमशः ८५, ६० एवं ६० प्रतिशत होगी ।

मासफलम्

श्रावण—इस मास में ५ मंगलदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त्त ३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त्त ३० एवं सौम्यशृंग है । अतएव खनिज पदार्थ, रसपदार्थ, धातुपदार्थ, खाद्यपदार्थ, तरलपदार्थ, फल–व्यञ्जनादि एवं वस्त्रादि के भाव में साम्य (सामान्य) स्थिति रहेगी। ५ मंगलदिन एवं चार ग्रहों के योग होने के कारण कहीं–कहीं अतिवृष्टि एवं बाढ़ से तथा कहीं–कहीं वर्षा की कमी, विद्युदग्निभय, तापाधिक्य, उपद्रव, दुर्घटना, प्राकृतिक प्रकोप (भूस्खलन, भूकम्पादि) एवं राजनीतिक उथल–पुथल संभावित रहेगी। कल्याणार्थ धर्माचरण अपेक्षित है।

भादव—इस मास में ५ शुक्रदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त्त ४५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त्त ३० एवं सौम्यशृंग है। अतएव सभी खाद्यपदार्थ, तरलपदार्थ, रसादि, फलादि, वस्त्रादि, खनिजपदार्थ एवं धातुपदार्थ के मूल्य में साम्य–समर्घ की स्थिति रहेगी। लाल पदार्थ अपेक्षाकृत सस्ते होंगे। बाढ़, अतिवृष्टि या कहीं–कहीं खण्डवृष्टि की संभावना रहेगी। राजनीतिक हलचली, हड़ताल एवं कलहकर स्थिति संभावित रहेगी। कल्याणार्थ धर्माचरण कर्त्तव्य है ।

आश्विन—इस मास में ५ सोमदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त ३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त १५ एवं सौम्यशृंग है । अतएव सभी वस्तुओं के भाव में साम्य–तेजी का रुख रहेगा। तरल पदार्थ, श्वेतपदार्थ, फलादि एवं व्यञ्जनादि के भाव में तेजी रहेगी। नवीन कार्यारंभ होंगे। धर्मकृत्य एवं यज्ञादि कल्याणकर कृत्य होंगे। वृष्टि योग है।

कार्तिक—इस मास में ५ बृहस्पतिदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त ३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० एवं सौम्यशृंग है । अतएव सभी वस्तुओं के भाव में साम्य की स्थिति रहेगी। धर्माचरण एवं यज्ञादिकृत्य होंगे। नवीन कार्यारम्भ होगा। खण्डवृष्टि योग है।

अगहन—इस मास में ५ शुक्रदिन, सूर्यसंक्रान्तिमूहूर्त १५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० एवं सौम्यशृंग है। अतएव सभी प्रकार के वस्तुओं के मूल्य में साम्य महर्घ की स्थिति रहेगी। फल–व्यञ्जनादि, श्वेत पदार्थ एवं रसादि में साम्य की स्थिति रहेगी। रक्तपदार्थ, धातुपदार्थ, औषधि एवं ऊर्णनिर्मित वस्त्रादि के भाव में तेजी का क्रम रहेगा। चार ग्रहों के योग उपद्रव, हड़ताल, राजनैतिक उथल–पुथल, हिमपात एवं प्राकृतिक उत्पातसूचक है। धर्माचरण अपेक्षित है।

पौष—इस मास में ५ रविदिन, सूर्य संक्रान्तिमुहूर्त ४५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ४५ एवं सौम्यशृंग है । अतएव सभी वस्तुओं के मूल्य में सस्ती का क्रम रहेगा। ५ रविदिन एवं चार ग्रहों का योग उपद्रव, दुर्घटना, प्राकृतिक कोप, झंझावात, राजनीतिक उथल–पुथल एवं शीतवृद्धि सूचक है। कल्याणार्थ धर्माचरण अपेक्षित है।

माघ—इस मास में ५ सोमदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त ३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त १५ एवं समशृंग है। अतएव सभी वस्तुओं के भाव में अपेक्षाकृत तेजी का क्रम रहेगा। रस–पदार्थ, तरल पदार्थ, श्वेतपदार्थ, फल एवं व्यञ्जनादि के भाव में तेजी आएगी। चार ग्रहों का योग प्राकृतिक प्रकोप, दुर्घटना शीतभय, उपद्रव, हड़ताल एवं झंझावात के सूचक हैं। कल्याणार्थ धर्माचरण कर्तव्य है।

फागुन—इस मास में ५ बुधदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त ३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ४५ एवं याम्यशृंग हैं। अतएव पूर्वापेक्षया सभी वस्तुओं के मूल्य में कमी आएगी। तरलपदार्थ, फलादि एवं व्यञ्जनादि अपेक्षाकृत सस्ते होंगे। नवीन कार्य होंगे। धर्मकृत्य तथा यज्ञोत्सव के कार्य होंगे।

चैत—इस मास में ५ शुक्रदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त १५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त १५ एवं याम्यशृंग है। अतएव पूर्वापेक्षया सभी वस्तुओं के मूल्य में तेजी का क्रम रहेगा। रसपदार्थ, औषधि, तरलपदार्थ, धातुपदार्थ, लालपदार्थ एवं श्वेतपदार्थ अपेक्षाकृत मंहगे होंगे। झंझावात अग्निभय एवं उपलपात संभावित रहेगा। धर्माचरण कर्त्तव्य है।

वैशाख—इस मास में ५ रविदिन, सूर्य संक्रान्तिमुहूर्त १५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ४५ एवं समशृंग है। अतएव सभी वस्तुओं के भाव में साम्य तेजी का रूख रहेगा। तरलपदार्थ, श्वेतपदार्थ, फलादि एवं व्यञ्जनादि में अपेक्षाकृत साम्य स्थिति रहेगी। औषधि, रक्तपदार्थ एवं धातुपदार्थ में तेजी संभावित रहेगी। चार ग्रहों के योग तथा ५ रविदिन झंझावात, उपलपात, विद्युदग्निभय, तूफान, राजनीतिगत उथल–पुथल, रोगभय, हड़ताल, प्राकृतिक उत्पात एवं दुर्घटना सूचक हैं। धर्माचरण कर्त्तव्य है।

ज्येष्ठ—इस मास में ५ बुधदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त ३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त १५ एवं सौम्यशृंग है । अतएव पूर्वापेक्षया वस्तुओं के मूल्य में साम्य महर्घ का क्रम रहेगा। चार ग्रहों के योग के कारण तूफान, ताप–वृद्धि, विद्युदग्निभय, झंझावात–उपलपात, प्राकृतिक उत्पात, राजनैतिक उथल–पुथल, दुर्घटना एवं उपद्रव संभावित रहेगी। कल्याणार्थ धर्माचरण कर्तव्य है।

आषाढ—इस मास में ५ शनिदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त ३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० एवं सौम्यशृंग है । अतएव सभी वस्तुओं के मूल्य में समता की स्थिति रहेगी। ५ शनिदिन एवं चार ग्रहों के योग राजनैतिक उथल–पुथल, उपद्रव, हड़ताल, दुर्घटना, झंझावात–उपलपात, विद्युदग्निभय एवं प्राकृतिक उत्पात (तूफान–भूकम्प आदि) सूचक हैं। धर्माचरण कर्त्तव्य है।

राशिफलम्

मेष–(चु, चे, चो, ल, लि, लु, ले, लो, अ)–वर्षफल सामान्य रहेगा। रक्तवातदोष, चोट की संभावना, उदरपीड़ा, शत्रुबाधा एवं इष्टसिद्धि में विलम्ब की संभावना रहेगी। सन्तान–पारिवारिक सुख अनुकूल रहेगा। शिक्षा, व्यापार, उद्योग एवं कृषि में लाभ होगा। राजनीति में सफलता मिलेगी। स्थान–परिवर्तन, तीर्थाटन, भ्रमण एवं धर्मकृत्य का योग बनेगा। साढे साती शनि शान्त्यर्थ वृश्चिकराशिवत् शनि की तथा १७ अप्रील तक राहु की उपासना करनी चाहिए। मंगलव्रत, सुन्दरकाण्ड पाठ एवं दुर्गापाठ करना श्रेयस्कर होगा।

वृष–(इ, उ, ए, ओ, व, वि, बु, वे, वो)–वर्षफल **मिश्रितफलद** हैं। वातकफदोष उदरपीड़ा, मूत्रविकार, घाव एवं चोट की संभावना रहेगी। सन्तानसुख मध्यम तथा पारिवारिक सुख में बाधा होगी। शिक्षा, उद्योग, व्यापार, कृषि एवं राजनीति में बाधा एवं विलम्ब से आंशिक लाभ होगा। स्थान परिवर्तन, व्यर्थ भ्रमण, कलह एवं विरोध की संभावना रहेगी। शनि की साढे साती शान्त्यर्थ वृश्चिकराशिवत् शनि की तथा १७ अप्रील के बाद राहु–केतु की उपासना लाभकर होगी। मंगलव्रत एवं दुर्गापाठ करना श्रेयस्कर होगा।

मिथुन–(क, कि, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह)–वर्षफल मिश्रित फलद है। वातरक्तदोष, मूत्रविकार, उदरपीड़ा एवं घाव या चोट की संभावना रहेगी। सन्तान सुख अनुकूल तथा पारिवारिक सुख में बाधा संभव है। राजनीति, शिक्षा, उद्योग, व्यापार एवं कृषि में बाधा–विलम्ब से आंशिक लाभ होगा। स्थान परिवर्तन, व्यर्थ भ्रमण तथा झंझट की संभावना रहेगी। शनि की साढे सती शान्त्यर्थ वृश्चिकरश्वित् शनि की तथा १७ अप्रील तक राहु–केतु की उपासना लाभकर होगी। मंगलव्रत एवं दुर्गापाठ करना लाभकर होगा।

कर्क–(हि, हु, हे, हो, ड, डि, डु, डे, डो)–वर्षफल **शुभप्राय** है। भ्रमण, तीर्थाटन, स्थान–परिवर्तन एवं नवीन कार्यारंभ का योग लगेगा। पारिवारिक एवं सन्तान सुख मध्यम है। शिक्षा, कृषि, उद्योग एवं व्यापार में लाभ होगा। राजनीति में सफलता मिलेगी। वातरक्तदोष, उदरपीड़ा एवं ज्वर की संभावना सामान्य रूप से संभावित रहेगी। राहु–केतु की उपासना लाभकर होगी। रविव्रत (अनोना) एवं दुर्गापाठ करना श्रेयस्कर होगा।

सिंह–(म, मि, मु, मे, मो, ट, टि, टु, टे)–वर्षफल मिश्रितफलद है। सन्तान सुख में बाधा तथा पारिवारिक सुख अनुकूल रहेगा। वातरक्तदोष, उदरपीड़ा, घाव या चोट की संभावना रहेगी। व्यर्थ भ्रमण, स्थान–परिवर्तन एवं झंझट से परेशानी होगी। कृषि, उद्योग, व्यापार, शिक्षा एवं राजनीति में आंशिक लाभ होगा। साढे सती शनि शान्त्यर्थ शनि तथा राहु–केतु की उपासना लाभकर होगी। रविव्रत (अनोना), आदित्यहृदयस्त्रोतपाठ एवं दुर्गापाठ करना श्रेयस्कर होगा।

कन्या–(टो, प, पि, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)–वर्षफल मिश्रित फलद है। पारिवारिक सुख अनुकूल एवं सन्तानसुख में कमी रहेगी। वातरक्तदोष, उदरपीड़ा, घाव अथवा सिरदर्द की संभावना रहेगी। शिक्षा, कृषि, उद्योग, व्यापार एवं नवीन कार्यारम्भ में आंशिक सफलता एवं लाभ होगा। राजनीति में सफलता मिलेगी। धर्मकृत्य सम्पादित होंगे। वृश्चिकराशिवत् शनि की उपासना करनी चाहिए। विष्णुसहस्रनाम पाठ अथवा दुर्गापाठ करना श्रेयस्कर होगा।

तुला–(र, रि, रु, रे, रो, त, ति, तु, ते)–वर्षफल शुभद है। पारिवारिक सुख मध्यम तथा सन्तान सुख अनुकूल रहेगा। शिक्षा, उद्योग, व्यापार, कृषि एवं राजनीति के क्षेत्रों में लाभकर स्थिति रहेगी। धर्मकृत्य, तीर्थाटन, स्थानपरिवर्तन एवं भ्रमण का योग लगेगा। वातरक्तदोष, उदरपीड़ा एवं घाव साधारणरूपेण संभावित रहेगा। दुर्गापाठ करना श्रेयस्कर होगा।

वृश्चिक–(तो, न, नि, नु, ने, नो, य, यि, यु)–शनि की साढेसाती चल रही है। अतः रक्तवातदोष, घाव, चोट, उदरपीड़ा एवं शत्रुबाधा सम्भावित है। स्थान परिवर्तन का योग है। पारिवारिक सुख मध्यम एवं सन्तानसुख अनुकूल रहेगा। शिक्षा, राजनीति, उद्योग, व्यापार एवं कृषि के क्षेत्र में आंशिक लाभ होगा। अतएव हनुमद्दर्शनपूजनस्तोत्रपाठ, गोसेवा, मंगलव्रत, दुर्गापाठ अथवा सुन्दरकाण्डपाठ, शनिपूजनस्तोत्रपाठ– मन्त्रजप, शनिदिन अश्वत्थपूजन, तिलदान, तिलतैल से हनुमद्दीपदान, हनुमानचालीसापाठ एवं शिवपूजनादि यथासम्भव शनिशान्त्यर्थ करना चाहिये। काले घोड़ानाल–वृषोत्सर्गदगनी–नाव के माडि के लोहे की अंगूठी, गंगाजल से सिक्त एवं शनिमन्त्राभिमन्त्रित कर, वाम हाथ की मध्यमा में शनिदिन पूर्वाह्ण में धारण करना चाहिए। १७ अप्रील के बाद राहु–केतु की उपासना लाभकर होगी।

धनु–(ये, यो, भ, भि, भू, ध, फ, ढ, भे)–शनि की साढेसाती चल रही है। अतः रक्त–वात–कफदोष, उदरपीड़ा, घाव या चोट लगने की संभावना है। पारिवारिक तथा सन्तानसुख मिश्रित रहेगा। स्थान परिवर्तन, व्यय, भ्रमण एवं शत्रुबाधा सम्भावित है। शिक्षा, राजनीति, उद्योग, व्यापार एवं कृषि के क्षेत्र में बाधा तथा विलम्ब से आंशिक लाभ होगा। १६ अप्रील तक राहु एवं केतु की उपासना लाभकर होगी।

मकर–(भो, ज, जि, जु, जे, जो, ख, खि, खु, खे, खो, ग, गि)–शनि की साढे साती का प्रभाव चल रहा है। अतः कार्य में बाधा, व्यर्थ भ्रमण, विरोध एवं कलह की संभावना रहेगी। सन्तानसुख मध्यम तथा पारिवारिक सुख अनुकूल रहेगा। कृषि, व्यापार, शिक्षा, उद्योग एवं राजनीति में विलम्ब से आंशिक सफलता मिलेगी। रक्तवातदोष, उदरपीड़ा, चोट एवं पाँव में दर्द संभावित है। अतएव वृश्चिकराशिवत् शनि तथा १७ अप्रील के बाद केतु की उपासना लाभप्रद होगी। मंगलव्रत एवं दुर्गापाठ करना श्रेयस्कर होगा।

कुंभ–(गु गे, गो, स, सि, सु, से, सो, द)–वर्षफल **शुभप्राय है। वातरक्तदोष या** उदरपीड़ा साधारणरूपेण हो सकती है। पारिवारिक सुख तथा सन्तानसुख मध्यम रहेगा। नवीन कार्यारम्भ में सफलता मिलेगी। कृषि, उद्योग–व्यापार एवं शिक्षा के क्षेत्र में लाभकर स्थिति रहेगी। राजनीति में सफलता मिलेगी। भ्रमण, धर्मकृत्य एवं स्थानान्तरण का योग लगेगा। सत्कार्य में व्यय होगा। १७ अप्रील तक राहु–केतु की उपासना लाभकर होगी। दुर्गापाठ एवं मंगलव्रत लाभकर होगा।

मीन–(दि, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, च, चि)–वर्षफल शुभद है। वात या रक्तदोष संभव है। पारिवारिक सुख मध्यम तथा सन्तान सुख अनुकूल रहेगा। नवीन कार्य में सफलता मिलेगी। मंगलकृत्य एवं धर्मकृत्य में व्यय होगा। तीर्थाटन का योग लगेगा। कृषि, शिक्षा, उद्योग, व्यापार एवं राजनीति में सफलता मिलेगी। राहु की तथा ४ अक्तूबर तक वृहस्पति की उपासना लाभकर होगी। दुर्गापाठ (चतुर्थाध्याय) करना श्रेयस्कर होगा।

अथ ग्रहाणां तान्त्रिकमन्त्राः

सूर्यस्य–ओम् घृणिः सूर्य आदित्य । **चन्द्रस्य**–ओम् सों सोमाय नमः । **कुजस्य**–ओम् अं अङ्गारकाय नमः । **बुधस्य**–ओम् बुं बुधाय नमः । **गुरोः**–ओम् वृं वृहस्पतये नमः । **शुक्रस्य**–ओम् शुं शुक्राय नमः । **शनेः**–ओम् शं शनैश्चराय नमः । **राहोः**–ओम् राँ राहवे नमः । **केतोः**–ओम् कें केतवे नमः ॥

ग्रहाणां समिधः–अर्कः पलाशः खदिरस्त्वपामार्गोऽथ पिप्पलः । औदुम्बरः शमी दूर्वा कुशश्च समिधः क्रमात् ॥

शाकल्यनिर्माणम्–तिलार्द्धं तण्डुलाः प्रोक्ताः तण्डुलार्द्धं यवाः स्मृताः । यवार्द्धं शर्करा प्रोक्ता सर्वार्द्धन्तु घृतं स्मृतम् ॥

छन्दोगप्राण-प्रतिष्ठामन्त्रः–ओम् वाङ्मनः प्राणापानौ व्यानश्चक्षुः श्रोत्रं शर्म्म वर्म भूतिः प्रतिष्ठा ॥ वाजसनेयिनां **देवताप्राणप्रतिष्ठामन्त्रः**–ओम् मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञग्वं समिमं दधातु । विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ ।

शुभदिनानि–चन्द्रबुधगुरुशुक्रदिनानि । **शुभतिथयः**–२, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५ ।

शुभनक्षत्राणि–अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. रे. ।

शुभलग्नानि राशयश्च–वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, धनु, मीन ।

ग्रहकृतारिष्टशमनाय सौषधजलस्नानम्

लज्जावती, कुष्ठः (कुढ), बला (बरियार), प्रियंगुः (काउनी), घनः (मोथा), सर्षपः, हरिद्रा, देवदारु, पुंखा (सहफोका), लोध्रं एतैरौषधैर्युतजले पुष्पाक्षतदूर्वाश्रीखण्डरक्तचन्दन–धान्यशतावरी–तीर्थोदक–सप्तमृत्तिका– तिल–यव–पञ्चगव्य–ताम्बूल–पञ्चपल्लव–पञ्चरत्नादीनि प्रक्षिप्य तैर्जलैः स्नायात् । एवं कृते दुष्टग्रहसूचितारिष्टनाश इष्टसिद्धिश्च ।

अर्द्धप्रहराबोधकचक्रम्

दिन	सू	चं.	मं.	बु.	व.	शु.	श.
दिने	४।५	२।७	२।६	३।५	७।८	३।४	१।६।८
रात्रौ	४।६	४।७	०।२	५।७	५।८	०।३	१।६।८

ग्रहाणामरिष्टहरत्वम्

राहुदोषं बुधो हन्यादुभयोस्तु शनैश्चरः । त्रयाणां भूमिजो हन्ति चतुर्णां दानवार्चितः ॥ पञ्चानां देवमन्त्री च षण्णां दोषन्तु चन्द्रमाः । सप्तदोषं रविर्हन्ति विशेषादुत्तरायणे । शुक्रो दशसहस्राणि बुधो दशशतानि च । लक्षमेकं तु दोषाणां गुरुर्लग्ने व्यपोहति॥

योगिनीवासो युद्धयात्रायाम्

तत्र वामपृष्ठगता योगिनी शुभा, दक्षिणसम्मुखगा चाशुभा

तिथयः	१।६	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०
दिशा	पू.	अ.	द.	नै.	प.	वा.	उ.	ई.

गर्भाधानमुहूर्त्तः

रो. मृ. उत्तरा 3. ह. स्वा. अनु. श्र. ध. श. चि. पुन. पु. अश्वि. नक्षत्रेषु, १ ।२ ।३ ।५ ।७ ।१० ।११ ।१२ ।१३ तिथिषु। चं. बु. वृ. शु. वारेषु । रात्रौ, रजोदर्शनानन्तरं चतुर्थरात्रितः 12 रात्रिं यावत् । शुभैः केन्द्रत्रिकोणगैः, पापैस्त्र्यायारिगैः, पुंग्रहदृष्टलग्ने, चन्द्रे विषमांशगे युग्मराशौ शुभम् ।

सीमन्तपुंसवनमुहूर्त्तः

पुंसवनं गर्भतस्तृतीये मासि कार्यम् । सीमन्तोन्नयनं च षष्ठेऽष्टमे वा मासि मासाधिपतौ सवले कार्यम् । मृ. पुष्य. श्रव. मृ. पुन. ह. रो. रे. उत्तरा 3 (जन्मभं विना) नक्षत्रेषु, १।२ ।३ ।५ ।७ ।१० ।११ ।१३ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत् । सू. मं. वृ. वारेषु, मतान्तरेण शु. चं. अपि. पूर्वाह्णे, पुंभस्यांगे तदंशे शुभम् । तत्र पापैः ३।६।११ स्थितैः, शुभैः १।४।५।७।६।१० स्थितैः, चन्द्रे २।३।४।५।६।१०।११ स्थिते, ४।८।१० पापरहितैः शुभम् ।

जातकर्ममुहूर्त्तः

जातकस्य ग्रहदोषनाशाय आयुःश्रीवृद्धये च जन्मकाल एव जातकर्म पिता कुर्यात् । तदतिक्रमे एकादशे द्वादशेऽह्नि, चि. अनु. रे. उत्तरा 3. रो. अश्वि. पुन. पु. स्वा. श्र. ध. श. नृक्षत्रेषु पूर्णिमां विहाय शुभतिथिदिनलग्नेषु शुभम् ।

शिशोर्दुग्धपानमुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. ह. पुन. उत्तरा 3 पुष्य. चि. अनु. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु शुभतिथिषु वृष–सिंह–वृश्चिक कुम्भलग्नेषु स्तनपानं शुभम् । अन्नप्राशनोक्त–दिनतिथिनक्षत्रेषु **सूतिकापथ्यं** शुभम् । भैषज्योक्तनक्षत्रेष्वौषधिभक्षणञ्च शुभं स्यात्।

सूतिकास्नानमुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. स्वा. अनु. उत्तरा ३.रे. नक्षत्रेषु रवि, मङ्गल, वृहस्पतिवारेषु, शुभलग्नेषु शुभदृग्युतेषु १।२।३।५।७।१०।११।१३।१५ तिथिषु सूतिकास्नानं शुभम् । आश्ले, पूर्वा ३, ज्ये. ध. श. नक्षत्रेषु मध्यमम् ।

प्रसूतिनखच्छेदनमुहूर्त्तः

अश्वि रो. मृ. पुन. पु. उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. वि. अ. ज्ये. श्र. ध. श. नक्षत्रेषु, ३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु ३।५।६।७।८।११ लग्नेषु शुभदिनेषु पूर्वाह्णे शुभम् ।

स्त्रीणां लाक्षाभरणधारणमुहूर्त्तः

भ. आ. आश्ले. म. वि. श. रहितनक्षेत्रषु शनिमंगलरहितदिनेषु शुभतिथौ स्त्रीणां लाक्षाभरणधारणं (लहठी धारणं) शुभम्। **शिशुनिष्क्रमणमुहूर्त्तः**–जन्मतश्चतुर्थे मासि यात्रोक्तदिनतिथिनक्षत्रेषु द्वादशे दिवसे वा शुभं स्यात् ।

शिशोर्भूम्युपवेशनमुहूर्त्तः

आदौ पृथ्वीं वराहञ्च सम्पूज्य कुजवले पञ्चमे मासि उत्तरा 3. रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य अभि. नक्षत्रेषु रिक्तमारहिततिथिषु शुभदिनेषु वृष, वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भलग्नेषु शिशोः कटिप्रदेशे कटिसूत्रं बद्ध्वा पृथिव्यामुपवेशयेत्। **तन्मन्त्रः**–रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभम्। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्य हरिप्रिये । अत्रैव शिशोरग्रे वस्त्रं, शस्त्रं, लेखिनीं, पुस्तकं, सुवर्णं रौप्यं च स्थाप्यम् । तेषु बालो यं गृह्णाति तैस्तस्य वृत्तिः ज्ञातव्येति ।

शिशुविलोकनमुहूर्त्तः

तृतीये मासि शुभतिथिदिननक्षत्रेषु पुष्पफलवस्त्रद्रव्यादिना शिशुदर्शनं शुभम् ।

नामकरणमुहूर्त्तः

विप्राणां ११, १२ क्षत्रियाणां १३ वैश्यानां १६ **शूद्राणां** ३१ तमे दिने नामकरणं शुभम् । अथवा स्वा. पुन. श्र. ध. **ह. अश्वि.** पुष्य, अभि. उत्तरा ३, रो. मृ. रे. चि. **अनु. नक्षत्रेषु**, १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथिषु, चं. बु. वृ. शु. दिनेषु, **पूर्वाह्णे** शुभम्, मध्याह्ने मध्यमम् । शुभलग्ने, **शुभैः** १।४।५।७।६।१० स्थितैः, पापैः ३।६।११ स्थैः, ८।१२ गृहे **शुद्धे**, **चन्द्रे** २।३।५।६।१० स्थिते । लग्ने शुभांशे पितृपुत्रयोश्चन्द्रतारानुकूले उत्तरायणे शुद्धसमये शुभं नामकरणम् ।

अन्नप्राशनमुहूर्त्तः

कन्यकानां पञ्चममासतो विषममासेषु बालकानां षष्ठात्सममासेषु रो. उत्तरा ३. मृ. रे. चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. **ध. श. ह.** अश्वि. पुष्य, नक्षत्रेषु, २।३।५।७।१०।१३।१५ तिथिषु, चं. बु. वृ. शु. दिनेषु, शुक्लपक्षे, पूर्वाह्णे, २।३।४।५।६।७।६।१०।११ लग्नेषु, एषु जन्मलग्नराश्योरष्टमलग्नमंशं च रहितेषु । शुभैः १।४।५।७।६।१० स्थितैः, पापैः ३।६।११ गतैः, दशमस्थाने ग्रहरहिते, शुभदृग्युतलग्ने, ४।६।८।१२ रहिते चन्द्रे अन्नप्राशनं शुभम् ।

कर्णवेधमुहूर्त्तः

१।२।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्, चं. बु. बृ. शु. दिनेषु, जन्मतारां विहाय श्र. घ. ह. पुन. उइ. अश्वि. पुष्य. अभि. मृ. रे. चि. अनु. नक्षत्रेषु, १२।६ मासे वा विषमवर्षे, चैत्रपौषहरिशयनरिक्तासमवर्षाणि त्यक्त्वा, २।३।४।६।७।६।१२ लग्नेषु, शुभैः १।४।५।७।६।१० गतैः, पापैः ३।६।११ गतैः, लग्नस्थे गुरौ शुद्धसमये शुभः।

चूडाकरण (मुण्डनाद्यकचकर्त्तन) मुहूर्त्तः

चैत्ररहितमाघादि षण्मासे, ज्येष्ठाग्रहायणयोः ज्येष्ठसन्तानं विना, विषमवर्षे, अश्वि., मृ. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. ज्ये. अभि. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु चं. बु. वृ. शु. वारेषु २।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्, २।३।४।८।६।१२ एतद्राशेर्लग्नांशे शुक्रवर्जिताष्टमशुद्धे, पापैः ३।६।११ गतैः, शुभैः १।४।५ ।७।६।१० गतैः, जन्मराशिलग्नयोरष्टमेतरलग्ने, ४।६।८।१२ रहितचन्द्रे शुभम् ।

अक्षरारम्भमुहूर्त्त

उत्तरायणे पञ्चमवर्षे (वालो यदि क्षमस्तदा तत्पूर्वमपि) गणेशविष्णुसरस्वतीलक्ष्मी–कुलग्रामदेवताः विधिवत्सम्पूज्य प्रथमाक्षरारम्भो विधेयः । अश्वि. आर्द्रा. पुन. पुष्य ह. चि. स्वा. अनु. अभि. श्र. रे. नक्षत्रेषु, २।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषु शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत् । चं. बु. वृ. शु. दिनेषु, वृष, मिथुन, कन्या, धनु, मीन, लग्नेषु तन्नवांशे चोत्तमः, कुम्भाशकं विनाऽष्टमशुद्धे, गुरौ दशमे, बुधे सप्तमे, शुक्रे लग्ने ग्रहवलाढ्ये शुभः ।

विद्यारभमुहूर्त्तः

उत्तरायणे गणेशविष्णुलक्ष्मीसरस्वतीकुलग्रामदेवताश्च सम्पूज्य अक्षरग्रहणे दृढे सञ्जाते सति, सूर्यबुधगुरुशुक्रवारेषु, २।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषु, अश्वि. मृ. आर्द्रा. पुन. पुष्य, आश्ले. ह. चि. स्वा. मूल, पूर्वा. ३. श्र. ध. श. नक्षत्रेषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्, लग्नाष्टमशुद्धे, शुभैः १।४।५।७।९।१० गतैः, पापैः ३।६।११ गतैः वृषमिथुनकन्याधनुर्मीनान्यतमलग्ने तदंशे वा विद्यारंभः शुभः ।

उपनयन (व्रतबन्ध) मुहूर्त्तः

शुद्धसमये, उत्तरायणे, माघादिषण्मासेषु, सू. चं. बु. वृ. शु. वारेषु (सामवेदिनां मंगलवारेऽपि), जन्ममासनक्षत्रादौ व्रतं शुभम्। २।३।५।१०।११।१२ तिथिषु शुक्लपक्षे, पूर्वाह्ने च शुभम् । मकरार्के-पौषे ११।१२, मकरार्के माघे १२, चैत्रे वैशाखे च तृतीया, वैशाखभिन्नमासानां द्वितीया, आषाढे १०।११ चोपनयने निषिद्धाः । अश्वि. रो. मृ. आ. पुष्य. आश्ले. पूर्वा ३, उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे नक्षत्रेषु (क्षत्रियवैश्ययोः पुनर्वसावपि) शुभम् । ब्राह्मणानां पुनर्वसुनक्षत्रे उपनयनं निषिद्धम्। मन्वादियुगादिषु, अपराह्ने, सायं, प्रदोषेऽनध्याये, कृष्णपक्षे चोपनयनं निषिद्धम् । त्रिषडस्थाः खलाः सर्वे चन्द्रो द्विद्यूनदिक्त्रिगः। सौम्याः केन्द्रत्रिकोणस्थाः लाभे सर्वे व्रते शुभाः । लग्नेशचन्द्रशुक्रगुरवः षडष्टगा न शुभाः । चन्द्रशुक्रौ लग्नात् १२ गतौ न शुभौ । १। ५।८ स्थाः पापा न शुभाः। ६। ८।१२ गताः शुभा न शुभप्रदाः। ३। ६।११ गताः पापाः शुभदाः, पूर्णचन्द्रो वृषकर्कलग्नगतः शुभो नान्यथा । लग्नेऽर्कः शुभः । **गुरुशुद्धिः**—जन्मराशितः उपनयनकाले २।५।७।९।११ स्थानगतः गुरुः शुभः, ४।१०।१२ स्थानगतः शान्त्या शुभः, १।३।६।८ स्थानगतो निषिद्धः । रामाचार्यमतेन १।३।६।१० स्थानगतो गुरुः शान्त्या शुभः, ४।८।१२ स्थनगतो निषिद्धः । ब्राह्मणानां पञ्चवर्षतः षोडशवर्षपर्यन्तं, क्षत्रियाणां षड्वर्षादारभ्य द्वाविंशतिवर्षपर्यन्तं, वैश्यानामष्टवर्षादारभ्य चतुर्विंशतिवर्षपर्यन्तमुपनयनकालः । तत्रोपनयनारम्भकालात्सर्वेषां यथोत्तरं गौणकालोऽतः समये प्राप्ते सति यथापूर्वमुपनयनं कार्यम् ।

प्रदोषनिर्णयः—यदा तृतीयायां प्रहररात्र्यभ्यन्तरे चतुर्थी, द्वादश्यां मध्यरात्र्यभ्यन्तरे त्रयोदशी, षष्ठ्यां सार्द्धप्रहररात्र्यभ्यन्तरे सप्तमी तिथिर्भवेत्तदा प्रदोषोऽवगन्तव्यस्तत्रोपनयनं निषिद्धम् ।

विवाहमुहूर्त्तः

मार्गमाघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठाषाढमासेषु सौरक्रमेण (मार्गे देवोत्थानात्परमाषाढे हरिशयनात्प्रागेव) १।२।३।५।६।७।८१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, सू.चं.बु.वृ.शु. वारेषु, अश्वि. रो.मृ.म. उत्तरा 3, ह.चि.स्वा.अनु.मू.श्र.ध.रे नक्षत्रेषु पंचशलाकावेधरहितेषु, वृष, मिथुन, कन्या, तुला, धनु, मीन, लग्नेषु, शुभग्रहेषु १।४।५।७।९।१० स्थितेषु, पापेषु ३।६।११ गतेषु शुभः। विवाहे यदि गुरुः शुक्रोवा १।४।५।७।९।१० गतो भवेत्तदा सकलदोषं नाशयति । ज्येष्ठा कन्या, ज्येष्ठो वरः ज्येष्ठमासश्च त्रिज्येष्ठसंज्ञकस्तत्र विवाहो न कार्यः । ज्येष्ठकन्यावरयोः ज्येष्ठमासे विवाहो निषिद्धः । ज्येष्ठद्वयं मध्यमं स्यात् । आवश्यके कृत्तिकास्थं सूर्यं त्यक्त्वा ज्येष्ठमासेऽपि ज्येष्ठवरकन्ययोर्विवाहः शुभः ।

वरवरणमुहूर्त्तः—शुभतिथिदिनलग्नेषु कृतिकापूर्वात्रयविवाहोक्तभेषु पुष्पफलवस्त्रादिभिः शुभम् ।

कन्यावरणमुहूर्त्तः—शुभतिथिदिनलग्नेषु कृत्तिकापूर्वात्रयविवाहोक्तभेषु पुष्पफलवस्त्रादिभिः शुभम् ।

विवाहोपनयनादौ मण्डपादिनिर्माणमुहूर्त्तः—विवाहमुहूर्त्ते वैवाहिकमुपनयनादिमुहूर्त्ते चोपनयनादि कृत्यं (आवश्यके शुभतिथिदिननक्षत्रेषु वा) विधेयम् ।

महामृत्युञ्जयमन्त्रजपविधिः—श्रीगणेशादिस्मरणपूर्वकंशान्तिपाठं कृत्वा कुशत्रयतिलजलान्यादाय संकल्पः—ॐ अद्य अमुके मासि अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकगोत्रस्यास्य श्री अमुकशर्म्मणः उंपस्थितशरीराविरोधेनाखिलारिष्टझटिति प्रशमनपूर्वक—दीर्घायुष्ट्वबलपुष्टिनैरुज्यप्राप्तिकामः अद्यारभ्य यथाकालं यजुर्वेदान्तर्गतमाध्यन्दिनशाखीय ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ" इति महामृत्युंजयमन्त्रस्य एतत्सहस्रसंख्यकजपमहं करिष्यामि । ॐ हौं ॐ जूं सः (समस्तमन्त्रः) अस्य श्री महामृत्युञ्जयमन्त्रस्य वामदेवकहोलवशिष्ठाः ऋषयः, पंक्तिर्गायत्र्यनुष्टुप्छन्दांसि सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रादेवता हौं बीजं जूं शक्तिः सः कीलकं महामृत्युञ्जयप्रीतये ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । ऋष्यादिन्यासः—वामदेवकहोलवशिष्ठऋषिभ्यो नमः शिरसि । पंक्तिर्गायत्र्यनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः मुखे । सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रदेवताभ्यो नमः हृदि । हौं बीजाय नमः नाभौ । जूं शक्तये नमःपादयोः । सः कीलकाय नमः सर्वाङ्गे । ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः । ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अष्टमूर्त्तये मां जीवय शिरसि स्वाहा। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा शिखायै वषट् । ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वःउर्व्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रीं ह्रौं कवचाय हुम् । ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममन्त्रत्रयाय नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय उज्ज्वलज्ज्वालाय मां रक्ष रक्ष अघोराय अस्त्राय फट् । इति षडंगन्यासः। ततः—चन्द्रोद्भासितमूर्द्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं बहद्धस्ताब्जेन दधत्सुदीप्तममलं हास्यास्यपंकेरुहम् । सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतले पाशाक्षसूत्रांकुशाम्भोजं विभ्रतमक्षयं सुरपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरेत् इत्यनेन ध्यात्वा यथोपचारैः सम्पूज्य मन्त्रं जपेत्। जपसमाप्तौ च शाकल्यादिभिर्दशांशक्रमेण होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनञ्च कारयेत्। **लघुमृत्युञ्जयमन्त्रः**—ॐ जूं सः।

वधूप्रवेशमुहूर्त्तः

विवाहदिवसात्षोडशदिनमध्ये समदिने पञ्चमसप्तमनवमदिने (आचारादन्यविषमदिनेऽपि) ततो मासमध्ये विषमदिने ततो वर्षाभ्यन्तरे विषममासे, चैत्रपौषभाद्रक्षयमासमलमासभिन्नसमये वधूप्रवेशः प्रशस्तः । नात्र शुक्रविचारः कालविचारो वा ।१।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु । चं. वृ. शु. श. वारेषु, मतान्तरेण बुधेऽप्यावश्यके। अश्वि. रो. मृ. पुष्य, उत्तरा 3, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. रे. नक्षत्रेषु। २।३।५।६।७।८।९।११ ।११ लग्नेषु । शुभैः १।२।५।७।१०।११ स्थितैः। पापैः 3।६।११ स्थितैः । चतुर्थाष्टमशुद्धे शुभः ।

नववध्वाः पाकारम्भमुहूर्त्तः

रो. मृ. उत्तरा 3. पुष्य. कृ. वि. ज्ये. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु, बु. वृ. श. वारेषु, शुभतिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्, २।५।८।११ लग्नेषु, लग्नात् चतुर्थाष्टमगृहे शुद्धे, शुभे बलान्विते सप्तमस्थे शुभः ।

द्विरागमनमुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य, उत्तरा 3, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत् । सू. चं. बु. वृ. शु. वारेषु मृत्युयोगादिरहितेषु, २।३।६।७।१२ लग्नेषु शुभयुतेक्षितेषु । शुक्रे १।४।७।१० गते, जीवे ३।६।१०।११ गते । पापैः ३।६।११ स्थितैः शुभम् । विषमवर्षे सौरक्रमेण मागफाल्गुनवैशाखमासेषु शुक्रबाल्यास्तवृद्धत्वभिन्नकाले वामपृष्ठगते शुक्रे, शुक्रोदिते द्विरागमनं शुभम् । प्रथमवर्षे न शुक्रविचारः कार्यः । तृतीयादिविषमवर्षे शुक्रविचारो विधेयः । शुक्रान्धविहित (रे. अश्वि. रो. मृ.) नक्षत्रेषु सम्मुखदक्षिणशुक्रेऽपि द्विरागमनं शुभम् । व्यतीते पञ्चमे वर्षे न शुक्रविचारो न वा मुहूर्तविचारः । तदानीं यस्मिन् कस्मिन्नपि शुभतिथिदिननक्षत्रयुक्तकाले द्विरागमनं शुभम् ।

वापीकूपतडागादिखननमुहूर्त्तः

विचैत्रोत्तरायणे, शुक्लपक्षे, शुद्धसमये, रो. मृ. पुष्य. म. उत्तरा 3. ह. अनु. पूषा. ध. श. रे. नक्षत्रेषु, पृथ्वीशयननक्षत्ररहितेषु, शुभतिथिदिनेषु, ४।१०।११।१२ लग्नेषु राशिषु च, शुक्रे दशमस्थे, गुरुबुधयोरन्यतरस्थलग्ने, पापैः निर्बलैः, शुभैः सुबलिभिः, शुद्धे वापीकूपतडागादिचक्रं शुभम् ।

जलाशयवाटिकादेवादिप्रतिष्ठामुहूर्त्तः

चैत्ररहितोत्तरायणे शुद्धसमये शुक्लपक्षे सू. चं. बु. वृ. शु. वारेषु, २।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु । मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. स्वा. पुन. श्र. ध. श. रो. उत्तरा 3 नक्षत्रेषु । अथवा प्रतिष्ठाप्यदेवताकतिथिदिननक्षत्रेषु देवादिप्रतिष्ठा शुभा । सिंहे सूर्यं, कुम्भे ब्रह्माणं, मिथुने शंकरं स्थापयेत् । द्विस्वभावे देव्यः, चरलग्ने च योगिन्यः स्थापनीयाः । सर्वे स्थिरलग्नेषु स्थाप्याः । चन्द्रपापैः ३। ६।११ स्थितैः । शुभैः १२।८ भिन्नस्थानगतैः देवादिप्रतिष्ठा शुभा । ग्रहान् पुष्ये, बुद्धं श्रवणायां, गणेशादीन् रेवत्यां स्थापयेत् । भगवतो देवोत्थानैकादश्यां रामनवम्यां, कृष्णाष्टम्यां, देव्याः नवरात्रौ दीपमालिकायां, जानकीनवम्यां शङ्करस्य शिवरात्रौ (माघफाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां) वा शुभं प्रतिष्ठापनम् ।

कूपचक्रंरोहिणीभात्			सूर्यभात्तडागचक्रम्		
स्थान	न	फलानि	स्थान	न	फलानि
मध्य	३	शीघ्रस्वादु	पूर्व	२	जलशोषः
पूर्व.	३	निर्जलम्	अग्नि	३	बहुजलम्
अग्नि	३	शीघ्रजलम्	दक्षिण	२	जलहानिः
दक्षिण	३	निर्जलम्	नैऋत्य	२	अमृतजलम्
नैऋत्य	३	निर्मलजलम्	पश्चिम	३	स्वादुजलम्
पश्चिम	३	शीतलजलम्	वायु	२	निर्जलम्
वायु	३	जलहानिः	उत्तर	३	स्थिरजलम्
उत्तर	३	मधुरजलम्	ईशान	३	नष्टजलम्
ईशान	३	क्षारजलम्	मध्य	५	पूर्णजलम्
अथवा सूर्यर्क्षादप्येवमेव गणनीयम्			वाह्य	३	अमृतजलम्

रोहिणी-नक्षत्राद्वापी चक्रम्			हवनचक्रं सूर्यभात्		
			न	ग्रह	फलानि
			३	सू.	अशुभम्
			३	बु.	शुभम्
स्थान	न	फलानि	३	शु.	शुभम्
पृष्ठे	४	शुभजलम्	३	श.	अशुभम्
नाभौ	४	बद्धिनाशः	३	चं.	शुभम्
हृदि	४	स्थिरता	३	मं.	अशुभम्
मध्ये	४	कलहः	३	वृ.	शुभम्
नेत्रयोः	४	धनागमः	३	रा.	अशुभम्
पादयोः	८	दुःखम्	३	के	अशुभम्

बीजवपने फणिचक्रं राहुनक्षत्रात्

नक्षत्र	४	३	१	३	१	३	१	३	८
फलं	अशुभं	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	अशुभं	शुभम्	अशुभं	शुभम्	अशुभं

हलचक्रमर्कभुक्तभात्

नक्षत्र	८	६	८	३
फलं	शुभम्	अशुभं	शुभम्	अशुभं

गृहारम्भ (वास्तु) मुहूर्त्तः

वैशाख, आषाढ (पशुगृहं त्यक्त्वा) कार्तिक, मार्ग, फाल्गुन, श्रावण (सौरक्रमेण) मासेषु । सम्मुखाकालवर्जितसमये ।२।३।५।७।१०।११।१२ ।१३।१५ तिथिषु । शुक्लपक्षे । कृष्णपक्षे ५ यावत् । अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा 3. ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे नक्षत्रेषु पृथ्वीशयन- नक्षत्ररहितेषु।

च. बु. वृ. शु. श. वारेषु । दिवा । शुद्धसमये । शुद्धे वृषवास्तुचक्रे, २।३।५।६।६।८।११।१२ लग्नेषु । लग्ने शुभदृग्युते। शुभैः १।४।५।७।६।१० स्थितैः, पापैः ३।६।११ स्थितैः, ८।१२ ग्रहरहिते शुभः । तृणकाष्ठादिगृहनिर्माणमशुद्धेऽपि परञ्चेष्टिकादिगृहनिर्माणं शुद्धसमये एव । देवालयमठादिनिर्माणमप्येष्वेव मुहूर्त्तेषु शुभम् ।

देवालयगृहारम्भजलाशयारम्भे खातदिग्ज्ञानम्				
खातदिक्	नैर्ऋत्यां	आग्नेयां	ऐशान्यां	वायव्यां
देवालयारम्भे	ध.म.कु. सूर्ये	मी.मे.वृ. सूर्ये	मि.क.सि. सूर्ये	क.तु.वृ. सूर्ये
जलाशयारम्भे	तु.वृ.ध. सूर्ये	म.कु.मी. सूर्ये	मे.वृ.मि. सूर्ये	क.सि.कं. सूर्ये
गृहारम्भे	वृ.मि.क. सूर्ये	सिं.क.तु. सूर्ये	वृ.ध.म. सूर्ये	कु.मी.मे. सूर्ये

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रमर्कभात्			गृहारम्भे वृषचक्रमर्कभात्		
स्थान	न.	फलानि	स्थान	न.	फलानि
मु.	१	अग्निदाहः	शीर्षे	३	अग्निभयम्
पू.	४	उद्वसनम्	अ. पा.	४	शून्यम्
द.	४	लाभः	पू.पा.	४	स्थैर्यम्
प.	४	धनम्	पृष्ठे	३	धनम्
उ.	४	कलहः	द.कु.	४	लाभः
म.	४	विनाशः	पू.	३	नाशः
अ.	३	स्थिरता	वा.कु.	३	धननाशः
क.	३	स्थिरता	मुखे	३	कष्टम्

अथ तिथिनन्दादिसंज्ञा

संज्ञा	नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	सिनीवाली	कुहूः
तिथयः	१।६।११	२।७।१२	३।८।१३	४।९।१४	५।१०।१५	दृष्टेन्दुमा	नष्टेन्दुमा

गृहप्रवेशमुहूर्त्तः

वैशाख-आषाढ-कार्तिक-मार्ग-फाल्गुन-श्रावण (सौर) मासेषु २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्। अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा 3. ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु। चं. बु. वृ. शु. श. वारेषु । दिवारात्रौ, शुद्ध समये, शुद्धे कुम्भचक्रे ।२।५।८।११ लग्नेषूत्तमः ।३।६।६।१२ लग्नेषु मध्यमः ।

जन्मराशिलग्नाभ्यामुपचय—३।६।१०।११ राश्यंशयोः स्थिरराशौ, लग्नात् १।३।५।७।६।१०।११ स्थानेषु शुभाः, ३।६।११ स्थानेषु पापाः, ४।८ भवने ग्रहरहिते । सम्मुखकालरहितसमये शुभः । इष्टिकादिगृहप्रवेशः शुद्धसमये, तृणकाष्ठादिकगृहप्रवेशोऽशुद्धसमयेऽपि । अग्निभये राजकोपे दैविके प्रकोपे सति यस्मिन् कस्मिन् शुभमुहूर्त्ते गृहारंभो गृहप्रवेशश्च कार्यः ।

चरणिविचारः—स्वामिहस्तप्रमाणेन दीर्घविस्तार-संयुतमष्टभिश्च हरेद् भागं शेषं चरणिरुच्यते । **तत्फलम्**—पशुहानिः पशो रोगः पशुलाभः पशुक्षयः । पशुनाशः पशोर्वृद्धिः पशुभेदो बहुपशुः ।

पृथ्वीशयननक्षत्राणि—सूर्यनक्षत्रात् ५।७।६।१२।१६।२६ मिते चन्द्रनक्षत्रे पृथ्वी शेते । एषु तडागवापीकूपवास्तुप्रभृतिकार्यं ट्यूब्वेल बोरिंग प्रभृतिस्थापनञ्च न कर्त्तव्यम् ।

ट्यूब्वेल, बोरिंग, टंकी प्रभृति स्थापने शुभमुहूर्त्तः— कृत्तिका, आश्ले, मघा, पूर्वा 3, भरणी, विशा, मूल नक्षत्रेषु ।२।४।५।६।७।६।१३।१५ तिथिषु । शुक्लपक्षे, कृष्णपक्षे ५ यावत्, चं. बु. वृ. शु. वारेषु, पूर्वाह्णेऽपराह्णेवा, २।३।४।६।७।६।१०।११।१२ लग्नेषु, लग्ने शुभयुग्दृष्टे, शुभैः १।४।५।७।६।१० स्थितैः । पापैः ३। ६।११ गतैः शुभम् ।

मासस्नानमुहूर्त्तः—विवाहदिनात्षोडशदिनमध्ये तदभावे मासपर्यन्तं २।३।५।७।१०।१३ तिथिषु, चं. बु. वृ. शु. दिनेषु, आर्द्रा, पुन. पुष्य, आश्ले, म, पूफ. उफ. ह. चि. स्वा. नक्षत्रेषु, वृष मि. कन्या. तु. लग्नेषु शुभम् ।

चुल्हिकास्थापनमुहूर्त्तः—अश्वि, भ, वि, रो, मृ, उत्तरा 3, कृ, मृ, पूषा, ध, आर्द्रा नक्षत्रेषु, सू. मं. श. दिनेषु, शुभतिथिलग्नेषु शुभम् ।

चुल्हिकाचक्रम् सूर्यभाद्दिनभावधि

स्थान	न०	फलम्	स्थान	न०	फलम्
पृष्ठे	६	धनम्	गर्भे	५	नाशः
शीर्षे	४	मृत्युभयम्	हस्ते	२	भोगः
बाहौ	८	सुखम्	चरणे	२	स्त्रीमृतिः

मन्त्रग्रहणमुहूर्त्तः—अश्वि. रो. पुन. पुष्य. उत्तरा 3. ह. चि. स्वा. अनु. मू. अभि. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु ।२।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु। शुक्लपक्षे । आत्यावश्यके कृष्णपक्षे ५ यावत्, सू. चं, बु, वृ, शु, वारेषु । शुद्धसमये प्रातः मध्याह्ने वा । २।३।५।७।६।१२ लग्नेषु, शुभैः १।४।५।७।६।१० गतैः, पापैः ३।६।११ स्थितैः वै, श्रा, आश्वि, का, अग्र, मा, फा, मासेषु (सौरक्रमेण)। संक्रान्तौ पूर्णिमायां नवरात्रमध्ये, सूर्यग्रहणे, सिद्धिक्षेत्रे मन्वादि-युगादिषु च मुहूर्त्तं विनाऽपि शुभम्।

व्रतोद्यापनमुहूर्त्तः—अश्वि, रो, मृ, पुन, पुष्य, उत्तरा 3, ह. चि, स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु । शुद्धसमये क्रियमाणव्रततिथिषु दिवसे वा । का, मा, फा, वै, ज्ये, आषा, मासेषु । शुभलग्नेषु । कार्तिकव्रतोद्यापनं तुलस्याकाशदीपदानव्रतोद्यापनं च शुद्धसमये वृश्चिकसंक्रान्तिपूर्वरात्रौ । एवमेव यस्य व्रतस्य मासविशेषेण सह सम्बन्धस्तत्तस्मिन्नेव मासे शुद्धसमये कार्यम्। शुभैः १।४।५।७।६।१०। स्थितैः, पापैः ३।६।११ स्थितैः, पञ्चमेशे नवमेशे गुरौ च बलाढ्ये सति शुभमन्यथा ग्रहशुद्ध्यभावेऽपि परमावश्यके शुभम् ।

यात्रामुहूर्त्तः—वामपृष्ठराहौ । मलमासक्षयमास-सौरक्रमेण चैत्रभाद्रपौषरहित मासेषु । अश्वि. मृ. पुन, पुष्य, ह, ज्ये, अनु, श्र, रे, नक्षत्रेषूत्तमः । रो, पूर्वा 3, चित्रा-स्वा, मू, पूषा, ध, नक्षत्रेषु मध्यमः । मृत्युयोगदग्धतिथिमासान्तसंक्रान्तिमासादि-प्रभृतिदोषरहिते । अमृतसिद्ध-सर्वार्थसिद्धादिशुभयोगेषु । अमावस्यां विहायान्यतिथिषु योगवशेनान्यथा शुभतिथिषु। दिक्शूलरहितदिने ।२।४।६।८।६ तारासु । पञ्चमतारायाः प्रथमद्वितीयावृत्तिषु च। १।२।३।५।६।७।६।१०।११ चन्द्रेषु । आवश्यके ४।१२ चन्द्रेऽपि । द्विरागमनानन्तरं पितृगहागतायाः पुनः पतिगृहगमने दक्षिणसम्मुखकालौ त्याज्यौ । तदनन्तरमावश्यके केवलं सम्मुखकालस्त्याज्यः, दक्षिणकाले च सम्मुखचन्द्रवशेन यात्रा कार्या ।

राहु (काल) वासः—सौरक्रमेण मार्गपौषमाघमासेषु पूर्वस्यां । फाल्गुनचैत्रवैशाखेषु दक्षिणस्याम् । ज्येष्ठाषाढश्रावणेषु पश्चिमायाम् । भाद्राश्विनकार्तिकेषूत्तरस्यां कालवासः ।

अश्विनीमृगशिरपुष्यश्रवणनक्षत्राणि सर्वदिग्गमने शुभानि ।

दिक्शूलविचारस्तत्परिहारश्च

सोमे, शनिवासरे च पूर्वस्यां, वृहस्पतिवासरे दक्षिणस्यां, रविवासरे शुक्रवासरे च पश्चिमायां, मंगलवासरे बुधवासरे चोत्तरस्यां दिशि दिक् शूलत्वाद् गमनं निषिद्धम् । **परिहारः**—रव्यादिवासरेषु क्रमेण घृतपयोगुडतिलदधियवमाषान्नं भुक्त्वा शूलदोषोपशान्तये परमावश्यके गच्छेत् ।

विदिक्शूलविचारः

शनौ पूर्वे, चन्द्रेऽग्निकोणे, गुरौ याम्यां, बुधे नैर्ऋत्यां, सूर्ये प्रतीच्यां, शुक्रे वायुकोणे, उत्तरस्यां मंगले बुधे, ऐशान्यां बुधमन्दयोर्न गन्तव्यम् ।

लग्नचन्द्रयोर्वासः

मेषसिंहधनुराशिषु पूर्वस्यां, वृषकन्यामकरराशिषु दक्षिणस्यां, मिथुनतुलाकुम्भराशिषु पश्चिमायां, कर्कवृश्चिकमीनराशिषु चोत्तरस्यां लग्नचन्द्रयोर्वासः । सम्मुखदक्षिणलग्नचन्द्रयोः यात्रा शुभा । परं सर्वदिग्गमननक्षत्रेषु वामपृष्ठचन्द्रेऽपि यात्रा शुभा ।

चन्द्रविचारः

जन्मनामग्रामादिराशितोऽभीष्टदिनस्य चन्द्रं यावद्गणनीयम् । तत्र १।२।३।५।६।७।६।१०।११ संख्याकश्चन्द्रः शुभप्रदः । ८ चन्द्रः मृत्युप्रदः। ४ कलहदः ।१२ हानिकारकः । तत्र दुष्टे चन्द्रे तद्दोषशान्त्यर्थमामतण्डुल-शंखदधिश्वेतवस्त्रादिदानं कार्यम् ।

द्वादशचन्द्रस्य विशेषः

आधाने सम्प्रदाने च विवादे राजविग्रहे । पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः । अभिषेके निषेके च गृहे पुंसवनादिषु । यात्रायुद्धे विवादे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः ।

जन्मराशिनामराशिवशेनविचारणीयविषयाः

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे । जन्मराशिप्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ।। देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके । नामराशिप्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ।। काकिण्यां वर्गशुद्धौ च वादे द्यूते स्वरोदये । मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता ।।

जन्मनक्षत्रे त्याज्याः—जन्मनक्षत्रगश्चन्द्रः प्रशस्तः सर्वकर्मसु । क्षौरभैषज्यवादा-ध्वकर्त्तनेषु विवर्जयेत्। **जन्ममासे त्याज्याः**—क्षौरकर्म दीर्घयात्रा कर्णवेधश्च।

सिद्ध्यादियोगचक्रं तिथिदिननक्षत्रवशेन

दिनानि	रविः	सोमः	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः
सिद्धियोगाः	३।८।१३	१।६।११	३।८।१३	२।७।१२	५।१०।१५	१।६।११	४।६।१४
अम तयोगाः	५।१०।१५	५।१०।१५	२।७।१२	१।६।११	३।८।१३	४।६।१४	१।६।११
सर्वार्थ सिद्धियोगाः	अश्वि.पुष्य ह.मू.	रो.म.पुष्य अनु.श्र.	अश्वि.	रो.म्. ह.अनु.	अश्वि.पुन. पुष्य.अनु.रे.	अश्वि.पुनः अनु.श्र.रे	रो.स्वा.श्र.
म त्युयोगाः	१।६।११	२।७।१२	१।६।११	३।८।१३	४।६।१४	२।७।१२	५।१०।१५
राज्यप्रदयोगः	××	××	४।६।१४	××	××	××	४।६।१४
मध्यमयोगः	१२	११	१०	३	६	२	७

ताराचक्रम्

ताराः	जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेमः	प्रत्यरिः	साधकः	वधः	मित्रम्	अतिमित्र
नक्षत्राणि	१।१०।१६	२।११।२०	३।१२।२१	४।१३।२२	५।१४।२३	६।१५।२४	७।१६।२५	८।१७।२६	६।१८।२
फलानि	मध्यमम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	शुभम्
दानानि	शाकम्	×	गुडम्	×	लवणम्	×	तिलाः	×	×

जन्मनामग्रामनक्षत्राद्वा भीष्टदिनावधि गणयित्वा नवभिर्हरेत् । शेषं तारा स्यात् । तत्र २।४।६।८।६ ता : शुभदाः । तारा मध्यमा । ३।७ अशुभदा । विशेषः—प चमतारा आ । त्तिवशेन धनदा १ सुखदा २ म त्युदा च भवेत्तेन रितारा केवलं त तीयाव तेस्तारा अशुभा, तत्र दानं कार्यम् ।

कालशूलम्—उषःकाले पूर्वस्यां, मध्याह्ने दक्षिणस्यां, सायंकाले (गोधूल्यां) पश्चिमायां, निशीथे चोत्तरस्यां न गच्छेत्, कालशूलदोषत्वात् ।

प चक (भदवा) विचारः

धनिष्ठाशतभिषापूर्वभाद्रोत्तरभाद्ररेवतीनक्षत्राणि प चकसंज्ञकानि । तत्र दक्षिणदिग्गमनग हाच्छादनप्रेतदाहंत णकाष्ठदि–संग्रहशय्यावितान–निर्माणादिकं च त्येजत् । तत्रापवादः—वस्वादौ शतभिग्मध्ये पूर्वादौ चोत्तरान्तके । प च प च घटी त्याज्या रेवतीं सकलां त्यजेत् ।

दग्धतिथिमासान्तादिविचारः

मीने धनुषि स्थिते सूर्ये द्वितीया तिथिः, व षे कुम्भे स्थिते सूर्ये चतुर्थी, मेषे कर्के स्थिते सूर्ये षष्ठी, मिथुने कन्यायां स्थिते सूर्येष्टमी, सिंहे व श्चिके स्थिते सूर्ये दशमी, तुले मकरे व स्थिते सूर्ये द्वादशी तिथिर्दग्धा भवति। तत्र शुभकार्यं निषिद्धम्। एवमेव संक्रान्तिदिनं तत्पूर्वापरदिन च (मासान्तमासादिसंज्ञकम्) यात्रादिसकलशुभकार्येषु त्याज्यम् ।

पुराणादिश्रवणमुहूर्तः

अश्वि. रो. म. पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. म. श्र. नक्षत्रेषु २।३।५।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु। सू. चं. बु. व. शु. दिनेषु। शुक्लपक्षे। क ष्णे ५ यावत्। शुभलग्ने। लग्ने शुभयुग्द ष्टे वलाढ्ये, शुभैः १।४।५।७।१।१० स्थितैः पापै ३।६।११ स्थितैः उत्तरायणे, श्रा, आश्वि, कार्ति, मार्ग मासेषु शुभम् । तीर्थक्षेत्रे, देवालये, सिद्धिक्षेत्रे, पर्वविशेषे नवरात्रादौ च मुहूर्त्तं विना पि शुभम् ।

इन्धनस्थापनमुहूर्तः

सूर्याक्रान्तनक्षत्रात् ६ नक्षत्रेषु शुभं, ततः ६ अशभं, ततः ४ शुभं, ततः ८ अशुभं, ततः ४ शुभम्।

नवान्नपार्वणमुहूर्तः

अ. रो. म. पुन. पुष्य. उत्तरा ३. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु शुभम् । मूले नवान्नपार्वणं मध्यमम् । सु. चं. बु. व. वारेषु । शुक्लपक्षे। २।३।५।७।८।१०।१२।१५ तिथिषु। व श्चिकस्य ३।२० अंशानन्तरं १३ अंशं यावदावश्यके २३ अंशं यावदपि । ततः मकरे ७ अंशानन्तरं कुभस्थे सूर्ये वा कार्यम् । २।३।४।६।७।६।१२ लग्नेषु, लग्ने शुभयुग्द ष्टे स्वस्वामियुते वा शुभम् । नवान्नपार्वणे जन्मतारा–विशाखस्थसूर्य–क ष्णपक्षाष्टमचन्द्र–पूर्वात्रय मघाभरण्याश्लेषा द्रा नक्षत्र–सौरक्रमेणकार्तिक–पौष–चैत्रहरिशयननन्दात्रयोदशीरिक्तामंगलशनिशुक्रदिनानि निषिद्धानि। अभावे कृष्णपक्षे ५ यावत् ग्राह्यः ।

कल्याणार्थ शान्तिमुहूर्तः

अश्वि. रो. म. पुन. पुष्य. उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रें. नक्षत्रेषु। शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्। २।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु। सु. चं. बु. व. शु. वारेषु, शुद्ध समये, आवश्यके शुद्धे पि, चैत्रपौषभाद्रमलमास–क्षयमासरहिते शुभम्। शुभलग्ने, लग्नस्थे गुरौ, चतुर्थस्थे चन्द्रे, दशमस्थे सूर्ये, अष्टमे लग्ने च पापरहिते शान्तिः शुभा।

खलस्थापनमुहूर्तः

ग्रामसमीपे शुभस्थाने शुभतिथिदिननक्षत्रेषु शुभम् ।

धान्यच्छेदनमुहूर्तः

मू. ज्ये. आश्ले. आर्द्रा. पूभा. ह. कृ. ध. श्र. म. स्वा. म. उत्तरा ३. पूषा. भ. चि. पुष्य. नक्षत्रेषु, सू.चं.बु.व.शु. दिनेषु, १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, २।५।८।११ लग्नेषु शुभम् । अन्यान्यपि यवगोधूमादीनि एष्वेव छेद्यानि ।

मेधिरोपणमुहूर्तः

अश्वि. रो. म. पुन. पुष्य. उत्तरा ३. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु, शुभतिथिदिनलग्नेषु व मेधिरोपणं शुभम् ।

वर्षेशवशेन मेधिविचारः

वर्षेशे सूर्ये वंशः, चन्द्रे शिम्बरः, मङ्गले कदम्बकम्, बुध उदुम्बरम्, गुरौ आम्रम, भ गुजे पलाशः, शनौ निम्बम् शुभम् ।

कणमर्दनमुहूर्तः

मघा, पूफ. उफ. रो. ज्ये. मू. अनु. श्र. रे. नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु शुभम् ।

धान्यस्थापनमुहूर्तः

अ. रो. म. पुन. पुष्य. उत्तरा ३. ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु, शुभतिथिदिनयोः, २।३।५।८।६।१०।११।१२ लग्नेषु शुभम् ।

धान्यव द्धिमुहूर्तः

अ. रो. पुन. पुष्य. उत्तरा ३. स्वा. वि. ज्ये. श्र. ध. श. नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु धान्यव द्धिः शुभम्।

बीजस्थापनमुहूर्तः

रो. म. म. ह. स्वा. म. उषा. पूभा. रे. नक्षत्रेषु । चं. बु. दु. शु. वारेषु। शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत् ।२।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु। २।५।८।११ लग्नेषु शुभम् ।

बीजवपनमुहूर्तः

अश्वि, रो. म. पुन. पुष्य. उत्तरा ३. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. पुष्य. रे. नक्षत्रेषु २।३।५।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, च. बु. व.शु. दिनेषु, शुभलग्नेषु, लग्ने शुभद ग्युते, शुभैः केन्द्रकोणगैः, पापैः त्रिषडायगैः शुभम्।

हलप्रवहणमुहूर्तः

अ.रो.म.पुन.म. उत्तरा ३. ह. चि. स्वा. वि. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु, चं. मं. बु. व. शु. वारेषु शुभतिथिषु, शुभलग्नेषु, पापैः निर्बलैः, शुभैः सुबलिभिः, चन्द्रे जलचरराशिस्थे तन्नवांशे वा, गुरौ लग्नस्थे, शुक्रे विधौ च पुष्टे शुभम्।

धान्यरोपणमुहूर्तः

रोहिणी. उफ. वि. मू. श. पूभा. नक्षत्रेषु, सू. चं. बु. व. शु. दिनेषु, शुभतिथिषु, शुभलग्नेषु च शुभम् ।

स्वामिसेवा (नौकरी) मुहूर्तः

अश्वि. म. पुष्य. ह. चि. अनु. अभि. रे. नक्षत्रेषु, सू. बु. व. शु. दिनेषु, शुभतिथिलग्नेषु, लग्ने शुभयुते, सूर्ये कुजे वा १०।११ स्थे, सेव्यसेवकयोर्योनिमैत्र्यां राशीशयोश्चापि मैत्र्यां सत्यां सेवारम्भः शुभः।

कोषागारादौ द्रव्यस्थापनमुहूर्तः

अश्वि. म. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु, सू. मं. बु. शु. वारेषु शुद्धसमये. ३।५।८।१०।१३।१५ तिथिषु, शुभग्रहयुक्तलग्नेषु शुभम् ।

ऋणप्रदानमुहूर्तः (द्रव्यप्रयोगमुहूर्तः)

स्वा. पुन. मु. रे. चि. अनु. वि. पुष्य. श्र. ध. श. नक्षत्रेषु शुभतिथिषु १।४।७।१० लग्नेषु, लग्ने शुभयुग्द ष्टे, ५।८।६ ग्रहरहिते, चं. व. शु. श. वारेषु शुभम्।

ऋणदाने निषिद्धसमयः—बुधवासरः, भरणी, क ., आर्द्रा, आश्ले., मघा, पूर्वा ३, चि., ज्ये. नक्षत्राणि, भद्रा पातयोगश्च ।

ऋणग्रहणे निषिद्धसमयः—रविभौमदिने। संक्रान्तिः। व द्वियोगः। हस्तनक्षत्रम्। एषु ऋणार्पणं शुभम् ।

युद्धयात्रायां कुलाकुलचक्रम्

संज्ञा	नक्षत्राणि	तिथयः	दिनानि	फलानि
कुलः	पू.३. अश्वि. पुष्य. म.म. श्र. कृ. ज्ये. वि. चि.	४।८।१२।१४	मं. शु.	स्थायिजयदः (मुद्दालह)
अकुलः	मर. स्वा. आश्ले. ध.रे.ह. रो. अनु. पुन. उत्तरा ३	१।३।५।७।६।११।१३।१५	सू. च. व. श.	यायिजयदः (मुद्दई)
कुलाकुलः	आर्द्रा. मू. अभि. श.	२।६।१०	बुधः	उभयोः सन्धिः

नष्टवस्तुज्ञानाय चक्रम्

संज्ञा	नक्षत्राणि	लाभालाभः	नष्टवस्तुदिक्
अन्धाक्षः	रो. पुष्य. उफ. वि. पूषा. ध. रे.	शीघ्रलाभः	पूर्वस्याम्
मन्दाक्षः	म. आश्ले. ह. अनु. उषा. श. अश्वि	प्रयत्नाल्लाभः	दक्षिणस्याम्
मध्याक्षः	आर्द्रा. म. चि. ज्ये. अभि. पूभा. म.	दूरे श्रवण–मलाभश्च	पश्चिमायाम्
सुलोचनः	पुन. पूफ. स्वा. मू. श्र. उभा. कृ.	अलाभः	उत्तरस्याम्

प्रथमलग्नसारिणी— इष्टार्कराश्यंशतले घटीपलं स्वाभीष्टनाडीपलसंयुतं च ।
यद्राशिभागस्य तले स्थितं भवेत्तदेव लग्नं च कलानुपातात् ।।

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
३	४७	५४	१	८	१६	२३	३०	३८	४६	५४	३	११	१९	२८	३६	४४	५३	१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	०	८	१६	२५	३३	४२
३८	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	२	२४	४६	८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	४
वृष	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
४	५०	५८	७	१५	२३	३२	४०	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	११	२१	३१
११	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८	००	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	६	१२
मिथुन	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
५	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५२	३	१४	२६	३७	४९	००	१२	२३	३४	४६	५७	९	२०	३३	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३
३	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	२६	५२	१८	४४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	६	३२
कर्क	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
५	१४	२५	३७	४९	००	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५३	०५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९
४३	५८	२४	५०	१६	४२	०८	३४	००	३४	०८	४२	१६	५०	२४	५८	३२	६	४०	१४	४८	२२	५६	३०	४	३८	१२	४६	२०	५४	२८
सिंह	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
५	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५६	११	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९
४७	२	३६	१०	४४	१८	५२	२६	००	१६	३२	४५	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२
कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
५	४१	५२	३	१४	२६	३७	४८	००	११	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	११	२२	३४	४५	५६	७
३८	८	२४	२०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१५	३२	४८	४	२०	३६	५२
तुला	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
५	१९	३०	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४३	५६	८	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२
३८	८	२४	२०	५६	१२	२८	४४	००	३४	८	४२	१६	५०	२४	४८	३२	६	४०	१४	४८	२२	५६	३०	४	३८	१२	४६	२०	५४	२८
वृश्चि	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५
५	०४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६
४७	२	३६	१०	४४	१८	५२	२६	००	२६	५२	१८	२४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	६	३२
धनु	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०
४३	५८	२४	५०	१६	४२	०८	३४	००	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	६	१२
मकर	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
५	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	११	१९	२७	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४३	५१	५९	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१५
३	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	०२	२४	४६	८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	४
कुम्भ	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
४	२३	३१	४०	४८	५६	५	१३	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	२०	२७	३४	४१	४९	५६	३	११	१८	२५	३३	४०	४७	५४	१
११	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८	००	१६	३२	४८	०४	४०	३६	५२	८	५७	४०	५६	१२	५८	४०	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	००	००	००	००	००	००	००	००	००	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
३	९	१६	२३	३०	३८	४५	५२	००	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४९	५६	३	१०	१८	२५	३२	३९
३८	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२

उदाहरण—श्रावणशुक्ल १३ शुक्र को इष्टदण्डादि ४।३ है। इस दिन सूर्य के सिंह राशि के ६ अंश के नीचे दण्डादि २४।१०।२६ में इष्टदण्डादि ४।३ जोड़ने से २८।१३।२६ हुआ। यह दण्डादि सिंह राशि के २७ अंश के आगे २८ अंश के नीचे पड़ा। अतः उक्त समय २८ अंश से सिंहलग्न हुआ। एवमेव सर्वत्र ज्ञातव्य है।

दशमलग्नसारिणी—यत्सूर्यराश्यंशसमानकोष्ठे घट्यादिकं पूर्वनतेन हीनम् ।
प्रत्यग्नतेनाढ्यमियान् विशेषो मध्यस्य (दशमलग्नस्य) सिद्ध्यै गणकैः प्रदिष्टः ।।

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८
	३३	४२	५१	००	१०	१९	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
२७८	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
वृष	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३
	२७	३७	४७	५६	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	७	१८	२९	४०	५०	१	१२	२३	३३
२६६	१४	१२	१०	८	६	४	२	००	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२
मिथुन	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८
	४४	५५	६	१६	२७	३८	४९	००	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	९	१९	३०	४१	५२	६	१३	२४	३५	४६	५६
३२३	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२
कर्क	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४
	७	१८	२९	३९	५०	१	१२	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२
३२३	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
सिंह	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
	१२	१२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४०	४९	५९	८	१७	२६	३६	४५	५४	३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२८	३६	४५
२६६	१४	१२	१०	८	०६	४	२	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३
	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	००	९	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३
२७८	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२
तुला	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८
	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
२७८	८	२४	४९	५६	१२	२८	४४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
वृश्चि	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३
	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	७	१८	२९	४०	५०	१	१२	२३	३३
२६६	१४	१२	१०	८	६	४	२	००	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२
धनु	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८
	४४	५५	६	१६	२७	३८	४९	००	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६
३२३	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	४६	३२	१८	०४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२
मकर	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४
	७	१८	२९	२९	५०	१	१२	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२
३२३	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१६	१६
कुम्भ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८
	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४०	४९	५९	०८	१७	२६	३६	४५	५४	३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५
२६६	१४	१२	१०	८	६	४	२	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२
मीन	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	००	००	००	००	००	००	००	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३
	-५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	००	०९	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	००	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३
२७८	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२

नतकालसाधनम्—रात्रेः शेषमितं युतं दिनदलेनाह्नो गतं शेषकं विश्लेष्यं खलु पूर्वपश्चिमनतं त्रिंशच्च्युतं चोन्नतम् ।।
यथा—श्रावणशुक्ल १३ शुक्र को इष्टघट्यादि ४।३ के समय दिनार्ध—इष्टकाल = १६।०० — (४।३) = ११।५७ = पूर्वनतघटी।।

दशमलग्नोदाहरणम्—श्रावणशुक्ल १३ शुक्र को इष्टघट्यादि ४।३ है। नतकालानयनविधि से इस काल का पूर्वनत ११।५७ हुआ। इसे सूर्य के सिंह राशि के ६ अंश के नीचे दण्डादि २५।१२।०२ में घटाया तो (२५।१२।०२)-(११।५७) = १३।१५।०२ दण्डादि हुआ। यह फल दशमलग्नसारिणी में वृषराशि के २७ अंश के आगे और २८ अंश के नीचे पड़ा। अतः उक्त समय २८ अंश से वृष दशमलग्न हुआ।

● अग्निवासचक्रम् ●

इष्टिकारम्भमुहूर्तः—अश्वि. रो. मृग. पुष्य उत्तरा ३ ह. ज्ये. श्र. रे. नक्षत्रेषु, वृषसिंहवृश्चिककुम्भ लग्नेषु, रविगुरुशनिदिनेषु, शुभतिथिषु, चैत्रभाद्रपौष—मलमासक्षयमास—भिन्नसमये शुभः।

वृक्षादिरोपणमुहूर्त्तः—अश्वि. रो. मू. पुष्य उत्तरा ३. चि. वि. अनु. मू. अभि श. रे. नक्षत्रेषु, चं. वृ. शु. दिनेषु, शुभतिथिषु च शुभम्।

कदलीरोपणम्—पञ्चक (ध.श.पूभा.उभा.रे) रहित नक्षत्रेषु १।२।३।४।६ तिथिषु, शुभदिनेषु शुभम्।

शुक्लपक्षे				कृष्णपक्षे				र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
१	५	९	१३	२	६	१०	१४	भु	भु	दि	भू	भु	भु	दि
२	६	१०	१४	३	७	११	३०	भु	दि	भू	भु	भु	भु	भू
३	७	११	१५	×	४	८	१२	दि	भू	भु	भु	दि	भू	भु
×	४	८	१२	१	५	९	१३	भू	भु	भु	दि	भू	भु	भु

फलम्—भुवि सौख्यम्, दिवि प्राणनाशः, भूतले च धननाश इति ज्ञेयम् ।
विधिः—(शुक्लादितिथिसं + सूर्यादिदिनसं + १) + ४ = ३, ० शेषे शुभः । १, २ अशुभः ।
पार्थिवशिवपूजायां विहिततिथयः—
शुक्लपक्षे—२।५।६।९।१२।१३ कृष्णपक्षे—१।४।५।८।११।१२।३०।
विधिः—(शुक्लादितिथिसं × २ + ५) + ७ = १।२।३ शेषे शुभम् । अन्यदशुभम् ।
१ शेषे कैलाशे, २ शेषे गौरिसन्निधौ, ३शेषे वृषारूढः शिवः अभीष्टदः स्यात्।

गृहप्रवेशः शुभः ।

विपणिमुहूर्त्तः—अश्वि. रे. पुष्य. ह. उत्तरा अनु. अभि. नक्षत्रेषु १।२।३।५।६।७।१०।११।१२।११।१३।१५ तिथिषु । सू.च.बु.वृ.शु.श. वारेषु। शुक्लपक्षे, कृष्णे १० यावत्। १।२।३।४।५।६।७।८।९।१०।१२ लग्नेषु, लग्ने चन्द्रशुक्रे, पापैः ८।१२ रहितैः, शुभैः २।१०।११ स्थितैः शुभा ।

मीलचालनमुहूर्त्तः—भर. कृति. आश्ले. वि. पूर्वा३. नक्षत्रेषु २।३।५।७।१०।११।१३।१५ तिथिषु, चं. बु. वृ. शु. दिनेषु, शुभैः १।२।४।५।७।१० स्थितैः, पापैः ३।६।११ स्थितैः, कुम्भं विना लग्नेषु शुभः।

वस्तूनां क्रयमुहूर्त्तः—शुभतिथिदिनलग्नेषु, अश्वि. चि. स्वा. श्र. श. रे. नक्षत्रेषु शुभः ।

भैषज्यभक्षणमुहूर्त्तः—अश्वि. मृ. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. मू. अभि. श्र. ध. श. रो. नक्षत्रेषु, शुभतिथिषु, सू. च. बु. वृ. शु. दिनेषु, ३।६।९।१२ लग्नेषु, शुभैः ३।६।९।९२ राशिगतैः, लग्नात् ७।८।१२ ग्रहरहितेषु, औषधिभक्षणं शुभम् । जन्मनक्षत्रे **भैषज्यभक्षणमशुभम्** ।

रक्तमोक्षण (आपरेशन) मुहूर्त्तः—अश्वि. रो. मृ. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. अभि. श्र. श. नक्षत्रेषु, सू.मं.वृ. दिनेषु, शुभतिथिलग्नेषु शुभम्।

चिकित्सामुहूर्त्तः—अश्वि. रो. मृ. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. अभि. श्र. श. नक्षत्रेषु, सू. चं. मं. बृ. शु. दिनेषु, शुभतिथिलग्नेषु शुभा ।

उग्रकर्ममुहूर्त्तः—पूर्वा ३, भ. मघा, मू. ज्ये. आश्ले. आर्द्रा. नक्षत्रेषु, मं. श. दिनेषु, १।८।१०।११ लग्नेषु, १।३।४।५।९।१०।११।१४ तिथिषु शुभम् ।

मोटरबससाइकिलयानादिचालनमुहूर्त्तः—अश्वि. मृ. पुन. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. रे. नक्षत्रेषु, च. मं. वृ. शु. श. दिनेषु १।२।३।५।६।७।८।१०। ११।१३।१५ तिथिषु, चतुर्थेशे बलयुक्ते १।४।५।७।९।१० स्थिते, लग्नेशदशमेश—नवमेशैरपि १।४।५।७।९।१० गतैर्बलयुक्तैः, पापैः ३।६।११ स्थानस्थितैः यानादिचालनं शुभम् ।

राशाना स्वामिचरादिसंज्ञाघातादिचक्रम्

राशि	मे	व	मि	क	सि	क	तु	व.	ध	म	कु	मी
पति	म	शु	बु	च	सू	बु	शु	मं	व	श	श	व
संज्ञा	चर	स्थि	द्वि	चर	स्थि	द्वि	चर	स्थि	द्वि	चर	स्थि	द्वि
प्रकृ	पित्त	वात	सम	कफ	पित्त	वा	स	क	पि	वा	सम	क
आकृ	ह्रस्व	ह्र	सम	सम	दीर्घ	दी	दी	दी	स	स	ह	स
जाति	क्ष	वै	शू	वि	क्ष	वै	शू	वि	क्ष	वै	शू	वि
घाना	का	मार्ग	आषा	पौ	ज्ये.	भा.	मा.	आ.	श्रा.	वै.	चै.	फा
घाति	नन्दा	पूर्णा	भद्रा	भद्रा	जया	पूर्णा	रिक्ता	नन्दा	जया	रिक्ता	जया	पूर्णा
दि	र.	श.	चं.	बु.	श	श	ब.	शु	शु	मं	व.	शु
नक्ष.	म.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	म.	रो.	आ.	श्ले
योग	वि	सु	प	व्या	ध	शु.	शुक्ल	व्य	वज्र	वै	गं	वज्र
कर	बव	श	च	ना	बव	कौ	तै	ग	तै	श	वणि	वि
प्रहर	१	४	३	१	१	१	४	१	१	४	३	४
पु.च.	१	५	६	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
स्त्रीच	१	८	७	६	४	३	६	२	१०	११	५	१२

ग्रहाणामुच्चादिबोधकचक्रम्

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	व.	शु.	श.	रा	के
उच्च	मे १०	व३	म२८	कं१५	क५	मी२७	तु२०	मि	ध
नीच	तु १०	व श्चि३	क२८	मी१५	म५	कं२७	मे२०	ध	मि
मूत्रि	सि	व ष	मे	कं	ध	तु	कु	कु	सि
जातिः	क्ष	वै	क्ष	शू	ब्रा	ब्रा	चा	चा	चा
दिक्	पू	वा	द	उ	ई	अ	प	नै	नै
भाग्य	२२वर्ष	२४व	२८व	३२व	१६व	२५व	३६व	४२व	४८व
प्रकृतिः	पित्त	कफ	पित्त	सम	सम	वात	वात	वात	वात
पुसंज्ञा	पु	स्त्री	पु	नपुं	पु	स्त्री	नपुं	नपुं	पु
आकृति	ह	ह	ह	ह	दीर्घ	ह.	दी	दी	दी

होराचक्रम्

राशि	मे	व.	मि	क	सि	कं.	तु	व.	ध	म	कुं	मी
१५अं	सू	च	सू	च	सू	च	सू	च	सू	च	सू	च
३०अं	च	सू	च	सू	च	सू	च	सू	च	सू	च	सू

द्रेष्काणचक्रम्

राशिः	मे	व	मि	क	सि	कं	तु	व	ध	म	कु	मी
१०अं	मं	शु.	बु	च	सु	बु	शु	मं	व	श	श	व
२०अं	सू	बु	शु	मं	व	श	श	व	म	शु	बु	च
३०अं	व	श	श	व	मं	शु	बु	च	सू	बु	शु	मं

वर्षाज्ञानाय सप्तनाडीचक्रम्

शनिः	रवि	भौम	गुरुः	शुक्रः	बुधः	चन्द्र	स्वामी
कृ.	रो.	म.	आ.	पुन.	पु.	आश्ले	नक्षत्र
वि.	स्वा.	चि.	ह.	उफ.	पूफ	म.	नक्षत्र
अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा	उषा	अभि.	श्र.	नक्षत्र
भ	अ.	रे.	उभा	पूभा.	श.	ध.	नक्षत्र
चण्डा	वाता	वह्नि	सौम्या	नीरा	जला	अमता	संज्ञा

होरालग्नानयनम्—द्विघ्नेष्ट—नाड्यः पञ्चाप्ता यच्छेषञ्च पलीकृतम् । दशाप्तमंशास्ते योज्या रवौ होरोदयो भवेत् ।

त्रिविधायुर्बोधकचक्रम्

दीर्घायुः	मध्यमायुः	अल्पायुः
चरभे लग्नेशः चरभेऽष्टमेशः	चरभे लग्नेशः स्थिरभेऽष्टमेशः	चरभे लग्नेशः द्विस्वभेऽष्टमेशः
स्थिरभेलग्नेशः द्विस्वेऽष्टमेशः	स्थिरभेलग्नेशः चरभेऽष्टमेशः	स्थिरभेलग्नेशः स्थिरभेऽष्टमेशः
द्विस्वभेलग्नेशः स्थिरभेऽष्टमेशः	द्विस्वभेलग्नेशः द्विस्वभेऽष्टमेशः	द्विस्वभेलग्नेशः चरभेऽष्टमेशः

लग्नेशाष्टमेशयोरिव लग्नचन्द्राभ्यां (शनिचन्द्राभ्याम्) लग्नहोरालग्नाभ्या चायुर्निर्णयम् ।

ग्रहाणां धारणाय मणयः

सूर्यः	माणिक्य	गारनेट	विद्रुम
चन्द्रः	मुक्ता	मूनस्टोन	चांदी
कुजः	विद्रुम	मूंगा	मूंगा
बुधः	पन्ना	लीली	सोना
गुरु	पोखराज	सुनहला	मोती
शुक्रः	हीरा	स्फटिक	चांदी
शनिः	नीलमणि	यमुनियां	लौह
राहुः	गोमेद	लाजावर्त्त	लाजावर्त्त
केतुः	लहसुनिया	लाजावर्त्त	लाजावर्त्त

नवमांशचक्रम्

राशि	मे.सि ध.	वष कं.म	मि.तु कु.	क.व. मी.
३/२०	म.	श.	शु.	च.
६/४०	शु.	शं.	मं.	सू.
१०/०	वु.	व.	व.	बु.
१३/२०	च	म.	श.	शु.
१६/४०	सू.	शु.	श.	म.
२०/०	बु.	बु.	व.	व.
२३/२०	शु.	चं.	मं.	श.
२६/४०	म.	सू.	शु.	श.
३०/०	व.	बु.	बु.	व.

विषमराशौ त्रिंशांशचक्रम्		समराशौ त्रिंशांशचक्रम्	
अंशाः	मे.मि.सिं. तु.ध.कु.	अंशाः	व.क.कं. व.म.मी.
५अं.	म	५अं	शु
१०अं	श	१२अं.	बु
१८अं	व.	२०अं	व.
२५अं	बु.	१५अं	श
३०अं	शु.	३०अं	मं.

आयुर्विचारः

लग्नसप्तमयोरन्यतरस्थिते चन्द्रे लग्नचन्द्राभ्यामन्यथा शनिचन्द्राभ्यां, लग्नेशाष्टमेशाभ्यां, लग्नहोरालग्नाभ्याञ्चेति प्रकारत्रयेणायुर्निर्णयम् । प्रकारत्रयेप्येकरूपायुष्यागतं तदेव ग्राह्यम्। विभेदे प्रकारद्वयागतायुर्ग्राह्यम्, विषमे जन्मलग्ने द्वितीयेशाष्टमेशयोर्यो बली, समे जन्मलग्ने द्वादशेशषष्ठेशयोर्यो बली तस्य केन्द्रे स्थित्या दीर्घायुः, पणफरे मध्यायुः, आपोक्लिमे चाल्पायुः। इत्थमेवात्मकारकवशेनापि। १, ८ ईशयोः कारकेण सहैक्ये योगे वा मध्यायुरेव। विषमे जन्मलग्ने कारकस्तृतीये, समे जन्मलग्ने कारको यदि चैकादशे भवेत्तर्हि कारकायुषि केन्द्रे दीर्घायुः पणफरे मध्यमायुरापोक्लिमे चाल्पायुः। यदि लग्नेशाष्टमेशदशमेशाः केन्द्रत्रिकोणलाभगास्तदा दीर्घायुर्योगः। यदि लग्नेशः सूर्यस्य मित्रन्तदा दीर्घायुर्योगः, समश्चेन्मध्यमायुर्योगः, शत्रुस्तदाऽल्पायुर्योगः। पूर्वोक्तचक्र द्वारा प्रकारत्रयेण दीर्घायुर्योगे प्राप्ते १२० वर्षाणि, प्रकारद्वयेन १०८ वर्षाणि, प्रकारेणैकेन ९६ वर्षाणि आयुः। एवमेव मध्यायुष्यपि प्रकारत्रयादिवशेन क्रमेश ८०, ७२, ६४, वर्षाण्यायुः। अल्पायुष्यपि ४०, ३६, ३२ वर्षाण्यायुरिति ।

आयुःस्थानमारकादिस्थानञ्च—अष्टमञ्च तृतीयञ्च लग्नादायुरुदाहृतम्। द्वितीयं सप्तमञ्चैव मारकस्थानमुच्यते। क्वचित् षष्ठाष्टमव्ययेशदशास्वपि मारकसम्भवः। मारके मारकान्तरमशुभम्, परस्परं षष्ठाष्टमेशयोर्दशान्तर्दशा न शुभा, लग्नेशपञ्चमेशनवमेशानां दशा शुभा, त्रिषडायेशानां च पापाख्या। व्ययद्वितीयेशयोर्दशा स्थानान्तरानुगुण्येण साहचर्याद्वा फलदा। चतुर्थेशसप्तमेशदशमेशानां दशा मध्यफलदा स्थानान्तरवशेन शुभाशुभफलप्रदा च। अष्टमेशदशा पापफलदा, परं स्थानान्तरशुभाशुभवशेन शुभपरमाशुभफलदेति।।

द्वादशांशज्ञानम्—प्रत्येकस्मिन् राशौ १२ द्वादशांशेशास्तत्र प्रतिद्वादशांशमानं २।३० अंशात्मकं भवति। द्वादशांशेशाः स्वराशित एव भवन्ति ।

कारकग्रहाः—ग्रहेषु सर्वाधिकांशवानात्मकारकस्तन्न्यूनांशक्रमेणामात्य–भ्रात मात पित पुत्रज्ञातिकारकाः ज्ञेयाः । अंशसाम्ये कलाधिक्यं, कलादिसाम्ये बलाधिक्यं ग्राह्यम्। **स्थिरकारकाः**—तन्वादिभावानां क्रमेण सूर्य–गुरु–कुज–चन्द्रगुरु–गुरु–भौम–शुक्र–शनि–गुरु–बुध–शुक्र–शनयः स्थिरकारकाः भवन्ति ।

स्वर्णादिचरणकजन्मज्ञानम्—जन्मकाले जन्मलग्नाच्चन्द्रे १।६।११ स्थिते स्वर्णपादे, २।५।९ स्थिते रजतपादे, ३।७।१० स्थिते ताम्रपादे, ४।८।१२ स्थिते च लौहपादे

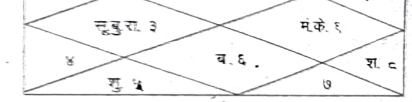
श्रावणकृष्णपक्षः

शकाब्दः १६४०, संवत् २०७५, सन् १४२६ साल, दि. २८।७।१८ ई. तः दि. ११।८।१८ ई. यावत्।
शुद्धः, वर्षर्तुः, सौम्यगोलः, याम्यायनम्, पश्चिमे कालः।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ श.	५३।२३	रा. २।४०	श्र. ५४।५५	रा. ३।१७	प्री. १८।४४	बा. २०।५४	मकर	अहो.	३।१०।५६।२७	३३।२४	५।१६	६।४१	६	१२	२८
२ र.	५७।५०	रा. ४।२८	ध. ६०।००	अहो.	आ. २०।११	तै. २५।३६	म. २७।५५	दि. ४।३०	३।११।५६।३७	३३।२०	५।२०	६।४०	७	१३	२६
३ च.	६०।००	अहो.	ध. ०।५४	प्रा. ५।४३	सौ. २१।६	व. २६।४३	कुम्भ	अहो.	३।१२।५३।४७	३३।१७	५।२१	६।३६	८	१४	३०
३ मं.	१।३६	प्रा. ५।५६	शत. ६।०८	दि. ७।४८	शो. २१।२४	वि. १।३६	कुं. ५४।१३	रा. ३।२	३।१३।५०।५७	३३।१४	५।२१	६।३६	६	१५	३१
४ बु.	४।०६	दि. ७।०२	पूभा. १०।१४	दि. ६।२८	अग. २०।४७	बा. ४।६	मीन	अहो.	३।१४।४८।०७	३३।११	५।२२	६।३८	१०	१६	१
५ ब.	५।३८	दि. ७।३७	उभा. १३।१६	दि. १०।४०	सु. १६।१३	तै. ५।३८	मीन	अहो.	३।१५।४५।१६	३३।०८	५।२२	६।३८	११	१७	२
६ शु.	५।४७	दि. ७।४२	रे. १४।५८	दि. ११।२२	ध. १६।३८	व. ५।४७	मी. १४।५८	दि. ११।२२	३।१६।४२।२५	३३।०५	५।२३	६।३७	१२	१८	३
७ श.	४।४०	दि. ७।१६	अ. १५।२७	दि. ११।३५	शू. १३।२	ब. ४।४०	मेष	अहो.	३१।१७।३६।३४	३३।०२	५।२४	६।३६	१३	१६	४
८ र.	२।२०	दि. ६।२०	भ. १४।४५	दि ११।१८	गं. ८।२६	कौ. २।२०	मे. २६।१६	सं. ५।८	३।१८।३६।५२	३२।५६	५।२४	६।३६	१४	२०	५
१० चं.	५४।४१	रा. ३।१७	कृ. १३।२	दि. १०।३८	व. ३।५	व. २६।४६	वृष	अहो.	३।१६।३४।१०	३२।५६	५।२५	६।३५	१५	२१	६
११ मं.	४६।३६	रा. १।१५	रो. १०।२६	दि. ६।३७	व्या. ५०।१६	ब. २२।८	व. ३८।५१	रा. ८।५७	३।२०।३१।२८	३२।५३	५।२५	६।३५	१६	२२	७
१२ बु.	४३।५७	रा. ११।१	म. ७।१३	दि. ८।१६	ह. ४३।७	कौ. १६।४६	मिथुन	अहो.	३।२१।२८।४५	३२।५०	५।२६	६।३४	१७	२३	८
१३ ब.	३७।५७	रा. ८।३८	आ. ३।२५	दि. ६।४६	व ३५।३५	ग. १०।५७	मि. ४५।२४	रा. ११।३७	३।२२।२६।०२	३२।४७	५।२७	६।३३	१८	२४	६
१४ शु.	३१।४७	सं. ६।१०	पु. ५५।६	रा. ३।२६	सि. २७।५६	वि. ४।५२	कर्क	अहो.	३।२३।२३।१६	३२।४४	५।२७	६।३३	१६	२५	१०
३० श.	२५।३६	दि. ३।४२	श्ले. ५१।१	रा. १।५२	व्य. २०।१६	ना. २५।३६	क. ५१।१	रा. १।५२	३।२४।२०।३६	३२।४२	५।२८	६।३२	२०	२६	११

पंचकारंभो रात्रौ घं. ३।१७ उ., पूर्वा विना यात्रा श्रवणायां, श्रावणे कर्जयेच्छाकम्।
।।००।।
सोमव्रतं, **गृहारंभः**, पश्चिमयात्रा धनिष्ठायां, त्र्यहो जन्मदिनकृत्यं, म. २६।४३ उपरि।
गणाधिप ४ व्रतं, पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे, भ. १।३६ यावत्।
अगस्त ८, कन्यायां शुक्रः ६।४७, पश्चिमयात्रा पञ्चम्यां पूर्वभाद्रे।
मौना ५, नाग ५, मनसादेव्युत्थापनं पूजनञ्च, **मधुश्रावणीपूजारंभः**, द.ति. ५।३८ उपरि।
आश्लेषायां रविः ४४।०० पुंस्त्रीचंचंयोगो मेषलग्नं शृगालवाहनं वातानाडीपतिस्सूर्यस्तेन वातातपखण्डवृष्टियोगः(×)
पूर्वा विना यात्राश्विन्याम्। (×) **पञ्चकान्तो** दिवा घं. ११।२२ उपरि, द.ति. ५।४७ या., गं.२।५८ उ.१७।५८ या., म.५।४७ उ.३५।१४ यावत्।
नवमीदं. ५६।३७, **इन्द्रसावर्णिमन्वादिः**।
सोमव्रतं, दक्षिणयात्रा रोहिण्यां, ध्रुवदं. ५३।५८, म. २६।४७ उ. ५४।४१ यावत्।
कामदा ११ व्रतं सर्वेषां, उत्तरां विना यात्रा द्वादश्यां, पूर्वोदितो बुधः ३०।३८।
दूर्वादलेन पारणं, उत्तरां विना यात्रा मृगशिरसि।
पुनर्वसु दं. ५५।५५, **प्रदोष १३-१४ व्रतं**, भ. ३७।५७ उपरि।
पश्चिमां विना यात्रा चतुर्दश्यां, भ. ४।५२ यावत्।

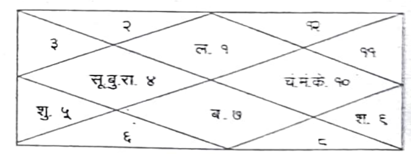
७ शनौ वल्ली ८।३६।२४।३०
अयनांशाः २२।४७।२२



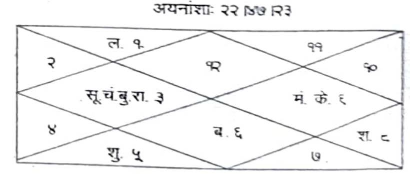
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	व.अं.	मि.अं.	क.अं.	सि.अं.	कं.अं.	तु.अं.	व.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
१ श.	६।४।३६।३६	३।१७।५५।१७	६।२०।५२।५६	४।२६।३१।४८	८।६।४१।३१	६।१३।५७।१७	४६।४२	०।२४	२।२०	४।३३	६।५१	६।०७	११।१२	१३।३६	१५।५६	१८।०१	१६।४७	२१।१८	२२।४७
२ र.	६।४।२१।१५	३।१८।०६।५१	६।२०।५६।४२	४।२७।३३।१७	८।६।३८।१२	६।१३।५४।०६	४६।४०	०।२०	२।१६	४।२६	६।४७	६।०३	११।१८	१३।३५	१५।५२	१७।५७	१६।४३	२१।१४	२२।४३
३ चं.	६।४।५।५१	३।१७।२४।२५	६।२१।००।२८	४।२८।३४।४६	८।६।३४।५३	६।१३।५०।५५	४६।३८	०।१६	२।१२	४।२५	६।४३	८।५६	११।१४	१३।३१	१५।४८	१७।५३	१६।३६	२१।१०	२२।३६
३ मं.	६।३।५०।२७	३।१६।३८।५६	६।२१।०४।१३	४।२६।३६।१५	८।६।३१।३४	६।१३।४७।४४	४६।३६	०।१२	२।०८	४।२१	६।३६	८।५५	११।१०	१३।२७	१५।४४	१७।४६	१६।३५	२१।०६	२२।३५
४ बु.	६।३।३५।४	३।१५।५३।३३	६।२१।०७।५८	५।००।३७।४३	८।६।२८।१५	६।१३।४४।३३	४६।३४	०।०८	२।०४	४।१७	६।३५	८।५१	११।०६	१३।२३	१५।४०	१७।४५	१६।३१	२१।०२	२२।३१
५ ब.	६।३।१६।४१	३।१५।०८।०७	६।२१।११।४३	५।०१।३६।११	८।६।२४।५६	६।१३।४१।२२	४६।३३	०।०४	२।००	४।१३	६।३१	८।४७	११।०२	१३।१६	१५।३६	१७।४१	१६।२७	२०।५८	२२।२७
६ शु.	६।३।४।१८	३।१४।२२।४१	६।२१।१५।२८	५।०२।४०।३६	८।६।२१।३७	६।१३।३८।१२	४६।३२	०।०१	१।५७	४।१०	६।२८	८।४४	१०।५६	१३।१६	१५।३३	१७।३८	१६।२४	२०।५५	२२।२४
७ श.	६।२।४८।५५	३।१३।३७।१६	६।२१।१६।१३	५।०३।४२।०७	८।६।१८।१६	६।१३।३५।०२	४६।३१	२३।५७	१।५३	४।०६	६।२४	८।४०	१०।५५	१३।१२	१५।२६	१७।३४	१६।२०	२०।५१	२२।२०
८ र.	६।२।३७।१५	३।१३।२१।१२	६।२१।२३।५८	५।०४।४१।०२	८।६।१५।३१	६।१३।३१।५१	४६।२६	२३।५३	१।४६	४।०२	६।२०	८।३६	१०।५१	१३।०८	१५।२५	१७।३०	१६।१६	२०।४७	२२।१६
१० च.	६।२।२५।१५	३।१३।०५।०८	६।२१।२८।३५	५।०५।३६।५७	८।६।१२।४३	६।१३।२८।४०	४६।२७	२३।४६	१।४५	३।५८	६।१६	८।३२	१०।४७	१३।०४	१५।२१	१७।२६	१६।१२	२०।४३	२२।१२
११ मं.	६।२।१३।२६	३।१२।४६।०४	६।२१।३३।१५	५।०६।३८।५२	८।६।०६।५६	६।१३।२५।२६	४६।२५	२३।४५	१।४१	३।५४	६।१२	८।२८	१०।४३	१३।००	१५।१७	१७।२२	१६।०८	२०।३६	२२।०८
१२ बु.	६।२।१।३७	३।१२।३३।००	६।२१।३७।५५	५।०७।३७।४७	८।६।०७।०६	६।१३।२२।१८	४६।२४	२३।४१	१।३७	३।५०	६।०८	८।२४	१०।३६	१२।५६	१५।१३	१७।१८	१६।०४	२०।३५	२२।०४
१३ ब.	६।१।४६।४८	३।१२।१६।५६	६।२१।४२।३५	५।०८।३६।४२	८।६।०४।२२	६।१३।१६।०७	४६।२३	२३।३७	१।३३	३।४६	६।०४	८।२०	१०।३५	१२।५२	१५।०६	१७।१४	१६।००	२०।३१	२२।००
१४ शु.	६।१।३७।५६	३।१२।००।५२	६।२१।४७।१५	५।०६।३५।३६	८।६।०१।३५	६।१३।१५।५७	४६।२२	२३।३३	१।२६	३।४२	६।००	८।१६	१०।३१	१२।४८	१५।०५	१७।१०	१८।५६	२०।२७	२१।५६
३० श.	६।१।२६।१०	३।१२।०६।०७	६।२१।५१।५५	५।१०।३४।३०	८।५।५८।४८	६।१३।१२।४७	४६।२१	२३।३०	१।२६	३।३६	५।५७	८।१३	१०।२८	१२।४५	१५।०२	१७।०७	१८।५३	२०।२४	२१।५३

१ शनौ वल्ली ८।३६।२४।२३
अयनांशाः २२।४७।२१



३० शनौ वल्ली ८।३६।२४।३७
अयनांशाः २२।४७।२३



विविधविषयाः—श्रावणकृष्णपञ्चम्यां मनसादेव्या उत्थापनं पूजनञ्च कार्यम्। सोमव्रतं—सोमवारे व्रतं कार्यं श्रावणे वै यथाविधि। शक्तावुपोषणं कार्यमथवा निशिभोजनम्॥ **प्रदक्षिणविधिः**—एकं चण्ड्यां रवौ सप्त त्रिर्दद्याच्च विनायके। चत्वारि केशवे दद्यात् शिवस्यार्द्धप्रदक्षिणम्। आसन्नप्रसवा नारी जलपूर्णघटं यथा। उद्वहन्ती शनैर्याति तथा कुर्यात्प्रदक्षिणाम्। **मांसाभक्षणफलं महाभारते**—मासि मास्यश्वमेधेन यो यजेत्तु शतं समाः। न खादति च यो मांसं सममेतद्युधिष्ठिर। यस्तु वर्षशतं पूर्णं तपस्तप्येत् सुदारुणम्। यश्च वै वर्जयेन्मांसं समौ तौ न च संशयः॥ कस्यापि कृतव्रतस्योद्यापनावश्यकता, **नन्दिपुराणे**—कुर्यादुद्यापनं तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत्तु तद्व्रतं निष्फलं भवेत्। **श्रेष्ठव्रतानि**—ब्रह्मचर्यं तथा शौचं सत्यमामिषवर्जनम्। व्रतेष्वेतानि चत्वारि वरीयानीति निश्चयः। **वृक्षारोपणमन्त्रः**—वसुधेति च शीतेति पुण्यदेति धरेति च। नमस्ते सुभगे देवि द्रुमोऽयं वर्धतामिति।

ग्रहस्थितिः—वक्री पूर्वोदितौ कुजशनी, वक्री पश्चिमास्तो बुधः ११तः पूर्वोदितः ३० तो मार्गी, मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः।

वातावरणम्—पक्षादितः पञ्चमीं यावद् वातमेघचारखण्डवृष्टयस्ततो द्वादशीं यावन्मेघच्छायावातातपादयस्ततः पक्षान्तं यावन्मेघच्छायाखण्डवृष्टियोगः।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः		
तिथ्यादि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ र.	२६।२६	दि. ११।१८	म. ४३।१५	रा. १२।२२	व्यती. १२।५०	व. २६।२६	सिंह	अहो.	३।२५।१८।०६	३२।३८	५।२८	६।३२	२१	२७	१२
२ च.	१९।०८	दि. ९।१८	पूफा. ४३।५६	रा. ११।०५	व. ५।३७	कौ. १९।०८	सिं. ५८।२०	रा. ४।४६	३।२६।१५।३६	३२।३५	५।२६	६।३१	२२	२८	१३
३ मं.	६।११	दि. ६।१०	उफा. ४१।२४	रा. १०।०४	सि. ५२।५३	व. ६।११	कन्या	अहो.	३।२७।१३।०५	३२।३२	५।३०	६।३०	२३	२९	१४
४ बु.	५।०१	दि. ७।३०	ह. ३६।४१	रा. ६।२२	सा. ४७।३२	वि. ५।०१	कन्या	अहो.	३।२८।१०।३४	३२।२९	५।३०	६।३०	२४	३०	१५
५ ब.	१।५२	प्रा. ६।१६	चि. ३८।५६	रा. ६।०७	शु. ४३।०१	बा. १।५२	क. ६।२०	दि. ६।१५	३।२९।०८।०३	३२।२६	५।३१	६।२९	२५	३१	१६
७ शु.	५८।३८	रा. ५।०२	स्वा. ३३।२८	रा. ६।१८	शु. ३६।२७	र. २६।३६	तुला	अहो.	४।००।०५।३२	३२।२३	५।३१	६।२९	२६	१	१७
८ श.	५६।१०	रा. ५।१२	वि. ४१।१०	रा. १०।००	ब्र. ३६।५३	वि. २८।५६	तु. २५।४५	दि. ३।५०	४।१।०३।०१	३२।२०	५।३२	६।२८	२७	२	१८
९ र.	६०।००	अहो.	अनु. ४४।०९	रा. ११।१३	ऐं. ३५।२२	बा. ३०।०२	वृश्चिक	अहो.	४।२।००।४२	३२।१६	५।३३	६।२७	२८	३	१९
९ च.	०।५५	प्रा. ५।५५	ज्ये. ४८।१७	रा. १२।५२	वै. ३३।४०	कौ. ०।५५	वृ. ४८।१७	रा. १२।५२	४।२।५८।२२	३२।१३	५।३३	६।२७	२९	४	२०
१० मं.	३।४२	दि. ७।०३	मू. ५३।२१	रा. २।५८	वि. ३४।५५	ग. ३।४२	धनु	अहो.	४।३।५६।०२	३२।१०	५।३४	६।२६	३०	५	२१
११ बु.	७।२५	दि. ८।३७	पूषा. ५६।२६	रा. ५।२१	प्री. ३५।४६	वि. ७।२५	धनु	अहो.	४।४।५३।४२	३२।०७	५।३५	६।२५	३१	६	२२
१२ ब.	१२।१६	दि. १०।२६	उषा. ६०।००	अहो.	आ. ३७।११	बा. १२।१६	ध. १६।०२	दि. १२।००	४।५।५१।२२	३२।०४	५।३५	६।२५	१	७	२३
१३ शु.	१७।१६	दि. १२।२२	उषा. ५।५२	दि. ७।५७	सौ. ३८।४५	तै. १७।१६	मकर	अहो.	४।६।४९।०२	३२।०१	५।३६	६।२४	२	८	२४
१४ श.	२२।२१	दि. २।२२	श्र. १२।२२	दि. १०।३३	शो. ४०।११	व. २२।२१	म. ४५।२५	रा. ११।४६	४।७।४६।४२	३१।५८	५।३६	६।२४	३	९	२५
१५ र.	२६।५८	दि. ४।२४	ध. १८।२८	दि. १।००	अ. ४१।१०	व. २६।५८	कुम्भ	अहो.	४।८।४४।३७	३१।५४	५।३७	६।२३	४	१०	२६

श्रावणशुक्लपक्षः

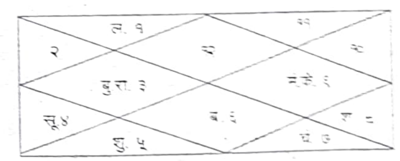
शकाब्दः १९४०, संवत् २०७५, सन् १४२६ साल, दि. १२।८।२०१८ ई. तः दि. २६।८।२०१८ ई. यावत्।
शुद्धः, ७ तो शुद्धः, वर्षर्तुः, सौम्यगोलः, याम्यायनम्, पश्चिमे कालः, ७ तः उत्तरे कालः।

अं.	
१२	चन्द्रदर्शनमु. ३० सौम्यशृंगफलं साम्यं **दोलोत्सवारम्भः**, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।
१३	शिवदं ५३।१६, सोमव्रतं, उत्तरयात्रा तृतीयापूर्वफल्गुन्योः, (२–३) एको। (×) लाजादिभिः पूज्याः, द.ति. १।५२ उ. ५६।१४ यावत्।
१४	**मधुश्रावणीव्रतपूजने,** गणेश ४व्रतं, पूर्वदक्षिणयात्रा हस्ते, म. ३७।०६ उपरि।
१५	**द्विसप्ततिस्वतन्त्रतादिवसः,** राष्ट्रियध्वजोत्तोलनपूर्वकराष्ट्रगानं, **गृहप्रवेशश्चित्रायां,** पूर्वदक्षिणयात्रा पञ्चम्यां, म. ५।०१ यावत्।
१६	षष्ठीदं ५७।५२, मासान्तः, **नाग५,** नागपूजनं लघुपद्मनामानागराजः श्वेतवर्णो द्वारमुभयतो गोमयनिर्मिता नागाः सिन्दूरदूर्वादुग्ध (×)
१७	**मघायां सिंहे रविः** ४० ।५६ मु. ४५ फलं समर्घं **विष्णुपदीसंक्रान्तिपुण्यकालो** घं. १२ उपरि दिने, **पुण्याहः,** स्त्रीनपुंसूचयोगो मेषलग्न (+)
१८	मासादिः, भ. २८ ।५६ या। (+) महिषवाहनं चण्डानाडीपतिश्शनिस्तेन वातातपखण्डवृष्टियोगः, शीतला ७, शीतलापूजा, **तुलसीदासजयन्ती,** म. ५८ ।४८ उपरि।
१९	**रविव्रतं,** त्र्यहोजन्मदिनकृत्यं।
२०	**सोमव्रतं,** गं. ४२ ।१७ उ. ५७ ।१७ या., द.ति. ० ।५५ उपरि।
२१	द.ति. ३ ।४२ या., भ. ३५ ।३६ उपरि।
२२	**पुत्रदा११ व्रतं** सर्वेषां, पञ्चदिवसीयदोलोत्सवारंभः, पूर्वयात्रा पूर्वाषाढे, म. ७ ।३५ यावत्।
२३	श्रीधर१२, दूर्वादलेन पारणं, **प्रदोष १३ व्रतं,** मार्गी कुजः २८ ।५६
२४	**प्रदोष १४व्रतं,** पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायां, (१४) एको.।
२५	**पञ्चकारंभो** दिवा घं. १० ।३३ उपरि, पूर्वां विना यात्रा श्रवणायां, म. २२ ।२१ उ. ५४ ।४० यावत्।
२६	**श्रावणी १५** स्नानदानादिः, उपाकर्म, हयग्रीवावतारः, **संस्कृतदिवसः,** दोलोत्सवान्तः, **रक्षाबन्धनं, रविव्रतं,** (१५) एको.।

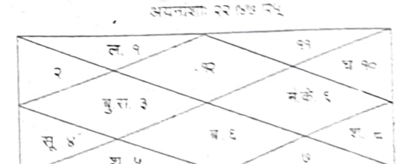
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ र.	६।१।१९।२७	३।१२।३६।२७	६।२१।५७।४३	५।११।३०।५६	८।५।५६।४३	६।१३।०६।३६	४६।१९	२३।२७	१।२३	३।३६	५।५४	८।१०	१०।२५	१२।४२	१४।५६	१७।०४	१८।५०	२०।२१	२१।५०
२ च.	६।१।१२।४४	३।१३।०६।४७	६।२२।०३।३१	५।१२।२७।२१	८।५।५४।३८	६।१३।०६।२५	४६।१७	२३।२३	१।१९	३।३२	५।५०	८।०६	१०।२१	१२।३८	१४।५५	१७।००	१८।४६	२०।१७	२१।४६
३ मं.	६।१।०६।०१	३।१३।३७।०७	६।२२।०६।१६	५।१३।२३।४६	८।५।५२।३३	६।१३।०३।१४	४६।१५	२३।१९	१।१५	३।२८	५।४६	८।०२	१०।१७	१२।३४	१४।५१	१५।५६	१८।४२	२०।१३	२१।४२
४ बु.	६।०।५९।१९	३।१४।०७।२७	६।२२।१५।०७	५।१४।२०।११	८।५।५०।२८	६।१३।००।०३	४६।१३	२३।१५	१।११	३।२४	५।४२	७।५८	१०।१३	१२।३०	१४।४७	१६।५२	१८।३८	२०।०९	२१।३८
५ ब.	६।०।५२।३७	३।१४।३७।४७	६।२२।२०।५४	५।१५।१६।३६	८।५।४८।२४	६।१२।५६।५२	४६।१२	२३।११	१।०७	३।२०	५।३८	७।५४	१०।०९	१२।२६	१४।४३	१६।४८	१८।३४	२०।०५	२१।३४
७ शु.	६।०।४५।५५	३।१५।०८।०७	६।२२।२७।३१	५।१६।१३।०१	८।५।४६।२०	६।१२।५३।४२	४६।११	२३।०७	१।०३	३।१६	५।३४	७।५०	१०।०५	१२।२२	१४।३९	१६।४४	१८।३०	२०।०१	२१।३०
८ श.	६।०।३९।१३	३।१५।३८।२७	६।२२।३२।२८	५।१७।०९।२६	८।५।४४।१६	६।१२।५०।३२	४६।१०	२३।०४	१।००	३।१३	५।३१	७।४७	१०।०२	१२।१९	१४।३६	१६।४१	१८।२७	१९।५८	२१।२७
९ र.	६।०।३९।१०	३।१६।१०।५७	६।२२।३६।३६	५।१८।०१।३६	८।५।४२।४५	६।१२।४७।२१	४६।०८	२३।००	०।५६	३।०६	५।२७	७।४३	९।५८	१२।१५	१४।३२	१६।३७	१८।२३	१९।५४	२१।२३
९ च.	६।०।३२।५१	३।१७।४३।२७	६।२२।४६।५०	५।१८।५३।४६	८।५।४१।१४	६।१२।४४।१०	४६।०६	२२।५६	०।५२	३।०५	५।२३	६।३६	९।५४	१२।११	१४।२८	१६।३३	१८।१९	१९।५०	२१।१९
१० मं.	६।०।३०।४८	३।१८।४५।५६	६।२२।५४।०१	५।१९।४५।५६	८।५।३९।४३	६।१२।४०।५६	४६।०४	२२।५३	०।४९	३।०२	५।२०	७।३६	९।५१	१२।०८	१४।२५	१६।३०	१८।१६	१९।४७	२१।१६
११ बु.	६।०।३०।२४	३।१९।४८।२५	६।२३।०१।११	५।२०।३८।०६	८।५।३८।१२	६।१२।३७।४८	४६।०२	२२।४९	०।४५	२।५८	५।१६	७।३२	९।४७	१२।०४	१४।२१	१६।२६	१८।१२	१९।४३	२१।१२
१२ ब.	६।०।३०।३२	३।२०।५०।५४	६।२३।०८।२१	५।२१।३०।१६	८।५।३६।४२	६।१२।३४।३७	४६।०१	२२।४५	०।४१	२।५४	५।१२	७।२८	९।४३	१२।००	१४।१७	१६।२२	१८।०८	१९।३९	२१।०८
१३ शु.	६।०।३१।४८	३।२१।५३।२३	६।२३।१५।३१	५।२२।२२।२६	८।५।३५।१२	६।१२।३१।२६	४६।००	२२।४२	०।३८	२।५१	५।०६	७।२५	९।४०	११।५७	१४।१४	१६।१९	१८।०५	१९।३६	२१।०५
१४ श.	६।०।३३।३२	३।२२।५५।५२	६।२३।२२।४१	५।२३।१४।३५	८।५।३३।४२	६।१२।२८।१६	४५।५६	२२।३८	०।३४	२।४७	५।०५	७।२१	९।३६	११।५३	१४।१०	१६।१५	१८।०१	१९।३२	२१।०१
१५ र.	६।०।३८।२७	३।२४।१९।०३	६।२३।३०।४०	५।२४।०२।०१	८।५।३३।०२	६।१२।२५।०५	४५।५७	२२।३४	०।३०	२।४३	५।०१	७।१७	९।३२	११।४६	१४।०६	१६।११	१७।५७	१९।२८	२०।५७

८ शनौ वल्ली ८।३६।२६।४४
अयनांशाः २२।५३।२४



१४ शनौ वल्ली ८।३६।२६।५१
अयनांशाः २२।५३।२५



विविधविषयाः—पञ्चम्यां **नागपूजनं**—श्रावणे मासि पञ्चम्यां कृष्णपक्षेऽथवा सिते। द्वारस्योभयतो लेख्या गोमयेन विषोल्बणाः॥ पूजयेद्विधिवद्वीर दधिदूर्वांकुरैः कुशैः। गन्धपुष्पोपहारैश्च ब्राह्मणानाञ्च तर्पणैः॥ ये तस्यां पूजयन्तीह नागान् भक्तिपुरस्सराः। न तेषां सर्पतो वीर भयं भवति कुत्रचित्। पञ्चम्यां तिक्ताम्लरसस्तेवन पुष्टिकरम्। **शकुनम्**—श्रावणशुक्लपञ्चम्यां दक्षिणपश्चिमवायौ दुर्भिक्षमन्यथा सुभिक्षम्। नभसि शुक्लदलेऽम्बरसङ्कके रवितिथावुदयो रविचन्द्रयोः। भवति चेज्जलदैरिह संवृता वसुमती जलदा बहुतोयदाः। **रक्षाबन्धनमन्त्रः**-येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे माचल माचल। ग्रहयोगेन **वृष्टिविचारः**—बुधशुक्रमहीसूनुगुरवश्चैकराशिगाः। निःसंशयं तदा काले जायते वृष्टिरुत्तमा॥ समागमे ज्ञसितयोस्तथा च **गुरुशुक्रयोः । तथैव जीवबुधयोर्वृष्टि**स्यान्नात्र संशयः॥ **यदा भवन्ति सूर्यस्य ग्रहाः पृष्ठावलम्बिनः । पुरतो वा यदा यान्ति** तदा तेऽकार्णवा मही॥

ग्रहस्थितिः— वक्री पूर्वोदितः कुजः १२तो मार्गी, मार्गिणौ पूर्वोदितौ बुधगुरू, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, वक्री पूर्वोदितः शनिः।

वातावरणम्— प्रथमार्धान्तभागयोः मेघच्छायावातखण्डवृष्टयस्तन्मध्यभागे तापमेघचार-छिन्नवृष्टयः।

भाद्रकृष्णपक्षः

शकाब्दः १६४०, संवत् २०७५, सन १४२६ साल, दि. **२७।८।१८** ई. तः दि. ६।६।१८ ई. यावत्।
अशुद्धः, वर्षर्तुः, **सौम्यगोलः**, याम्यायनम्, उत्तरे कालः।

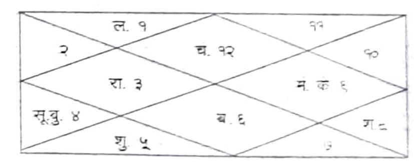
तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ चं.	३० ।४७	सं. ५।५७	शत. २३।५३	दि. ३।११	सु. ४१।३३	कौ. ३०।४७	कुम्भ	अहो.	४।६।४२।३१	३१।५०	५।३८	६।२२	५	११	२७
२ मं.	३३।२८	रा. ७।०२	पूभा. २८।१८	दि. ४।५८	ध. ४१।०१	तै. २।०७	कुं. १२।१२	दि. १०।३२	४।१०।४०।२५	३१।४६	५।३६	६।२१	६	१२	२८
३ बु.	३५।०७	रा. ७।४३	उभा. ३१।३५	सं. ६।१८	शू. ३६।३६	व. ४।१८	मीन	अहो.	४।११।३८।१६	३१।४२	५।४०	६।२०	७	१३	२६
४ ब.	३५।२२	रा. ७।४६	रे. ३३।३३	सं. ७।०५	गं. ३७।१३	ब. ५।१५	मी. ३३।३३	सं. ७।०५	४।१२।३६।१३	३१।३८	५।४०	६।२०	८	१४	३०
५ शु.	३४।२२	रा. ७।२६	अ. ३४।१६	सं. ७।२५	व. ३३।४६	कौ. ४।५२	मेष	अहो.	४।१३।३४।०७	३१।३४	५।४१	६।१६	६	१५	३१
६ श.	३२।०६	सं. ६।३४	भ. ३३।५१	सं. ७।१४	ध्रु. २६।२१	ग. ३।१६	मे. ४८।२८	रा. १।०५	४।१४।३२।०१	३१।३०	५।४२	६।१८	१०	१६	१
७ र.	२८।५३	दि. ५।१६	कृ. ३२।२०	सं. ६।३६	व्या. २४।०६	वि. ०।३१	वृष	अहो.	४।१५।३०।०८	३१।२६	५।४३	६।१७	११	१७	२
८ चं.	२४।४२	दि. ३।३७	रो. २६।५६	सं. ५।४४	ह. १८।०७	कौ. २४।४२	व. ५८।२४	रा. ५।०६	४।१६।२८।१५	३१।२२	५।४४	६।१६	१२	१८	३
९ मं.	१६।४२	दि. १।३७	म. २६।४६	दि. ४।२८	व. ११।२६	ग. १६।४२	मिथुन	अहो.	४।१७।२६।२२	३१।१८	५।४४	६।१६	१३	१६	४
१० बु.	१४।१०	दि. ११।२५	आ. २३।०६	दि. ३।०१	सि. ०४।१८	वि. १४।१०	मिथुन	अहो.	४।१८।२४।२६	३१।१४	५।४५	६।१५	१४	२०	५
११ ब.	८।१३	दि. ६।०३	पुन. १६।०६	दि. १।२८	वरी. ४६।१०	बा. ८।१३	मि. ५।०७	दि. ७।४६	४।१६।२२।३६	३१।१०	५।४६	६।१४	१५	२१	६
१२ शु.	२।०५	दि. ६।३७	पु. १४।५३	दि. ११।४४	प. ४१।२६	तै. २।०५	कर्क	अहो.	४।२०।२०।४३	३१।०७	५।४७	६।१३	१६	२२	७
१४ श.	५०।०३	रा. १।४८	श्ले. १०।४५	दि. १०।०५	शि. ३३।५०	वि. २३।०१	क. १०।४५	दि. १०।०५	४।२१।१८।४६	३१।०४	५।४७	६।१३	१७	२३	८
३० र.	४४।३३	रा. ११।३७	म. ०६।४६	दि. ८।३२	सि. २६।३२	च. १७।१८	सिंह	अहो.	४।२२।१७।११	३१।००	५।४८	६।१२	१८	२४	६

पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे प्रतिपदि, दधि भाद्रपदे त्यजेत्।
पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे।
कज्जली३ विशालाक्षीपूजनं, **विनायक** ४ व्रतं, बहुलापूजा, म. ४।१८ उ. ३५।०७ यावत्।
पञ्चकान्तः सायं घं. ७।०५ उपरि, मघायां सिंहे बुधः ५१।४६, गं. २१।३३ उ. ३६।३३ या., दक्षिणा विना यात्रा पञ्चम्याम्।
पूर्वफल्गुन्यां रविः ३१।०६ पुंस्त्रीसूचंयोगः कुम्भलग्नं गजवाहनं वातानाडीपतिः सूर्यस्तेन सुवृष्टियोगः, **पश्चिमां** विना यात्राश्विन्याम्।
सितम्बर ६, हलधर ६, म. ३२।०६ उपरि।
मोहरात्रिर्निशीथे शक्तिपूजनं, **जयन्तीव्रतं,** पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां, म. ०।३१ यावत्।
कृष्णाष्टमीव्रतं, श्रीकृष्णपूजनं, **रविव्रतं,** याम्यामगस्त्योदयः, दक्षिणयात्राष्टम्यां, तुलायां शुक्रः ३४।४६।
कृष्णाष्टमीव्रतपारणं, उत्तरां विना यात्रा नवम्यां, द.ति. १६।४२ उपरि, म. ४६।५६ उपरि।
व्यतीपातदं. ५२।३१, द.ति. १४।१० या., म. १४।१० या., पश्चिमदक्षिणयात्रा पुनर्वसौ, (१०—११) एको.।
जया ११व्रतं सर्वेषां, पश्चिमयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततो दक्षिणां विना यात्रा।
त्रयोदशीदं. ५३।५३, कुष्माण्डेन पारणं, **प्रदोष १३ व्रतं, द्वापरयुगादिः,** पश्चिमां विना यात्रा त्रयोदश्यां पुष्ये, गं. ५६।४५ उ., म. ५५।५८ उपरि।
प्रदोष १४ व्रतं, दुर्मर १४, भैरवपूजनं, **बाबागणिनाथजयन्त्युत्सवः,** गं. ४।४५ या., म. २३।०१ यावत्।
भाद्री ३० स्नानदानादिः, **कुशोत्पाटनं, रविव्रतं,** मार्गी शनिः ११।२३।

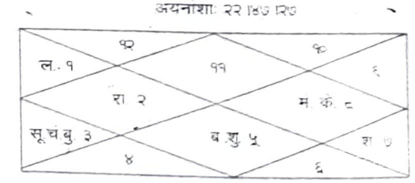
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	व. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	व. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ चं.	६।०।४३।२२	३।२५।४२।१४	६।२३।३८।३६	५।२४।४६।२७	८।५।३२।२२	६।१२।२१।५४	४५।५५	२२।३१	०।२७	२।४०	४।५८	७।१४	६।२६	११।४६	१४।०३	१६।०८	१७।५४	१६।२५	२०।५४
२ मं.	६।०।४८।१७	३।२७।०५।२५	६।२३।४६।३८	५।२५।३६।५३	८।५।३१।४२	६।१२।१८।४३	४५।५३	२२।२७	०।२३	२।३६	४।५४	७।१०	६।२५	११।४२	१३।५६	१६।०४	१७।५०	१६।२१	२०।५०
३ बु.	६।०।५३।११	३।२८।२८।३५	६।२३।५४।३७	५।२६।२४।१६	८।५।३१।०२	६।१२।१५।३२	४५।५१	२२।२३	०।१६	२।३२	४।५०	७।०६	६।२१	११।३८	१३।५५	१६।००	१७।४६	१६।१७	२०।४६
४ ब.	६।०।५८।०५	३।२६।५१।४५	६।२४।०२।३६	५।२७।११।४५	८।५।३०।२३	६।१२।१२।२१	४५।४६	२२।२०	०।१६	२।२६	४।४७	७।०३	६।१८	११।३५	१३।५२	१५।५७	१७।४३	१६।१४	२०।४३
५ शु.	६।१।०२।५६	४।१।१४।५५	६।२४।१०।३५	५।२७।५६।११	८।५।२६।४४	६।१२।०६।११	४५।४७	२२।१६	०।१२	२।२५	४।४३	६।५६	६।१४	११।३१	१३।४८	१५।५३	१७।३६	१६।१०	२०।३६
६ श.	६।१।०७।५३	४।२।३८।०५	६।२४।१८।३३	५।२८।४६।३७	८।५।२६।०५	६।१२।०६।०१	४५।४५	२२।१२	०।०८	२।२१	४।३६	६।५५	६।१०	११।२७	१३।४४	१५।४६	१७।३५	१६।०६	२०।३५
७ र.	६।१।१८।४०	४।४।१३।३०	६।२४।२७।३०	५।२६।२६।५६	८।५।२८।५६	६।१२।०२।५०	४५।४३	२२।०६	०।०५	२।१८	४।३६	६।५२	६।०७	११।२४	१३।४१	१५।४६	१७।३२	१६।०३	२०।३२
८ चं.	६।१।२६।२६	४।५।४८।५५	६।२४।३६।२६	६।०।०७।२१	८।५।२८।५४	६।११।५६।३६	४५।४१	२२।०५	०।०१	२।१४	४।३२	६।४८	६।०३	११।२०	१३।३७	१५।४२	१७।२८	१८।५६	२०।२८
९ मं.	६।१।४०।१२	४।७।२४।१६	६।२४।४५।२२	६।०।४७।४३	८।५।२८।४६	६।११।५६।२८	४५।३६	२२।०२	२३।५८	२।११	४।२६	६।४५	६।००	११।१७	१३।३४	१५।३६	१७।२५	१८।५६	२०।२५
१० बु.	६।१।५०।५८	४।८।५६।४३	६।२४।५४।१८	६।१।२८।०५	८।५।२८।४४	६।११।५३।१७	४५।३७	२१।५८	२३।५४	२।०७	४।२५	६।४१	८।५६	११।१३	१३।३०	१५।३५	१७।२१	१८।५२	२०।२१
११ ब.	६।२।०१।४४	४।१०।३५।०७	६।२५।०३।१४	६।२।०८।२७	८।५।२८।३६	६।११।५०।०६	४५।३५	२१।५४	२३।५०	२।०३	४।२१	६।३७	८।५२	११।०६	१३।२६	१५।३१	१७।१७	१८।४८	२०।१७
१२ शु.	६।२।१२।३०	४।१२।१०।३१	६।२५।१२।१०	६।२।४८।४६	८।५।२८।३४	६।११।४६।५६	४५।३३	२१।५१	२३।४७	२।००	४।१८	६।३४	८।४६	११।०६	१३।२३	१५।२८	१७।१४	१८।४५	२०।१४
१४ श.	६।२।२३।१६	४।१३।४५।५५	६।२५।२१।०६	६।३।२६।११	८।५।२८।२६	६।११।४३।४६	४५।३२	२१।४७	२३।४३	१।५६	४।१४	६।३०	८।४५	११।२	१३।१६	१५।२४	१७।१०	१८।४१	२०।१०
३० र.	६।२।३८।४७	४।१५।२८।२७	६।२५।३०।५३	६।४।०१।१७	८।५।२८।४७	६।११।४०।३५	४५।३०	२१।४३	२३।३६	१।५२	४।१०	६।२६	८।४१	१०।५८	१३।१५	१५।२०	१७।६	१८।३७	२०।०६

६ शनौ वल्ली ८।३६।२४।५८
अयनांशाः २२।४७।२६



१४ शनौ वल्ली ८।३६।२५।५
अयनांशाः २२।४७।२७



विविधविषयाः—भाद्रकृष्णाष्टम्यां **श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रतम्।** तत्र निशीथव्यापिन्यां जयन्तीव्रतमुदयव्यापिन्यां कृष्णाष्टमीव्रतम्। व्रतमिदं त्रिजन्मपापनाशनम्। तस्मादिदं व्रतं सर्वैरवश्यमेव कार्यमिति। भाद्रामायां **कुशोत्पाटनमन्त्रः**—कुशाग्रे वसते रुद्रः कुशमध्ये तु केशवः। कुशमूले वसेद् ब्रह्मा कुशान्मे देहि मेदिनि ।। कुशोऽसि कुशपुत्रोऽसि ब्रह्मणा निर्मितः पुरा। देवपितृहितार्थाय कुशमुत्पाटयाम्यहम् ।। **वर्ज्यकुशाः**—चितिदर्भाः पथिदर्भा ये दर्भा यज्ञभूमिषु। स्तरणासनपिण्डेषु षट्कुशान् परिवर्जयेत्।। **श्राद्धे निषिद्धवस्तूनि मात्स्ये**—कुष्माण्डं महिषीक्षीरं बिल्वपत्रमगद्विजाः। श्राद्धकाले समुत्पन्ने पितरो यान्त्यनाश्रिताः । **श्राद्धे प्रशस्तानि**—उच्छिष्टं शिवनिर्माल्यं वान्तं च मृतकर्पटम्। श्राद्धे सप्त पवित्राणि दौहित्रः कुतुपस्तिलाः।। **महिष्यादिप्रसवदोषः**—माघे बुधे च महिषी श्रावणे वडवा दिवा। सिंहे गावः प्रसूयन्ते स्वामिनो मृत्युदायकाः।। अतस्तच्छान्तिर्विधेयेति ।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजबुधगुरवः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, वक्री पूर्वोदितः शनिः ३० तो मार्गी।.

वातावरणम्—पक्षादितस्तृतीयां यावत् खण्डवृष्टियोगस्ततो नवमीं यावद् वातातपच्छिन्नवृष्टयस्ततः पक्षान्तं यावन्मेघचारवातवृष्टियोगः।

भाद्रशुक्लपक्षः

शकाब्दः १६४०, सवत् २०७५, सन् १४२६ साल, दि. १० ।०६ ।१८ ई. त. दि. २५ ।०६ ।१८ ई. यावत् ।
अशुद्धः ८ तः शुद्धः, वर्षर्तुः, ८तः शरद तुः, सौम्यगोलः, याम्यायनम्, उत्तरे कालः ।

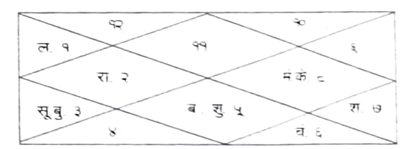
तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ च.	३६ ।३५	रा. ६ ।३६	पूफ. ०३ ।२३	दि. १० ।०७	सा. १६ ।४०	कि. १२ ।०४	सि. १७ ।४१	दि. १२ ।५३	४ ।२३ ।१५ ।३३	३० ।५६	५ ।४६	६ ।११	१६	२५	१०
२ म.	३५ ।३१	रा. ८ ।०२	उफ. ०० ।३६	प्रा. ०६ ।०४	शु. १३ ।२४	बा. ७ ।३३	कन्या	अहो.	४ ।२४ ।१३ ।५५	३० ।५२	५ ।५०	६ ।१०	२०	२६	११
३ बु.	३२ ।१६	रा. ६ ।४६	चि. ५७ ।४३	रा. ०४ ।५५	शु. ७ ।४८	तै. ३ ।५५	क. २८ ।१३	सं. ५ ।०७	४ ।२५ ।१२ ।१७	३० ।४८	५ ।५०	६ ।१०	२१	२७	१२
४ ब.	३० ।१२	सं. ५ ।५६	स्वा. ५७ ।५२	रा. ५ ।००	ब्र. ३ ।०३	व. १ ।१६	तुला	अहो.	४ ।२६ ।१० ।३६	३० ।४४	५ ।५१	६ ।०६	२२	२८	१३
५ शु.	२६ ।१७	सं. ५ ।३५	वि. ५६ ।१६	रा. ५ ।३४	वै. ५६ ।१५	बा. २६ ।१७	तु. ४३ ।५५	रा. ११ ।२६	४ ।२७ ।०६ ।०१	३० ।४०	५ ।५२	६ ।०८	२३	२६	१४
६ श.	२६ ।४०	सं. ५ ।४५	अनु. ६० ।००	अहो.	वि. ५४ ।१६	तै. २६ ।४०	वृश्चिक	अहो.	४ ।२८ ।०७ ।२३	३० ।३६	५ ।५३	६ ।०७	२४	३०	१५
७ र.	३१ ।२५	सं. ६ ।१६	अनु. ०१ ।५६	प्रा. ६ ।४०	प्री. ५३ ।२३	ग. ० ।३२	वृश्चिक	अहो.	४ ।२६ ।०६ ।०१	३० ।३२	५ ।५४	६ ।०६	२५	३१	१६
८ च.	३४ ।१४	रा. ७ ।३६	ज्ये. ०५ ।४७	दि. ८ ।१३	आयु. ५३ ।२०	वि. २ ।५०	व. ५ ।४७	दि. ८ ।१३	५ ।० ।०४ ।३८	३० ।२८	५ ।५४	६ ।०६	२६	१	१७
९ म.	३८ ।१०	रा. ६ ।११	मू. १० ।४३	दि. १० ।१२	सौ. ५४ ।०२	बा. ६ ।१२	धनु	अहो.	५ ।१ ।०३ ।१५	३० ।२४	५ ।५५	६ ।०५	२७	२	१८
१० बु.	४२ ।५२	रा. ११ ।०५	पूषा. १६ ।३१	दि. १२ ।३२	शो. ५५ ।१५	तै. १० ।३१	ध. ३३ ।०६	सं. ७ ।१८	५ ।२ ।०१ ।५२	३० ।२०	५ ।५६	६ ।०४	२८	३	१६
११ ब.	४७ ।५८	रा. १ ।०८	उषा. २२ ।५२	दि. ३ ।०६	अग. ५६ ।४१	व. १५ ।२५	मकर	अहो.	५ ।३ ।०० ।२६	३० ।१६	५ ।५७	६ ।०३	२६	४	२०
१२ शु.	५३ ।०६	रा. ३ ।१२	श्र. २६ ।२५	सं. ५ ।४४	सु. ५८ ।०६	ब. २० ।३२	मकर	अहो.	५ ।३ ।५६ ।०६	३० ।१२	५ ।५८	६ ।०२	३०	५	२१
१३ श.	५७ ।४८	रा. ५ ।०५	ध. ३५ ।३७	रा. ८ ।१३	घ. ५६ ।०६	कौ. २५ ।२७	म. २ ।३१	प्रा. ६ ।५८	५ ।४ ।५७ ।४३	३० ।०८	५ ।५८	६ ।०२	३१	६	२२
१४ र.	६० ।००	अहो.	शत. ४१ ।१२	रा. १० ।२८	शू. ५६ ।३६	ग. २६ ।४७	कुम्भ	अहो.	५ ।५ ।५६ ।३६	३० ।०४	५ ।५६	६ ।०१	१	७	२३
१४ च.	१ ।४६	प्रा. ६ ।४२	पूभा. ४५ ।५०	रा. १२ ।२०	ग. ५६ ।१७	व. १ ।४६	कु. २६ ।४१	स. ५ ।५२	५ ।६ ।५५ ।२६	३० ।००	६ ।००	६ ।००	२	८	२४
१५ मं.	४ ।३५	दि. ७ ।५०	उभा. ४६ ।२३	रा. १ ।४५	व. ५८ ।०६	ब. ४ ।३५	मीन	अहो.	५ ।७ ।५४ ।२२	२६ ।५६	६ ।००	६ ।००	३	६	२५

पूर्वास्तो बुधः २२ ।४३, उत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम् ।
हस्तदं. ५८ ।०७, चन्द्रदर्शनमु ३० सौम्यशृंगफलं साम्यं, पूर्वदक्षिणयात्रा हस्तचित्रयोः ।
हरितालिका (तीज) व्रतं, गणेश४ व्रतं, **चतुर्थीचन्द्र** (चौठचन्द्र) पूजनं, रुद्रसावर्णिमन्वादिः, वराहावतारः ।
ऐन्द्रदं ५६ ।०८, म. १ ।१६ उ. ३० ।१२ या., **श्रीगणेशपूजारंभः**, पश्चिमयात्रा पञ्चम्यां स्वात्याम् ।
उत्तरफल्गुन्यां रविः १५ ।३० स्त्रीनपुंसूयोगो वृश्चिकलग्नं शिखिवाहनं चण्डानाडीपतिस्सूर्यस्तेन वातातपखण्डवृष्टियोगः (×)
लोलार्क ६, **सूर्यव्रतं पूजनञ्च**, पश्चिमोत्तरयात्रा । (×) ऋषि ५, **सप्तर्षि** (मरीचिवशिष्ठांगिराऽत्रिक्रतुपुलहपुलस्त्य) पूजनम्, पञ्चगव्यप्राशनं, उत्तरयात्रानुराधायाम् ।
मासान्तः, **रविव्रतं**, गं. ५६ ।४७ उ., म. ३१ ।२५ उपरि ।
कन्यायां रविः ४० ।२६ मु. ३० फलं साम्यं **षडशीतिसंक्रांतिपुण्यकालो** घं. १२ उपरि दिने, **पुण्याहः**, **विश्वकर्मार्चा**, **राधाष्टमी**, दूर्वाष्टमी. ।
मासादिः, कन्यायां बुधः १० ।२३ । **महालक्ष्मीव्रतारम्भः**, गं. १४ ।४७ या., म. २ ।५० यावत् ।
पूर्व यात्रा पूर्वाषाढे ।
कर्माधर्मा ११व्रतं सर्वेषां, हरेः पार्श्वपरिवर्त्तनं, दक्षिणां विना यात्रा श्रवणायां, म. १५ ।२५ उ. ४७ ।५८ यावत् ।
वामन १२, वामनावतारः, **इन्द्रपूजारंभः**, कुष्माण्डेन पारणं, **पञ्चकारम्भः** सायं घं. ५ ।४४ उपरि, पूर्वयात्रा त्रयोदश्याम् ।
प्रदोष १३ व्रतं, पश्चिमयात्रा धनिष्ठायाम् ।
प्रदोष १४ व्रतं, अनन्त १४, **अनन्तपूजनं** तड्डोरकधारणञ्च, **गणेशविसर्जनं**, त्र्यहो जन्मदिनकृत्यम् ।
पश्चिमयात्रा पूर्णिमायां कुम्भस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तरयात्रा पूर्वभाद्रे, म. १ ।४६ उपरि ३३ ।११ यावत् ।
भाद्री १५ स्नानदानादिः, **अगस्त्यार्घदानं**, शिवार्चनं, महालयारम्भः, **पितृपक्षीयपार्वणतर्पणारम्भः** ।

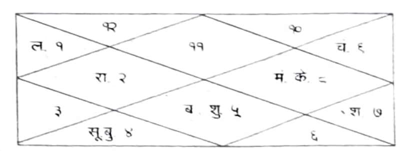
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	व. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	व. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ चं.	६ ।२ ।५४ ।१८	४ ।१७ ।१० ।५६	६ ।२५ ।४० ।४०	६ ।४ ।३३ ।२३	८ ।५ ।२६ ।५३	६ ।११ ।३७ ।२४	४५ ।२८	२१ ।४०	२३ ।३६	१ ।४६	४ ।०७	६ ।२३	८ ।३८	१० ।५५	१३ ।१२	१५ ।१७	१७ ।०३	१८ ।३४	२० ।०३
२ मं.	६ ।३ ।०६ ।४६	४ ।१८ ।५३ ।३१	६ ।२५ ।५० ।२७	६ ।५ ।०५ ।२६	८ ।५ ।३० ।५६	६ ।११ ।३४ ।१३	४५ ।२६	२१ ।३६	२३ ।३२	१ ।४५	४ ।०३	६ ।१६	८ ।३४	१० ।५१	१३ ।०८	१५ ।१३	१६ ।५६	१८ ।३०	१६ ।५६
३ बु.	६ ।३ ।२५ ।२०	४ ।२० ।३६ ।०३	६ ।२६ ।०० ।१३	६ ।५ ।३७ ।३५	८ ।५ ।३२ ।०५	६ ।११ ।३१ ।०२	४५ ।२४	२१ ।३२	२३ ।२८	१ ।४१	३ ।५६	६ ।१५	८ ।३०	१० ।४७	१३ ।०४	१५ ।०६	१६ ।५५	१८ ।२६	१६ ।५५
४ ब.	६ ।३ ।४० ।५१	४ ।२२ ।१८ ।३५	६ ।२६ ।०६ ।५६	६ ।६ ।०६ ।४१	८ ।५ ।३३ ।११	६ ।११ ।२७ ।५१	४५ ।२२	२१ ।२६	२३ ।२५	१ ।३८	३ ।५६	६ ।१२	८ ।२७	१० ।४४	१३ ।०१	१५ ।०६	१६ ।५२	१८ ।२३	१६ ।५२
५ शु.	६ ।३ ।५६ ।२२	४ ।२४ ।०१ ।०७	६ ।२६ ।१६ ।४५	६ ।६ ।४१ ।४६	८ ।५ ।३४ ।१८	६ ।११ ।२४ ।४१	४५ ।२०	२१ ।२५	२३ ।२१	१ ।३४	३ ।५२	६ ।०८	८ ।२३	१० ।४०	१२ ।५७	१५ ।०२	१६ ।४८	१८ ।१६	१६ ।४८
६ श.	६ ।४ ।११ ।५३	४ ।२५ ।४३ ।३६	६ ।२६ ।२६ ।३१	६ ।७ ।१३ ।५१	८ ।५ ।३५ ।२५	६ ।११ ।२१ ।३१	४५ ।१८	२१ ।२१	२३ ।१७	१ ।३०	३ ।४८	६ ।०४	८ ।१६	१० ।३६	१२ ।५३	१४ ।५८	१६ ।४४	१८ ।१५	१६ ।४४
७ र.	६ ।४ ।३१ ।५६	४ ।२७ ।२६ ।३७	६ ।२६ ।३६ ।५७	६ ।७ ।३४ ।३०	८ ।५ ।३६ ।५७	६ ।११ ।१८ ।२०	४५ ।१६	२१ ।१८	२३ ।१४	१ ।२७	३ ।४५	६ ।०१	८ ।१६	१० ।३३	१२ ।५०	१४ ।५५	१६ ।४१	१८ ।१२	१६ ।४१
८ च.	६ ।४ ।५१ ।५६	४ ।२६ ।१५ ।३४	६ ।२६ ।५० ।२३	६ ।७ ।५५ ।०८	८ ।५ ।३८ ।२६	६ ।११ ।१५ ।०६	४५ ।१४	२१ ।१४	२३ ।१०	१ ।२३	३ ।४१	५ ।५७	८ ।१२	१० ।२६	१२ ।४६	१४ ।५१	१६ ।३७	१८ ।०८	१६ ।३७
९ म.	६ ।५ ।१२ ।०१	५ ।१ ।०१ ।३१	६ ।२७ ।०० ।४६	६ ।८ ।१५ ।४६	८ ।५ ।४० ।०१	६ ।११ ।११ ।५८	४५ ।१२	२१ ।११	२३ ।०७	१ ।२०	३ ।३८	५ ।५४	८ ।०६	१० ।२६	१२ ।४३	१४ ।४८	१६ ।३४	१८ ।०५	१६ ।३४
१० बु.	६ ।५ ।३२ ।०३	५ ।२ ।४७ ।२८	६ ।२७ ।११ ।१५	६ ।८ ।३६ ।२४	८ ।५ ।४१ ।३२	६ ।११ ।०८ ।४७	४५ ।१०	२१ ।०७	२३ ।०३	१ ।१६	३ ।३४	५ ।५०	८ ।०५	१० ।२२	१२ ।३६	१४ ।४४	१६ ।३०	१८ ।०१	१६ ।३०
११ ब.	६ ।५ ।५२ ।०५	५ ।४ ।३३ ।२५	६ ।२७ ।२१ ।४१	६ ।८ ।५७ ।०२	८ ।५ ।४२ ।०३	६ ।११ ।०५ ।३६	४५ ।०८	२१ ।०३	२२ ।५६	१ ।१२	३ ।३०	५ ।४६	८ ।०१	१० ।१८	१२ ।३५	१४ ।४०	१६ ।२६	१७ ।५७	१६ ।२६
१२ शु.	६ ।६ ।१२ ।०७	५ ।६ ।१६ ।२२	६ ।२७ ।३२ ।०७	६ ।६ ।१७ ।४०	८ ।५ ।४४ ।३४	६ ।११ ।०२ ।२५	४५ ।०६	२१ ।००	२२ ।५६	१ ।०६	३ ।२७	५ ।४३	७ ।५८	१० ।१५	१२ ।३२	१४ ।३७	१६ ।२३	१७ ।५४	१६ ।२३
१३ श.	६ ।६ ।३२ ।०६	५ ।८ ।०५ ।१६	६ ।२७ ।४२ ।३३	६ ।६ ।३८ ।१८	८ ।५ ।४६ ।०५	६ ।१० ।५६ ।१५	४५ ।०४	२० ।५६	२२ ।५२	१ ।०५	३ ।२३	५ ।३६	७ ।५४	१० ।११	१२ ।२८	१४ ।३३	१६ ।१६	१७ ।५०	१६ ।१६
१४ र.	६ ।६ ।५५ ।३२	५ ।६ ।५२ ।१६	६ ।२७ ।५३ ।४०	६ ।६ ।४५ ।१७	८ ।५ ।४८ ।२०	६ ।१० ।५६ ।०४	४५ ।०२	२० ।५२	२२ ।४८	१ ।०१	३ ।१६	५ ।३५	७ ।५०	१० ।०७	१२ ।२४	१४ ।२६	१६ ।१५	१७ ।४६	१६ ।१५
१४ च.	६ ।७ ।१८ ।५५	५ ।११ ।३६ ।१६	६ ।२८ ।०४ ।४७	६ ।६ ।५२ ।१६	८ ।५ ।५० ।३५	६ ।१० ।५२ ।५३	४५ ।००	२० ।४६	२२ ।४५	० ।५८	३ ।१६	५ ।३२	७ ।४७	१० ।०४	१२ ।२१	१४ ।२६	१६ ।१२	१७ ।४३	१६ ।१२
१५ म.	६ ।७ ।४२ ।१८	५ ।१३ ।२६ ।१८	६ ।२८ ।१५ ।५४	६ ।६ ।५६ ।१४	८ ।५ ।५२ ।५०	६ ।१० ।४६ ।४२	४४ ।५८	२० ।४५	२२ ।४१	० ।५४	३ ।१२	५ ।२८	७ ।४३	१० ।००	१२ ।१७	१४ ।२२	१६ ।०८	१७ ।३६	१६ ।०८

६ शनौ वल्ली ८ ।३६ ।२५ ।१२
अयनांशा: २२ ।४७ ।२८



१३ शनौ वल्ली ८ ।३६ ।२५ ।१६
अयनांशा: २२ ।४७ ।२६



विविधविषयाः—चतुर्थ्यां सरोहिणीकचन्द्रपूजनं कुर्यात्फलादिकं गृहीत्वा चन्द्रञ्च **पश्येत्तन्मन्त्र**-सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः । **सुकुमारक मा रोदीस्तव** ह्येष स्यमन्तकः । **प्रार्थनामन्त्रश्च**—दधि **शंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम्** । नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोर्मुकुटभूषणम् । **एकादश्यां विष्णोः पार्श्वपरिवर्तनमन्त्रः**-प्राप्ते भाद्रपदे मासि एकादश्यां सितेऽहनि । कटिदानं भवेद्विष्णोर्महापूजा प्रवर्त्तते । वासुदेव जगन्नाथ प्राप्तेयं द्वादशी तव । पार्श्वं संपरिवर्त्तस्व सुखं स्वपिहि माधव । त्वयि सुप्ते जगन्नाथ जगत्सुप्तं भवेदिदम् । विबुद्धे त्वयि बुध्येत जगदेतच्चराचरम् ।। देवदेव जगन्नाथ योगिगम्य निरंजन । कटिदानं कुरुष्वाद्य मासि भाद्रपदे शुभे ।। **अनन्तधारणमन्त्रः**-अनन्तसंसारमहासमुद्रे मग्नं समभ्युद्धर वासुदेव । अनन्तरूपे विनियोजयस्व ह्यनन्तरूपाय नमो नमस्ते ।। **अगस्त्यार्घदानमन्त्राः**—कुम्भयोनिसमुत्पन्न मुनीनां मुनिसत्तम । उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम् ।। शंखं पुष्पं फलं तोयं रत्नानि विविधानि च । उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम् । काशपुष्पप्रतीकाश वह्निमारुतसंभव । उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम् ।। **प्रार्थनामन्त्रः**—आतापी भक्षितो येन वातापी च महाबलः । समुद्रः शोषितो येन स मेऽगस्त्यः प्रसीदतु ।।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशनयः, मार्गी पूर्वोदितो बुधः १ तः पूर्वास्तः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः ।

वातावरणम्—पक्षादिभागे वातखण्डवृष्टियोगस्ततः पक्षान्तं यावद् वृष्टियोगः ।

आश्विनकृष्णपक्षः

शकाब्दः १६४०, संवत् २०७५, सन् १४२६ साल, दि. २६।६।१८ ई. तः दि. ६।१०।१८ ई. यावत्।
शुद्धः, शरद तुः, सौम्यगोलः, याम्यायनम्, उत्तरेकालः।

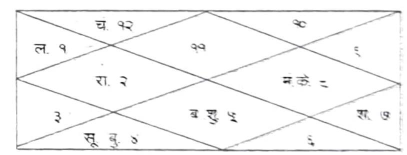
तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ बु.	६।२१	दि. ८।३४	रे. ५१।४३	रा. २।४३	घु. ५५।५०	कौ. ६।२१	मी. ५१।४३	रा. २।४३	५।८।५३।१५	२६।५२	६।०२	५।५८	४	१०	२६
२ ब.	६।४३	दि. ८।४३	अ. ५२।४४	रा. ३।०८	व्या. ५२।३७	ग. ६।४३	मेष	अहो.	५।६।५२।०८	२६।४८	६।०२	५।५८	५	११	२७
३ शु.	५।५०	दि. ८।२३	भ. ५२।३५	रा. ३।०५	ह. ४८।२३	वि. ५।५०	मेष	अहो.	५।१०।५१।००	२६।४५	६।०३	५।५७	६	१२	२८
४ श.	३।४३	दि. ७।३३	कृ. ५१।१८	रा. २।३५	व. ४३।१८	बा. ३।४३	मे. ७।१६	दि. ८।५८	५।११।४६।५२	२६।४२	६।०४	५।५६	७	१३	२६
५ र.	०।३२	प्रा. ६।१७	रो. ४६।१३	रा. १।४५	सि. ३७।२६	तै. ०।३२	वृष	अहो.	५।१२।४६।०१	२६।३८	६।०४	५।५६	८	१४	३०
७ च.	५१।३१	रा. २।४१	म. ४६।१४	रा. १२।३५	व्य. ३०।५३	वि. २४।००	व. २०।४४	दि. २।२३	५।१३।४८।१०	२६।३४	६।०५	५।५५	६	१५	१
८ मं.	४६।०३	रा. १२।३१	आ. ४२।४०	रा. ११।१०	वरी. २३।४७	बा. १८।४७	मिथुन	अहो.	५।१४।४७।१६	२६।३०	६।०६	५।५४	१०	१६	२
६ बु.	४०।१२	रा. १०।१२	पुन. ३८।४२	रा. ६।३६	प. १६।१६	तै. १३।०८	मि. २४।४२	दि. ४।००	५।१५।४६।२८	२६।२६	६।०७	५।५३	११	१७	३
१० ब.	३४।०६	रा. ७।४८	पु. ३४।३०	रा. ७।५६	शि. ०८।३८	व. ७।१०	कर्क	अहो.	५।१६।४५।३६	२६।२२	६।०८	५।५२	१२	१८	४
११ शु.	२८।०४	सं. ५।२२	श्ले. ३०।२०	सं. ६।१६	सि. ००।४८	ब. १।०६	क. ३०।२०	सं. ६।१६	५।१७।४४।४४	२६।१८	६।०८	५।५२	१३	१६	५
१२ श.	२२।१४	दि. ३।०३	म. २६।२०	दि. ४।४१	शु. ४५।४२	तै. २२।१४	सिंह	अहो.	५।१८।४३।५२	२६।१४	६।०६	५।५१	१४	२०	६
१३ र.	१६।४७	दि. १२।५३	पूफ. २२।४५	दि. ३।१६	शु. ३८।३७	व. १६।४७	सि. ३७।०३	रा. ८।५६	५।१६।४३।१७	२०।१०	६।१०	५।५०	१५	२१	७
१४ चं.	११।५४	दि. १०।५७	उफ. १६।४७	दि. २।०६	ब्र. ३२।०६	श. ११।५४	कन्या	अहो.	५।२०।४२।४२	२६।०६	६।११	५।४६	१६	२२	८
३० मं.	७।५३	दि. ६।२१	ह. १७।४३	दि. १।१७	ऐं. २६।१५	ना. ७।५३	क. ४७।०६	रा. १।०२	५।२१।४२।०६	२६।०२	६।१२	५।४८	१७	२३	६

पञ्चकान्तो रात्रौ घं. २।४३ उपरि, गं. ३६।४३ उ. ५४।४३ या., पश्चिमयात्रा रेवत्यां तत उत्तरां विना यात्रा।
हस्ते रविः ५२।५५ पुंस्त्रीसूचंयोगः सिंहलग्नं रासभवाहनं चण्डानाडीपतिश्शनिस्तेन वातखण्डवृष्टियोगः, दक्षिणां विना यात्राश्विन्यां, भ. ३६।१७ यावत्।
एकदन्त ४ व्रतं, **इन्द्रविसर्जनं,** वक्री शुक्रः ३७।१२, भ. ५।५० यावत्।
।।००।। (+) ज्येष्ठपुत्रवता पिण्डरहितमेव तत्कुर्यात्–"मघायां पिण्डदानेन ज्येष्ठः पुत्रो विनश्यति" इति दोषश्रवणात्, ज्येष्ठपदमत्र सर्वज्येष्ठपरमिति रसमाला।
षष्ठीदं. ५५।५६, भ. ५६।२८ उ., पूर्वदक्षिणयात्रा पञ्चम्यां ततः पश्चिमां विना यात्रा सप्तम्याम्।
अक्टूबर १०, स्त्रीणां **विशिष्टभोजनं** (ओठगन) रात्रौ घं. २।४१ यावत्, द.ति. ५१।३१ उ., म. २४।०० यावत्।
महालक्ष्मीव्रतं, **जीमूतवाहन (जितिया) व्रतं,** गान्धी–शास्त्रीजयन्ती, पश्चिमदक्षिणयात्रा नवम्यां, द.ति. ४६।३ यावत्।
महालक्ष्मीजीमूतवाहनव्रतपारणं, **मातृनवमी,** अन्वष्टकाश्रादधं, उत्तरां विना यात्रा **दशम्याम्।**
वृश्चिके गुरुः ५४।०१, भ. ७।१० उ. ३४।६ या., दक्षिणां विना यात्रा पुष्ये।
साध्यदं. ५२।२०, गं. १६।२० उ. ३४।२० या., तुलायां बुधः ८।३०, **इन्दिरा** ११ व्रतं सर्वेषाम्।
गुडेन पारणं, **प्रदोष** १३ व्रतं, उत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्यां, **गजच्छायायोगो** घं. ३।०३ तः घं. ४।४१ यावद्दिनेऽत्र मधुघृतयुतपायसेन श्राद्धं (+)
प्रदोष १४ व्रतं, (१३–१४) एको., शस्त्रादिहतश्राद्धं, पूर्वोत्तरयात्रा त्रयोदश्याम्।
सोमवारीव्रतं, दिवा घं. १० ।५७ उपरि, (३०) एको., म. ११।५४ उपरि ३६।५४ यावत्।
महालया ३०, पितृपक्षीयतर्पणान्तः, अश्विनी ३० स्नानदानादिः, **भौमवती** ३० गंगास्नानदानादावतीवपुण्यदा–अमायञ्च यदा वारो भवेद् भूमिसुतस्य च। गंगायां यदि लभ्येत कोटिसूर्यग्रहैः समा।।

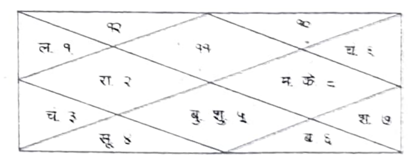
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	व. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	व. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ बु.	६।८।०५।४१	५।१५।१३।१७	६।२८।२७।००	६।१०।०६।१२	८।०५।५५।०५	६।१०।४६।३१	४४।५६	२०।४१	२२।३७	०।५०	३।०८	५।२४	७।३६	६।५६	१२।१३	१४।१८	१६।०४	१७।३५	१६।०४
२ ब.	६।८।२६।०४	५।१७।००।१६	६।२८।३८।०६	६।१०।१३।१०	८।०५।५७।२०	६।१०।४३।२०	४४।५४	२०।३८	२२।३४	०।४७	३।०५	५।२१	७।३६	६।५३	१२।१०	१४।१५	१६।०१	१७।३२	१६।०१
३ शु.	६।८।५२।२७	५।१८।४७।१५	६।२८।४६।१२	६।१०।१४।३३	८।०५।५६।३४	६।१०।४०।१०	४४।५२	२०।३४	२२।३०	०।४३	३।०१	५।१७	७।३२	६।४६	१२।०६	१४।११	१५।५७	१७।२८	१८।५७
४ श.	६।६।१५।४६	५।२०।३४।१४	६।२६।००।१८	६।१०।१४।३२	८।०६।०१।४८	६।१०।३७।००	४४।५१	२०।३०	२२।२६	०।३६	२।५७	५।१३	७।२८	६।४५	१२।०२	१४।०७	१५।५३	१७।२४	१८।५३
५ र.	६।६।४२।२२	५।२२।१८।५८	६।२६।११।५३	६।१०।०३।१२	८।०६।०४।३८	६।१०।३३।४६	४४।४६	२०।२७	२२।२३	०।३६	२।५४	५।१०	७।२५	६।४२	११।५६	१४।०४	१५।५०	१७।२१	१८।५०
७ च.	६।१०।०८।५५	५।२४।०३।४२	६।२६।२३।२८	६।०६।५१।५२	८।०६।०७।२८	६।१०।३०।३८	४४।४७	२०।२३	२२।१६	०।३२	२।५०	५।०६	७।२१	६।३८	११।५५	१४।००	१५।४६	१७।१७	१८।४६
८ मं.	६।१०।३५।२८	५।२५।४८।२५	६।२६।३५।०३	६।०६।४०।३२	८।०६।१०।१८	६।१०।२७।२७	४४।४५	२०।१६	२२।१५	०।२८	२।४६	५।०२	७।१७	६।३४	११।५१	१३।५६	१५।४२	१७।१३	१८।४२
६ बु.	६।११।०२।०१	५।२७।३३।०८	६।२६।४६।३८	६।०६।२६।१२	८।०६।१३।०८	६।१०।२४।१६	४४।४३	२०।१६	२२।१२	०।२५	२।४३	४।५६	७।१४	६।३१	११।४८	१३।५३	१५।३६	१७।१०	१८।३६
१० ब.	६।११।२८।३४	५।२६।१७।५१	६।२६।५८।१२	६।०६।१७।५१	८।०६।१५।५८	६।१०।२१।०५	४४।४१	२०।१२	२२।०८	०।२१	२।३६	४।५५	७।१०	६।२७	११।४४	१३।४६	१५।३५	१७।०६	१८।३५
११ शु.	६।११।५५।०७	६।०१।०२।३४	७।००।०६।४६	६।०६।०६।३०	८।०६।१८।४८	६।१०।१७।५५	४४।३६	२०।०६	२२।०५	०।१८	२।३६	४।५२	७।०७	६।२४	११।४१	१३।४६	१५।३२	१७।०३	१८।३२
१२ श.	६।१२।२१।३६	६।०२।४७।१७	७।००।२१।२०	६।०८।५५।०६	८।०६।२१।३७	६।१०।१४।४५	४४।३७	२०।०५	२२।०१	०।१४	२।३२	४।४८	७।०३	६।२०	११।३७	१३।४२	१५।२८	१६।५६	१८।२८
१३ र.	६।१२।५०।४८	६।०४।२७।०६	७।००।३३।३६	६।०८।२६।५५	८।०६।२५।१०	६।१०।११।३४	४४।३५	२०।०१	२१।५७	०।१०	२।२८	४।४४	६।५६	६।१६	११।३३	१३।३८	१५।२४	१६।५५	१८।२४
१४ चं.	६।१३।१६।५७	६।०६।०७।०१	७।००।४५।५१	६।०७।५८।४१	८।०६।२८।४३	६।१०।०८।२३	४४।३३	१६।५८	२१।५४	०।०७	२।२५	४।४१	६।५६	६।१३	११।३०	१३।३५	१५।२१	१६।५२	१८।२१
३० मं.	६।१३।४६।०६	६।०७।४६।५३	७।००।५८।०६	६।०७।३०।२७	८।०६।३२।१६	६।१०।०५।१२	४४।३१	१६।५४	२१।५०	०।०३	२।२१	४।३७	६।५२	६।०६	११।२६	१३।३१	१५।१७	१६।४८	१८।१७

४ शनौ वल्ली ८।३६।२५।२६
अयनांशाः २२।५७।३०



१२ शनौ वल्ली ८।३६।२५।३३
अयनांशाः २२।५७।३१



विविधविषयाः–आश्विनकृष्णपक्षे प्रतिदिनं श्राद्धं कुर्यादिति प्रथमकल्पः। पंचमीमारभ्यामां यावदिति द्वितीयकल्पः। अष्टमीमारभ्यामां यावदिति तृतीयकल्पः। दशमीमारभ्यामां यावदिति चतुर्थकल्पस्तदभावे एकस्मिन्नपि दिने श्राद्धं कर्त्तव्यमेव। **हेमाद्रौ**–आषाढ्याः पंचमे पक्षे कन्यासंस्थे दिवाकरे। यो वै श्राद्धं नरः कुर्यादेकस्मिन्नपि वासरे। तस्य संवत्सरं यावत्सन्तृप्ताः पितरो ध्रुवम्।। **श्राद्धकालः**–पूर्वाह्णे मातृकं श्राद्धमपराह्णे तु पैतृकम्। एकोद्दिष्टन्तु मध्याह्ने प्रातर्वृद्धिनिमित्तकम् ।। **जीमूतवाहनव्रतं** भविष्ये–इषे मास्यसिते पक्षे चाष्टमी या तिथिर्भवेत्। पुत्रसौभाग्यदा स्त्रीणां ख्याता सा जीवपुत्रिका। शालिवाहनराजस्य पुत्रो जीमूतवाहनः। तस्यां पूज्यः स नारीभिः पुत्रसौभाग्यलिप्सया। हस्तार्के **खञ्जनदर्शनमन्त्रः**–नीलग्रीवस्वरूपेण सर्वकामफलप्रद। पृथिव्यामवतीर्णोऽसि खञ्जरीट नमोऽस्तु ते।। तद्दर्शनमाकाश–पूर्वपश्चिमोत्तरवायव्यदिक्षु शुभमन्यदिक्ष्वशुभम्। **पुनश्च**–अब्जेषु गोषु गंजवाजिमहोरगेषु राज्यप्रदः कुशलदः शुचिशाद्वलेषु । भस्मास्थिकेशतुषलोमनखेषु दृष्टो दुःखं ददाति बहुशः खलु खञ्जरीटः ।

ग्रहस्थितिः–मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशनयः, मार्गी पूर्वास्तो बुधः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः ३ तो वक्री।

वातावरणम्–पक्षादिभागे वातातपखण्डवृष्टयस्ततः पक्षान्तं यावन्मेघच्छायावातवृष्टयः।

आश्विनशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९४०, संवत २०७५, सन् १४२६ साल, दि. १० ।१० ।१८ इ. तः दि. २४ ।१० ।१८ यावत् ।
शुद्धः, ४ तो शुद्धः, शरद ऋतुः, सौम्यगोलः, याम्यायनम्, ६ तो याम्यगोलः, उत्तरे कालः ।

[illegible]	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः		
[illegible]	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ बु.	४ ।४५	दि. ८ ।०६	चि. १६ ।२८	दि. १२ ।४७	वै. २१ ।०७	ब. ४ ।४५	तुला	अहो.	५ ।२२ ।४१ ।३०	२८ ।५८	६ ।१२	५ ।४८	१८	२४	१०
२ ब.	२ ।४२	दि. ७ ।१८	स्वा. १६ ।२०	दि. १२ ।४५	वि. १६ ।५०	कौ. २ ।४२	तुला	अहो.	५ ।२३ ।४० ।५४	२८ ।५४	६ ।१३	५ ।४७	१९	२५	११
३ शु.	१ ।४८	दि. ६ ।५७	वि. १७ ।२२	दि. १ ।११	प्री. १३ ।३३	ग. १ ।४८	तु. २ ।०७	दि. ७ ।०५	५ ।२४ ।४० ।१८	२८ ।५०	६ ।१४	५ ।४६	२०	२६	१२
४ श.	२ ।१९	दि. ७ ।११	अनु. १९ ।४४	दि. २ ।०६	आयु. ११ ।१६	वि. २ ।१९	वृश्चिक	अहो.	५ ।२५ ।३९ ।४२	२८ ।४६	६ ।१५	५ ।४५	२१	२७	१३
५ र.	४ ।०८	दि. ७ ।५६	ज्ये. २३ ।२०	दि. ३ ।३६	सौ. १० ।०२	बा. ४ ।०८	वृ. २३ ।२०	दि. ३ ।३६	५ ।२६ ।३९ ।२२	२८ ।४२	६ ।१६	५ ।४४	२२	२८	१४
६ च.	७ ।०२	दि. ९ ।०५	मू. २८ ।०२	रा. ५ ।२९	शो. ०९ ।३६	तै. ७ ।०२	धनु	अहो.	५ ।२७ ।३९ ।०२	२८ ।३८	६ ।१६	५ ।४४	२३	२९	१५
७ मं.	११ ।०२	दि. १० ।४२	पूषा. ३३ ।४१	रा. ७ ।४५	अग. १० ।०३	व. ११ ।०२	ध. ५० ।१५	रा. २ ।२३	५ ।२८ ।३८ ।४२	२८ ।३४	६ ।१७	५ ।४३	२४	३०	१६
८ बु.	१५ ।४९	दि. १२ ।३८	उषा. ३९ ।५६	रा. १० ।१६	सु. ११ ।०३	ब. १५ ।४९	मकर	अहो.	५ ।२९ ।३८ ।२२	२८ ।३०	६ ।१८	५ ।४२	२५	३१	१७
९ ब.	२१ ।०३	दि. २ ।४४	श्र. ४६ ।२७	रा. १२ ।५४	ध. १२ ।२४	कौ. २१ ।०३	मकर	अहो.	६ ।०० ।३८ ।०२	२८ ।२६	६ ।१९	५ ।४१	२६	१	१८
१० शु.	२६ ।१३	दि. ४ ।४९	ध. ५२ ।४८	रा. ३ ।२७	शू. १३ ।४६	ग. २६ ।१६	म. १९ ।३८	दि. २ ।११	६ ।०१ ।३७ ।४२	२८ ।२२	६ ।२०	५ ।४०	२७	२	१९
११ श.	३१ ।०१	स. ६ ।४४	शत. ५८ ।३५	रा. ५ ।४६	गं. १४ ।५६	वि. ३१ ।०१	कुम्भ	अहो.	६ ।०२ ।३७ ।२१	२८ ।१८	६ ।२०	५ ।४०	२८	३	२०
१२ र.	३५ ।०२	रा. ८ ।२२	पूभा. ६० ।००	अहो.	व. १५ ।३२	ब. ०३ ।०२	कु. ४७ ।१७	रा. १ ।१६	६ ।०३ ।३७ ।१७	२८ ।१४	६ ।२१	५ ।३९	२९	४	२१
१३ च.	३७ ।५६	रा. ६ ।३२	पूभा. ३ ।३१	दि. ७ ।४६	ध्रु. १५ ।२४	कौ. ६ ।२९	मीन	अहो.	६ ।०४ ।३७ ।१२	२८ ।१०	६ ।२२	५ ।३८	३०	५	२२
१४ मं.	३९ ।४७	रा. १० ।१८	उभा. ७ ।१९	दि. ९ ।१९	व्या. १४ ।२४	ग. ९ ।२२	मीन	अहो.	६ ।०५ ।३७ ।०७	२८ ।०६	६ ।२३	५ ।३७	१	६	२३
१५ बु.	४० ।१५	रा. १० ।३०	रे. ६ ।५८	दि. १० ।२३	ह. १२ ।२३	वि. १० ।०१	मी. ६ ।५८	दि. १० ।२३	६ ।०६ ।३७ ।०२	२८ ।०२	६ ।२४	५ ।३६	२	७	२४

शारदीयनवरात्रारम्भः, **कलशस्थापनं,** श्रीदुर्गापूजनोत्सवः, नौकारूढाया दुर्गाऽऽगमनफलं सिद्धिदं, चन्द्रदर्शनमु १५ सौम्य (×)
चित्रायां रविः २३ ।२० स्त्रीनपुंसूर्ययोगः कुम्भलग्नं मण्डूकवाहनं चण्डानाडीपतिश्शनिस्तेन वातातपखण्डवृष्टियोगः, **रेमन्तपूजा,** (+)
गणेश ४ व्रतं, उत्तरयात्रानुराधायां, भ. ३२ ।०४ उपरि । (×) सौम्यशृंगफलं महार्घं, पश्चिमदक्षिणयात्रा ।
क्षीणः शुक्रः **अशुद्धारंभश्च** १० ।२७ उपरि, भ. २ ।१९ यावत् । (+) पश्चिमयात्रा स्वात्याम्, पश्चिमोदितो बुधः ५८ ।५० ।
उत्तरयात्रा पञ्चम्याम्, गं. १७ ।२० उपरि ३२ ।२० यावत् । (=) **धान्यविषुवसंक्रांतिपुण्यकालो** घं. ८ ।४३ उपरि घं. ३ ।०७ यावद्दिने, (◀)
गजपूजा **बिल्वाभिमन्त्रणञ्च,** उत्तरयात्रा षष्ठ्याम् ।
पत्रिकाप्रवेशः, **महारात्रिर्निशापूजा** (रात्रिजागरणं), **सरस्वतीपूजारंभः,** पूर्वयात्रा सप्तम्यां, द.ति. ११ ।०२ उ., भ. ११ ।०२ उ. ४३ ।२६ या., **पश्चिमास्तः शुक्रः** १० ।२७ ।
मासान्तः, **महाष्टमीव्रतं,** दीक्षाग्रहणं, सन्धिपूजा, द.ति. १५ ।४९ यावत्, (६) एको. ।
महानवमीव्रतं, त्रिशूलिनीपूजा, प्रभूततरबलिदानं, **तुलायां रविः** ६ ।०० मु. ३० फल साम्यं, याम्यगोलारंभः ६ ।०० उपरि, (=)
मासादिः, अपराजितापूजा, **विजया १०, देवीविसर्जनं,** जयन्तीधारणं, नीलकण्ठादिदर्शनं, **नवरात्रव्रतपारणं,** यात्रा, गजवाहनफलं वृष्टिप्रदं, भ. ५८ ।३७ उपरि, (१०) एको ।
पाशांकुशा ११ व्रतं सर्वेषां, द.ति. ३१ ।०१ उपरि, भ. ३१ ।०१ यावत् । (◀) **पुण्याहः,** दक्षसावर्णिमन्वादिः, **सिमरियाधम्नि कल्पवासारंभः** (++)
गुडेन पारणं, पद्मनाभ १२, उत्तरयात्रा मीनगते चन्द्रे, द.ति. ३५ ।०२ यावत् । (++) कार्तिकस्नानारंभः, **पञ्चकान्तो** रात्रौ घं. १२ ।५४ उपरि ।
प्रदोष १३ व्रतं, पश्चिमोत्तरयात्रा पूर्वभाद्रे, वक्रात् कन्यायां शुक्रः ४४ ।४५ ।
प्रदोष १४ व्रतं, पश्चिमयात्रा रेवत्यां, **पूर्वोदितः शुक्रः** ५२ ।२६, गं. ५७ ।५८ उपरि, भ. ३९ ।४७ उपरि ।
आश्विनी १५ स्नानदानादिः, **कौमुदी (कोजागरा) महोत्सवः** प्रदोषे घ. ७ ।१२ यावद्रात्रौ **लक्ष्मीपूजनं,** दीक्षाग्रहणं, वृश्चिके बुधः ३२ ।२१, पश्चिमयात्रा रेवत्यां तत उत्तरां विना यात्रा, **पञ्चकान्तो** दिवा घं. १० ।२३ उपरि, गं. १२ ।५८ या., भ. १० ।०१ या., **स्वात्यां रविः** ४६ ।५६ पुंस्त्रीसूर्ययोगः मिथुनलग्नं शिखिवाहनं वातानाडीपतिस्सूर्यस्तेन वातवृष्टियोगः ।

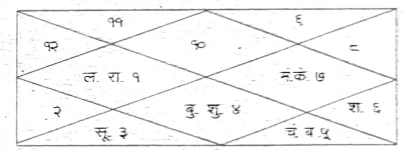
मिश्रमासकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च ।

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः
१ बु.	६ ।१४ ।१८ ।१५	६ ।०६ ।२६ ।४५	७ ।०१ ।१० ।२१	६ ।०७ ।०२ ।१३	८ ।०६ ।३५ ।४६	६ ।१० ।०२ ।०१
२ ब.	६ ।१४ ।४७ ।२४	६ ।११ ।०६ ।३७	७ ।०१ ।२२ ।३६	६ ।०६ ।३३ ।५६	८ ।०६ ।३६ ।२२	६ ।०६ ।५८ ।५०
३ शु.	६ ।१५ ।१६ ।३२	६ ।१२ ।४६ ।२९	७ ।०१ ।३४ ।५१	६ ।०६ ।०५ ।४५	८ ।०६ ।४२ ।५५	६ ।०६ ।५५ ।४०
४ श.	६ ।१५ ।४५ ।४०	६ ।१४ ।२६ ।२०	७ ।०१ ।४७ ।०६	६ ।०५ ।३७ ।३२	८ ।०६ ।४६ ।२७	६ ।०६ ।५२ ।३०
५ र.	६ ।१६ ।१७ ।०६	६ ।१५ ।५७ ।४७	७ ।०१ ।५९ ।३२	६ ।०४ ।५९ ।३३	८ ।०६ ।५० ।४४	६ ।०६ ।४९ ।१९
६ च.	६ ।१६ ।४८ ।३८	६ ।१७ ।२९ ।१४	७ ।०२ ।११ ।५८	६ ।०४ ।२१ ।३४	८ ।०६ ।५५ ।००	६ ।०६ ।४६ ।०८
७ मं.	६ ।१७ ।२० ।०७	६ ।१९ ।०० ।४१	७ ।०२ ।२४ ।२४	६ ।०३ ।४३ ।३४	८ ।०६ ।५९ ।१९	६ ।०६ ।४२ ।५७
८ बु.	६ ।१७ ।५१ ।३६	६ ।२० ।३२ ।०७	७ ।०२ ।३६ ।४९	६ ।०३ ।०५ ।३४	८ ।०७ ।०३ ।३२	६ ।०६ ।३९ ।४६
९ ब.	६ ।१८ ।२३ ।०५	६ ।२२ ।०३ ।३३	७ ।०२ ।४९ ।१४	६ ।०२ ।२७ ।३४	८ ।०७ ।०७ ।४८	६ ।०६ ।३६ ।३५
१० शु.	६ ।१८ ।५४ ।३४	६ ।२३ ।३४ ।५९	७ ।०३ ।०१ ।३९	६ ।०१ ।४९ ।३४	८ ।०७ ।१२ ।०४	६ ।०६ ।३३ ।२५
११ श.	६ ।१९ ।२६ ।०२	६ ।२५ ।०६ ।२५	७ ।०३ ।१४ ।०४	६ ।०१ ।११ ।३४	८ ।०७ ।१६ ।२०	६ ।०६ ।३० ।१५
१२ र.	६ ।१९ ।५९ ।१८	६ ।२६ ।२३ ।३४	७ ।०३ ।२७ ।००	६ ।०० ।३५ ।३५	८ ।०७ ।२१ ।०६	६ ।०६ ।२७ ।०४
१३ च.	६ ।२० ।३२ ।३३	६ ।२७ ।४० ।४३	७ ।०३ ।३९ ।५६	५ ।२९ ।५९ ।३६	८ ।०७ ।२५ ।५८	६ ।०६ ।२३ ।५३
१४ मं.	६ ।२१ ।०५ ।४८	६ ।२८ ।५७ ।५२	७ ।०३ ।५२ ।५२	५ ।२९ ।२३ ।३८	८ ।०७ ।३० ।४७	६ ।०६ ।२० ।४२
१५ बु.	६ ।२१ ।३९ ।०३	७ ।०० ।१५ ।००	७ ।०४ ।०५ ।४७	५ ।२८ ।४७ ।४०	८ ।०७ ।३५ ।३६	६ ।०६ ।१७ ।३१

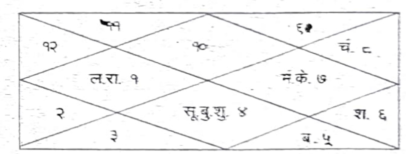
दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मिश्रमानं	मे.अं.	व. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	व. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ बु.	४४ ।२९	१९ ।५०	२१ ।४६	२३ ।५९	२ ।१७	४ ।३३	६ ।४८	९ ।०५	११ ।२२	१३ ।२७	१५ ।१३	१६ ।४४	१८ ।१३
२ ब.	४४ ।२७	१९ ।४७	२१ ।४३	२३ ।५६	२ ।१४	४ ।३०	६ ।४५	९ ।०२	११ ।१९	१३ ।२४	१५ ।१०	१६ ।४१	१८ ।१०
३ शु.	४४ ।२५	१९ ।४३	२१ ।३९	२३ ।५२	२ ।१०	४ ।२६	६ ।४१	८ ।५८	११ ।१५	१३ ।२०	१५ ।०६	१६ ।३७	१८ ।०६
४ श.	४४ ।२३	१९ ।३९	२१ ।३५	२३ ।४८	२ ।०६	४ ।२२	६ ।३७	८ ।५४	११ ।११	१३ ।१६	१५ ।०२	१६ ।३३	१८ ।०२
५ र.	४४ ।२१	१९ ।३६	२१ ।३२	२३ ।४५	२ ।०३	४ ।१९	६ ।३४	८ ।५१	११ ।०८	१३ ।१३	१४ ।५९	१६ ।३०	१७ ।५९
६ च.	४४ ।१९	१९ ।३२	२१ ।२८	२३ ।४१	१ ।५९	४ ।१५	६ ।३०	८ ।४७	११ ।०४	१३ ।०९	१४ ।५५	१६ ।२६	१७ ।५५
७ मं.	४४ ।१७	१९ ।२८	२१ ।२४	२३ ।३७	१ ।५५	४ ।११	६ ।२६	८ ।४३	११ ।००	१३ ।०५	१४ ।५१	१६ ।२२	१७ ।५१
८ बु.	४४ ।१५	१९ ।२५	२१ ।२१	२३ ।३४	१ ।५२	४ ।०८	६ ।२३	८ ।४०	१० ।५७	१३ ।०२	१४ ।४८	१६ ।१९	१७ ।४८
९ ब.	४४ ।१३	१९ ।२१	२१ ।१७	२३ ।३०	१ ।४८	४ ।०४	६ ।१९	८ ।३६	१० ।५३	१२ ।५८	१४ ।४४	१६ ।१५	१७ ।४४
१० शु.	४४ ।११	१९ ।१७	२१ ।१३	२३ ।२६	१ ।४४	४ ।००	६ ।१५	८ ।३२	१० ।४९	१२ ।५४	१४ ।४०	१६ ।११	१७ ।४०
११ श.	४४ ।०९	१९ ।१३	२१ ।०९	२३ ।२२	१ ।४०	३ ।५६	६ ।११	८ ।२८	१० ।४५	१२ ।५०	१४ ।३६	१६ ।०७	१७ ।३६
१२ र.	४४ ।०७	१९ ।०९	२१ ।०५	२३ ।१८	१ ।३६	३ ।५२	६ ।०७	८ ।२४	१० ।४१	१२ ।४६	१४ ।३२	१६ ।०३	१७ ।३२
१३ च.	४४ ।०५	१९ ।०५	२१ ।०१	२३ ।१४	१ ।३२	३ ।४८	६ ।०३	८ ।२०	१० ।३७	१२ ।४२	१४ ।२८	१५ ।५९	१७ ।२८
१४ मं.	४४ ।०३	१९ ।०१	२० ।५७	२३ ।१०	१ ।२८	३ ।४४	५ ।५९	८ ।१६	१० ।३३	१२ ।३८	१४ ।२४	१५ ।५५	१७ ।२४
१५ बु.	४४ ।०१	१८ ।५८	२० ।५४	२३ ।०७	१ ।२५	३ ।४१	५ ।५६	८ ।१३	१० ।३०	१२ ।३५	१४ ।२१	१५ ।५२	१७ ।२१

४ शनौ वल्ली ८ ।३६ ।२५ ।४०
अयनांशाः २२ ।४७ ।३२



११ शनौ वल्ली ८ ।३६ ।२५ ।४७
अयनांशाः २२ ।४७ ।३३



विविधविषयाः—प्रतिपदि **कलशस्थापनं** ततो देवीपूजनपूर्वकनवदिन यावच्छप्तशतीस्तो— त्रवेदपुराणादिधर्मग्रन्थपाठः **मन्त्रजपश्च** कर्त्तव्यः । **दुर्गाऽऽगमनयानविचारः**—शशिसूर्ये गजारूढा शनिभौमे तुरंगमे । गुरौ शुक्रे च दोलायां बुधे नौका प्रकीर्त्तिता ।। **तत्फलम्—गजे च जलदा देवी** क्षत्रभंगस्तुरंगमे । नौकायां सर्वसिद्धिः स्याद्दोलायां मरणं ध्रुवम् ।। **विजयदशम्यां** देव्या **गमनयानफलं**—शशिसूर्यदिने **यदि सा** विजया **महिषागमने** रुजशोककरा, शनिभौमदिने यदि सा **विजया चरणायुधयानकरी विकला**। **बुधशुक्रदिने** यदि सा विजया गजवाहनगा शुभवृष्टिकरा, सुरराजगुरौ यदि **सा** विजया नरवाहनगा शुभसौख्यकरा। **दुर्गापाठमहत्त्वम्**—यथाश्वमेधः क्रतुराड् देवानां च यथा हरिः। स्तवानामपि सर्वेषां तथा सप्तशतीस्तवः । चण्ड्यां शतावृत्तिपाठात् सर्वाः सिध्यन्ति सिद्धयः । **विल्वपत्रत्रोटनमन्त्रः**—अमृतोद्भव श्रीवृक्ष शंकरस्य सदा प्रिय । क्षमस्व शिवपूजार्थं तव पत्रं चिनोम्यहम्। **तुलसीपत्रत्रोटनमन्त्रः**—तुलस्यमृतजन्मा त्वं केशवस्य सदा प्रिया। क्षमस्व हरिपूजार्थं तव पत्रं चिनोम्यहम् ।। **नीलकण्ठदर्शनमन्त्रः**—नीलकण्ठाय भद्राय भद्ररूपाय ते नमः । भद्रत्वं देहि मे भद्रमाशां पूरय पूरय ।। **खञ्जनदर्शनमन्त्रः**—नारायणशरीरोत्थ संवत्सरशुभप्रद। शालग्रामशिलाकण्ठ खञ्जरीट नमोऽस्तुते ।।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशनयः, मार्गी पूर्वास्तो बुधः २ तः पश्चिमोदितः, वक्री पश्चिमोदितः शुक्रः ७ तः पश्चिमास्तः १४ तः पूर्वोदितः।

वातावरणम्—पक्षादिभागे मेघच्छायावातातपवृष्टयस्ततः पक्षान्तं यावन्मेघचारवात—खण्डवृष्टयः।

कार्तिककृष्णपक्षः

शकाब्दः १६४०, संवत् २०७५, सन् १४२६ साल, दि. २५ ।१० ।१८ ई. तः दि. ७ ।११ ।१८ ई. यावत्।
अशुद्धः, २ तः शुद्धः, शरद तुः, याम्यगोलायने, उत्तरे कालः।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ ब.	३६ ।२६	रा. १० ।१०	अ. ११ ।१९	दि. १० ।५६	व. ६ ।२३	बा. ६ ।५१	मेष	अहो.	६ ।०७ ।३६ ।५७	२७ ।५८	६ ।२४	५ ।३६	३	८	२५
२ शु.	३७ ।२३	रा. ६ ।२२	भ. ११ ।२७	दि. ११ ।००	सि. ५ ।२३	तै. ८ ।२५	मे. २६ ।११	सं. ५ ।०४	६ ।०८ ।३६ ।५२	२७ ।५५	६ ।२५	५ ।३५	४	६	२६
३ श.	३४ ।१७	रा. ८ ।०६	कृ. १० ।२४	दि. १० ।३६	व्य. ० ।२७	व. ६ ।००	वष	अहो.	६ ।०९ ।३६ ।४७	२७ ।५२	६ ।२६	५ ।३४	५	१०	२७
४ र.	३० ।१७	सं. ६ ।३३	रो. ८ ।२९	दि. ६ ।५०	प. ४८ ।२०	ब. २ ।१७	व. ३७ ।०६	रा. ६ ।१६	६ ।१० ।३६ ।५८	२७ ।४८	६ ।२६	५ ।३४	६	११	२८
५ चं.	२५ ।२६	दि. ४ ।३७	म. ५ ।४२	दि. ८ ।४४	शि. ४१ ।२०	तै. २५ ।२६	मिथुन	अहो.	६ ।११ ।३७ ।०९	२७ ।४५	६ ।२७	५ ।३३	७	१२	२९
६ मं.	२० ।०२	दि. २ ।२९	आ. २ ।१६	प्रा. ७ ।२२	सि. ३३ ।५३	व. २० ।०२	मि. ४४ ।१९	रा. १२ ।१२	६ ।१२ ।३७ ।१९	२७ ।४२	६ ।२८	५ ।३२	८	१३	३०
७ बु.	१४ ।१५	दि. १२ ।१०	पु. ५४ ।१३	रा. ४ ।०९	सा. २६ ।१०	ब. १४ ।१५	कर्क	अहो.	६ ।१३ ।३७ ।२९	२७ ।३६	६ ।२८	५ ।३२	९	१४	३१
८ ब.	८ ।१७	दि. ६ ।४८	श्ले. ४९ ।५६	रा. २ ।२७	शु. १८ ।१८	कौ. ८ ।१७	क. ४९ ।५६	रा. २ ।२७	६ ।१४ ।३७ ।३९	२७ ।३६	६ ।२९	५ ।३१	१०	१५	१
९ शु.	२ ।१७	प्रा. ७ ।२४	म. ४५ ।५३	रा. १२ ।५०	शु. १० ।३३	ग. २ ।१७	सिंह	अहो.	६ ।१५ ।३७ ।४९	२७ ।३३	६ ।२९	५ ।३१	११	१६	२
११ श.	५१ ।१०	रा. २ ।५८	पूफ. ४२ ।१३	रा. ११ ।२३	ब्र. २ ।५६	ब. २४ ।४७	सिं. ५६ ।२६	रा. ५ ।०४	६ ।१६ ।३७ ।५६	२७ ।३०	६ ।३०	५ ।३०	१२	१७	३
१२ र.	४६ ।२०	रा. १ ।०३	उफ. ३६ ।०५	रा. १० ।०९	वै. ४८ ।४८	कौ. १८ ।४५	कन्या	अहो.	६ ।१७ ।३८ ।२२	२७ ।२६	६ ।३१	५ ।२९	१३	१८	४
१३ चं.	४२ ।२३	रा. ११ ।२८	ह. ३६ ।४८	रा. ६ ।१४	वि. ४२ ।३८	ग. १४ ।२२	कन्या	अहो.	६ ।१८ ।३८ ।४५	२७ ।२३	६ ।३१	५ ।२९	१४	१९	५
१४ मं.	३६ ।२१	रा. १० ।१६	चि. ३५ ।१७	रा. ८ ।३६	प्री. ३७ ।१२	वि. १० ।५२	कं. ६ ।०३	दि. ८ ।५७	६ ।१९ ।३९ ।०८	२७ ।२०	६ ।३२	५ ।२८	१५	२०	६
३० बु.	३७ ।२४	रा. ६ ।३१	स्वा. ३४ ।५१	रा. ८ ।२९	आयु. ३२ ।३५	च. ८ ।२३	तुला	अहो.	६ ।२० ।३९ ।३१	२७ ।१७	६ ।३३	५ ।२७	१६	२१	७

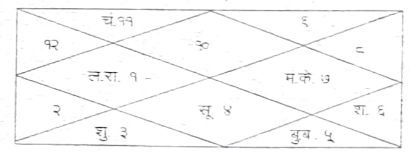
दक्षिणां विना यात्राश्विन्याम्, कार्त्तिके द्विदलं त्यजेत्।
पुष्टः शुक्रः **शुद्धारम्भश्च** ५५ ।२६ उपरि।
वरीयानदं. ५४ ।१८, भ. ६ ।०० उपरि ३४ ।१७ यावत्, **गृहारम्भो** दक्षिणयात्रा च रोहिण्याम्।
कृष्णपिंगाक्ष ४ व्रतं, करक ४, पश्चिमां विना यात्रा पञ्चम्याम्।
गृहारम्भः पूर्वां विना यात्रा च मृगशिरसि।
पुनर्वसुदं. ५६ ।०४, भ. २० ।०२ उपरि ४७ ।०६ यावत्, पश्चिमयात्रा सप्तम्यां पुनर्वसौ ततो रात्र्यन्ते उत्तरां विना यात्रा पुष्ये।
उत्तरां विना यात्रा पुष्ये, (७–८) एको.।
नवम्बर ११, गं. ३८ ।५६ उपरि ५३ ।५६ यावत्।
दशमीदं. ५४ ।१४, भ. २६ ।२४ उपरि ५६ ।३१ यावत्, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।
ऐन्द्रदं. ५२ ।४३, द.ति. ५१ ।१० उपरि, **रम्भा** ११व्रतं स्मार्त्तानां, उत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।
रम्भा ११ व्रतं वैष्णवानां, गोवत्स १२, बिल्वदलेन तुलसीदलेन वा पारणं, पूर्वदक्षिणयात्रा त्रयोदश्यां, द.ति. ४६ ।२० यावत्।
प्रदोष १३ व्रतं, दक्षिणयात्रा त्रयोदश्यां, भ. ४२ ।२३ उपरि, **धन्वन्तरि** (धनतेरस) जयन्ती, **ब्रह्मवैवर्त्ते**—नारायणांशो भगवान् स्वयं **(×)**
प्रदोष १४ व्रतं, **कालीपूजा,** निशीथे कालीताराभुवनेश्वरीप्रादुर्भावः, पूर्वदक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततः पश्चिमदक्षिणयात्रा चतुर्दश्यां, (+)
विशाखायां रविः ४ ।२३, कार्त्तिकी ३० स्नानदानादिः, **दीपावली,** सुखरात्रिः, प्रदोषे घं. ७ ।०६ यावद्रात्रौ **लक्ष्मीपूजनमुल्काभ्रमणं** पितृविसर्जनञ्च, (=)

(×) धन्वन्तरिर्महान्। पुरा समुद्रमथने समुत्तस्थौ महोदधेः।। **सिमरियाधाम्नि अमृतप्राप्तिदिनं** गंगास्नानदानादिकम्।
(+) भ. १० ।५२ या., **हनुमज्जन्मोत्सवो** ध्वजदानञ्च, **वायुपुराणे**—कार्त्तिकस्यासिते पक्षे (▽)
(▽) स्वात्यां भौमे चतुर्दशी। मेषलग्ने ऽञ्जनीगर्भात् स्वयं जातो हरः शिवः।।
(=) दीक्षाग्रहणं, अकृतपितृपक्षपार्वणैरवश्यमेव पार्वणं विधेयम्।

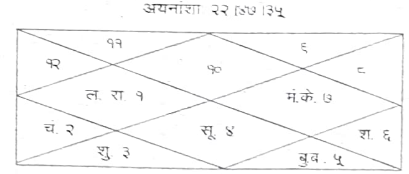
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	व. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	व. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ ब.	६ ।२२ ।१२ ।१८	७ ।०१ ।३२ ।०८	७ ।०४ ।१८ ।४२	५ ।२८ ।११ ।४२	८ ।०७ ।४० ।२५	६ ।०६ ।१४ ।२०	४३ ।५६	१८ ।५४	२० ।५०	२३ ।०३	१ ।२१	३ ।३७	५ ।५२	८ ।०६	१० ।२६	१२ ।३१	१४ ।१७	१५ ।४८	१७ ।१७
२ शु.	६ ।२२ ।४५ ।३३	७ ।०२ ।४६ ।१६	७ ।०४ ।३१ ।३७	५ ।२७ ।३५ ।४४	८ ।०७ ।४५ ।१३	६ ।०६ ।११ ।०६	४३ ।५७	१८ ।५०	२० ।४६	२२ ।५६	१ ।१७	३ ।३३	५ ।४८	८ ।०५	१० ।२२	१२ ।२७	१४ ।१३	१५ ।४४	१७ ।१३
३ श.	६ ।२३ ।१८ ।४८	७ ।०४ ।०६ ।२४	७ ।०४ ।४४ ।३२	५ ।२६ ।५६ ।४६	८ ।०७ ।५० ।०१	६ ।०६ ।०७ ।५६	४३ ।५६	१८ ।४६	२० ।४२	२२ ।५५	१ ।१३	३ ।२९	५ ।४४	८ ।०१	१० ।१८	१२ ।२३	१४ ।०६	१५ ।४०	१७ ।०६
४ र.	६ ।२३ ।५३ ।२७	७ ।०५ ।०१ ।०८	७ ।०४ ।५७ ।३०	५ ।२६ ।३६ ।४८	८ ।०७ ।५५ ।००	६ ।०६ ।०४ ।४८	४३ ।५४	१८ ।४२	२० ।३८	२२ ।५१	१ ।०६	३ ।२५	५ ।४०	७ ।५७	१० ।१४	१२ ।१९	१४ ।०५	१५ ।३६	१७ ।०५
५ चं.	६ ।२४ ।२८ ।०६	७ ।०५ ।५५ ।५२	७ ।०५ ।१० ।२८	५ ।२६ ।१३ ।५०	८ ।०७ ।५६ ।५६	६ ।०६ ।०१ ।३७	४३ ।५२	१८ ।३८	२० ।३४	२२ ।४७	१ ।०५	३ ।२१	५ ।३६	७ ।५३	१० ।१०	१२ ।१५	१४ ।०१	१५ ।३२	१७ ।०१
६ मं.	६ ।२५ ।०२ ।४५	७ ।०६ ।५० ।३६	७ ।०५ ।२३ ।२६	५ ।२५ ।५० ।५२	८ ।०८ ।०४ ।५८	६ ।०८ ।५८ ।२६	४३ ।५०	१८ ।३४	२० ।३०	२२ ।४३	१ ।०१	३ ।१७	५ ।३२	७ ।४६	१० ।०६	१२ ।११	१३ ।५७	१५ ।२८	१६ ।५७
७ बु.	६ ।२५ ।३७ ।२४	७ ।०७ ।४५ ।२०	७ ।०५ ।३६ ।२४	५ ।२५ ।२७ ।५५	८ ।०८ ।०६ ।५६	६ ।०८ ।५५ ।१५	४३ ।४८	१८ ।३०	२० ।२६	२२ ।३६	० ।५७	३ ।१३.	५ ।२८	७ ।४५	१० ।०२	१२ ।०७	१३ ।५३	१५ ।२४	१६ ।५३
८ ब.	६ ।२६ ।१२ ।०२	७ ।०८ ।४० ।०४	७ ।०५ ।४६ ।२२	५ ।२५ ।०४ ।५८	८ ।०८ ।१४ ।५४	६ ।०८ ।५२ ।०४	४३ ।४७	१८ ।२६	२० ।२२	२२ ।३५	० ।५३	३ ।०६	५ ।२४	७ ।४१	६ ।५८	१२ ।०३	१३ ।४६	१५ ।२०	१६ ।४६
९ शु.	६ ।२६ ।४६ ।४०	७ ।०६ ।३४ ।४७	७ ।०६ ।०२ ।२०	५ ।२४ ।४२ ।०१	८ ।०८ ।१६ ।५२	६ ।०८ ।४८ ।५४	४३ ।४६	१८ ।२२	२० ।१८	२२ ।३१	० ।४६	३ ।०५	५ ।२०	७ ।३७	६ ।५४	११ ।५६	१३ ।४५	१५ ।१६	१६ ।४५
११ श.	६ ।२७ ।२१ ।१८	७ ।१० ।२६ ।३०	७ ।०६ ।१५ ।१७	५ ।२४ ।१६ ।०४	८ ।०८ ।२४ ।५०	६ ।०८ ।४५ ।४४	४३ ।४५	१८ ।१६	२० ।१५	२२ ।२८	० ।४६	३ ।०२	५ ।१७	७ ।३४	६ ।५१	११ ।५६	१३ ।४२	१५ ।१३	१६ ।४२
१२ र.	६ ।२७ ।५७ ।११	७ ।१० ।४६ ।४२	७ ।०६ ।२८ ।३५	५ ।२४ ।११ ।३७	८ ।०८ ।३० ।५६	६ ।०८ ।४२ ।३३	४३ ।४३	१८ ।१५	२० ।११	२२ ।२४	० ।४२	२ ।५८	५ ।१३	७ ।३०	६ ।४७	११ ।५२	१३ ।३८	१५ ।०६	१६ ।३८
१३ चं.	६ ।२८ ।३३ ।०४	७ ।११ ।०६ ।५४	७ ।०६ ।४१ ।५२	५ ।२४ ।०४ ।१०	८ ।०८ ।३७ ।०२	६ ।०८ ।३६ ।२२	४३ ।४१	१८ ।११	२० ।०७	२२ ।२०	० ।३८	२ ।५४	५ ।०६	७ ।२६	६ ।४३	११ ।४८	१३ ।३४	१५ ।०५	१६ ।३४
१४ मं.	६ ।२६ ।०८ ।५७	७ ।११ ।३० ।०६	७ ।०६ ।५५ ।०६	५ ।२३ ।५६ ।४३	८ ।०८ ।४३ ।०८	६ ।०८ ।३६ ।११	४३ ।३६	१८ ।०७	२० ।०३	२२ ।१६	० ।३४	२ ।५०	५ ।०५	७ ।२२	६ ।३६	११ ।४४	१३ ।३०	१५ ।०१	१६ ।३०
३० बु.	६ ।२६ ।४४ ।५०	७ ।११ ।५० ।१८	७ ।०७ ।०८ ।२६	५ ।२३ ।४६ ।१६	८ ।०८ ।४६ ।१४	६ ।०८ ।३३ ।००	४३ ।३७	१८ ।०३	१६ ।५६	२२ ।१२	० ।३०	२ ।४६	५ ।०१	७ ।१८	६ ।३५	११ ।४०	१३ ।२६	१४ ।५७	१६ ।२६

३ शनौ वल्ली ८ ।३६ ।२५ ।५४
अयनांशाः २२ ।४७ ।३४



११ शनौ वल्ली ८ ।३६ ।२६ ।०१
अयनांशा २२ ।४७ ।३५



विविधविषयाः—कार्त्तिके सकलं मासं प्रातःस्नायी जितेन्द्रियः। जपन् हविष्यभुक् शान्तः सर्वपापैः प्रमुच्यते ।। प्रातः स्नानमन्त्रः—कार्त्तिकेऽहं करिष्यामि प्रातः स्नानं जनार्दन। प्रीत्यर्थं तव देवेश दामोदर मया सह।। **धात्रीमाहात्म्यम्**—धात्रीच्छायां समाश्रित्य भुंक्ते योऽन्नं हि मानवः। ब्राह्मणान् भोजयित्वा तु वार्षिकं किल्विषं हरेत्।। धात्रीफलविलिप्तांगो धात्रीफलविभूषितः । धात्रीफलकृताहारो नरो नारायणो भवेत् । **उल्काभ्रमणमन्त्रः**—शस्त्राशस्त्रहतानां च भूतानां भूतदर्शयोः । उज्ज्वलज्योतिषा देहं निर्दहे व्योमवह्निना ।। अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम। उज्ज्वलज्योतिषा दग्धास्ते यान्तु परमां गतिम्।। यमलोकं परित्यज्य आगता ये महालये। उज्ज्वलज्योतिषा वर्त्म प्रपश्यन्तो व्रजन्तु ते।। **तुलासंक्रमणे आकाशदीपदानफलम्**—तुलायां तिलतैलेन सायंकाले समागते। आकाशदीपं यो दद्यान्मासमेकं हरिं प्रति।। महतीं श्रियमवाप्नोति रूपसौभाग्यसम्पदः। **दीपदानमन्त्रः**—दामोदराय नभसि तुलायां लोलया सह। प्रदीपं ते प्रयच्छामि नमोऽनन्ताय वेधसे ।।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशनयः, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः, वक्री पूर्वोदितः शुक्रः।

वातावरणम्—पक्षाद्यन्तभागयोः वातमेघचारादयस्तन्मध्यभागे वातमेघचारस्वल्पवृष्टयः।

कार्तिकशुक्लपक्षः

शकाब्दः १६४०, संवत् २०७५, सन् १४२६ साल, दि. ८।११।१८ ई. तः दि. २३।११।१८ ई. यावत्।
शुद्धः, ४ तो शुद्धः, शरद तुः, ८ तो हेमन्तर्तुः, याम्यगोलायने, उत्तरे कालः, ८ तः पूर्वे कालः।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ ब.	३६।४०	रा. ६।१३	वि. ३५।३८	रा. ८।४८	सौ. २८।५७	कि. ७।०२	तु. २०।२७	दि. २।४४	६।२१।३६।५३	२७।१४	६।३३	५।२७	१७	२२	८
२ शु.	३७।१४	रा. ६।२८	अनु. ३७।३६	रा. ६।३८	शो. २६।१६	बा. ६।५७	वश्चिक	अहो.	६।२२।४०।१५	२७।११	६।३४	५।२६	१८	२३	६
३ श.	३६।१२	रा. १०।१५	ज्ये. ४१।००	रा. १०।५८	अग. २४।४२	तै. ८।१३	व. ४१।००	रा. १०।५८	६।२३।४०।३७	२७।०८	६।३४	५।२६	१६	२४	१०
४ र.	४२।१२	रा. ११।२८	मू. ४५।२४	रा. १२।४५	सु. २३।५८	व. १०।४२	धनु	अहो.	६।२४।४१।१४	२७।०४	६।३५	५।२५	२०	२५	११
५ च.	४६।१६	रा. ०१।०८	पूषा. ५०।५०	रा. २।५६	ध. २४।०७	ब. १४।१६	धनु	अहो.	६।२५।४१।५१	२७।००	६।३६	५।२४	२१	२६	१२
६ मं.	५१।१३	रा. ३।०६	उषा. ५६।५६	रा. ५।२३	शू. २४।५३	कौ. १८।४६	ध. ७।२१	दि. ६।३३	६।२६।४२।२८	२६।५६	६।३७	५।२३	२२	२७	१३
७ बु.	५६।३२	रा. ५।१४	श्र. ६०।००	अहो.	ग. २६।०७	ग. २३।५३	मकर	अहो.	६।२७।४३।०५	२६।५३	६।३७	५।२३	२३	२८	१४
८ ब.	६०।००	अहो.	श्र. ३।२७	दि. ८।०१	व. २७।३१	वि. २६।११	म. ३६।३६	रा. ६।१८	६।२८।४३।४१	२६।५०	६।३८	५।२२	२४	२६	१५
८ शु.	१।५०	प्रा. ७।२३	ध. ६।५१	दि. १०।३५	ध्रु. २८।४३	ब. १।५०	कुम्भ	अहो.	६।२६।४४।१७	२६।४७	६।३६	५।२१	२५	३०	१६
६ श.	६।४०	दि. ६।१६	शत. १५।४७	दि. १२।५८	व्या. २६।२७	कौ. ६।४०	कुम्भ	अहो.	७।००।४४।५३	२६।४४	६।३६	५।२१	२६	१	१७
१० र.	१०।४२	दि. १०।५७	पूभा. २०।५६	दि. ३।०४	ह. २६।३३	ग. १०।४२	कु. ४।४१	दि. ८।३२	७।०१।४५।४१	२६।४१	६।४०	५।२०	२७	२	१८
११ च.	१३।३८	दि. १२।०७	उभा. २५।०२	दि. ४।४१	व. २८।४३	वि. १३।३८	मीन	अहो.	७।०२।४६।२६	२६।३८	६।४०	५।२०	२८	३	१६
१२ मं.	१५।२६	दि. १२।५३	रे. २८।००	सं. ५।५३	सि. २७।०१	बा. १५।२६	मी. २८।००	सं. ५।५३	७।०३।४७।१७	२६।३५	६।४१	५।१६	२६	४	२०
१३ बु.	१५।५६	दि. १।०६	अ. २६।३६	सं. ६।३४	व्य. २४।१८	तै. १५।५६	मेष	अहो.	७।०४।४८।०५	२६।३२	६।४२	५।१८	३०	५	२१
१४ ब.	१५।१३	दि. १२।४७	भ. ३०।०७	सं. ६।४५	वरी. २०।३४	व. १५।१३	मे. ४४।५५	रा. १२।४०	७।०५।४८।५३	२६।२६	६।४२	५।१८	१	६	२२
१५ शु.	१३।११	दि. ११।५६	कृ. २६।२२	सं. ६।२८	प. १५।५३	ब. १३।११	वष	अहो.	७।०६।४६।४१	२६।२६	६।४३	५।१७	२	७	२३

गोवर्द्धनपूजा, गोक्रीडा, वृषभे औषधिदानं, विशाखानक्षत्रत्वात् गोपूजा नैव, **अन्नकूटः,** बलिपूजा, अग्न्यादिदेवोत्थापनं, **महाकविकालिदासजयन्त्युत्सवः उच्चैठग्रामे** (×)

भ्रातृ २, भगिनीगृहे भोजनं, यम २, यमुनास्नानं, श्रीचित्रगुप्तपूजा, उत्तरयात्रा तृतीयायां, चन्द्रदर्शनमु ३० सौम्यशृंगफलं साम्यं, **मार्गी शुक्रः** ४७।१०।

कटुमहुली ३, प्रतिहारषष्ठीव्रतीनां **निरामिषभोजनं,** पश्चिमोत्तरयात्रा ज्येष्ठायां ततः उत्तरयात्रा, गं. ३५।०० उ. ५०।०० या., वक्री **बुधः** ३२।३६।

गणेश ४ व्रतं. प्रतिहारषष्ठीव्रतीनां संयमः (नहा खाय), पूर्वोत्तरयात्रा पञ्चम्यां, **क्षीणो गुरुरशुद्धारम्भश्च** ४५।२५ उपरि, म. १०।४२ उपरि ४२।१२ यावत्।

प्रतिहारषष्ठीव्रतैकभुक्तादिकं (खरना), उत्तरयात्रा पूर्वाषाढे। (×) तज्जन्मस्थले उज्जयिन्यां कर्मस्थले च, पश्चिमोत्तरयात्रानुराधायां, कुम्भे कुजः ८।५६।

प्रतिहारषष्ठीव्रतं, सायंकालिकार्घदानं, उत्तरां विना यात्रा श्रवणायां, पश्चिमास्तो बुधः ५६।३४।

प्रातः कालिकार्घदानं पारणञ्च, सामापूजारंभः, जगद्धात्रीपूजारंभः, उत्तरां विना यात्रा सप्तम्यां, **पश्चिमास्तो गुरुः** ४५।२५, म. ५६।३२ उपरि।

गोपाष्टमी, गोपूजा, दक्षिणां विना यात्रा श्रवणायां ततः पूर्वयात्रा मकरस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा, **पञ्चकारंभः** प्रातः घं. ८।०१ उपरि, म. २६।११ यावत्।

मासान्तः वृश्चिके रविः ५८।५७ मु. १५ फलं महार्घम्। (+) **कल्पवाससमाप्तिः** कार्तिकस्नानसमाप्तिः, द.ति. ६।४० उपरि।

विष्णुपदीसंक्रान्तिपुण्यकालो घं. १२ यावद्दिने, **पुण्याहः, अक्षयनवमी,** सत्ययुगादिः, गंगास्नानदानादिः, दीक्षाग्रहणं, धात्रीच्छायायां भोजनं, **सिमरियाधाम्नि** (+)

मासादिः, **जगद्धात्रीविसर्जनं,** द.ति. १०।४२ यावत्, म. ४२।१० उपरि। (=) **पञ्चकान्तः** सायं घं. ५।५३ उपरि, पश्चिमयात्रा रेवत्यां तत उत्तरां विना यात्रा।

देवोत्थान ११ व्रतं सर्वेषां, भीष्मपञ्चकव्रतारंभः, **द्विरागमनेकादश्यां,** म. १३।३८ यावत्, (१२) एको.।

प्रदोष १३ व्रतं, दामोदर १२, बिल्वदलेन तुलसीदलेन वा पारणं, **अनुराधायां रविः** १६।२१, **तुलसीविवाहः,** चातुर्मास्यव्रतपारणं, **तामसमन्वादिः,** गं. १६।०० उ. ३१।० या., (=)

प्रदोष १४ व्रतं. वैकुण्ठ १४, काशीविश्वनाथप्रतिष्ठादिनं, **विद्यापतिस्मृतिदिवसः, बाबासाहेबरामपरमहंसस्य** २२६ स्मृतिदिवसः, **मुण्डनं** त्रयोदश्यां, (१३) एको.।

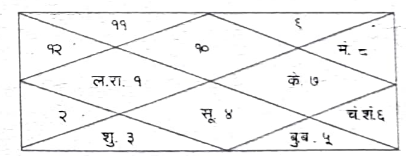
कार्तिकेयावतारः **कार्तिकेयपूजनं, सामाविसर्जनं** पूर्वाभिमुखं, म. १५।१३ उपरि ४४।१२ यावत्, (१४) एको.। ↙**जीवछघट्टे** जीववत्सायां स्नानदानार्चनादिकं, **सोनपुरमेलापकं,** (१५–१) एको।

कार्तिकी १५ गंगास्नानदानादिः, **द्विरागमनं** पूर्वदक्षिणयात्रा च रोहिण्यां, **औत्तममन्वादिः,** सर्वदेवदेव्युत्थापनं, भीष्मपञ्चकव्रतसमाप्तिः, गुरुनानक–निम्बार्क जयन्ती, हरिहरप्रभासपुष्करवराहक्षेत्रस्नानादिकं, **गोशालाघट्टे** कमलायां, ↙

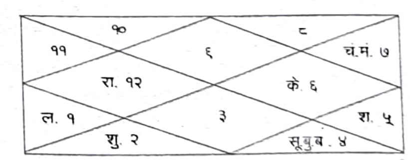
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	व. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	व. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ ब.	१०।००।२०।४२	७।१२।१०।३०	७।०७।२१।४३	५।२३।४१।४६	८।०८।५५।२०	६।८।२६।४६	४३।३६	१७।५६	१६।५५	२२।०८	०।२६	२।४२	४।५७	७।१४	६।३१	११।३६	१३।२२	१४।५३	१६।२२
२ शु.	१०।००।५६।३४	७।१२।३०।४२	७।०७।३५।००	५।२३।३४।२३	८।०६।०१।२५	६।८।२६।३६	४३।३५	१७।५५	१६।५१	२२।०४	०।२२	२।३८	४।५३	७।१०	६।२७	११।३२	१३।१८	१४।४६	१६।१८
३ श.	१०।०१।३२।२६	७।१२।५०।५३	७।०७।४८।१७	५।२३।३६।३४	८।०६।०७।३२	६।८।२३।२६	४३।३४	१७।५१	१६।४७	२२।००	०।१८	२।३४	४।४६	७।०६	६।२३	११।२८	१३।१४	१४।४५	१६।१४
४ र.	१०।०२।०६।१३	७।१२।२६।०४	७।०८।०१।३६	५।२३।४७।५३	८।०६।१३।२३	६।८।२०।१८	४३।३२	१७।४७	१६।४३	२१।५६	०।१४	२।३०	४।४५	७।०२	६।१६	११।२४	१३।१०	१४।४१	१६।१०
५ च.	१०।०२।४६।००	७।१२।०७।१४	७।०८।१४।५५	५।२३।५६।१२	८।०६।१६।१४	६।८।१७।०७	४३।३०	१७।४४	१६।४०	२१।५३	०।११	२।२७	४।४२	६।५६	६।१६	११।२१	१३।०७	१४।३८	१६।०७
६ मं.	१०।०३।२२।४७	७।११।४५।२४	७।०८।२८।१३	५।२४।१०।३१	८।०६।२५।०५	६।८।१३।५६	४३।२८	१७।४०	१६।३६	२१।४६	०।०७	२।२३	४।३८	६।५५	६।१२	११।१७	१३।०३	१४।३४	१६।०३
७ बु.	१०।०३।५६।३४	७।११।२३।३४	७।०८।४१।३१	५।२४।२१।५०	८।०६।३०।५६	६।८।१०।४५	४३।२६	१७।३६	१६।३२	२१।४५	०।०३	२।१६	४।३४	६।५१	६।०८	११।१३	१२।५६	१४।३०	१५।५६
८ ब.	१०।०४।३६।२०	७।११।०१।४४	७।०८।५४।४६	५।२४।३३।०६	८।०६।३६।४७	६।८।०७।३४	४३।२४	१७।३२	१६।२८	२१।४१	२३।५६	२।१५	४।३०	६।४७	६।०४	११।०६	१२।५५	१४।२६	१५।५५
८ शु.	१०।०५।१३।०६	७।१०।३६।५४	७।०६।०८।०७	५।२४।४४।२८	८।०६।४२।३७	६।८।०४।२४	४३।२३	१७।२८	१६।२४	२१।३७	२३।५५	२।११	४।२६	६।४३	६।००	११।०५	१२।५१	१४।२२	१५।५१
६ श.	१०।०५।४६।५२	७।१०।१८।०४	७।०६।२१।२५	५।२४।५५।४६	८।०६।४८।२७	६।८।०१।१४	४३।२२	१७।२४	१६।२०	२१।३३	२३।५१	२।०७	४।२२	६।३६	८।५६	११।०१	१२।४७	१४।१८	१५।४७
१० र.	१०।०६।२७।३६	७।०६।२६।५७	७।०६।३४।५०	५।२५।२०।३१	८।०६।५४।४६	६।७।५८।०३	४३।२०	१७।१६	१६।१५	२१।२८	२३।४६	२।०२	४।१७	६।३४	८।५१	१०।५६	१२।४२	१४।१३	१५।४२
११ च.	१०।०७।०५।२६	७।०८।४१।५०	७।०६।४८।१५	५।२५।४५।१५	८।१०।०१।०५	६।७।५४।५२	४३।१८	१७।१५	१६।११	२१।२४	२३।४२	१।५८	४।१३	६।३०	८।४७	१०।५२	१२।३८	१४।०६	१५।३८
१२ मं.	१०।०७।४३।१३	७।०७।५३।४३	७।१०।०१।४०	५।२६।०६।५६	८।१०।०७।२४	६।७।५१।४१	४३।१६	१७।११	१६।०७	२१।२०	२३।३८	१।५४	४।०६	६।२६	८।४३	१०।४८	१२।३४	१४।०५	१५।३४
१३ बु.	१०।०८।२०।५६	७।०७।०५।३६	७।१०।१५।०५	५।२६।३४।४३	८।१०।१३।४२	६।७।४८।३०	४३।१५	१७।०७	१६।०३	२१।१६	२३।३४	१।५०	४।०५	६।२२	८।३६	१०।४४	१२।३०	१४।०१	१५।३०
१४ ब.	१०।०८।५८।४५	७।०६।१७।३०	७।१०।२८।३०	५।२६।५६।२७	८।१०।२०।००	६।७।४५।१६	४३।१४	१७।०३	१८।५६	२१।१२	२३।३०	१।४६	४।०१	६।१८	८।३५	१०।४०	१२।२६	१३।५७	१५।२६
१५ शु.	१०।०६।३६।३१	७।०५।२६।२४	७।१०।४१।५५	५।२७।२४।११	८।१०।२६।१८	६।७।४२।०८	४३।१३	१६।५८	१८।५४	२१।०७	२३।२५	१।४१	३।५६	६।१३	८।३०	१०।३५	१२।२१	१३।५२	१५।२१

३ शनौ वल्ली ८।३६।२६।०८
अयनांशाः २२।४७।३६



६ शनौ वल्ली ८।३६।२६।१५
अयनांशाः २२।४७।३७



विविधविषयाः—कार्तिकशुक्लप्रतिपदि प्रातर्गोवर्द्धनपूजा कार्या। तत्र गोमयेन गोवर्द्धनमूर्तिं निर्माय पीतपुष्पाक्षतादिभिः पूजयेत्, गाश्च पूजयेत्। **गोवर्द्धनपूजनमन्त्रः**–गोवर्द्धनधराधार गोकुलत्राणकारक। कृष्णवाहुकृतच्छाय गवां कोटिप्रदो भव। **गोपूजनमन्त्रः**—लक्ष्मीर्या लोकपालानां धेनूरूपेण संस्थिता। घृतं वहति यज्ञार्थं सा मे पापं व्यपोहतु। अग्रतः सन्तु मे गावो गावो मे सन्तु पृष्ठतः। गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्। **भ्रातृद्वितीयायां भगिनीपठनीयमन्त्रः**—भ्रातस्तवानुजाताहं भुंक्ष्व भक्तमिदं शुभं। प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः। कनिष्ठभ्रातरि सति–भ्रातस्तवाग्रजाताहं भुंक्ष्व भक्तमिदं शुभम्। प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः। **एकादश्यां विष्णूत्थापनमन्त्रः**—ब्रह्मेन्द्ररुद्रैरभिवन्द्यमानो भवानृषिर्वन्दितवन्दनीयः। प्राप्ता तवेयं किल कौमुदाख्या जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ। मेघा गता निर्मलपूर्णचन्द्र–शारद्यपुष्पाणि मनोहराणि। अहं ददानीति च पुण्यहेतोर्जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ।। उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पते। त्वया चोत्थीयमानेन प्रोत्थितं भुवनत्रयम् ।।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजशनी, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः ३तो वक्री ६तः पश्चिमास्तः, मार्गी पूर्वोदितो गुरुः ७तः पश्चिमास्तः, वक्री पूर्वोदितः शुक्रः २तो मार्गी।

वातावरणम्—पक्षाद्यन्तभागयोः वातातपमेघच्छायादयस्तन्मध्यभागे वातमेघचारच्छिन्नवृष्टयः।

अग्रहायणकृष्णपक्षः

शकाब्दः १६४०, संवत् २०७५, सन् १४२६ साल, दि. २४।११।१८ ई. तः दि. ७।१२।१८ ई. यावत्।
अशुद्धः, हेमन्तर्तुः याम्यगोलायने, पूर्वे कालः।

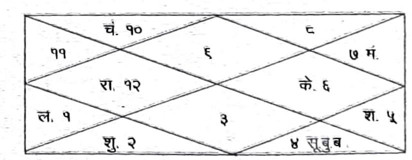
तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ श.	१०।०७	दि. १०।४६	रो. २७।३६	सं. ५।४५	शि. १०।२३	कौ. १०।०७	व. ५६।१८	रा. ५।१४	७।०७।५०।२८	२६।२४	६।४३	५।१७	३	८	२४
२ र.	६।१०	दि. ६।१२	म. २४।५६	दि. ४।४४	सि. ०४।१०	ग. ६।१०	मिथुन	अहो.	७।०८।५१।२८	२६।२२	६।४४	५।१६	४	६	२५
३ च.	१।२१	प्रा. ७।१६	आ. २१।४१	दि. ३।२४	शु. ४६।५३	वि. १।२१	मिथुन	अहो.	७।०६।५२।२८	२६।२०	६।४४	५।१६	५	१०	२६
५ म.	५०।१५	रा. २।५०	पुन. १७।५४	दि. १।५४	शु. ४२।१४	कौ. २३।०८	मि. ३।५१	दि. ८।१६	७।१०।५३।२७	२६।१८	६।४४	५।१६	६	११	२७
६ बु.	४४।२०	रा. १२।२६	पु. १३।४७	दि. १२।१६	ब्र. ३४।२२	ग. १७।१८	कर्क	अहो.	७।११।५४।२६	२६।१७	६।४५	५।१५	७	१२	२८
७ ब.	३८।२३	रा. १०।०६	श्ले. ६।३२	दि. १०।३४	ऐं. २६।२८	वि. ११।२२	क. ६।३२	दि. १०।३४	७।१२।५५।२५	२६।१६	६।४५	५।१५	८	१३	२९
८ शु.	३२।४२	रा. ७।५०	म. ५।२६	दि. ८।५५	वै. १८।४४	बा. ५।३३	सिंह	अहो.	७।१३।५६।२६	२६।१५	६।४५	५।१५	९	१४	३०
९ श.	२७।२५	सं. ५।४३	पूफ. १।४०	प्रा. ७।२५	वि. ११।१४	तै. ०।०४	सिं. १५।५०	दि. १।०५	७।१४।५७।२३	२६।१४	६।४५	५।१५	१०	१५	१
१० र.	२२।४३	दि. ३।५१	ह. ५५।४६	रा. ५।०६	प्री. ०४।१२	वि. २२।४३	कन्या	अहो.	७।१५।५८।३१	२६।१२	६।४६	५।१४	११	१६	२
११ च.	१८।५२	दि. २।१६	चि. ५४।०६	रा. ४।२४	सौ. ५२।०२	बा. १८।५२	क. २४।५८	सं. ४।४५	७।१६।५६।३६	२६।१०	६।४६	५।१४	१२	१७	३
१२ मं.	१५।५६	दि. १।१०	स्वा. ५३।२५	रा. ४।०८	शो. ४७।०८	तै. १५।५६	तुला	अहो.	७।१८।००।४६	२६।०८	६।४६	५।१४	१३	१८	४
१३ बु.	१४।१०	दि. १२।२७	वि. ५३।५५	रा. ४।२१	अग. ४३।०७	व. १४।१०	तु. ३८।४८	रा. १०।१८	७।१९।०१।५३	२६।०७	६।४७	५।१३	१४	१९	५
१४ ब.	१३।३४	दि. १२।१३	अनु. ५५।३८	रा. ५।०२	सु. ४०।०८	श. १३।३४	वृश्चिक	अहो.	७।२०।०३।००	२६।०६	६।४७	५।१३	१५	२०	६
३० शु.	१४।१५	दि. १२।२६	ज्ये. ५८।३८	रा. ६।१४	ध. ३८।०८	ना. १४।१५	व. ५८।३८	रा. ६।१४	७।२१।०४।०७	२६।०५	६।४७	५।१३	१६	२१	७

दक्षिणयात्रा रोहिण्यां ततः पूर्वां विना यात्रा।
साध्यदं. ५३।०६, **नवान्नपार्वणं, द्विरागमनं** पश्चिमां विना यात्रा च मृगशिरसि, भ. ३३।४६ उपरि।
चतुर्थीदः ५४।३६, **गजानन** ४ व्रतं, **द्विरागमनं** पश्चिमदक्षिणयात्रा च पञ्चम्यां, भ. १।२१ यावत्।
वीडपञ्चमी, मनसादेवीशयनं, **विषहरीपूजनं,** पश्चिमदक्षिणयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा पुनर्वसौ तत उत्तरां विना यात्रा पञ्चम्याम्।
उत्तरां विना यात्रा पुष्ये, तुलायां शुक्रः २१।१५, गं. ५८।३२ उपरि, भ. ४४।२० उपरि।
कालभैरवाष्टमी, कालभैरवावतारः, कालभैरवव्रतं पूजनञ्च, गं. १३।३२ यावत्, भ. ११।२२ यावत्।
महाराजाधिराज कामेश्वरसिंहजयन्ती, अष्टकाश्राद्धं, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्यां, पूर्वोदितो बुधः ६।३६।
दिसम्बर १२, उत्तरफल्गुनीदं ५६।४२, अन्वष्टकानवमी, द.ति. २७।२५ उपरि, भ. ५५।०४ उपरि।
आयुष्मानदं. ५३।३४, दति. २२।४३ यावत्, भ. २२।४३ यावत्।
ज्येष्ठायां रविः २३।४८, मार्गी बुधः ३२।३४, **उत्पन्ना** ११ व्रतं सर्वेषां, दक्षिणयात्रैकादश्याम्।
गोमूत्रेण पारणं, पश्चिमदक्षिणयात्रा स्वात्याम्, **प्रदोष** १३ व्रतम्।
प्रदोष १४ व्रतं, वृश्चिकगते चन्द्रे कुरुक्षेत्रे **कुम्भयोगारंभः,** भ. १४।१० उपरि ४३।५२ यावत्, (१३–१४) एको.।
कुरुक्षेत्रे कुम्भयोगः, (३०) एको.।
मार्गी ३० स्नानदानादिः, उत्तरयात्रा प्रतिपदि ज्येष्ठायां ततः पूर्वोत्तरयात्रा, (१) एको., गं. ५२।३८ उपरि, **कुरुक्षेत्रे** कुम्भयोगः, **''वृश्चिके ब्रह्मसरसि''** इत्यनेन वृश्चिकार्कं **(१७ नवम्बरतः १६ दिसम्बरं)** यावद् **ब्रह्मसरसि** स्नानदानादिकमक्षयफलदं तत्रापि विशेषेण चतुर्दश्यष्टमीपूर्णिमाऽमावास्या विवाहपञ्चमीसंक्रान्तिदिनानि फलदानीति।

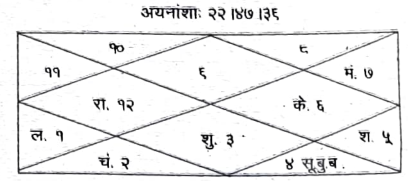
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	व.अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	व. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ श.	१०।१०।१४।१७	७।४।४१।१८	७।१०।५५।१६	५।२७।४८।५५	८।१०।३२।३६	६।०७।३८।५८	४३।१२	१६।५४	१८।५०	२१।०३	२३।२१	१।३७	३।५२	६।०६	८।२६	१०।३१	१२।१७	१३।४८	१५।१७
२ र.	१०।१०।५२।४०	७।४।१०।३०	७।११।०८।३७	५।२८।२४।५६	८।१०।३६।०१	६।०७।३५।४७	४३।११	१६।५०	१८।४६	२०।५६	२३।१७	१।३३	३।४८	६।०५	८।२२	१०।२७	१२।१३	१३।४४	१५।१३
३ च.	१०।११।३१।०२	७।३।३६।४२	७।११।२१।५५	५।२६।०१।०३	८।१०।४५।२६	६।०७।३२।३६	४३।१०	१६।४६	१८।४२	२०।५५	२३।१३	१।२६	३।४४	६।०१	८।१८	१०।२३	१२।०६	१३।४०	१५।०६
५ म.	१०।१२।०६।२४	७।३।०८।५४	७।११।३५।१२	५।२६।३७।०६	८।१०।५१।५१	६।०७।२६।२५	४३।०६	१६।४१	१८।३७	२०।५०	२३।०८	१।२४	३।३६	५।५६	८।१३	१०।१८	१२।०४	१३।३५	१५।०४
६ बु.	१०।१२।४७।४६	७।२।३८।०६	७।११।४८।२६	६।००।१३।०६	८।१०।५८।१५	६।०७।२६।१४	४३।०८	१६।३७	१८।३३	२०।४६	२३।०४	१।२०	३।३५	५।५२	८।०६	१०।१४	१२।००	१३।३१	१५।००
७ ब.	१०।१३।२६।०८	७।२।०७।१८	७।१२।०१।४६	६।००।४६।१२	८।११।०४।३६	६।०७।२३।०३	४३।०७	१६।३३	१८।२६	२०।४२	२३।००	१।१६	३।३१	५।४८	८।०५	१०।१०	११।५६	१३।२७	१४।५६
८ शु.	१०।१४।०४।३०	७।१।३६।३०	७।१२।१५।०३	६।०१।२५।१५	८।११।११।०३	६।०७।१६।५३	४३।०७	१६।२८	१८।२४	२०।३७	२२।५५	१।११	३।२६	५।४३	८।००	१०।०५	११।५१	१३।२२	१४।५१
९ श.	१०।१४।४२।५२	७।१।०५।४३	७।१२।२८।२०	६।०२।०१।१८	८।११।१७।२७	६।०७।१६।४३	४३।०७	१६।२४	१८।२०	२०।३३	२२।५१	१।०७	३।२२	५।३६	७।५६	१०।०१	११।४७	१३।१८	१४।४७
१० र.	१०।१५।२१।३८	७।०।५८।४६	७।१२।४१।४३	६।०२।४५।४०	८।११।२३।५७	६।०७।१३।३२	४३।०६	१६।२०	१८।१६	२०।२६	२२।४७	१।०३	३।१८	५।३५	७।५२	६।५७	११।४३	१३।१४	१४।४३
११ च.	१०।१६।००।३४	७।०।५४।४२	७।१२।५५।०६	६।०३।३०।०२	८।११।३०।२७	६।०७।१०।२१	४३।०५	१६।१५	१८।११	२०।२४	२२।४२	०।५८	३।१३	५।३०	७।४७	६।५२	११।३८	१३।०६	१४।३८
१२ म.	१०।१६।३६।३०	७।१।११।१७	७।१३।०८।२६	६।०४।१४।२४	८।११।३६।५७	६।०७।०७।१०	४३।०४	१६।११	१८।०७	२०।२०	२२।३८	०।५४	३।०६	५।२६	७।४३	६।४८	११।३४	१३।०५	१४।३४
१३ बु.	१०।१७।१८।२६	७।१।२७।५२	७।१३।२१।५२	६।०४।५८।४६	८।११।४३।२७	६।०७।०३।५६	४३।०३	१६।०७	१८।०३	२०।१६	२२।३४	०।५०	३।०५	५।२२	७।३६	६।४४	११।३०	१३।०१	१४।३०
१४ ब.	१०।१७।५७।२२	७।१।४४।२८	७।१३।३५।१५	६।०५।४३।०७	८।११।४६।५६	६।०७।००।४८	४३।०२	१६।०३	१७।५६	२०।१२	२२।३०	०।४६	३।०१	५।१८	७।३५	६।४०	११।२६	१२।५७	१४।२६
३० शु.	१०।१८।३६।१८	७।२।०१।०४	७।१३।४८।३८	६।०६।२७।२८	८।११।५६।२५	६।०६।५७।३८	४३।०२	१५।५८	१७।५४	२०।०७	२२।२५	०।४१	२।५६	५।१३	७।३०	६।३५	११।२१	१२।५२	१४।२१

१ शनौ वल्ली ८।३६।२६।२२
अयनांशाः २२।४७।३८



६ शनौ वल्ली ८।३६।२६।२६
अयनांशाः २२।४७।३६



विविधविषयाः—मार्गकृष्णाष्टम्यां श्रीकालभैरवोत्पत्तिदिनमतस्तद् दिने तत्पूजनमुपवासश्च कार्यः। **पंचोपचारपूजनं**—गन्धः पुष्पं च धूपश्च दीपो नैवेद्यमेव च। पंचोपचाराः कथिता देवानां प्रीतिहेतवः। **षोडशोपचारपूजा**—आसनं स्वागतं चार्घ्यं पाद्यमाचमनं तथा। मधुपर्काचमनस्नानवसनाभरणानि च। गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यं चन्दनं तथा। **पंचगव्यम्**—गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम्। पञ्चगव्यमिदं प्रोक्तं महापातकनाशनम्। **पञ्चामृतम्**—शर्करा मधु दुग्धं च घृतं दधि समांशकम्। पंचामृतमिदं प्रोक्तं देहशुद्धौ विधीयते। **पंचरत्नानि**—वज्रमौक्तिकवैदूर्य-पुष्परागेन्द्रनीलकम्। पंचरत्नमिदं प्रोक्तं मन्त्रैः कुम्भेषु निःक्षिपेत्। **पंचपल्लवाः**—अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षचूतन्यग्रोधपल्लवाः। पंचपल्लव इत्युक्तः सर्वकर्मसु शोभनः। **सप्तधान्यम्**—यवगोधूमधान्यानि तिलाः कंकुस्तथैव च। श्यामकं चणकं चैव सप्तधान्यमुदाहृतम्। **सर्वौषधिः**—मुरा मांसी वचा कुष्ठं शैलेयं रजनीद्वयम्। शुण्ठी चम्पकमुस्तं च सर्वौषधिगणः स्मृतः। सर्वौषधीनामभावे तु दद्यादेकां शतावरीम्। **सप्तमृत्तिका**—अश्वस्थानादगजस्थानाद्वल्मीकात्संगमाद्धदात्। राजद्वाराच्च गोष्ठाच्च मृदमानीय निःक्षिपेत्।।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजशुक्रशनयः, वक्री पश्चिमास्तो बुधः ६तः पूर्वोदितः ११ तो मार्गी, मार्गी पश्चिमास्तो गुरुः।

वातावरणम्—पक्षादिभागे वातातपमेघचारादयस्तदन्तमागे वातमेघचारहिमपातादयः।

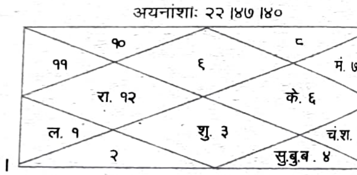
अग्रहायणशुक्लपक्षः

शकाब्दः १६४०, संवत् २०७५, सन् १४२६ साल, दि. ८।१२।१८ ई. तः दि. २२।१२।१८ ई. यावत्।
अशुद्धः, ८ तः शुद्धः, ६ तः अशुद्धः, हेमन्तर्तुः, याम्यगोलायने, पूर्वे कालः।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ श.	१६।२४	दि. १।२१	मू. ६०।००	अहो.	शू. ३७।०८	ब. १६।२४	धनु	अहो.	७।२२।०५।१४	२६।०४	६।४७	५।१३	१७	२२	८
२ र.	१६।३५	दि. २।३८	मू. २।४७	प्रा. ७।५५	गं. ३६।५८	कौ. १६।३५	धनु	अहो.	७।२३।०६।२६	२६।०२	६।४८	५।१२	१८	२३	९
३ चं.	२३।५२	दि. ४।२१	पूषा. ८।०१	दि. १०।००	व. ३७।३४	ग. २३।५२	ध. २४।३०	दि. ४।३६	७।२४।०७।४४	२६।००	६।४८	५।१२	१९	२४	१०
४ मं.	२८।५४	सं. ६।२२	उषा. १३।५८	दि. १२।२३	ध्रु. ३८।३६	वि. २८।५४	मकर	अहो.	७।२५।०८।५६	२५।५८	६।४८	५।१२	२०	२५	११
५ बु.	३४।१८	रा. ८।३२	श्र. २०।२५	दि. २।५६	व्या. ३६।५८	ब. १।३६	म. ५३।४०	रा. ४।१७	७।२६।१०।१४	२५।५७	६।४९	५।११	२१	२६	१२
६ ब.	३९।४१	रा. १०।४१	ध. २६।५४	सं. ५।३५	ह. ४१।१५	कौ. ७।००	कुम्भ	अहो.	७।२७।११।२६	२५।५६	६।४९	५।११	२२	२७	१३
७ शु.	४४।३२	रा. १२।३८	शत. ३३।००	रा. ८।०१	व. ४२।०८	ग. १२।०७	कुम्भ	अहो.	७।२८।१२।४४	२५।५५	६।४९	५।११	२३	२८	१४
८ श.	४८।३८	रा. २।१६	पूभा. ३८।२३	रा. १०।१०	सि. ४२।२५	वि. १६।३५	कु. २२।०३	दि. ३।३८	७।२९।१३।५८	२५।५४	६।४९	५।११	२४	२९	१५
९ र.	५१।३३	रा. ३।२७	उभा. ४२।४६	रा. १२।५६	व्य. ४१।५३	बा. २०।०६	मीन	अहो.	८।००।१५।१६	२५।५२	६।५०	५।१०	२५	१	१६
१० चं.	५३।२३	रा. ४।११	रे. ४६।०४	रा. १।१७	वरी. ४०।३१	तै. २२।२८	मी. ४६।०४	रा. १।१७	८।०१।१६।४०	२५।५१	६।५०	५।१०	२६	२	१७
११ मं.	५३।५०	रा. ४।२२	अ. ४८।०४	रा. २।०४	प. ३८।०४	व. २३।३७	मेष	अहो.	८।०२।१८।०१	२५।५०	६।५०	५।१०	२७	३	१८
१२ बु.	५३।०१	रा. ४।०२	भ. ४८।४६	रा. २।२२	शि. ३४।३६	ब. २३।२६	मेष	अहो.	८।०३।१९।२२	२५।४९	६।५०	५।१०	२८	४	१९
१३ ब.	५०।५६	रा. ३।१२	कृ. ४८।२२	रा. २।११	सि. ३०।१४	कौ. २१।५६	मे. ३।४२	दि. ८।१९	८।०४।२०।४२	२५।४८	६।५०	५।१०	२९	५	२०
१४ शु.	४७।४८	रा. २।२२	रो. ४६।५०	रा. १।३५	सा. २४।५६	ग. १६।४७	वृष	अहो.	८।०५।२२।०२	२५।४७	६।५१	५।०९	३०	६	२१
१५ श.	४३।४७	रा. १२।२२	म. ४४।३१	रा. १२।३६	शु. १८।५६	वि. १५।४८	व. १५।४१	दि. १।०७	८।०६।२३।२२	२५।४६	६।५१	५।०९	१	७	२२

अं.	
८	**हरिशोव्रतं,** उत्तरयात्रा, गं. ७।३८ यावत्।
९	चन्द्रदर्शनमु. ३० सौम्यश्रृंगफलं साम्यं, **षाण्मासिकरविव्रतारंभः, द्विरागमनं** मूले, पूर्वोत्तरयात्रा, पश्चिमास्तः शनिः ५५।१६, (२) एको.।
१०	**गणेश** ४ व्रतं, **द्विरागमनं** तृतीयायामुत्तराषाढे, उत्तरयात्रा पूर्वाषाढे, भ. ५६।२३ उपरि।
११	उत्तरां विना यात्रा श्रवणायां, भ. २८।५४ यावत्।
१२	**विवाहपञ्चमी,** श्रीसीतारामविवाहोत्सवः, जनकपुरे श्रीसीतारामदर्शनं, **गोस्वामिलक्ष्मीनाथ** (बाबाजी) परमहंसस्य २२५ जयन्त्युत्सवः १४६ स्मृतिदिवसश्च, **(×)**
१३	स्कन्ध ६ व्रतं, चम्पक ६, **द्विरागमनं,** पश्चिमयात्रा धनिष्ठायाम्।
१४	**मुण्डनं,** भ. ४४।३२ उपरि। **(×) पञ्चकारंभो** दिवा घं. २।५६ उपरि, **पूर्वोदितो गुरुः** २४।५६, **मुण्डनं, द्विरागमनं,** उत्तरां विना यात्रा श्रवणायां ततः पूर्वयात्रा मकरस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा।
१५	मासान्तः, **पुष्टो गुरुः शुद्धारम्भश्च** २४।५६ उपरि, भ. १६।३५ यावत्।
१६	**मूले धनुषि रविः** २७।५७ मु. ४५ फलं, समर्घं, **षडशीतिसंक्रान्तिपुण्यकालो** घं. १२ उपरि दिने, **पुण्याहः,** अशुद्धारम्भः २७।५७ उपरि।
१७	मासादिः, **पञ्चकान्तो** रात्रौ घं. १।१७ उपरि, गं. ३४।०४ उपरि ४६।०४ यावत्।
१८	**मोक्षदा** ११ व्रतं सर्वेषां, **गीताजयन्ती,** भ. २३।३७ उपरि ५३।५० यावत्।
१९	केशव १२, गोमूत्रेण पारणम्।
२०	**प्रदोष १३** व्रतम्।
२१	**प्रदोष १४** व्रतं, पश्चिमां विना यात्रा पूर्णिमायाम्, भ. ४७।४८ उपरि।
२२	**मार्गी** १५ स्नानदानादिः, **क्षेत्रस्नानं** हरिहरनाथपूजनदर्शनादिकं, **दत्तात्रेयावतारः,** पूर्वां विना यात्रा प्रतिपदि मृगशिरसि, भ.१५।४८ यावत्।

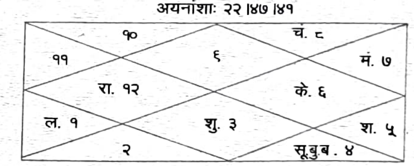
१ शनौ वल्ली ८।३६।२६।३६
अयनांशाः २२।४७।४०



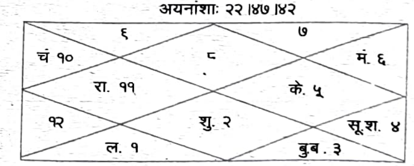
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	व.अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	व. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ श.	१०।१९।१५।२४	७।२।१७।४०	७।१४।०२।००	६।७।११।४६	८।१२।०२।५४	६।६।५४।२८	४३।०२	१५।५४	१७।५०	२०।०३	२२।२१	०।३७	२।५२	५।०६	७।२६	६।३१	११।१७	१२।४८	१४।१७
२ र.	१०।१९।५४।४४	७।३।०४।५४	७।१४।१५।२८	६।८।०२।१२	८।१२।१०।०५	६।६।५१।१७	४३।०१	१५।४६	१७।४५	१९।५८	२२।१६	०।३२	२।४७	५।०४	७।२१	६।२६	११।१२	१२।४३	१४।१२
३ चं.	१०।२०।३४।०४	७।३।५२।०७	७।१४।२८।५६	६।८।५२।३५	८।१२।१७।१६	६।६।४८।०६	४३।००	१५।४५	१७।४१	१९।५४	२२।१२	०।२८	२।४३	५।००	७।१७	६।२२	११।०८	१२।३६	१४।०८
४ मं.	१०।२१।१३।२४	७।४।३६।२०	७।१४।४२।२४	६।९।४२।५८	८।१२।२४।२७	६।६।४४।५५	४२।५६	१५।४१	१७।३७	१९।५०	२२।०८	०।२४	२।३६	४।५६	७।१३	६।१८	११।०४	१२।३५	१४।०४
५ बु.	१०।२१।५२।४४	७।५।२६।३३	७।१४।५५।५२	६।१०।३३।२१	८।१२।३१।३८	६।६।४१।४४	४२।५८	१५।३७	१७।३३	१९।४६	२२।०४	०।२०	२।३५	४।५२	७।०६	६।१४	११।००	१२।३१	१४।००
६ ब.	१०।२२।३२।०३	७।६।१३।४६	७।१५।९।२०	६।११।२३।४४	८।१२।३८।४८	६।६।३८।३३	४२।५७	१५।३३	१७।२९	१९।४२	२२।००	०।१६	२।३१	४।४८	७।०५	६।१०	१०।५६	१२।२७	१३।५६
७ शु.	१०।२३।११।२२	७।७।००।५६	७।१५।२२।४८	६।१२।१४।०६	८।१२।४५।५८	६।६।३५।२३	४२।५७	१५।२८	१७।२४	१९।३७	२१।५५	०।११	२।२६	४।४३	७।००	६।०५	१०।५१	१२।२२	१३।५१
८ श.	१०।२३।५०।४१	७।७।४८।१२	७।१५।३६।१५	६।१३।०४।२८	८।१२।५३।०८	६।६।३२।१३	४२।५७	१५।२४	१७।२०	१९।३३	२१।५१	०।०७	२।२२	४।३९	६।५६	६।०१	१०।४७	१२।१८	१३।४७
९ र.	१०।२४।३०।२७	७।९।०१।०६	७।१५।४९।१९	६।१३।५६।२५	८।१३।००।२१	६।६।२९।०२	४२।५६	१५।२०	१७।१६	१९।२९	२१।४७	०।०३	२।१८	४।३५	६।५२	८।५७	१०।४३	१२।१४	१३।४३
१० चं.	१०।२५।१०।१३	७।१०।१३।५६	७।१६।०२।२३	६।१४।५४।२२	८।१३।०७।३४	६।६।२५।५१	४२।५५	१५।१५	१७।११	१९।२४	२१।४२	२३।५८	२।१३	४।३०	६।४७	८।५२	१०।३८	१२।०९	१३।३८
११ मं.	१०।२५।४९।५८	७।११।२६।५२	७।१६।१५।२७	६।१५।४६।१९	८।१३।१४।४७	६।६।२२।४०	४२।५४	१५।११	१७।०७	१९।२०	२१।३८	२३।५४	२।०९	४।२६	६।४३	८।४८	१०।३४	१२।०५	१३।३४
१२ बु.	१०।२६।२९।४३	७।१२।३९।४५	७।१६।२८।३१	६।१६।४४।१६	८।१३।२२।००	६।६।१९।२९	४२।५३	१५।०६	१७।०२	१९।१५	२१।३३	२३।४९	२।०४	४।२१	६।३८	८।४३	१०।२९	१२।००	१३।२९
१३ ब.	१०।२७।०९।२८	७।१३।५२।३८	७।१६।४१।३५	६।१७।३६।१३	८।१३।२९।१२	६।६।१६।१८	४२।५३	१५।०२	१६।५८	१९।११	२१।२९	२३।४५	२।००	४।१७	६।३४	८।३९	१०।२५	११।५६	१३।२५
१४ शु.	१०।२७।४९।१३	७।१५।०५।३१	७।१६।५४।३८	६।१८।३४।१०	८।१३।३६।२४	६।६।१३।०७	४२।५३	१४।५७	१६।५३	१९।०६	२१।२४	२३।४०	१।५५	४।१२	६।२९	८।३४	१०।२०	११।५१	१३।२०
१५ श.	१०।२८।२८।५८	७।१६।१८।२४	७।१७।०७।४१	६।१९।२६।०७	८।१३।४३।३६	६।६।०९।५७	४२।५३	१४।५३	१६।४९	१९।०२	२१।२०	२३।३६	१।५१	४।०८	६।२५	८।३०	१०।१६	११।४७	१३।१६

८ शनौ वल्ली ८।३६।२६।४३
अयनांशाः २२।४७।४१



१५ शनौ वल्ली ८।३६।२६।५०
अयनांशाः २२।४७।४२



विविधविषयाः—रविवासरे **त्याज्यवस्तूनि**—क्षारं तैलं जलं चोष्णमामिषं निशि भोजनम्। रतिः स्नानं च मध्याह्ने रवौ सप्त विवर्जयेत्। मार्गादिमासे **रविव्रतभक्ष्याणि**—पत्रत्रित्वं तुलस्यास्त्रिपलमथ घृतं मार्गशीर्षादिभक्ष्यं मुष्टीनां त्रिस्तिलानां त्रिपलदधि तथा दुग्धकं गोमयं च। त्रित्वं तोयांजलीनां त्रिमरीचकमथ त्रिःपलाः शक्तवः स्युर्गोमूत्रं शर्करा सद्भविरिति विधिना भानुवारे क्रमेण ।। रात्रौ **लग्नज्ञानम्**—ध्रुवं परितो रक्तवर्णा शूलिनी श्वेतवर्णा चैकान्या तारा मेषान्मीनं यावद्भ्रमति। तत्र ध्रुवात्पश्चिमे मेषवृषौ, वायुकोणे मिथुनं, उत्तरस्यां कर्कसिंहौ, ईशाने कन्या, पूर्वस्यां तुलवृश्चिकौ, अग्निकोणे धनुः, दक्षिणस्यां मकरकुम्भौ, नैर्ऋत्यां च मीनराशिर्वर्त्तते। यदा यत्र रक्तवर्णा शूलिनी तारका तदेव लग्नं तदानीमिति। **चन्द्रोदयास्तसाधनम्**—तिथिगुणितं रजनीपरिमाणं यमरहितं सहितं सितपक्षे। वाणशशाङ्कविभाजितलब्धं भवति विधूदयमस्तमयं च। **यथा**—मार्गशुक्लपञ्चम्यां बुधे रात्रिमानं ३४।०३, तदोक्तरीत्या (३४।०३) ५ = १७०।१५, १७०।१५ + २।०० =१७२।१५, १७२।१५ ÷ १५ = ११।२६ दण्डादि। सूर्यास्त (५।११) माने यथोक्तफलस्य घण्टामिण्टात्मकमान (४।३६) योजनेन घं. ९ मि. ४७ चन्द्रास्तमानमेवं कृष्णपक्षे चन्द्रोदयमानमिति।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजबुधशुक्राः, मार्गी पश्चिमास्तो गुरुः ५तः पूर्वोदितः, मार्गी पूर्वोदितः शनिः २ तः पश्चिमास्तः।

वातावरणम्—पक्षादिभागे शीतमेघचारच्छिन्नवृष्टयस्तदुत्तरार्द्धे वातहिमशीतवृद्धयः।

पौषकृष्णपक्षः

शकाब्दः १६४०, संवत् २०७५, सन् १४२६ साल, दि. २३।१२।१८ ई. तः दि. ५।१।२०१९ ई. यावत्।
अशुद्धः, हेमन्तर्तुः, याम्यगोलायने, पूर्व कालः।

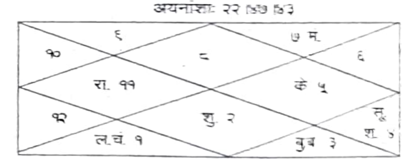
तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ र.	३८।५७	रा. १०।२६	आ. ४१।२३	रा. ११।२४	शु. १२।१४	बा. ११।२२	मिथुन	अहो.	८।०७।२४।४६	२५।४६	६।५१	५।०६	२	८	२३
२ चं.	३३।३७	रा. ८।१८	पु. ३७।४४	रा. ६।५७	ब्र. ५।००	तै. ६।१७	मि. २३।३६	दि. ४।१६	८।०८।२६।१०	२५।४७	६।५१	५।०६	३	६	२४
३ मं.	२७।५२	सं. ५।५६	पु. ३३।४३	रा. ८।१६	वै. ४६।३२	व. ०।४५	कर्क	अहो.	८।०६।२७।३४	२५।४८	६।५०	५।१०	४	१०	२५
४ बु.	२२।०१	दि. ३।३८	श्ले. २६।२६	रा. ६।३८	वि. ४१।३५	बा. २२।०१	क. २६।२६	रा. ६।३८	८।१०।२८।५८	२५।४९	६।५०	५।१०	५	११	२६
५ ब.	१६।०८	दि. १।१७	म. २५।२३	सं. ४।५६	प्री. ३३।४६	तै. १६।०८	सिंह	अहो.	८।११।३०।२२	२५।५०	६।५०	५।१०	६	१२	२७
६ शु.	१०।२६	दि. ११।०२	पूफ. २१।३२	दि. ३।२७	आयु. २६।१०	व. १०।२६	सिं. ३५।४१	रा. ६।०६	८।१२।३१।४६	२५।५१	६।५०	५।१०	७	१३	२८
७ श.	५।१६	दि. ८।५६	उफ. १८।०६	दि. २।०६	सौ. १८।५८	ब. ५।१६	कन्या	अहो.	८।१३।३३।१०	२५।५२	६।५०	५।१०	८	१४	२९
८ र.	०।४१	प्रा. ७।०५	ह. १५।२५	दि. १२।५६	शो. १२।१८	कौ. ०।४१	कं. ४४।३०	रा. १२।३७	८।१४।३४।३७	२५।५४	६।४९	५।११	९	१५	३०
१० चं.	५४।१०	रा. ४।२६	चि. १३।३५	दि. १२।१५	अगं. ६।१६	व. २५।३३	तुला	अहो.	८।१५।३६।०३	२५।५६	६।४९	५।११	१०	१६	३१
११ मं.	५२।२८	रा. ३।४७	स्वा. १२।३८	दि. ११।५१	सु. १।०८	ब. २३।१६	तु. ५७।४८	रा. ५।५५	८।१६।३७।२६	२५।५८	६।४८	५।१२	११	१७	१
१२ बु.	५१।५६	रा. ३।३६	वि. १२।५१	दि. ११।५६	शू. ५३।२८	कौ. २२।१४	वृश्चिक	अहो.	८।१७।३८।५५	२५।५९	६।४८	५।१२	१२	१८	२
१३ ब.	५२।५०	रा. ३।५६	अनु. १४।१६	दि. १२।३२	गं. ५१।०६	ग. २२।२५	वृश्चिक	अहो.	८।१८।४०।२१	२६।००	६।४८	५।१२	१३	१९	३
१४ शु.	५५।०४	रा. ४।५०	ज्ये. १७।०१	दि. १।३६	व. ४९।४८	वि. २३।५७	व. १७।०१	दि. १।३६	८।१९।४१।४७	२६।०१	६।४८	५।१२	१४	२०	४
३० श.	५८।२३	रा. ६।०६	मू. २०।५६	दि. ३।१२	घ्रु. ४६।२०	च. २६।४४	धनु	अहो.	८।२०।४३।१३	२६।०२	६।४८	५।१२	१५	२१	५

पौषे **कौशिकीस्नानं** महापुण्यप्रदम्, द. ति. ३८।५७ उपरि।
ऐन्द्रदं. ५२।२२, द. ति. ३३।३७ यावत्, मीने कुजः ५६।१८, पश्चिमोत्तरयात्रा तृतीयायां पुनर्वसौ ततः पूर्वां **विना यात्रा**।
लम्बोदर ४ व्रतं, उत्तरां विना यात्रा पुष्ये, म. ०।४५ उपरि २७।५२ यावत्।
गं. १८।२६ उ. ३३।२६ यावत्। **शकुनं**—पौषादितो मासचतुष्टयेषु यस्यां तिथौ तोयधरो हि दृष्टः। तत्सप्तमे मासि **तिथौ च** तस्यां वृष्टिः प्रवाच्या नियमेन विज्ञैः।।
पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।
पूर्वोत्तरयात्रा षष्ठ्यां, म. १०।२६ उपरि ३७।५३ यावत्, (६—७) एको.।
पूर्वाषाढे रविः ३०।०५, अपूपाष्टका, दक्षिणयात्रा हस्ते, **सप्तम्यां** मेघदर्शने सत्यार्द्रायां श्रावण्याञ्च सुवृष्टिः।
नवमीदं. ५६।१५, अन्वष्टका, पूर्वदक्षिणयात्राष्टम्यां, रात्र्यन्ते दशम्यां दक्षिणयात्रा।
मूले धनुषि बुधः ४८।३०, म. २५।३३ उपरि ५४।१० यावत्, पश्चिमदक्षिणयात्रा।
जनवरी २०१९, धृतिदं. ५५।४०, वृश्चिके शुक्रः १२।५५, **सफला ११** व्रतं सर्वेषाम्।
पूर्वास्तो बुधः ५।५७, गोमयेन पारणं, पश्चिमयात्रानुराधायां द्वादश्याम्।
प्रदोष १३ व्रतं, भ. ५२।५० उपरि, पश्चिमोत्तरयात्रा त्रयोदश्याम्। (+) तत्र वाताभ्रगर्जनतडिदुदकशीतादिभिरग्रिमवृष्टिविचारः कार्यः।
प्रदोष १४ व्रतं, गं. ११।०१ उपरि २६।०१ यावत्, म. २३।५७ यावत्, उत्तरयात्रा ज्येष्ठायां ततः पूर्वोत्तरयात्रा चतुर्दश्यां, **दशतारकारंभो** दिवा घ. १।३६ उपरि. (+)
पौषी ३० गंगास्नानदानादिः, शनैश्चरी अमा।

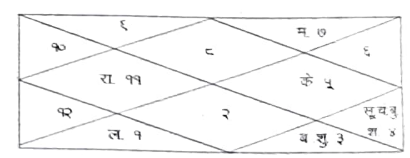
ति. दि. मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	व. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	व. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ र.	१०।२६।०६।०१	७।१७।४६।३०	७।१७।२०।५३	६।२०।२८।२२	८।१३।५०।४१	६।०६।०६।४६	४२।५४	१४।४८	१६।४४	१८।५७	२१।१५	२३।३१	१।४६	४।०३	६।२०	८।२५	१०।११	११।४२	१३।११
२ चं.	१०।२६।४६।०४	७।१६।१४।३६	७।१७।३४।०५	६।२१।२७।३७	८।१३।५७।४६	६।०६।०३।३५	४२।५५	१४।४४	१६।४०	१८।५३	२१।११	२३।२७	१।४२	३।५६	६।१६	८।२१	१०।०७	११।३८	१३।०७
३ मं.	११।०।२६।०७	७।२०।४२।४२	७।१७।४७।१७	६।२२।२६।५२	८।१४।०४।५०	६।०६।००।२४	४२।५६	१४।४०	१६।३६	१८।४६	२१।०७	२३।२३	१।३८	३।५५	६।१२	८।१७	१०।०३	११।३४	१३।०३
४ बु.	११।१।०६।१०	७।२२।१०।४८	७।१८।००।२६	६।२३।२६।०७	८।१४।११।५४	६।०५।५७।१३	४२।५६	१४।३५	१६।३१	१८।४४	२१।०२	२३।१८	१।३३	३।५०	६।०७	८।१२	६।५८	११।२६	१२।५८
५ ब.	११।१।४६।१३	७।२३।३८।५३	७।१८।१३।४०	६।२४।२५।२१	८।१४।१८।५८	६।०५।५४।०२	४२।५६	१४।३०,	१६।२६	१८।३६	२०।५७	२३।१३	१।२८	३।४५	६।०२	८।०७	६।५३	११।२४	१२।५३
६ शु.	११।२।२६।१६	७।२५।०६।५८	७।१८।२६।५१	६।२५।२४।३५	८।१४।२६।०२	६।०५।५०।५२	४२।५६	१४।२६	१६।२२	१८।३५	२०।५३	२३।०६	१।२४	३।४१	५।५८	८।०३	६।४६	११।२०	१२।४६
७ श.	११।३।०६।१६	७।२६।३५।०३	७।१८।४०।०२	६।२६।२३।४६	८।१४।३३।०६	६।०५।४७।४२	४२।५६	१४।२१	१६।१७	१८।३०	२०।४८	२३।०४	१।१६	३।३६	५।५३	७।५८	६।४४	११।१५	१२।४४
८ र.	११।३।४६।३८	७।२८।१३।०१	७।१८।५२।४७	६।२७।२५।३७	८।१४।४०।११	६।०५।४४।३१	४२।५७	१४।१७	१६।१३	१८।२६	२०।४४	२३।००	१।१५	३।३२	५।४६	७।५४	६।४०	११।११	१२।४०
१० चं.	११।४।२६।५७	७।२६।५०।५८	७।१६।०५।३२	६।२८।२७।२४	८।१४।४७।१५	६।०५।४१।२०	४२।५८	१४।१२	१६।०८	१८।२१	२०।३६	२२।५५	१।१०	३।२७	५।४४	७।४६	६।३५	११।०६	१२।३५
११ मं.	११।५।१०।१६	८।१।२८।५५	७।१६।१८।१७	६।२६।२६।११	८।१४।५४।१६	६।०५।३८।०६	४२।५६	१४।०८	१६।०४	१८।१७	२०।३५	२२।५१	१।०६	३।२३	५।४०	७।४५	६।३१	११।०२	१२।३१
१२ बु.	११।५।५०।३५	८।३।०६।५२	७।१६।३१।०२	७।००।३०।५८	८।१५।०१।२३	६।०५।३४।५८	४३।००	१४।०४	१६।००	१८।१३	२०।३१	२२।४७	१।०२	३।१६	५।३६	७।४१	६।२७	१०।५८	१२।२७
१३ ब.	११।६।३०।५४	८।४।४४।४६	७।१६।४३।४७	७।०१।३२।४५	८।१५।०८।२७	६।०५।३१।४७	४३।०१	१३।५६	१५।५५	१८।०८	२०।२६	२२।४२	०।५७	३।१४	५।३१	७।३६	६।२२	१०।५३	१२।२२
१४ शु.	११।७।११।१२	८।६।२२।४६	७।१६।५६।३१	७।०२।३४।३२	८।१५।१५।३१	६।०५।२८।३७	४३।०१	१३।५५	१५।५१	१८।०४	२०।२२	२२।३८	०।५३	३।१०	५।२७	७।३२	६।१८	१०।४६	१२।१८
३० श.	११।७।५१।३०	८।८।००।४३	७।२०।०६।१५	७।०३।३६।१६	८।१५।२२।३५	६।०५।२५।२७	४३।०१	१३।५०	१५।४६	१७।५६	२०।१७	२२।३३	०।४८	३।०५	५।२२	७।२७	६।१३	१०।४४	१२।१३

७ शनौ वल्ली ८।३६।२६।५७
अयनांशाः २२।४७।४३



३० शनौ वल्ली ८।३६।२७।०४
अयनांशाः २२।४७।४४



विविधविषयाः—दशतारकविचार—पौषे मूलनरम्यन्तं चन्द्रचारेण गर्भति। आर्द्रादितो विशाखान्तं सूर्यचारेण वर्षति।। एवं चैत्रे तथा ज्येष्ठे **शुक्ल** पक्षे प्रयत्नतः। आर्द्रादिदशताराणां ज्ञात्वा गर्भं वदेत्फलम्। **गर्भपुष्टिविचारः**—वाताभ्रगर्जत्तडितोदकानि हिमप्रपातः करकावघातः। अकालसन्ध्यापरिवेषणञ्च नवप्रकारैः प्रभवन्ति गर्भाः।। तत्र पुष्टे गर्भे सुवृष्टिः समे मध्यमा वृष्टिर्हीने चाल्पा वृष्टिरिति। **गोचरशन्यादिविचारः**—द्विजन्मनि पंचम—सप्तमगाश्चतुराष्टकद्वादशधर्मयुताः। धनधान्य—हिरण्यविनाशकरा रविराहुशनैश्चरभूमिसुताः। **शनेर्विशेषः**—यदि स्वजन्मराशितः शनिराशिसंचारकाले चन्द्रो निम्नलिखितस्थानेषु भवेत्तदा तस्य निम्नलिखितानि पदानि भवेयुः—जन्मागरुद्रेषु सुवर्णपादं द्विपञ्चनन्दैः रजतस्य पादम्। त्रिसप्तदिक् ताम्रपदं वदन्ति वेदाष्टसूर्येष्विह लौहपादम्। **तत्फलम्**—लौहे वित्तविनाशः स्यात्सर्वसौख्यञ्च काञ्चने। ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्य राजते भवेत्।। अनिष्टफलदायकशनेर्जपः कार्यः लौहञ्च धार्यम्। शनावश्वत्थमूले जलादिभिः पूजनं शनिस्तवश्च पठितव्यः। **शनिस्तवः**—पिप्पलाद उवाच—नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाक्षाय ते नमः। नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोस्तु ते।। नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।। नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तुते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य मे।।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशुक्राः, मार्गी पूर्वोदितो बुधः १२ तः पूर्वास्तः, मार्गी पश्चिमास्तः शनिः।

वातावरणम्—पक्षादिभागे वातहिमपातादयस्तदुत्तरार्द्धे वातशीतहिमपातच्छिन्नवृष्टयः।

पौषशुक्लपक्षः

शकाब्दः १६४०, संवत् २०७५, सन् १४२६ साल, दि. ६।०१।१६ ई. तः दि. २१।०१।१६ ई. यावत्।
अशुद्धः, ८ तः शुद्धः, हेमन्तर्तुः, याम्यगोलायने, ८ तः शिशिरतुस्सौम्यायन च, पूर्व कालः।

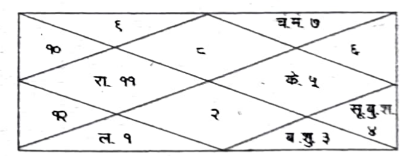
तिथयः दिनानि	तिथयः द. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनांकाः रा.	दिनांकाः सौ.	दिनांकाः अं.
१ र.	६० ।००	अहो.	पूषा. २६ ।००	स. ५ ।११	व्या. ४६ ।४१	कि. ३० ।३४	घ. ४२ ।२८	रा. ११ ।४६	८ ।२१ ।४४ ।३८	२६ ।०४	६ ।४७	५ ।१३	१६	२२	६
१ चं.	२ ।४५	दि. ७ ।५३	उषा. ३१ ।५१	रा. ७ ।३१	ह. ५० ।३७	ब. २ ।४५	मकर	अहो.	८ ।२२ ।४६ ।०३	२६ ।०६	६ ।४७	५ ।१३	१७	२३	७
२ मं.	७ ।५०	दि. ६ ।५४	श्र. ३८ ।१६	रा. १० ।०४	व. ५१ ।५४	कौ. ७ ।५०	मकर	अहो.	८ ।२३ ।४७ ।२७	२६ ।०८	६ ।४६	५ ।१४	१८	२४	८
३ बु.	१३ ।१७	दि. १२ ।०५	ध. ४४ ।५०	रा. १२ ।४२	सि. ५३ ।१२	ग. १३ ।१७	म. ११ ।३३	दि. ११ ।२३	८ ।२४ ।४८ ।५१	२६ ।०६	६ ।४६	५ ।१४	१६	२५	६
४ ब.	१८ ।३८	दि. २ ।१३	शत. ५१ ।०७	रा. ३ ।१३	व्य. ५४ ।१६	वि. १८ ।३८	कुम्भ	अहो.	८ ।२५ ।५० ।१५	२६ ।१०	६ ।४६	५ ।१४	२०	२६	१०
५ शु.	२३ ।२७	दि. ४ ।०६	पूभा. ५६ ।४२	रा. ५ ।२७	वरी. ५४ ।५०	बा. २३ ।२७	कुं. ४० ।१६	रा. १० ।५४	८ ।२६ ।५१ ।३६	२६ ।११	६ ।४६	५ ।१४	२१	२७	११
६ श.	२७ ।३०	सं. ५ ।४५	उभा. ६० ।००	अहो.	प. ५४ ।३८	तै. २७ ।३०	मीन	अहो.	८ ।२७ ।५३ ।०३	२६ ।१२	६ ।४६	५ ।१४	२२	२८	१२
७ र.	३० ।२१	रा. ६ ।५३	उभा. १ ।२०	प्रा. ७ ।१७	शि. ५३ ।३३	व. ३० ।२१	मीन	अहो.	८ ।२८ ।५४ ।२४	२६ ।१४	६ ।४५	५ ।१५	२३	२६	१३
८ चं.	३२ ।०४	रा. ७ ।३५	रे. ४ ।५५	दि. ८ ।४३	सि. ५१ ।२६	वि. १ ।१३	मी. ४ ।५५	दि. ८ ।४३	८ ।२६ ।५५ ।४५	२६ ।१६	६ ।४५	५ ।१५	२४	३०	१४
६ मं.	३२ ।२५	रा. ७ ।४२	अ. ७ ।१५	दि. ६ ।३८	सा. ४८ ।२५	बा. २ ।१५	मेष	अहो.	६ ।०० ।५७ ।०६	२६ ।१८	६ ।४४	५ ।१६	२५	१	१५
१० बु.	३१ ।३१	रा. ७ ।२०	भ. ८ ।१६	दि. १० ।०२	शु. ४४ ।२१	तै. २ ।०१	मे. २३ ।१३	दि. ४ ।०१	६ ।०१ ।५८ ।२७	२६ ।१६	६ ।४४	५ ।१६	२६	२	१६
११ ब.	२६ ।२४	रा. ६ ।३०	कृ. ८ ।०६	दि. ६ ।५८	शु. ३६ ।२३	व. ० ।२८	वष	अहो.	६ ।०२ ।५६ ।४८	२६ ।२०	६ ।४४	५ ।१६	२७	३	१७
१२ शु.	२६ ।१२	सं. ५ ।१३	रो. ६ ।५०	दि. ६ ।२८	ब्र. ३३ ।३६	बा. २६ ।१२	व. ३५ ।४८	रा. ६ ।०३	६ ।०४ ।०१ ।०८	२६ ।२१	६ ।४४	५ ।१६	२८	४	१८
१३ श.	२२ ।०७	दि. ३ ।३५	म. ४ ।४५	दि. ८ ।३८	ऐं. २७ ।०६	तै. २२ ।०७	मिथुन	अहो.	६ ।०५ ।०२ ।२८	२६ ।२२	६ ।४४	५ ।१६	२६	५	१६
१४ र.	१७ ।१६	दि. १ ।३७	आ. १ ।४५	प्रा. ७ ।२५	वै. २० ।०६	व. १७ ।१६	मि. ४७ ।०६	रा. १ ।३३	६ ।०६ ।०३ ।४४	२६ ।२५	६ ।४३	५ ।१७	३०	६	२०
१५ चं.	११ ।५४	दि. ११ ।२८	पु. ५४ ।१६	रा. ४ ।२४	वि. १२ ।३७	ब. ११ ।५४	कर्क	अहो.	६ ।०७ ।०४ ।५६	२६ ।२८	६ ।४२	५ ।१८	१	७	२१

त्र्यहो जन्मदिनकृत्यम्। (+) तन्मन्त्रश्च—गाधिराजसुते देवि विश्वामित्रमुनेः श्वसः। ऋचीकमार्ये सत्यार्ये पापं मे हर कौशिकि।।
चन्द्रदर्शनमु. ४५ सौम्यशृंगफलं समर्घं, द.ति. २ ।४५ उपरि।
पञ्चकारंभो रात्रौ घं. १० ।०४ उपरि, द.ति. ७ ।५० यावत्, उत्तरां विना यात्रा तृतीयाश्रवणयोस्ततः पूर्वयात्रा।
गणेश ४ व्रतं, म. ४५ ।५८ उपरि, (४) एको.।
पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे, म. १८ ।३८ यावत्। **शकुनम्**—पौषस्य यदि पञ्चम्यां शुक्लायां हिमवर्षणम्। तदा स्यान्महती वृष्टिः प्रावृट्काले न संशयः ।।
उत्तरयात्रा पूर्वभाद्रे मीनगे चन्द्रे, **उत्तराषाढे रविः** ३१ ।४३, (५) एको.।
शकुनम्—पौषे मेघः शुक्लषष्ठ्यां श्रावणे तर्हि वर्षणम्। यदि वृष्टिः पौषषष्ठ्यां माद्रकृष्णे घनोदयः।।
गुरुगोविन्दसिंहजयन्ती, उत्तरयात्रा रेवत्याम्, गं. ५२ ।५५ उपरि, म. ३० ।२१ उपरि।
मासान्तः, **मकरे रविः** ४७ ।१७ मु. ३० फलं साम्यं, सौम्यायनारंभः शुद्धारंभश्च ४७ ।१७ उपरि, म. १ ।१३ यावत्, **पञ्चकान्तो** दिवा घं. ८ ।४३ उपरि, गं. ७ ।५३ यावत्।
सौम्यायनसंक्रान्तिपुण्यकालो घं. १२ यावद्दिने, **पुण्याहः,** तिलसंक्रान्तिः, माघस्नानारंभः, **प्रयागे कल्पवासारंभः, दशतारकान्तो** दिवा घं. ६ ।३८ उपरि।
मासादिः, कर्म १०, **विश्वकर्मार्चा।** (×) म. ० ।२८ उपरि २६ ।२४ यावत्।
पुत्रदा ११ व्रतं सर्वेषां, **विवाहः** पूर्वदक्षिणयात्रा च रोहिण्येकादश्योः, देवादिप्रतिष्ठा वापीकूपतडागखननञ्च रोहिण्यां, **धर्मसावर्णिमन्वादिः**, द.ति. २६ ।२४ उपरि, **(×)**
नारायण १२ गोमयेन पारणं, **प्रदोष १३** व्रतं, **विवाहः** पश्चिमां विना यात्रा च त्रयोदश्यां, द.ति. २६ ।१२ यावत्।
प्रदोष १४ व्रतं, मकरे बुधः ६ ।५०, पूर्वां विना यात्रा मृगशिरसि।
पुनर्वसुदं. ५६ ।२८, पूर्वोदितः शनिः ३० ।५८, भ. १७ ।१६ उपरि ४६ ।३५ यावत्, दक्षिणयात्रा पूर्णिमायां मिथुनस्थे चन्द्रे तत उत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततः पश्चिमां विना यात्रा।
पौषी १५ स्नानदानादिः, शाकंभरीजयन्ती, **लक्ष्मणसंवत्** ६१० प्रारंभः प्रतिपत्तः, **कर्णवेधः,** पूर्वां विना यात्रा पुष्ये, देवादिप्रतिष्ठा, (१५—१) एको., **कौशिकीस्नानं** (+)

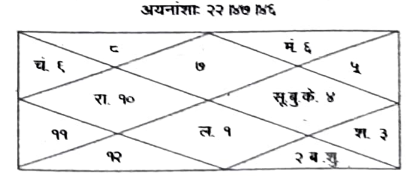
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	व. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	व. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ र.	११ ।८ ।३१ ।४७	८ ।६ ।४४ ।०४	७ ।२० ।२१ ।४४	७ ।०५ ।४० ।३१	८ ।१५ ।२६ ।४८	६ ।५ ।२२ ।१६	४३ ।०२	१३ ।४६	१५ ।४२	१७ ।५५	२० ।१३	२२ ।२६	० ।४४	३ ।०१	५ ।१८	७ ।२३	६ ।०६	१० ।४०	१२ ।०६
१ चं.	११ ।६ ।१२ ।०४	८ ।११ ।२७ ।२५	७ ।२० ।३४ ।१३	७ ।०६ ।४४ ।४२	८ ।१५ ।३७ ।०१	६ ।५ ।१६ ।०५	४३ ।०३	१३ ।४१	१५ ।३७	१७ ।५०	२० ।०८	२२ ।२४	० ।३६	२ ।५६	५ ।१३	७ ।१८	६ ।०४	१० ।३५	१२ ।०४
२ मं.	११ ।६ ।५२ ।२१	८ ।१३ ।१० ।४६	७ ।२० ।४६ ।४२	७ ।०७ ।४८ ।५३	८ ।१५ ।४४ ।१४	६ ।५ ।१५ ।५४	४३ ।०४	१३ ।३७	१५ ।३३	१७ ।४६	२० ।०४	२२ ।२०	० ।३५	२ ।५२	५ ।०६	७ ।१४	६ ।००	१० ।३१	१२ ।००
३ बु.	११ ।१० ।३२ ।३८	८ ।१४ ।५४ ।०७	७ ।२० ।५६ ।११	७ ।०८ ।५३ ।०४	८ ।१५ ।५१ ।२७	६ ।५ ।१२ ।४३	४३ ।०५	१३ ।३२	१५ ।२८	१७ ।४१	१६ ।५६	२२ ।१५	० ।३०	२ ।४७	५ ।०४	७ ।०६	८ ।५५	१० ।२६	११ ।५५
४ ब.	११ ।११ ।१२ ।५५	८ ।१६ ।३७ ।२८	७ ।२१ ।११ ।४०	७ ।०६ ।५७ ।१५	८ ।१५ ।५८ ।४०	६ ।५ ।०६ ।३२	४३ ।०६	१३ ।२८	१५ ।२४	१७ ।३७	१६ ।५५	२२ ।११	० ।२६	२ ।४३	५ ।००	७ ।०५	८ ।५१	१० ।२२	११ ।५१
५ शु.	११ ।११ ।५३ ।११	८ ।१८ ।२० ।४८	७ ।२१ ।२४ ।०८	७ ।१० ।०१ ।२६	८ ।१६ ।०५ ।५३	६ ।५ ।०६ ।२२	४३ ।०६	१३ ।२४	१५ ।२०	१७ ।३३	१६ ।५१	२२ ।०७	० ।२२	२ ।३६	४ ।५६	७ ।०१	८ ।४७	१० ।१८	११ ।४७
६ श.	११ ।१२ ।३३ ।२७	८ ।२० ।०४ ।०८	७ ।२१ ।३६ ।३६	७ ।११ ।०५ ।३७	८ ।१६ ।१३ ।०६	६ ।५ ।०३ ।१२	४३ ।०६	१४ ।१६	१५ ।१५	१७ ।२८	१६ ।४६	२२ ।०२	० ।१७	२ ।३४	४ ।५१	६ ।५६	८ ।४२	१० ।१३	११ ।४२
७ र.	११ ।१३ ।१४ ।०१	८ ।२१ ।५० ।२६	७ ।२१ ।४८ ।४३	७ ।१२ ।११ ।४७	८ ।१६ ।२० ।१६	६ ।५ ।०० ।०१	४३ ।०७	१३ ।१५	१५ ।११	१७ ।२४	१६ ।४२	२१ ।५८	० ।१३	२ ।३०	४ ।४७	६ ।५२	८ ।३८	१० ।०६	११ ।३८
८ चं.	११ ।१३ ।५४ ।३५	८ ।२३ ।३६ ।४४	७ ।२२ ।०० ।५०	७ ।१३ ।१७ ।५७	८ ।१६ ।२७ ।३२	६ ।४ ।५६ ।५०	४३ ।०८	१३ ।११	१५ ।०७	१७ ।२०	१६ ।३८	२१ ।५४	० ।०६	२ ।२६	४ ।४३	६ ।४८	८ ।३४	१० ।०५	११ ।३४
६ मं.	११ ।१४ ।३५ ।०६	८ ।२५ ।२३ ।०२	७ ।२२ ।१२ ।५७	७ ।१४ ।२४ ।०६	८ ।१६ ।३४ ।४५	६ ।४ ।५३ ।३६	४३ ।०६	१३ ।०७	१५ ।०३	१७ ।१६	१६ ।३४	२१ ।५०	० ।०५	२ ।२२	४ ।३६	६ ।४४	८ ।३०	१० ।०१	११ ।३०
१० बु.	११ ।१५ ।१५ ।४२	८ ।२७ ।०६ ।२०	७ ।२२ ।२५ ।०४	७ ।१५ ।३० ।१५	८ ।१६ ।४१ ।५७	६ ।४ ।५० ।२८	४३ ।१०	१३ ।०३	१४ ।५६	१७ ।१२	१६ ।३०	२१ ।४६	० ।०१	२ ।१८	४ ।३५	६ ।४०	८ ।२६	६ ।५७	११ ।२६
११ ब.	११ ।१५ ।५६ ।१५	८ ।२८ ।५५ ।३७	७ ।२२ ।३७ ।११	७ ।१६ ।३६ ।२४	८ ।१६ ।४६ ।०६	६ ।४ ।४७ ।१७	४३ ।११	१२ ।५६	१४ ।५५	१७ ।०८	१६ ।२६	२१ ।४२	२३ ।५७	२ ।१४	४ ।३१	६ ।३६	८ ।२२	६ ।५३	११ ।२२
१२ शु.	११ ।१६ ।३६ ।४८	६ ।०० ।४१ ।५४	७ ।२२ ।४६ ।१८	७ ।१७ ।४२ ।३३	८ ।१६ ।५६ ।२१	६ ।४ ।४४ ।०६	४३ ।११	१२ ।५५	१४ ।५१	१७ ।०४	१६ ।२२	२१ ।३८	२३ ।५३	२ ।१०	४ ।२७	६ ।३२	८ ।१८	६ ।४६	११ ।१८
१३ श.	११ ।१७ ।१७ ।२१	६ ।०२ ।२८ ।११	७ ।२३ ।०१ ।२५	७ ।१८ ।४८ ।४२	८ ।१७ ।०३ ।३३	६ ।४ ।४० ।५६	४३ ।११	१२ ।५०	१४ ।४६	१६ ।५६	१६ ।१७	२१ ।३३	२३ ।४८	२ ।०५	४ ।२२	६ ।२७	८ ।१३	६ ।४४	११ ।१३
१४ र.	११ ।१७ ।५७ ।४३	६ ।०४ ।१४ ।०१	७ ।२३ ।१३ ।०६	७ ।१६ ।५६ ।१८	८ ।१७ ।१० ।२१	६ ।४ ।३७ ।४५	४३ ।१३	१२ ।४६	१४ ।४२	१६ ।५५	१६ ।१३	२१ ।२६	२३ ।४४	२ ।०१	४ ।१८	६ ।२३	८ ।०६	६ ।४०	११ ।०६
१५ चं.	११ ।१८ ।३८ ।०५	६ ।०५ ।५६ ।५१	७ ।२३ ।२४ ।४६	७ ।२१ ।०३ ।५४	८ ।१७ ।१७ ।०६	६ ।४ ।३४ ।३४	४३ ।१५	१२ ।४२	१४ ।३८	१६ ।५१	१६ ।०६	२१ ।२५	२३ ।४०	१ ।५७	४ ।१४	६ ।१६	८ ।०५	६ ।३६	११ ।०५

६ शनौ वल्ली ८ ।३६ ।२७ ।११
अयनांशाः २२ ।४७ ।४५



१३ शनौ वल्ली ८ ।३६ ।२७ ।१८
अयनांशाः २२ ।४७ ।४६



विविधविषयाः—वैष्णवानामेकादशीव्रतनिर्णयः—दशमी पञ्चपंचाशद् घटिका चेत्प्रदृश्यते। तर्हि चैकादशी त्याज्या द्वादशीं समुपोषयेत् ।। दशमीपलमात्रेण त्याज्या चैकादशी तिथिः। मदिराविन्दुपातेन त्याज्यो गंगाघटो यथा। **नारदपुराणे**—क्षये वाप्यथवा वृद्धौ सम्प्राप्ते वा दिनत्रये। उपोष्या द्वादशी तत्र त्रयोदश्यान्तु पारणम्।। **कौर्मे**—तिथिक्षये तु सम्प्राप्ते उपोष्या द्वादशी भवेत्। दशमीशेषसंयुक्तां न कुर्वीत कदाचन।। **भविष्ये**—दशमीशेषसंयुक्तो यदि स्यादरुणोदयः। वैष्णवेन न कर्त्तव्यं तद्दिनैकादशीव्रतम्। अरुणोदयवेधस्तु वैष्णवेषु प्रकीर्त्तितः।। **अरुणोदयकालो ब्रह्मवैवर्ते**—चतस्रो घटिकाः प्रातररुणोदय उच्यते। यतीनां स्नानकालोऽयं गंगाम्भः सदृशं फलम्।। एकादश्यां **त्याज्यवस्तूनि**—कांस्यं मांसं मसूरान्नं चणकं कोद्रवं तथा। शाकं मधु परान्नञ्च पुनर्भोजनमैथुने।। केषामन्नं परान्नं नेत्याह—गुर्वन्नं मातुलान्नं च श्वसुरान्नं तथैव च । पितुः पौत्रस्य चैवान्नं न परान्नमिति स्मृतिः।। **स्वपवित्रवस्तूनि**—आसनं वसनं शय्या जायाऽपत्यं कमण्डलुः। आत्मनः शुचिरेतानि न परेषां कदाचन।। **अशक्तादिषु विशेषमाह कात्यायनः**—अशक्तौ निर्जने देशे मृते जाते च सूतके। जपेच्च मानसीं सन्ध्यां कुशवारिविवर्जिताम् ।।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशुक्राः, मार्गी **पूर्वास्तो बुधः, मार्गी पश्चिमास्तः** शनिः १४तः पूर्वोदितः।

वातावरणम्—पक्षपूर्वार्द्धे च्छिन्नवृष्टिशीतादयस्तदुत्तरार्द्धभागे वातमेघचारशीतवृद्धयः।

माघकृष्णपक्षः

शकाब्दः १६४०, संवत् २०७५, सन् १४२६ साल, दि. २२।१।१९ ई. तः दि. ४।२।१९ ई. यावत्।
शुद्धः, शिशिरर्तुः, याम्यगोलः, सौम्यायनम्, पूर्वे कालः।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ मं.	६।०६	दि. ९।१०	श्ले. ५०।०७	रा. २।४५	प्री. ४।५१	कौ. ६।०६	क. ५०।०७	रा. २।४५	९।०८।०६।१४	२६।३१	६।४२	५।१८	२	८	२२
२ बु.	०।१५	प्रा. ६।४७	म. ४५।५८	रा. १।०४	सौ. ४६।०८	ग. ०।१५	सिंह	अहो.	९।०९।०७।२६	२६।३४	६।४१	५।१९	३	९	२३
४ बृ.	४८।४६	रा. २।१३	पूफ. ४२।०३	रा. ११।३०	शो. ४१।२८	ब. २१।३६	सिं. ५६।०४	रा. ५।०७	९।१०।०८।४४	२६।३६	६।४१	५।१९	४	१०	२४
५ शु.	४३।३६	रा. १२।०८	उफ. ३८।३३	रा. १०।०५	अग. ३४।०७	कौ. १६।१४	कन्या	अहो.	९।११।०९।५६	२६।३८	६।४०	५।२०	५	११	२५
६ श.	३९।०६	रा. १०।२०	ह. ३५।३६	रा. ८।५६	सु. २७।१८	ग. ११।२४	कन्या	अहो.	९।१२।११।१४	२६।४०	६।४०	५।२०	६	१२	२६
७ र.	३५।२६	रा. ८।५१	चि. ३३।४०	रा. ८।०७	ध. २१।०६	वि. ७।१६	कं. ४।४०	दि. ८।३१	९।१३।१२।२२	२६।४३	६।३९	५।२१	७	१३	२७
८ चं.	३२।४७	रा. ७।४६	स्वा. ३२।३०	रा. ७।३६	शू. १५।४२	बा. ४।०८	तुला	अहो.	९।१४।१३।३०	२६।४६	६।३९	५।२१	८	१४	२८
९ मं.	३१।१४	रा. ७।०८	वि. ३२।२८	रा. ७।३७	गं. ११।०५	तै. २।०१	तु. २।२६	दि. ७।३८	९।१५।१४।३८	२६।४९	६।३८	५।२२	९	१५	२९
१० बु.	३०।५२	रा. ६।५६	अनु. ३३।३६	रा. ८।०४	वृ. ०७।२७	व. १।०३	वृश्चिक	अहो.	९।१६।१५।४६	२६।५२	६।३८	५।२२	१०	१६	३०
११ बृ.	३१।५१	रा. ७।२१	ज्ये. ३६।०१	रा. ९।०१	ध्रु. ०४।४८	ब. १।२१	वृ. ३६।०१	रा. ९।०१	९।१७।१६।५४	२६।५५	६।३७	५।२३	११	१७	३१
१२ शु.	३४।१२	रा. ८।१७	मू. ३९।४५	रा. १०।५४	व्या. ०३।१२	कौ. ३।०२	धनु	अहो.	९।१८।१८।०१	२६।५८	६।३६	५।२४	१२	१८	१
१३ श.	३७।३६	रा. ९।३८	पूषा. ४४।३२	रा. १२।२५	ह. ०२।२७	ग. ५।५४	धनु	अहो.	९।१९।१९।०८	२७।०२	६।३६	५।२४	१३	१९	२
१४ र.	४२।०२	रा. ११।२४	उषा. ५०।१३	रा. २।४०	व. ०२।३६	वि. ६।४६	ध. ०।५७	दि. ६।५८	९।२०।२०।०८	२७।०६	६।३५	५।२५	१४	२०	३
३० चं.	४७।०७	रा. १।२५	श्र. ५६।३२	रा. ५।११	सि. ०३।२६	च. १४।३५	मकर	अहो.	९।२१।२१।०८	२७।१०	६।३४	५।२६	१५	२१	४

आयुष्मानदं. ५२।०७, गं. ३६।०७ उपरि ५४।०७ यावत्, माघे **कमलास्नानं** महापुण्यप्रदम्।
तृतीयादं. ५४।०८, म. २७।१९ उपरि ५४।२३ यावत्, **विवाहो** मघायाम्।
श्रवणायां रविः ३४।४६, **भालचन्द्र ४** व्रतं, गणेशावतारः, श्रीगणेशपूजनं, कुजवेधाद्विवाहो नैव।
कर्णवेधः, **विवाहः** पूर्वदक्षिणयात्रा च हस्ते। (+) **पञ्चकारंभो** रात्रौ घं. ५।११ उपरि, **कलियुगादिस्तद्गताब्दाः ५११९**, **मोग्याब्दाः** ४२६८८१, रविवासरामावान्महोदययोगाभावः।
सप्ततिगणतन्त्रदिवसः, राष्ट्रियध्वजोत्तोलनपूर्वकराष्ट्रगानं, दक्षिणयात्रा, म. ३६।०६ उपरि।
रामानन्दाचार्यजयन्ती, **विवाहो** दिवारात्रौ, पूर्वदक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततो दक्षिणयात्रा, म. ०७।१६ यावत्।
अष्टका, **विवाहः** पश्चिमदक्षिणयात्रा च स्वात्याम्।
मूले धनुषि शुक्रः ३६।३८, अन्वष्टका, पश्चिमयात्रानुराधायाम्।
विवाहोऽनुराधायां, पश्चिमयात्रा, म. १।०३ उपरि ३०।५२ यावत्।
षट्तिला ११ व्रतं सर्वेषां, पश्चिमोत्तरयात्रैकादश्यां, द.ति. ३१।५१ उपरि, गं. ३०।०१ उपरि ४५।०१ यावत्।
फरवरी २, गोदुग्धेनपारणं, **विवाहस्त्रयोदश्यां** मूले, पूर्वोत्तरयात्रा त्रयोदश्यां, द.ति. ३४।१२ यावत्।
प्रदोष १३ व्रतं, पश्चिमोदितो बुधः ३७।३५, म. ३७।३६ उपरि, उत्तरयात्रा पूर्वाषाढे।
प्रदोष १४ व्रतं, नक्तव्रतं, **नरकनिवारण** १४ व्रतं, प्रदोषे घं. ७।०१ यावद्रात्रौ शिवार्चनं **सहस्राश्वमेघसमफलदं**, कुशेश्वर—कपिलेश्वरप्रतिष्ठादिनं म. ६।४६ या., **(×)**
मौनी ३० गंगास्नानदानादिः, **सोमवारीव्रतं**, **विवाहः** प्रतिपदि, **प्रयागेऽर्द्धकुंभयोगः**, पूर्वां विना यात्रा प्रतिपदि श्रवणायां, **कुमे बुधः** ४१।२०, (+)

(×) शिवलिंगोद्भवदिनं, ईशानसंहितायाम्—माघकृष्णचतुर्दश्यामादिदेवो (=)
(=) महानिशि। शिवलिंगतयोद्भूतः कोटिसूर्यसमप्रभः।।

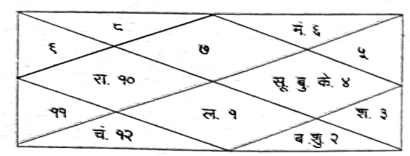
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च ।

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः
१ मं.	११।१९।१८।२७	९।०७।४५।४१	७।२३।३६।२६	७।२२।११।३०	८।१७।२३।५६	९।०४।३१।२३
२ बु.	११।१९।५८।४६	९।०९।३१।३१	७।२३।४८।०६	७।२३।१६।०५	८।१७।३०।४३	९।०४।२८।१२
४ बृ.	११।२०।३९।१०	९।११।१७।२१	७।२३।५९।४६	७।२४।२६।४०	८।१७।३७।३०	९।०४।२५।०१
५ शु.	११।२१।१९।३१	९।१३।०३।१०	७।२४।११।२६	७।२५।३४।१५	८।१७।४४।१७	९।०४।२१।५१
६ श.	११।२१।५९।५२	९।१४।४८।५९	७।२४।२३।०६	७।२६।४१।५०	८।१७।५१।०४	९।०४।१८।४१
७ र.	११।२२।४०।३२	९।१६।३२।०३	७।२४।३४।००	७।२७।५०।२६	८।१७।५७।२८	९।०४।१५।३०
८ चं.	११।२३।२१।१२	९।१८।१५।०६	७।२४।४४।५४	७।२८।५९।०८	८।१८।०३।५२	९।०४।१२।१९
९ मं.	११।२४।०१।५२	९।१९।५८।०६	७।२४।५५।४८	८।००।०७।४७	८।१८।१०।१९	९।०४।०९।०८
१० बु.	११।२४।४२।३२	९।२१।४१।१२	७।२५।०६।४२	८।०१।१६।२६	८।१८।१६।४०	९।०४।०५।५७
११ बृ.	११।२५।२३।११	९।२३।२४।१५	७।२५।१७।३६	८।०२।२५।०५	८।१८।२३।०४	९।०४।०२।४६
१२ शु.	११।२६।०३।५०	९।२५।०७।१८	७।२५।२८।२९	८।०३।३३।४३	८।१८।२९।२७	९।०३।५९।३६
१३ श.	११।२६।४४।२९	९।२६।५०।२१	७।२५।३९।२२	८।०४।४२।२१	८।१८।३५।५०	९।०३।५६।२६
१४ र.	११।२७।२४।५०	९।२८।२९।५६	७।२५।४९।५२	८।०५।५२।१२	८।१८।४२।१०	९।०३।५३।१५
३० चं.	११।२८।०५।११	१०।००।०३।३७	७।२६।००।२२	८।०७।०२।०३	८।१८।४८।३०	९।०३।५०।०४

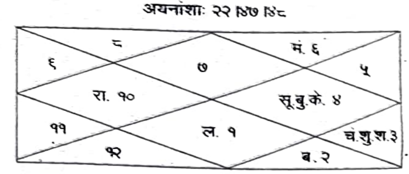
दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ.अं.	मि.अं.	क.अं.	सि.अं.	कं.अं.	तु.अं.	वृ.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
१ मं.	४३।१६	१२।३८	१४।३४	१६।४७	१९।०५	२१।२१	२३।३६	१।५३	४।१०	६।१५	८।०१	९।३२	११।०१
२ बु.	४३।१७	१२।३४	१४।३०	१६।४३	१९।०१	२१।१७	२३।३२	१।४९	४।०६	६।११	७।५७	९।२८	१०।५७
४ बृ.	४३।१८	१२।३०	१४।२६	१६।३९	१८।५७	२१।१३	२३।२८	१।४५	४।०२	६।०६	७।५३	९।२४	१०।५३
५ शु.	४३।१९	१२।२५	१४।२१	१६।३४	१८।५२	२१।०८	२३।२३	१।४०	३।५७	६।०२	७।४८	९।१९	१०।४८
६ श.	४३।२०	१२।२१	१४।१७	१६।३०	१८।४८	२१।०४	२३।१९	१।३६	३।५३	५।५८	७।४४	९।१५	१०।४४
७ र.	४३।२२	१२।१७	१४।१३	१६।२६	१८।४४	२१।००	२३।१५	१।३२	३।४९	५।५४	७।४०	९।११	१०।४०
८ चं.	४३।२४	१२।१३	१४।०९	१६।२२	१८।४०	२०।५६	२३।११	१।२८	३।४५	५।५०	७।३६	९।०७	१०।३६
९ मं.	४३।२६	१२।०९	१४।०५	१६।१८	१८।३६	२०।५२	२३।०७	१।२४	३।४१	५।४६	७।३२	९।०३	१०।३२
१० बु.	४३।२८	१२।०४	१४।००	१६।१३	१८।३१	२०।४७	२३।०२	१।१९	३।३६	५।४१	७।२७	८।५८	१०।२७
११ बृ.	४३।२९	१२।००	१३।५६	१६।०९	१८।२७	२०।४३	२२।५८	१।१५	३।३२	५।३७	७।२३	८।५४	१०।२३
१२ शु.	४३।३०	११।५६	१३।५२	१६।०५	१८।२३	२०।३९	२२।५४	१।११	३।२८	५।३३	७।१९	८।५०	१०।१९
१३ श.	४३।३१	११।५२	१३।४८	१६।०१	१८।१९	२०।३५	२२।५०	१।०७	३।२४	५।२९	७।१५	८।४६	१०।१५
१४ र.	४३।३३	११।४८	१३।४४	१५।५७	१८।१५	२०।३१	२२।४६	१।०३	३।२०	५।२५	७।११	८।४२	१०।११
३० चं.	४३।३५	११।४३	१३।३९	१५।५२	१८।१०	२०।२६	२२।४१	०।५८	३।१५	५।२०	७।०६	८।३७	१०।०६

६ शनौ वल्ती ८।३९।२७।२५
अयनांशाः २२।४७।४७



१३ शनौ वल्ती ८।३९।२७।३२
अयनांशाः २२।४७।४८



विविधविषयाः—माघे **प्रातःस्नानफलम्**—यो माघमास्युषसि सूर्यकरान्विताग्रे स्नानं समाचरति चारुनदीप्रवाहे। उद्धृत्य सप्तपुरुषान् पितृमातृवंश्यान् स्वर्गं प्रयात्यमरदेहधरो नरोऽसौ।। मकरार्के **प्रातः स्नानमन्त्रः**—मकरस्थे रवौ माघे गोविन्दाच्युत माधव। प्रातः स्नानेन मे देव यथोक्तफलदो भव।। दुःखदारिद्र्यनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च। प्रातः स्नानं करोम्यद्य माघे पापविनाशनम्।। माघे कुत्रापि **स्नानफलम्**—स्वर्गलोके चिरं वासो येषां मनसि वर्त्तते। यत्र क्वापि जले तैस्तु स्नातव्यं मृगभास्करे। चतुर्थ्यां **गणेशोत्पत्तिः**—सर्वदेवमयः साक्षात्सर्वमंगलकारकः। माघकृष्णचतुर्थ्यान्तु प्रादुर्भूतो गणाधिपः।। तत्र गणेशं यथोपचारैः संपूज्य रात्रौ व्रतपूर्वकं जागरणं कृत्वा प्रातर्ब्राह्मणान् भोजयेत्, मोदकादिकं च दद्यात्। चतुर्दश्यां **नरकनिवारणचतुर्दशीव्रतम्**—चतुर्दशीसमं नास्ति व्रतं पापक्षयापहम्। यत्कृत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः।। अश्वमेघसहस्राणि वाजपेयशतानि च। प्राप्नोति तत्फलं सर्वं नात्र कार्या विचारणा।।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशुक्रशनयः, मार्गी पूर्वास्तो बुधः १३ तः पश्चिमोदितः।

वातावरणम्—पक्षाद्यन्तभागयोः मेघचारशीतवृद्धयस्तन्मध्यभागे वातमेघचारशीतादयः

माघशुक्लपक्षः

शकाब्दः १६४०, संवत् २०७५, सन १४२६ साल, दि. ५।२।१९ ई. तः दि. १९।२।१९ ई. यावत्।
शुद्धः, शिशिरर्तुः, याम्यगोलः, सौम्यायनम्, पूर्वे कालः, ८ तो दक्षिणे कालः।

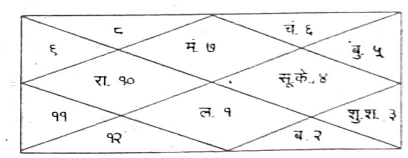
तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ म	५२।३३	रा. ३।३४	ध. ६०।००	अहो.	व्य. ०४।४१	कि. १६।५०	म. २६।५०	रा. ६।२६	६।२२।२२।०८	२७।१४	६।३३	५।२७	१६	२२	५
२ बु	५७।५०	रा. ५।४१	ध. ३।०७	प्रा. ७।४८	वरी. ०६।०६	बा. २५।१२	कुम्भ	अहो.	६।२३।२३।०८	२७।१७	६।३३	५।२७	१७	२३	६
३ ब	६०।००	अहो.	शत. ६।५६	दि. १०।२०	प. ०७।२०	तै. ३०।१२	कुं. ५८।५०	रा. ६।०४	६।२४।२४।०८	२७।२०	६।३२	५।२८	१८	२४	७
३ शु	२।३४	प्रा. ७।३३	पूभा. १५।१६	दि. १२।३७	शि. ०८।०५	ग. २।३४	मीन	अहो.	६।२५।२५।०८	२७।२३	६।३१	५।२६	१९	२५	८
४ श	६।२८	दि. ९।०६	उभा. २०।११	दि. २।३५	सि. ०८।१३	वि. ६।२८	मीन	अहो.	६।२६।२६।०७	२७।२६	६।३१	५।२९	२०	२६	९
५ र	६।११	दि. १०।१०	रे. २४।०२	दि. ४।०७	सा. ०७।२४	वा. ६।११	मी. २४।०२	दि. ४।०७	६।२७।२६।५६	२७।३०	६।३०	५।३०	२१	२७	१०
६ च	१०।४४	दि. १०।४७	अ. २६।३६	दि. ५।०६	शु. ०५।४५	तै. १०।४४	मेष	अहो.	६।२८।२७।४४	२७।३३	६।२९	५।३१	२२	२८	११
७ म	१०।५७	दि. १०।५२	भ. २७।५८	स. ५।४०	शु. ०३।०४	व. १०।५७	मे. ४३।००	रा. ११।१७	६।२९।२८।३२	२७।३६	६।२९	५।३१	२३	२९	१२
८ बु	९।५६	दि. १०।२६	कृ. २८।०७	स. ५।४३	ऐं. ५४।४२	ब. ९।५६	वृष	अहो.	१०।००।२९।२०	२७।३९	६।२८	५।३२	२४	१	१३
९ ब	७।४०	दि. ९।३२	रो. २७।०४	दि. ५।१८	वै. ४९।१५	कौ. ७।४०	व. ५६।०७	रा. ४।५५	१०।०१।३०।०८	२७।४२	६।२८	५।३२	२५	२	१४
१० शु	४।२२	दि. ८।१२	म. २५।१०	दि. ४।३१	वि. ४३।०५	ग. ४।२२	मिथुन	अहो.	१०।०२।३०।५६	२७।४५	६।२७	५।३३	२६	३	१५
११ श	०।१३	प्रा. ६।३१	आ. २२।२३	दि. ३।२३	प्री. ३६।१७	वि. ०।१३	मिथुन	अहो.	१०।०३।३१।४४	२७।४८	६।२६	५।३४	२७	४	१६
१३ र	४९।५३	रा. २।२३	पुन. १८।५८	दि. २।०१	आयु. २८।५७	कौ. २२।३७	मि. ४।५०	दि. ८।२२	१०।०४।३२।२२	२७।५२	६।२६	५।३४	२८	५	१७
१४ च	४४।०४	रा. १२।०३	पु. १५।०५	दि. १२।२७	सौ. २१।१९	ग. १७।००	कर्क	अहो.	१०।०५।३२।५९	२७।५६	६।२५	५।३५	२९	६	१८
१५ म	३८।०६	रा. ९।३८	श्ले. १०।५९	दि. १०।४८	शो. १३।३१	वि. ११।०५	क. १०।५९	दि. १०।४८	१०।०६।३३।३६	२८।००	६।२४	५।३६	३०	७	१९

शिशिरनवरात्रारंभः **कलशस्थापनं**, श्रीदुर्गापूजनोत्सवः, पश्चिमयात्रा द्वितीयायाम्। (+) पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे।
धनिष्ठायां रविः ४०।३४, चन्द्रदर्शनमु. १५ सुशृंगफलं महार्घं, **रेमन्तपूजा, मुण्डनं**, कर्णवेधः पश्चिमयात्रा च धनिष्ठायां, तडागकूपखननं शतभिषायां, देवादिप्रतिष्ठा।
बदरी३ कुन्दकुसुमैः पार्वतीपूजनं, त्र्यहो जन्मदिनकृत्यं, अश्विन्यां मेषे कुजः ३४।२५, **उपनयनं, मुण्डनं** कूपखननं देवादिप्रतिष्ठा च शतभिषायां, (+)
गणेश ४ व्रतं, उत्तरयात्रा पूर्वभाद्रे, भ. ३४।३१ उपरि। (√) **पञ्चकान्तो** दिवा घं. ४।०७ उपरि, गं. १२।०२ उपरि २७।०२ यावत्।
भ. ६।२८ यावत्। (=) कोटिसूर्यग्रहणसमं फलदं, ब्रह्मसावर्णिमन्वादिः, भ. १०।५७ उपरि ४०।२७ यावत्। (●) माघस्नानसमाप्तिः, प्रयागे कल्पवाससमाप्तिः।
वसन्त ५ सारस्वत्यवतारः, **श्रीसरस्वतीपूजा,** उत्तराभिमुखहलप्रवाहः, हल५, **विवाहो** दिवारात्रौ, देवादिप्रतिष्ठा, उत्तरयात्रा **उपनयनं** च पञ्चम्यां, (√)
गजपूजा, बिल्वाभिमन्त्रणं, **मुण्डनं** सप्तम्यां, **विवाह** अश्विन्यां, **कर्णवेधः,** देवादिप्रतिष्ठा, पूर्वां विना यात्रा षष्ट्याम्।
मासान्तः, ब्रह्मदं. ५६।१८, पत्रिकाप्रवेशः, **महारात्रिर्निशापूजा, अचला७,** अरुणोदये स्नानं सूर्यग्रहणसमं गंगायां शतसूर्यग्रहणसमं प्रयागे च (=)
महाष्टमीव्रतं, भीष्माष्टमी, **भीष्मतर्पणं,** दीक्षाग्रहणं, **कुंभे रविः** १४।५४ मु. ३० फलं साम्यं, **विष्णुपदीसंक्रान्तिपुण्यकालो** घं. ६।१४ उपरि घं. ३।३८ यावद्दिने, **पुण्याहः,** (●)
मासादिः, महानवमीव्रतम्। (△) तडागवापीकूपखननं **विवाहः** पश्चिमां विना यात्रा च मृगशिरसि, भ. ३२।१८ उपरि।
विजया १०, नवरात्रव्रतपारणं, **कामेश्वरसिंहदरभंगासंस्कृतविश्वविद्यालयप्रतिष्ठादिनं, उपनयनं, मुण्डनं** कर्णवेधो **द्विरागमनं** देवादिप्रतिष्ठा **गृहारंभप्रवेशौ** (△)
द्वादशीदं. ५५।०७, भ. ०।१३ यावत्, **भैमी ११** व्रतं सर्वेषां, माधव १२, ११ **व्रतोद्यापनं, गृहप्रवेशः** पश्चिमदक्षिणयात्रा च पुनर्वसौ।
गोदुग्धेन पारणं, **प्रदोष १३** व्रतं, देवादिप्रतिष्ठा, **द्विरागमनं** त्रयोदश्यां, दक्षिणयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे तत उत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततः पश्चिमां विना यात्रा त्रयोदश्याम्।
प्रदोष १४ व्रतं, गं. ५६।५६ उपरि, भ. ४४।०४ उपरि। (÷) जीववत्सायां स्नानदानशिवार्चनादिकम्।
शतभिषायां रविः ५०।२०, गं. १४।५६ यावत्, भ. ११।०५ यावत्, **श्रीरविदासजयन्ती, माघी १५** स्नानदानादिः, गोशालाघट्टे कमलायां जीवछघट्टे (÷)

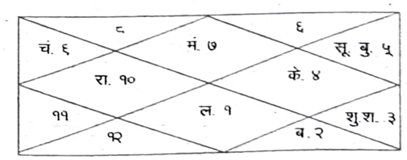
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	व.अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	व.अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ म	११।२८।४५।३२	१०।०१।४०।१५	७।२६।१०।५२	८।०८।११।५४	८।१८।५४।५०	६।०३।४६।५३	४३।३७	११।३६	१३।३५	१५।४८	१८।०६	२०।२२	२२।३७	०।५४	३।११	५।१६	७।०२	८।३३	१०।०२
२ बु	११।२९।२५।५३	१०।०३।१६।५३	७।२६।२१।२२	८।०९।२१।४५	८।१९।०१।१०	६।०३।४३।४२	४३।३९	११।३५	१३।३१	१५।४४	१८।०२	२०।१८	२२।३३	०।५०	३।०७	५।१२	६।५८	८।२९	९।५८
३ ब	०।००।०६।१४	१०।०४।५३।३०	७।२६।३१।५२	८।१०।३१।३६	८।१९।०७।३०	६।०३।४०।३१	४३।४१	११।३१	१३।२७	१५।४०	१७।५८	२०।१४	२२।२९	०।४६	३।०३	५।०८	६।५४	८।२५	९।५४
३ शु	०।००।४६।३५	१०।०६।३०।०७	७।२६।४२।२२	८।११।४१।२७	८।१९।१३।५०	६।०३।३७।२१	४३।४२	११।२७	१३।२३	१५।३६	१७।५४	२०।१०	२२।२५	०।४२	२।५९	५।०४	६।५०	८।२१	९।५०
४ श	०।०१।२६।५६	१०।०८।०६।४४	७।२६।५२।५१	८।१२।५१।१७	८।१९।२०।१०	६।०३।३४।११	४३।४३	११।२३	१३।१९	१५।३२	१७।५०	२०।०६	२२।२१	०।३८	२।५५	५।००	६।४६	८।१७	९।४६
५ र	०।०२।०७।२४	१०।०९।३२।०३	७।२७।०२।२७	८।१४।०१।४५	८।१९।२६।१२	६।०३।३१।०१	४३।४५	११।१८	१३।१४	१५।२७	१७।४५	२०।०१	२२।१९	०।३३	२।५०	४।५५	६।४१	८।१२	९।४१
६ च	०।०२।४७।५२	१०।१०।५७।२२	७।२७।१२।०३	८।१५।१२।१३	८।१९।३२।१४	६।०३।२७।५०	४३।४७	११।१४	१३।१०	१५।२३	१७।४१	१९।५७	२२।१२	०।२९	२।४६	४।५१	०।३७	८।०८	९।३७
७ म	०।३।२८।२०	१०।१२।२२।४१	७।२७।२१।३८	८।१६।२२।४०	८।१९।३८।१५	६।०३।२४।३९	४३।४९	११।१०	१३।०६	१५।१९	१७।३७	१९।५३	२२।०८	०।२५	२।४२	४।४७	६।३३	८।०४	९।३३
८ बु	०।०४।०८।४८	१०।१३।४७।५९	७।२७।३१।१३	८।१७।३३।०७	८।१९।४४।१९	६।०३।२१।२८	४३।५१	११।०६	१३।०२	१५।१५	१७।३३	१९।४९	२२।०४	०।२१	२।३८	४।४३	६।२९	८।००	९।२९
९ ब	०।०४।४९।१६	१०।१५।१३।१७	६।२७।४०।४८	८।१८।४३।३४	८।१९।५०।१७	६।०३।१८।१७	४३।५२	११।०२	१२।५८	१५।११	१७।२९	१९।४५	२२।००	०।१७	२।३४	४।३९	६।२५	७।५६	९।२५
१० शु	०।०५।२९।४४	१०।१६।३८।३५	७।२७।५०।२३	८।१९।५४।०१	८।१९।५६।१८	६।०३।१५।०६	४३।५३	१०।५८	१२।५४	१५।०७	१७।२५	१९।४१	२१।५६	०।१३	२।३०	४।३५	६।२१	७।५२	९।२१
११ श	०।०६।१०।१२	१०।१८।०३।५३	७।२७।५९।५८	८।२१।०४।२८	८।२०।०२।१९	६।०३।११।५६	४३।५४	१०।५४	१२।५०	१५।०३	१७।२१	१९।३७	२१।५२	०।०९	२।२६	४।३१	६।१७	९।४८	९।१७
१३ र	०।०६।५०।३६	१०।१९।११।११	७।२८।०८।४२	८।२२।१५।३३	८।२०।०८।२३	६।०३।०८।४५	४३।५६	१०।५०	१२।४६	१४।५९	१७।१७	१९।३३	२१।४८	०।०५	२।२२	४।२७	६।१३	७।४४	९।१३
१४ च	०।०७।३१।००	१०।२०।१८।२८	७।२८।१७।२६	८।२३।२६।३७	८।२०।१४।२७	६।०३।०५।३४	४३।५८	१०।४७	१२।४३	१४।५६	१७।१४	१९।३०	२१।४५	०।०२	२।१९	४।२४	६।१०	७।४१	९।१०
१५ म	०।०८।११।२४	१०।२१।२५।४५	७।२८।२६।१०	८।२४।३७।४१	८।२०।२०।३०	६।०३।०२।२३	४४।००	१०।४३	१२।३९	१४।५२	१७।१०	१९।२६	२१।४१	२३।५८	२।१५	४।२०	६।०६	७।३७	९।०६

४ शनौ वल्ली ८।३६।२७।३६
अयनांशाः २२।४७।४६



११ शनौ वल्ली ८।३६।२७।५६
अयनांशाः २२।४७।५०



विविधविषयाः—अचलासप्तम्यां—सप्तार्कवदरीपत्राणि शिरसि निधाय मौनी सन् स्नायात्तत्र स्नानमन्त्रः—यद्यज्जन्मकृतं पापं मया सप्तसु जन्मसु। तन्मे रोगञ्च शोकञ्च माकरी हन्तु सप्तमी।। एतज्जन्मकृतं पापं यच्च जन्मान्तरार्जितम्। मनोवाक्कायजं यच्च ज्ञाताज्ञातञ्च यत्पुनः।। इति सप्तविधं पापं स्नानान्मे सप्तसप्तिके। सप्तव्याहृतिके देवि हर माकरि सप्तमि।। ततः **सूर्यार्घ्यं दद्यात्तन्मन्त्रः**—सप्तसप्तेरहः **प्रीते सप्तलोकप्रदीपन। सप्तमीसहितो** देव गृहाणार्घ्यं दिवाकर।। ततः **प्रणमेच्च तन्मन्त्रः—जननी सर्वलोकानां** सप्तमी सप्तसप्तिके। सप्तव्याहृतिके देवि **नमस्ते सूर्यमूर्त्तये।। ततो दानादिकं कुर्यात्। अष्टम्यां भीष्मतर्पणमन्त्रः**—वैयाघ्रपादगोत्राय सांकृतिप्रवराय **च। अपुत्राय ददाम्येतत्सलिलं** भीष्मवर्मणे। वसूनामवताराय शन्तनोरात्मजाय च। **अर्घ्यं ददामि** भीष्माय आबालब्रह्मचारिणे।। भीष्मः शान्तनवो वीरः **सत्यवादी जितेन्द्रियः।** आभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम्।। अनेन **सन्ततिलाभः संवत्सरकृतपापक्षयश्च**। इदं जीवत्पित्रापि कर्त्तव्यम्।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशुक्रशनयः, मार्गी **पश्चिमोदितो बुधः।**

वातावरणम्—पक्षाद्यन्तभागयोः शीतवृद्धिच्छिन्नवृष्टिमेघचारादयस्तन्मध्ये वातातपशीतादयः।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ बु.	३२ ।१५	सं. ७ ।१७	म. ६ ।५१	दि. ६ ।०७	अगं. ५ ।३६	बा. ५ ।११	सिंह	अहो.	१० ।०७ ।३४ ।१३	२८ ।०४	६ ।२३	५ ।३७	१	८	२०
२ ब.	२६ ।४०	दि. ५ ।०२	पूफ. २ ।५१	प्रा. ७ ।३०	ध. ५० ।३३	ग. २६ ।४०	सि. १६ ।५७	दि. १ ।०६	१० ।०८ ।३४ ।५०	२८ ।०८	६ ।२२	५ ।३८	२	९	२१
३ शु.	२१ ।३२	दि. २ ।५६	ह. ५६ ।१४	रा. ५ ।५२	शू. ४३ ।३६	वि. २१ ।३२	कन्या	अहो.	१० ।०९ ।३५ ।२७	२८ ।११	६ ।२२	५ ।३८	३	१०	२२
४ श.	१७ ।०३	दि. १ ।१०	चि. ५४ ।०२	रा. ३ ।५८	ग. ३७ ।१८	बा. १७ ।०३	कं. २५ ।०८	दि. ४ ।२४	१० ।१० ।३६ ।०४	२८ ।१४	६ ।२१	५ ।३६	४	११	२३
५ र.	१३ ।२५	दि. ११ ।४२	स्वा. ५२ ।३८	रा. ३ ।२३	व. ३१ ।३६	तै. १३ ।२५	तुला	अहो.	१० ।११ ।३६ ।२७	२८ ।१८	६ ।२०	५ ।४०	५	१२	२४
६ चं.	१० ।४६	दि. १० ।३८	वि. ५२ ।२०	रा. ३ ।१६	ध्रु. २६ ।५१	व. १० ।४६	तु. ३७ ।२४	रा. ६ ।१८	१० ।१२ ।३६ ।५०	२८ ।२२	६ ।२०	५ ।४०	६	१३	२५
७ मं.	६ ।१६	दि. १० ।०१	अनु. ५३ ।१५	रा. ३ ।३७	व्या. २२ ।५६	ब. ६ ।१६	वृश्चिक	अहो.	१० ।१३ ।३७ ।१३	२८ ।२६	६ ।१९	५ ।४१	७	१४	२६
८ बु.	८ ।५८	दि. ६ ।५३	ज्ये. ५५ ।२५	रा. ४ ।२८	ह. २० ।०३	कौ. ८ ।५८	व. ५५ ।२५	रा. ४ ।२८	१० ।१४ ।३७ ।३६	२८ ।३०	६ ।१८	५ ।४२	८	१५	२७
९ ब.	१० ।०१	दि. १० ।१७	मू. ५८ ।५३	रा. ५ ।५०	व. १८ ।०६	ग. १० ।०१	धनु	अहो.	१० ।१५ ।३७ ।५६	२८ ।३४	६ ।१७	५ ।४३	९	१६	२८
१० शु.	१२ ।२३	दि. ११ ।१६	पूषा. ६० ।००	अहो.	सि. १७ ।१५	वि. १२ ।२३	धनु	अहो.	१० ।१६ ।३८ ।२२	२८ ।३८	६ ।१६	५ ।४४	१०	१७	१
११ श.	१५ ।५२	दि. १२ ।३७	पूषा. ३ ।२७	दि. ७ ।३६	व्य. १७ ।१३	बा. १५ ।५२	ध. १६ ।५०	दि. २ ।१२	१० ।१७ ।३८ ।४५	२८ ।४२	६ ।१६	५ ।४४	११	१८	२
१२ र.	२० ।२०	दि. २ ।२३	उषा. ६ ।००	दि. ६ ।५१	वरी. १७ ।५५	तै. २० ।२०	मकर	अहो.	१० ।१८ ।२८ ।५८	२८ ।४६	६ ।१५	५ ।४५	१२	१९	३
१३ चं.	२५ ।२४	दि. ४ ।२४	श्र. १५ ।१२	दि. १२ ।१६	प. १६ ।०६	व. २५ ।२४	म. ४८ ।३०	रा. १ ।३८	१० ।१९ ।३६ ।०७	२८ ।५०	६ ।१४	५ ।४६	१३	२०	४
१४ मं.	३० ।४७	सं. ६ ।३२	ध. २१ ।४८	दि. २ ।५६	शि. २० ।३४	श. ३० ।४७	कुम्भ	अहो.	१० ।२० ।३६ ।१८	२८ ।५४	६ ।१३	५ ।४७	१४	२१	५
३० बु.	३५ ।५५	रा. ८ ।३४	शत. २८ ।१५	सं. ५ ।३०	सि. २१ ।५६	च. ३ ।३१	कुम्भ	अहो.	१० ।२१ ।३६ ।२६	२८ ।५८	६ ।१२	५ ।४८	१५	२२	६

फाल्गुनकृष्णपक्षः

शकाब्दः १६४०, संवत् २०७५, सन् १४२६ साल, दि. २० ।२ ।१९ ई. तः दि. ६ ।३ ।१९ ई. यावत्।
शुद्धः, शिशिरर्तुः याम्यगोलः, सौम्यायनम्, दक्षिणे कालः।

सुकर्मादं. ५२ ।१६, **विवाहो** मघायां, पूर्वयात्रा पूर्वफल्गुन्यां, फाल्गुने **वाङ्मतीस्नानं** महापुण्यप्रदम्।

उत्तरफल्गुनीदं. ५६ ।२४, भ. ५४ ।३२ उपरि, **कर्णवेधो** गृहारंभश्चोत्तरफल्गुन्यां, **विवाहो** द्विरागमनञ्चोत्तरफल्गुनीहस्तयोः, पूर्वयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।

हेरम्ब ४ व्रतं, **मुण्डनं** कर्णवेधो **द्विरागमनं** गृहारंभो **विवाहः** पूर्वदक्षिणयात्रा च तृतीयायां, द.ति. २१ ।३२ उपरि, भ. २१ ।३२ यावत्।

गृहारम्भः पञ्चम्याम्, द.ति. १७ ।०३ यावत्। **(×) बैद्यनाथसिंहेश्वरनाथयोः** प्रतिष्ठादिनं, **सिंहेश्वरमेलापकः**, **पञ्चकारंभो दिवा** घं. १२ ।१६ उपरि, (+)

मकरे शुक्रः १७ ।०७, **द्विरागमनं** दक्षिणयात्रा च पञ्चम्यां, सूर्यवेधाद्विवाहो नैव, (५–६) एको।

विवाहोऽनुराधायाम्, भ. १० ।४६ उपरि ४० ।०१ यावत्। (+) पूर्वा विना यात्रा श्रवणायां, भ. २५ ।२४ उपरि ५८ ।०६ यावत्।

अष्टका, पश्चिमयात्रा।

अन्वष्टका, गं. ४६ ।२५ उपरि।

राहुवेधाद्विवाहो मध्यमो दशम्यां मूले, पूर्वोत्तरयात्रा दशम्यां, गं. ४ ।२५ यावत्, भ. ४१ ।१२ उपरि।

मार्च ३, पूर्वोत्तरयात्रा, भ. १२ ।२३ यावत्।

विजया ११ व्रतं सर्वेषां, मीने बुधः ४ ।५६, (१२) एको।

मूले धनुषि गुरुः २१ ।००, गोदध्ना पारणं, **प्रदोष** १३ व्रतं, **विवाहो** दिवारात्रौ, पश्चिमा विना यात्रा श्रवणायाम्।

वक्री बुधः ५२ ।२१, विवाहस्त्रयोदशं, **प्रदोष** १४ व्रतं, नक्तव्रतं, **महाशिवरात्रिव्रतं**, प्रदोषे घं. ७ ।२२ यावद्रात्रौ शिवार्चनं **सहस्राश्वमेधसमफलदं**, गौरीशंकरविवाहोत्सवः, **(×)**

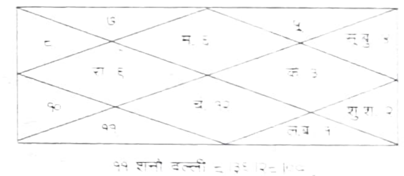
पूर्वाभाद्रे रविः ५ ।१४, शिवदर्शनं, पश्चिमयात्रा धनिष्ठायाम्।

गोसहस्रिका ३० स्नानदानादिः, पश्चिमयात्रा प्रतिपदि।

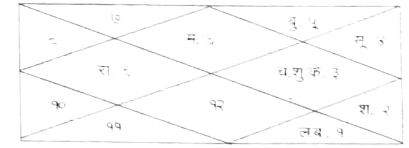
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	व. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	व. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ बु.	० ।०८ ।५१ ।४८	१० ।२२ ।३३ ।०२	७ ।२८ ।३४ ।५३	८ ।२५ ।४८ ।४५	८ ।२० ।२६ ।३३	६ ।०२ ।५६ ।१२	४४ ।०२	१० ।३६	१२ ।३५	१४ ।४८	१७ ।०६	१९ ।२२	२१ ।३७	२३ ।५४	२ ।११	४ ।१६	६ ।०२	७ ।३३	६ ।०२
२ ब.	० ।०६ ।३२ ।१२	१० ।२३ ।४० ।१६	७ ।२८ ।४३ ।३६	८ ।२६ ।५६ ।४६	८ ।२० ।३२ ।३६	६ ।०२ ।५६ ।०१	४४ ।०४	१० ।३५	१२ ।३१	१४ ।४४	१७ ।०२	१९ ।१८	२१ ।३३	२३ ।५०	२ ।०७	४ ।१२	५ ।५८	७ ।२६	८ ।५८
३ शु.	० ।१० ।१२ ।३६	१० ।२४ ।४७ ।३६	७ ।२८ ।५२ ।१६	८ ।२८ ।१० ।५३	८ ।२० ।३८ ।३६	६ ।०२ ।५२ ।५०	४४ ।०६	१० ।३१	१२ ।२७	१४ ।४०	१६ ।५८	१९ ।१४	२१ ।२६	२३ ।४६	२ ।०३	४ ।०८	५ ।५४	७ ।२५	८ ।५४
४ श.	० ।१० ।५२ ।५६	१० ।२५ ।५४ ।५३	७ ।२६ ।०१ ।०२	८ ।२६ ।२१ ।५७	८ ।२० ।४४ ।४२	६ ।०२ ।४६ ।४०	४४ ।०७	१० ।२८	१२ ।२४	१४ ।३७	१६ ।५५	१९ ।११	२१ ।२६	२३ ।४३	२ ।००	४ ।०५	५ ।५१	७ ।२२	८ ।५१
५ र.	० ।११ ।३३ ।२५	१० ।२६ ।३२ ।१२	७ ।२६ ।०८ ।५१	६ ।०० ।३३ ।२१	८ ।२० ।५० ।०६	६ ।०२ ।४६ ।२६	४४ ।०६	१० ।२४	१२ ।२०	१४ ।३३	१६ ।५१	१९ ।०७	२१ ।२२	२३ ।३६	१ ।५६	४ ।०१	५ ।४७	७ ।१८	८ ।४७
६ चं.	० ।१२ ।१३ ।५१	१० ।२७ ।०६ ।३१	७ ।२६ ।१६ ।४०	६ ।०१ ।४४ ।४५	८ ।२० ।५५ ।३०	६ ।०२ ।४३ ।१८	४४ ।११	१० ।२०	१२ ।१६	१४ ।२६	१६ ।४७	१९ ।०३	२१ ।१८	२३ ।३५	१ ।५२	३ ।५७	५ ।४३	७ ।१४	८ ।४३
७ मं.	० ।१२ ।५४ ।१७	१० ।२७ ।४६ ।४६	७ ।२६ ।२४ ।२८	६ ।०२ ।५६ ।०८	८ ।२१ ।०० ।५४	६ ।०२ ।४० ।०७	४४ ।१३	१० ।१६	१२ ।१२	१४ ।२५	१६ ।४३	१८ ।५६	२१ ।१४	२३ ।३१	१ ।४८	३ ।५३	५ ।३६	७ ।१०	८ ।३६
८ बु.	० ।१३ ।३४ ।४३	१० ।२८ ।२४ ।०७	७ ।२६ ।३२ ।१६	६ ।०४ ।०७ ।३१	८ ।२१ ।०६ ।१८	६ ।०२ ।३६ ।५६	४४ ।१५	१० ।१२	१२ ।०८	१४ ।२१	१६ ।३६	१८ ।५५	२१ ।१०	२३ ।२७	१ ।४४	३ ।४६	५ ।३५	७ ।०६	८ ।३५
९ ब.	० ।१४ ।१५ ।०८	१० ।२६ ।०१ ।२५	७ ।२६ ।४० ।०४	६ ।०५ ।१८ ।५४	८ ।२१ ।११ ।४२	६ ।०२ ।३३ ।४५	४४ ।१७	१० ।०६	१२ ।०५	१४ ।१८	१६ ।३६	१८ ।५२	२१ ।०७	२३ ।२४	१ ।४१	३ ।४६	५ ।३२	७ ।०३	८ ।३२
१० शु.	० ।१४ ।५५ ।३३	१० ।२६ ।३८ ।४३	७ ।२६ ।४७ ।५२	६ ।०६ ।३० ।१७	८ ।२१ ।१७ ।०६	६ ।०२ ।३० ।३५	४४ ।१९	१० ।०५	१२ ।०१	१४ ।१४	१६ ।३२	१८ ।४८	२१ ।०३	२३ ।२०	१ ।३७	३ ।४२	५ ।२८	६ ।५६	८ ।२८
११ श.	० ।१५ ।३५ ।५८	११ ।०० ।१६ ।०१	७ ।२६ ।५५ ।४०	६ ।०७ ।४१ ।४०	८ ।२१ ।२२ ।२६	६ ।०२ ।२७ ।२५	४४ ।२१	१० ।०१	११ ।५७	१४ ।१०	१६ ।२८	१८ ।४४	२० ।५६	२३ ।१६	१ ।३३	३ ।३८	५ ।२४	६ ।५५	८ ।२४
१२ र.	० ।१६ ।१६ ।०८	११ ।०० ।२७ ।३३	८ ।०० ।०२ ।४६	६ ।०८ ।५३ ।५८	८ ।२१ ।२७ ।१५	६ ।०२ ।२३ ।१४	४४ ।२३	६ ।५७	११ ।५३	१४ ।०६	१६ ।२४	१८ ।४०	२० ।५५	२३ ।१२	१ ।२६	३ ।३४	५ ।२०	६ ।५१	८ ।२०
१३ चं.	० ।१६ ।५६ ।१७	११ ।०० ।३६ ।०६	८ ।०० ।०६ ।५२	६ ।१० ।०६ ।१६	८ ।२१ ।३२ ।०१	६ ।०२ ।२० ।०३	४४ ।२५	६ ।५३	११ ।४६	१४ ।०२	१६ ।२०	१८ ।३६	२० ।५१	२३ ।०८	१ ।२५	३ ।३०	५ ।१६	६ ।४७	८ ।१६
१४ मं.	० ।१७ ।३६ ।२६	११ ।०० ।२६ ।३८	८ ।०० ।१६ ।५८	६ ।११ ।१८ ।३४	८ ।२१ ।३६ ।४७	६ ।०२ ।१७ ।५२	४४ ।२७	६ ।४६	११ ।४५	१३ ।५८	१६ ।१६	१८ ।३२	२० ।४७	२३ ।०४	१ ।२१	३ ।२६	५ ।१२	६ ।४३	८ ।१२
३० बु.	० ।१८ ।१६ ।३५	११ ।०० ।१८ ।१८	८ ।०० ।२४ ।०४	६ ।१२ ।३० ।५२	८ ।२१ ।४१ ।३३	६ ।०२ ।१४ ।४१	४४ ।२६	६ ।४६	११ ।४२	१३ ।५५	१६ ।१३	१८ ।२६	२० ।४४	२३ ।०१	१ ।१८	३ ।२३	५ ।०६	६ ।४०	८ ।०६

४ शनौ वल्ली ८ ।३६ ।२१ ।५३
अयनांश २२ ।१३ ।५३



११ शनौ वल्ली ८ ।३६ ।२८ ।००
अयनांश २२ ।१७ ।५२



विविधविषयाः–माघफाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां शिवरात्रिव्रतं तन्माहात्म्यञ्च ब्रह्माद्रिखण्डे– माघफाल्गुनयोर्मध्ये कृष्णा या च चतुर्दशी । दत्ते शिवः फलं यस्मात्तेन सर्वसुरासुरैः।। शिवरात्रिरिति ख्याता मत्कलेव पृथक् स्थिता।। तथा च–उपवासं करिष्यन्ति जागरणेन समन्वितम्। यथोक्तशास्त्रमार्गेण तेषां मोक्षो न संशयः।। वर्षे वर्षे महादेवि नित्यं भक्त्या प्रपूजयेत्। अर्णवो यदि वा सूर्यश्छाद्यते हिमवानपि।। चलन्त्येते कदाचिद्वै निश्चलं च शिवव्रतम्।। **गंगासागरसंगमस्नान-मन्त्रः–** त्वं देव सरितां नाथ त्वं देवि सरितां वरे। उभयोः संगमे स्नात्वा मुञ्चामि दुरितानि वै।। **समुद्रस्नानमन्त्रः**–त्वमग्निर्द्विपदां नाथ रेतोधाः कामदीपन। प्रधानः सर्वभूतानां जीवानां प्रभुरव्ययः।। अमृतस्यारणिस्त्वं हि देवयोनिरपांपते। वृजिनं हर मे सर्वं तीर्थराज नमोऽस्तुते।। **गंगास्नानमन्त्रः**–ब्रह्मस्वरूपे हे गंगे स्नानमाचर्यते मया। त्वदीये निर्मले तोये यथोक्तफलदा भव। **गंगामाहात्म्यं विष्णुपुराणे**–गंगा गंगेति यन्नाम योजनानां शतैरपि। स्थितैरुच्चरितं हन्ति पापं जन्मत्रयार्जितम्। **पुनश्च**–इदं हि गाङ्गं त्यजतामिहाङ्गं पुनर्न चाङ्गं यदि वापि चाङ्गम्। याने विहङ्गं शयने भुजंगं करे स्थाङ्गं चरणेऽपि गाङ्गम्।

ग्रहस्थितिः–मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशुक्रशनयः, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः ३तो वक्री।

वातावरणम्–पक्षाद्यन्तभागयोः वातच्छिन्नवृष्टि–उपलपातादयस्तन्मध्ये वातातप–मेघचारादयः।

फाल्गुनशुक्लपक्षः

शकाब्दः १६४०, संवत् २०७५, सन् १४२६ साल, दि. ७।३।१६ ई. तः दि. २१।३।१६ ई. यावत्।
शुद्धः, शिशिरर्तुः, ६ तो वसन्तर्तुः, याम्यगोलः, सौम्यायनम्, दक्षिणे कालः।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ ब	४० ।३३	रा. १० ।२५	पूभा. ३४ ।११	रा. ७ ।५२	सा. २२ ।५३	किं. ८ ।१४	कुं. १७ ।४२	दि. १ ।१७	१० ।२२ ।३६ ।४०	२६ ।०२	६ ।१२	५ ।४८	१६	२३	७
२ शु	४४ ।१८	रा. ११ ।५४	उभा. ३६ ।२१	रा. ६ ।५५	शु. २३ ।१६	बा. १२ ।२६	मीन	आहो.	१० ।२३ ।३६ ।५१	२६ ।०६	६ ।११	५ ।४६	१७	२४	८
३ श	४६ ।५२	रा. १२ ।५५	रे. ४३ ।२५	रा. ११ ।३२	शु. २२ ।५०	तै. १५ ।३५	मी. ४३ ।२५	रा. ११ ।३२	१० ।२४ ।४० ।०२	२६ ।१०	६ ।१०	५ ।५०	१८	२५	९
४ र	४८ ।१६	रा. १ ।२७	अ. ४६ ।१६	रा. १२ ।४१	ब्र. २१ ।३३	व. १७ ।३४	मेष	आहो.	१० ।२५ ।३६ ।५८	२६ ।१४	६ ।०६	५ ।५१	१९	२६	१०
५ च	४८ ।१८	रा. १ ।२७	भ. ४७ ।५७	रा. ०१ ।१६	ऐं. १६ ।१२	ब. १८ ।१७	मेष	आहो.	१० ।२६ ।३६ ।५४	२६ ।१८	६ ।०८	५ ।५२	२०	२७	११
६ म	४७ ।०७	रा. १२ ।५६	कृ. ४८ ।२१	रा. १ ।२८	वै. १५ ।५५	कौ. १७ ।४३	मे. ३ ।०३	प्रा. ७ ।२१	१० ।२७ ।३६ ।५०	२६ ।२२	६ ।०८	५ ।५२	२१	२८	१२
७ बु	४४ ।४२	रा. १२ ।००	रो. ४७ ।३५	रा. १ ।०६	वि. ११ ।३७	ग. १५ ।५५	वष	आहो.	१० ।२८ ।३६ ।४६	२६ ।२६	६ ।०७	५ ।५३	२२	२९	१३
८ ब	४१ ।१६	रा. १० ।३६	म. ४५ ।४६	रा. १२ ।२६	प्री. ६ ।२६	वि. १२ ।५६	व. १६ ।४२	दि. १२ ।४७	१० ।२९ ।३६ ।४२	२६ ।३०	६ ।०६	५ ।५४	२३	३०	१४
९ शु	३६ ।५६	रा. ८ ।५३	आ. ४३ ।१३	रा. ११ ।२२	आयु. ० ।३५	बा. ६ ।०८	मिथुन	आहो.	११ ।०० ।३६ ।३८	२६ ।३४	६ ।०५	५ ।५५	२४	१	१५
१० श	३१ ।५६	सं. ६ ।५२	पुन. ३६ ।५४	रा. १० ।०२	शो. ४६ ।५१	तै. ४ ।२६	मि. २५ ।४४	दि. ४ ।२२	११ ।०१ ।३६ ।३४	२६ ।३८	६ ।०४	५ ।५६	२५	२	१६
११ र	२६ ।३०	दि. ४ ।४०	पु. ३६ ।०८	रा. ८ ।३१	अगं. ३६ ।२२	वि. २६ ।३०	कर्क	आहो.	११ ।०२ ।३६ ।१५	२६ ।४२	६ ।०४	५ ।५६	२६	३	१७
१२ च	२० ।४०	दि. २ ।१६	श्ले. ३२ ।०५	सं. ६ ।५३	सु. ३१ ।४१	बा. २० ।४०	क. ३२ ।०५	सं. ६ ।५३	११ ।०३ ।३८ ।५६	२६ ।४६	६ ।०३	५ ।५७	२७	४	१८
१३ म	१४ ।३६	दि. ११ ।५२	म. २७ ।५२	दि. ५ ।११	ध. २३ ।५१	तै. १४ ।३६	सिंह	आहो.	११ ।०४ ।३८ ।३७	२६ ।५०	६ ।०२	५ ।५८	२८	५	१९
१४ बु	८ ।४१	दि. ६ ।२६	पूफ. २३ ।५१	दि. ३ ।३३	शू. १६ ।११	व. ८ ।४१	सिं. ३७ ।५६	रा. ६ ।११	११ ।०५ ।३८ ।१७	२६ ।५४	६ ।०१	५ ।५६	२९	६	२०
१५ ब	३ ।०४	दि. ७ ।१४	उफ. २० ।११	दि. २ ।०४	ग. ८ ।४६	ब. ३ ।०४	कन्या	आहो.	११ ।०६ ।३७ ।५७	२६ ।५८	६ ।००	६ ।००	३०	७	२१

७ **कल्याणेश्वराज्जनकपुरपरिक्रमारंभः**, रामकृष्णजयन्ती, **विवाहो** द्विरागमनञ्चोत्तरभाद्रे, पश्चिमयात्रा कुंभस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तरयात्रा पूर्वभाद्रे।
८ चन्द्रदर्शनमु. ४५ याम्यशृंगफलं साम्यं, कर्णवेधः **द्विरागमनमुत्तरयात्रा** च तृतीयायां, **विवाहो** दिवारात्रौ, कूपखननं, देवादिप्रतिष्ठा, **पश्चिमास्तो** बुधः २५ ।०५, वक्रात्कुम्भे बुधः २१ ।२६।
९ **पञ्चकान्तो** रात्रौ घं. ११ ।३२ उपरि, द.ति. ४६ ।५२ उपरि, गं. ३१ ।२५ उपरि ४६ ।२५ यावत्, पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यां ततः पूर्वा विना यात्रा तृतीयायां।
१० **गणेश** ४ व्रतं, द.ति. ४८ ।१६ यावत्, भ. १७ ।३४ उपरि ४८ ।१६ यावत्।
११ ।।००।। (+) वात उत्तरैशान्योः सुभिक्षं निर्वातसमयो राज्ञो हानिकरः।
१२ पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्याम्। (√) जनकपुरस्यान्तर्गृहीय परिक्रमातत्समाप्तिश्च, होलिकाभस्मधारणं, सचैलस्नानं, **होली, सप्ताडोरकबन्धनं**, पूर्वयात्रा हस्ते।
१३ **मुण्डनं**, देवादिप्रतिष्ठा, **गृहप्रवेशः द्विरागमनं** पूर्वदक्षिणयात्रा च सप्तम्यां, **विवाहो** रोहिण्यां, केतुवेधाद्विवाहो मध्यमो मृगशिरसि, भ. ४४ ।४२ उपरि।
१४ मासान्तः, भ. १२ ।५६ यावत्।
१५ सौभाग्यदं. ५३ ।२४, **मीने रविः** ५ ।०४ मु. १५ फलं महार्घं **षडशीतिसंक्रान्तिपुण्यकालो** घं. ८ ।०७ उपरि घं. २ ।३१ यावद्दिने, **पुण्याहः**।
१६ मासादिः, भ. ५६ ।१५ उपरि।
१७ **आमलकी** ११ व्रतं सर्वेषां, **उपनयनं, ११ व्रतोद्यापनं,** पश्चिमां विना यात्रा द्वादश्यां पुष्ये, जनकपुरस्य **लघ्वीपरिक्रमारंभः**, भ. २६ ।३० यावत्।
१८ **गोविन्द** १२ गोदध्ना पारणं, **प्रदोष** १३ व्रतं, **उत्तरभाद्रे रविः** २५ ।५१, समुद्रस्नानं **जगन्नाथदर्शनञ्च,** गं. २१ ।०५ उपरि ३६ ।०५ यावत्।
१९ **प्रदोष** १४ व्रतं, पूर्वयात्रा पूर्वफल्गुन्यां, (१३–१४) एको.।
२० भ. ८ ।४१ उपरि ३५ ।५२ यावत्, **होलिकादाहो** रात्रौ घं. ८ ।२२ उपरि, तत्र पूर्ववायौ राजाप्रजासुखमग्निकोणेऽग्निभयं, दक्षिणनैर्ऋत्ययोर्दुर्भिक्षं, पश्चिमे वृष्टिर्वायव्ये (+)
२१ **प्रतिपद्दं.** ५४ ।५०, कुंभे शुक्रः १६ ।४०, द.ति. ५७ ।५४ उपरि, चैतन्यजयन्ती, **फाल्गुनी १५** स्नानदानादिः, सावर्णिमन्वादिः, **कुलदेवताभ्यः सिन्दूरार्पणं (पातरिदानं)**, (√)

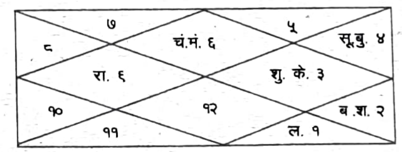
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च।

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः
१ ब	० ।१८ ।५६ ।४४	११ ।०० ।०६ ।५८	८ ।०० ।३१ ।१०	६ ।१३ ।४३ ।१०	८ ।२१ ।४६ ।१६	६ ।०२ ।११ ।३०
२ शु	० ।१९ ।३६ ।५३	१० ।२६ ।५५ ।३८	८ ।०० ।३८ ।१६	६ ।१४ ।५५ ।२८	८ ।२१ ।५१ ।०५	६ ।०२ ।०८ ।२०
३ श	० ।२० ।१७ ।०२	१० ।२६ ।४४ ।१७	८ ।०० ।४५ ।२२	६ ।१६ ।०७ ।४६	८ ।२१ ।५५ ।५०	६ ।०२ ।०५ ।१०
४ र	० ।२० ।५७ ।१६	१० ।२६ ।०२ ।१३	८ ।०० ।५० ।४७	६ ।१७ ।१६ ।४०	८ ।२२ ।०० ।०१	६ ।०२ ।०१ ।५६
५ च	० ।२१ ।३७ ।३०	१० ।२८ ।२० ।०६	८ ।०० ।५६ ।१२	६ ।१८ ।३१ ।३४	८ ।२२ ।०४ ।१२	६ ।०१ ।५८ ।४८
६ म	० ।२२ ।१७ ।४४	१० ।२७ ।३८ ।०५	८ ।०१ ।०१ ।३७	६ ।१६ ।४३ ।२८	८ ।२२ ।०८ ।२३	६ ।०१ ।५५ ।३७
७ बु	० ।२२ ।५७ ।५८	१० ।२६ ।५६ ।०१	८ ।०१ ।०७ ।०२	६ ।२० ।५५ ।२२	८ ।२२ ।१२ ।३४	६ ।०१ ।५२ ।२६
८ ब	० ।२३ ।३८ ।१२	१० ।२६ ।१३ ।५८	८ ।०१ ।१२ ।२६	६ ।२२ ।०७ ।१५	८ ।२२ ।१६ ।४५	६ ।०१ ।४६ ।१५
९ शु	० ।२४ ।१८ ।२६	१० ।२५ ।३१ ।५५	८ ।०१ ।१७ ।५०	६ ।२३ ।१६ ।०८	८ ।२२ ।२० ।५६	६ ।०१ ।४६ ।०५
१० श	० ।२४ ।५८ ।३६	१० ।२४ ।४६ ।५२	८ ।०१ ।२३ ।१४	६ ।२४ ।३१ ।०१	८ ।२२ ।२५ ।०७	६ ।०१ ।४२ ।५५
११ र	० ।२५ ।३८ ।३७	१० ।२४ ।१० ।०१	८ ।०१ ।२७ ।४८	६ ।२५ ।४३ ।४१	८ ।२२ ।२८ ।५७	६ ।०१ ।३६ ।४४
१२ च	० ।२६ ।१८ ।३५	१० ।२३ ।३० ।१०	८ ।०१ ।३२ ।२१	६ ।२६ ।५६ ।२०	८ ।२२ ।३२ ।४७	६ ।०१ ।३६ ।३३
१३ म	० ।२६ ।५८ ।३३	१० ।२२ ।५० ।१६	८ ।०१ ।३६ ।५४	६ ।२८ ।०८ ।५६	८ ।२२ ।३६ ।३७	६ ।०१ ।३३ ।२२
१४ बु	० ।२७ ।३८ ।३१	१० ।२२ ।१० ।२८	८ ।०१ ।४१ ।२७	६ ।२६ ।२१ ।३८	८ ।२२ ।४० ।२७	६ ।०१ ।३० ।११
१५ ब	० ।२८ ।१८ ।२६	१० ।२१ ।३० ।३७	८ ।०१ ।४६ ।००	१० ।०० ।३४ ।१७	८ ।२२ ।४४ ।१७	६ ।०१ ।२७ ।००

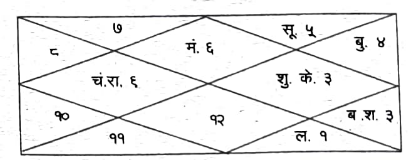
दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मिश्रमानं	मे.अं.	व.अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	व.अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ ब	४४ ।३१	६ ।४२	११ ।३८	१३ ।५१	१६ ।०६	१८ ।२५	२० ।४०	२२ ।५७	१ ।१४	३ ।१६	५ ।०५	६ ।३६	८ ।०५
२ शु	४४ ।३३	६ ।३८	११ ।३४	१३ ।४७	१६ ।०५	१८ ।२१	२० ।३६	२२ ।५३	१ ।१०	३ ।१५	५ ।०१	६ ।३२	८ ।०१
३ श	४४ ।३५	६ ।३४	११ ।३०	१३ ।४३	१६ ।०१	१८ ।१७	२० ।३२	२२ ।४६	१ ।०६	३ ।११	४ ।५७	६ ।२८	७ ।५७
४ र	४४ ।३७	६ ।३०	११ ।२६	१३ ।३६	१५ ।५७	१८ ।१३	२० ।२८	२२ ।४५	१ ।०२	३ ।०७	४ ।५३	६ ।२४	७ ।५३
५ च	४४ ।३६	६ ।२६	११ ।२२	१३ ।३५	१५ ।५३	१८ ।०६	२० ।२४	२२ ।४१	० ।५८	३ ।०३	४ ।४६	६ ।२०	७ ।४६
६ म	४४ ।४१	६ ।२२	११ ।१८	१३ ।३१	१५ ।४६	१८ ।०५	२० ।२०	२२ ।३७	० ।५४	२ ।५६	४ ।४५	६ ।१६	७ ।४५
७ बु	४४ ।४३	६ ।१६	११ ।१५	१३ ।२८	१५ ।४६	१८ ।०२	२० ।१७	२२ ।३४	० ।५१	२ ।५६	४ ।४२	६ ।१३	७ ।४२
८ ब	४४ ।४५	६ ।१५	११ ।११	१३ ।२४	१५ ।४२	१७ ।५८	२० ।१३	२२ ।३०	० ।४७	२ ।५२	४ ।३८	६ ।०६	७ ।३८
९ शु	४४ ।४७	६ ।११	११ ।०७	१३ ।२०	१५ ।३८	१७ ।५४	२० ।०६	२२ ।२६	० ।४३	२ ।४८	४ ।३४	६ ।०५	७ ।३४
१० श	४४ ।४६	६ ।०८	११ ।०४	१३ ।१७	१५ ।३५	१७ ।५१	२० ।०६	२२ ।२३	० ।४०	२ ।४५	४ ।३१	६ ।०२	७ ।३१
११ र	४४ ।५१	६ ।०४	११ ।००	१३ ।१३	१५ ।३१	१७ ।४७	२० ।०२	२२ ।१६	० ।३६	२ ।४१	४ ।२७	५ ।५८	७ ।२७
१२ च	४४ ।५३	६ ।००	१० ।५६	१३ ।०६	१५ ।२७	१७ ।४३	१६ ।५८	२२ ।१५	० ।३२	२ ।३७	४ ।२३	५ ।५४	७ ।२३
१३ म	४४ ।५५	८ ।५७	१० ।५३	१३ ।०६	१५ ।२४	१७ ।४०	१६ ।५५	२२ ।१२	० ।२६	२ ।३४	४ ।२०	५ ।५१	७ ।२०
१४ बु	४४ ।५७	८ ।५३	१० ।४६	१३ ।०२	१५ ।२०	१७ ।३६	१६ ।५१	२२ ।०८	० ।२५	२ ।३०	४ ।१६	५ ।४७	७ ।१६
१५ ब	४४ ।५६	८ ।५०	१० ।४६	१२ ।५६	१५ ।१७	१७ ।३३	१६ ।४८	२२ ।०५	० ।२२	२ ।२७	४ ।१३	५ ।४४	७ ।१३

३ शनौ वल्ली ८ ।३६ ।२८ ।०७
अयनांशाः २२ ।४७ ।५३



१० शनौ वल्ली ८ ।३६ ।२८ ।१४
अयनांशाः २२ ।४७ ।५४



विविधविषयाः—फाल्गुनपूर्णिमायां **होलिकादाहः**—तत्राग्नौ विधिवद्धुत्वा काममन्त्र विवर्जयेत्। घृतैः किलकिलाशब्दैस्तालशब्दैर्मनोरमैः। तमग्निं त्रिः परिक्रम्य गायन्ति च हसन्ति च। जल्पन्ति स्वेच्छया लोके होलिकाख्यातमागतः। अस्यां काष्ठादिकमेकत्रीकृत्य होलिकां **ध्यायेत्तन्मन्त्रः**—असृमयावसन्तप्तैः कृत्वा त्वं होति वालिश। अतस्त्वां पूजयिष्यामि भूते भूतिप्रदा भव। ततो होलिकायै नमः इति पञ्चोपचारैः सम्पूज्य प्रदीपयेत्। **तत्प्रदीपनमन्त्रः**—दीपयाम्यत्र ते घोरां चिति राक्षसि ते नमः। हिताय सर्वजगतः प्रीतये पार्वतीपतेः। ततः परदिने **होलिकाभस्मधारणमन्त्रः**—वन्दितासि सुरेन्द्रेण ब्रह्माच्युतशिवादिभिः। अतस्त्वं पाहि नो भीतेर्भूषिता भूतिदा भव। प्रयागे **केशवपनफलम्**— किं गयापिण्डदानेन काश्यां वा मरणेन किम्। किं कुरुक्षेत्रदानेन प्रयागे मुण्डनं यदि। केशानां यावतीसंख्या छिन्नानां जाह्नवीजले। तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते। **स्थानविशेषमहत्वम्**— प्रयागे वपनं कुर्याद् गयायां पिण्डपातनम्। दानं दद्यात् कुरुक्षेत्रे वाराणस्यां तनुं त्यजेत्। **सुवर्णपवित्रीमहत्वम्**—अन्यानि च पवित्राणि कुशदूर्वात्मकानि च। **स्वर्णात्मकपवित्रस्य** कलां नार्हन्ति षोडशीम्।। अभावे रजतादीनामपि।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशुक्रशनयः, वक्री पश्चिमोदितो बुधः २ त पश्चिमास्तः।

वातावरणम्—पक्षपूर्वार्द्धे मेघचारवातादयस्तदुत्तरार्द्धे झंझावातोपलपातादयः।

चैत्रकृष्णपक्षः

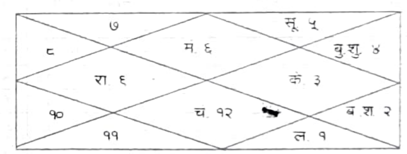
शकाब्दः १६४०, संवत् २०७५, सन् १४२६ साल, दि. २२।३।१६ ई. तः दि. ५।४।१६ ई. यावत्।
शुद्धः, वसन्तर्तुः, याम्यगोलः, सौम्यायनम्, दक्षिणे कालः।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः			
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.	
२ शु.	५३।२२	रा. ३।२१	ह. १७।०१	दि. १२।४८	व. १।४३	तै. २५।३८	क. ४५।५०	रा. १२।२०	११।०७।३७।३७	३०।०२	६।००	६।००	१	८	२२	ध्रुवदं. ५३।३०, द.ति. ५३।२२ यावत्, दक्षिणयात्रा तृतीयायां, चैत्रे लक्ष्मणास्नानं महापुण्यप्रदं, चैत्रे मेघाच्छन्नत्व शोभनम्।
३ श.	४६।४१	रा. १।५१	चि. १४।३८	दि. ११।५०	व्या. ४६।२५	व. २१।३२	तुला	अहो.	११।०८।३७।१७	३०।०६	५।५६	६।०१	२	६	२३	पश्चिमदक्षिणयात्रा।
४ र.	४७।०१	रा. १२।४६	स्वा. १३।०४	दि. ११।१२	ह. ४४।२७	ब. १८।२१	तु. ५७।४०	रा. ५।०२	११।०६।३६।४२	३०।१०	५।५८	६।०२	३	१०	२४	**विकट** ४ व्रतं, वृषे कुजः १७।३०, पूर्वोदितो बुधः ३३।०६, भ. १८।२१ उपरि ४७।०१ यावत्।
५ च.	४५।३०	रा. १२।०६	वि. १२।३२	दि. १०।५८	व. ४०।२१	कौ. १६।१६	वश्चिक	अहो.	११।१०।३६।०७	३०।१४	५।५७	६।०३	४	११	२५	पश्चिमोत्तरयात्रानुराधायाम्।
६ म.	४५।१२	रा. १२।०१	अनु. १३।१३	दि. ११।१३	सि. ३७।१३	ग. १५।५१	वश्चिक	अहो.	११।११।३५।३२	३०।१८	५।५६	६।०४	५	१२	२६	पश्चिमयात्रा सप्तम्यां, भ. ४५।१२ उपरि।
७ बु.	४६।१२	रा. १२।२५	ज्ये. १५।०६	दि. १२।००	व्य. ३५।०७	वि. १५।४२	व. १५।०६	दि. १२।००	११।१२।३४।५७	३०।२२	५।५६	६।०४	६	१३	२७	पश्चिमयात्रा ज्येष्ठायां ततः पूर्वयात्रा सप्तम्यां, गं. ६।०६ उपरि २४।०६ यावत्, भ. १५।४२ यावत्।
८ ब.	४८।३३	रा. १।२०	मू. १८।२१	दि ०१।१५	वरी. ३४।०३	बा. १७।२३	धनु	अहो.	११।१३।३४।२२	३०।२६	५।५५	६।०५	७	१४	२८	पूर्वोत्तरयात्राष्टम्यां, मार्गी बुधः ५।०७।
९ शु.	५२।००	रा. २।४२	पूषा. २२।३६	दि. २।५८	प. ३३।४६	तै. २०।१७	ध. ३८।५६	रा. ६।३०	११।१४।३३।४७	३०।३०	५।५४	६।०६	८	१५	२९	पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वाषाढे।
१० श.	५६।२६	रा. ४।२७	उषा. २८।०१	दि. ५।०५	शि. ३४।२५	व. २४।१३	मकर	अहो.	११।१५।३३।१२	३०।३४	५।५३	६।०७	९	१६	३०	भ. २४।१३ उपरि ५६।२६ यावत्।
११ र.	६०।००	अहो.	श्र. ३४।०८	रा. ७।३१	सि. ३५।३३	ब. २८।५६	मकर	अहो.	११।१६।३२।२२	३०।३८	५।५२	६।०८	१०	१७	३१	**रेवत्यां रविः** ५३।०३, **पञ्चकारंभो** रात्रौ घं. ७।३१ उपरि, त्र्यहो जन्मदिनकृत्यम्।
११ चं.	१।२५	प्रा. ६।२६	ध. ४०।४०	रा. १०।०८	सा. ३७।०२	बा. १।२५	म. ७।२४	दि. ८।५०	११।१७।३१।३१	३०।४२	५।५२	६।०८	११	१८	१	अप्रैल ४, **पापमोचिनी ११** व्रतं सर्वेषाम्।
१२ म.	६।४४	दि. ८।३३	शत. ४७।१०	रा. १२।४३	शु. ३८।३२	तै. ६।४४	कुम्भ	अहो.	११।१८।३०।४०	३०।४६	५।५१	६।०९	१२	१९	२	गोघृतेन पारणं, **प्रदोष** १३ व्रतं. पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे, **वारुणीयोगो** घं. ८।३३ उपरि दिने तत्र गंगास्नानं शतसूर्यग्रहणसमफलदम्, **स्कन्दपुराणे**—वारुणेन (+)
१३ बु.	११।५२	दि. १०।३५	पूभा. ५३।१७	रा. ३।०९	शु. ३९।४३	व. ११।५२	कुं. ३६।४६	रा. ८।३२	११।१९।२९।४९	३०।५०	५।५०	६।१०	१३	२०	३	**प्रदोष** १४ व्रतं, भ. ११।५२ उपरि ४४।०६ यावत्, (१४) एको। (+) समायुक्ता मधौ कृष्णा त्रयोदशी। गंगायां यदि लभ्येत सूर्यग्रहशतैः समा।।
१४ ब.	१६।१९	दि. १२।२१	उभा. ५८।३६	रा. ५।१७	ब्र. ४०।२४	श. १६।१९	मीन	अहो.	११।२०।२८।५८	३०।५४	५।४६	६।११	१४	२१	४	(३०) एकोदिष्टम्।
३० शु.	१९।५७	दि. १।४८	रे. ६०।००	अहो.	ऐं. ४०।१५	ना. १९।५७	मीन	अहो.	११।२१।२८।०७	३०।५७	५।४६	६।११	१५	२२	५	**चैत्री** ३० स्नानदानादिः, उत्तरयात्रा प्रतिपदि, गं. ५०।५५ उपरि।

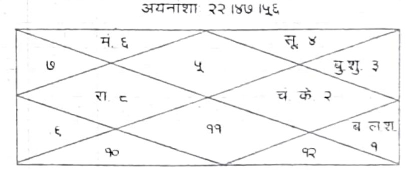
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	व. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	व. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
२ शु.	०।२८।५८।२७	१०।२०।५०।४६	८।०१।५०।३३	१०।०१।४६।५६	८।२२।४८।०७	६।०१।२३।४६	४५।०१	८।४६	१०।४२	१२।५५	१५।१३	१७।२६	१९।४४	२२।०१	०।१८	२।२३	४।०६	५।४०	७।०६
३ श.	०।२९।३८।२५	१०।२०।१०।५५	८।०१।५५।०६	१०।०२।५६।३५	८।२२।५१।५७	६।०१।२०।३६	४५।०३	८।४२	१०।३८	१२।५१	१५।०९	१७।२५	१९।४०	२१।५७	०।१४	२।१९	४।०५	५।३६	७।०५
४ र.	१।००।१८।२१	१०।२०।०३।०८	८।०१।५८।२२	१०।०४।१२।२६	८।२२।५५।०३	६।०१।१७।२८	४५।०५	८।३६	१०।३५	१२।४८	१५।०६	१७।२२	१९।३७	२१।५४	०।११	२।१६	४।०२	५।३३	७।०२
५ च.	१।००।५८।१७	१०।१९।५५।२१	८।०२।०१।३७	१०।०५।२५।२३	८।२२।५८।०६	६।०१।१४।१७	४५।०७	८।३५	१०।३१	१२।४४	१५।०२	१७।१८	१९।३३	२१।५०	०।०७	२।१२	३।५८	५।२६	६।५८
६ म.	१।०१।३८।१३	१०।१९।४७।३४	८।०२।०४।५२	१०।०६।३८।१७	८।२३।०१।१४	६।०१।११।०६	४५।०९	८।३१	१०।२७	१२।४०	१४।५८	१७।१४	१९।२९	२१।४६	०।०३	२।०८	३।५४	५।२५	६।५४
७ बु.	१।०२।१८।०८	१०।१९।३९।४७	८।०२।०८।०७	१०।०७।५१।११	८।२३।०४।१९	६।०१।०७।५५	४५।११	८।२८	१०।२४	१२।३७	१४।५५	१७।११	१९।२६	२१।४३	००।००	२।०५	३।५१	५।२२	६।५१
८ ब.	१।०२।५८।०३	१०।१९।३२।०१	८।०२।११।२२	१०।०९।०४।०५	८।२३।०७।२४	६।०१।०४।४४	४५।१३	८।२४	१०।२०	१२।३३	१४।५१	१७।०७	१९।२२	२१।३९	२३।५६	२।०१	३।४७	५।१८	६।४७
९ शु.	१।०३।३७।५८	१०।१९।४७।३३	८।०२।१४।३७	१०।१०।१९।५८	८।२३।१०।२९	६।०१।०१।३४	४५।१५	८।२०	१०।१६	१२।२९	१४।४७	१७।०३	१९।१८	२१।३५	२३।५२	१।५७	३।४३	५।१४	६।४३
१० श.	१।०४।१७।५३	१०।२०।०३।०५	८।०२।१७।५२	१०।११।२६।५१	८।२३।१३।३४	६।००।५८।२४	४५।१७	८।१७	१०।१३	१२।२६	१४।४४	१७।००	१९।१५	२१।३२	२३।४६	१।५४	३।४०	५।११	६।३०
११ र.	१।०४।५७।३३	१०।२०।४३।४२	८।०२।१९।३७	१०।१२।४२।३४	८।२३।१६।०५	६।००।५५।१३	४५।१९	८।१३	१०।०९	१२।२२	१४।४०	१६।५६	१९।११	२१।२८	२३।४५	१।५०	३।३६	५।०७	६।३६
११ चं.	१।०५।३७।१३	१०।२१।२४।१६	८।०२।२१।२२	१०।१३।५५।१७	८।२३।१८।३६	६।००।५२।०२	४५।२१	८।०६	१०।०५	१२।१८	१४।३६	१६।५२	१९।०७	२१।२४	२३।४१	१।४६	३।३२	५।०३	६।३२
१२ म.	१।०६।१६।५३	१०।२२।०४।५६	८।०२।२३।०७	१०।१५।०८।००	८।२३।२१।०७	६।००।४८।५१	४५।२३	८।०५	१०।०१	१२।१४	१४।३२	१६।४८	१९।०३	२१।२०	२३।३७	१।४२	३।२८	४।५६	६।२८
१३ बु.	१।०६।५६।३३	१०।२२।४५।३३	८।०२।२४।५२	१०।१६।२०।४३	८।२३।२३।३८	६।००।४५।४०	४५।२५	८।०२	९।५८	१२।११	१४।२९	१६।४५	१९।००	२१।१७	२३।३४	१।३९	३।२५	४।५६	६।२५
१४ ब.	१।०७।३६।१२	१०।२३।२६।१०	८।०२।२६।३७	१०।१७।३३।२६	८।२३।२६।०९	६।००।४२।२९	४५।२७	७।५८	९।५४	१२।०७	१४।२५	१६।४१	१८।५६	२१।१३	२३।३०	१।३५	३।२१	४।५२	६।२१
३० शु.	१।०८।१५।५१	१०।२४।०६।४७	८।०२।२८।२२	१०।१८।४६।०९	८।२३।२८।३९	६।००।३९।१८	४५।२९	७।५४	९।५०	१२।०३	१४।२१	१६।३७	१८।५२	२१।०९	२३।२६	१।३१	३।१७	४।४८	६।१७

३ शनौ वल्ली ८।३६।२८।२१
अयनांशा २२।४७।५५



१० शनौ वल्ली ८।३६।२८।२८
अयनांशा २२।४७।५६



विविधविषयाः—दिक्क्रमेण प्रहरार्द्धवशेन च **छिक्काफलं, मुहूर्त्तगणपतौ**— मृत्युर्वह्निभयं हानिस्तुष्टिर्द्रव्यागमः सुखम्। क्लेशोऽर्थागमनं प्रोक्तं दिक्षु छिक्काफलं क्रमात्।। गोक्षुतस्य दोषाधिक्यमुक्तं **नारदेन**—सर्वदिक्षु क्षुतं नेष्टं गोक्षुतं मरणप्रदम्। अफलं तत्क्षुतं वाच्यमन्धपीनसकेतवः।। केतवः—कपटः । पीनसो—मुहुर्नासाश्रावी। **रत्नावलीरत्नकलापयोः**-प्रागन्यपुंसः पुरतोऽपरस्तात् पुनः पुनर्वा तत एव जातम्। वृद्धाच्छिशोर्वा कफतो हठाद्वा जातं क्षुतं केऽपि वदन्त्यसत्यम्।। यात्रायां क्षुतमवश्यं वर्जनीयम्। **रत्नकलापे**—अग्रे क्षुतं चेच्छकुनैः किमन्यैः पश्चाच्छुतं चेच्छकुनैः किमन्यैः। जातानजाताञ्छकुनानि हन्ति क्षुतप्रदेनात्र वदन्ति तज्ज्ञाः। शुभक्षुतम्, सर्वशाकुने—औषधे च नवारोहे विवादे शयनेऽशने । विद्यारम्भे बीजवापे क्षुतं सप्तसु शोभनम्। क्षुतादिषु **कर्त्तव्यमाह**—छिक्कापतनजृम्भासु जीवोत्तिष्ठांगुली— ध्वनिः। गुरावपि च कर्त्तव्या अकृत्वा ब्रह्महा भवेत् ।। **होमविधौ विशेषः**— विवाहयात्राव्रतगोचरेषु चूडोपनीतिग्रहणे युगादौ। दुर्गाविधाने च सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्।। **प्रतिष्ठाप्रकाशे**—दुर्गाहोमविधौ विवाहसमये सीमन्तपुत्रोत्सवे गर्भाधानविधौ च वास्तुसमये विष्णोः प्रतिष्ठादिषु। मौञ्जीबन्धनवैश्वदेवकरणे संस्कारनैमित्तिके होमे नित्यभवे न दोषकथनं चक्रं च वह्नेरपि ।।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशुक्रशनयः, वक्री पश्चिमास्तो बुधः ४तः पूर्वोदितः ८तो मार्गी।

वातावरणम्—पक्षादिभागे तापाग्निभयमेघचारादयस्तदन्तभागे झंझावातोपलपात–मेघच्छायादयः।

चैत्रशुक्लपक्षः

शकाब्दः १६४०, ६ तः १६४१, संवत २०७६ सन १४२६ साल, दि. ६।४।१६ ई. तः दि. १६।४।१६ ई. यावत्।
शुद्धः, वसन्तर्तुः, याम्यगोलः ६ त. सौम्यगोलः, सौम्यायनं, दक्षिण कालः।

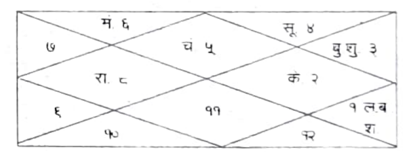
तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ श.	२२।२४	दि. २।४६	रे. २।५५	दि. ६।५८	वै. ३६।१८	ब. २२।२४	मी. २।५५	दि. ६।५८	११।१२।२७।१६	३१।००	५।४८	६।१२	१६	२३	६
२ र.	२३।३६	दि. ३।१५	अ. ६।०७	दि. ८।१४	वि. ३७।१६	कौ. २३।३६	मेष	अहो	११।२३।२६।००	३१।०४	५।४७	६।१३	१७	२४	७
३ च.	२३।३४	दि. ३।१२	भ. ८।०१	दि. ८।५८	प्री. ३४।२०	ग. २३।३४	मे. २३।११	दि. ३।०२	११।२४।२५।०४	३१।०८	५।४६	६।१४	१८	२५	८
४ म.	२२।१५	दि. २।४०	कृ. ८।४०	दि. ६।१४	आयु. ३०।२१	वि. २२।१५	वृष	अहो	११।१५।२३।५८	३१।१२	५।४६	६।१४	१६	२६	६
५ बु.	१६।४३	दि. १।३८	रो. ८।०८	दि. ६।००	सौ. २५।२६	बा. १६।४३	वृ. ३७।२१	रा. ८।४१	११।२६।२२।५१	३१।१६	५।४५	६।१५	२०	२७	१०
६ ब.	१६।११	दि. १२।१२	म. ६।३४	दि. ८।२२	शो. १६।४८	तै. १६।११	मिथुन	अहो	११।२७।२१।४४	३१।२०	५।४४	६।१६	२१	२८	११
७ शु.	११।४८	दि. १०।२६	आ. ४।०८	दि. ७।२२	अग. १३।२५	व. ११।४८	मि. ४६।४७	रा. १२।२६	११।२८।२०।३७	३१।२४	५।४३	६।१७	२२	२६	१२
८ श.	६।५०	दि. ८।२६	पुन. ०।५६	प्रा. ६।०६	सु. ६।२८	ब. ६।५०	कर्क	अहो	११।२६।१६।३०	३१।२८	५।४२	६।१८	२३	३०	१३
६ र.	१।०६	प्रा. ६।१०	श्ले. ५३।१५	रा. ३।००	शू. ५१।३१	कौ. १।०६	क. ५३।१५	रा. ३।००	०।००।१८।०८	३१।३२	५।४२	६।१८	२४	१	१४
११ च.	४६।०६	रा. १।१६	म. ४६।०५	रा. १।१६	ग. ४३।४७	व. २२।०५	सिंह	अहो	०।०१।१६।४६	३१।३६	५।४१	६।१६	२५	२	१५
१२ म.	४३।०८	रा. १०।५५	पूफ. ४५।०२	रा. ११।४१	व. ३६।११	ब. १६।०७	सिं. ५६।०६	रा. ५।१८	०।०२।१५।२४	३१।४०	५।४०	६।२०	२६	३	१६
१३ बु.	३७।२३	रा. ८।३६	उफ. ४१।१६	रा. १०।०६	ध्रु. २८।४२	कौ. १०।१६	कन्या	अहो	०।०३।१४।०२	३१।४४	५।३६	६।२१	२७	४	१७
१४ ब.	३२।०६	सं. ६।३०	ह. ३७।५८	रा. ८।४६	व्या. २१।३७	ग. ४।४६	कन्या	अहो	०।०४।१२।४०	३१।४८	५।३८	६।२२	२८	५	१८
१५ शु.	२७।३५	दि. ४।४०	चि. ३५।२२	रा. ७।४७	ह. १५।०४	ब. २७।३५	क. ६।४०	दि. ८।२२	०।०५।११।१८	३१।५२	५।३८	६।२२	२६	६	१६

नववर्षविक्रमसंवत **२०७६ प्रारंभः**, वसन्तनवरात्रारम्भः, **कलशस्थापनं,** श्रीदुर्गापूजनोत्सवः नवरात्रव्रतारम्भः पूर्वां विना यात्रा प्रतिपद्यश्विन्यो. (×)
रेमन्तपूजा, चन्द्रदर्शनमु १५ याम्यशृंगफल महार्घ. द.ति. २३।३६ यावत्।　(×) **पञ्चकान्तो** दिवा घ. ६।५८ उपरि, ग. ५।५५ यावत्, द. ति. २२।२४ उपरि।
गौरी३ व्रतं, स्वायम्भुवमन्वादिः, **गणेश** ४ व्रत, भ. ५२।५५ उपरि।　(+) **रामनवमीव्रतं,** हनुमदध्वजदान, श्रीसीतारामपूजनदर्शनादिकम्।
पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां, भ. २२।१५ यावत्।
श्रीपञ्चमी, लक्ष्मीपूजनं, मीनावतारः, रामज्याभिषेकोत्सवः, षष्ठीव्रतैकभुक्त **(खरना)**, **उपनयनं,** पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां तत उत्तरा विना यात्रा।
सूर्य ६ व्रतं, सायंकालिकार्घदानं, गजपूजा, **बिल्वाभिमन्त्रणं,** दक्षिणां विना यात्रा मृगशिरसि. मीने बुध. १०।२१. (६–७) एको.।
प्रातः कालिकार्घदानं पारणञ्च, **पत्रिकाप्रवेशः, महारात्रिर्निशापूजा,** दक्षिणयात्राष्टम्यां मिथुनगते चन्द्रे तत उत्तरयात्रा. वक्री गुरुः ५६।५८. म. ११।४८ **उपरि** ३६।१६ **यावत्।**
पुष्यदं. ५६।१६, धृतिदं. ५२।४०, मासान्तः, **महाष्टमी-नवमीव्रतं,** दीक्षाग्रहणं, अशोक ८, अशोककलिकापान, **ब्रह्मपुत्रस्नानञ्च,** त्रिशूलिनीपूजा, **रामावतारः,** (+)
दशमीदं. ५४।०५, **अश्विन्यां मेषे रविः** २७।१३ मु. १५ फलं महार्घं. **यवविषुवसंक्रान्तिपुण्यकालो** घ. ४।३५ उपरि दिने **पुण्याहः,** वैशाखस्नानारम्भ. **हरिद्वारे कल्पवासारंभः,** (=)
मासादिः, **कामदा** ११ व्रतं स्मार्तानां, **जुडिशीतल,** पर्युषितान्नपानादिभक्षणं. **तुलस्यश्वत्थाम्रादिवृक्षसेचनम्,** म. २२।०५ उपरि ४६।०६ यावत्।
विष्णु १२ गोघृतेन पारणं, **कामदा** ११ व्रतं वैष्णवानां, पूर्वयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्।　(▽) **मूले धनुषि केतुर्मिथुने राहुः** ८।५१. म. ३२।०६ **उपरि** ५६।५२ **यावत्।**
प्रदोष १३ व्रतं, चैत्रावली, मदन १३, मदनपूजनं, गोष्ठे सत्संगारम्भः, **महावीर (२६१७) जयन्ती,** कर्णवेधः देवादिप्रतिष्ठा, **विवाहो** गृहप्रवेशश्च त्रयोदश्याम्।
प्रदोष १४ व्रत, मदनभंजिका १४, **गृहप्रवेशो** पूर्णिमायां हस्ते, **द्विरागमनं** पूर्वयात्रा च पूर्णिमायां **विवाहश्चित्रायां,** हस्ते बुधशुक्रवेधाद्विवाहो मध्यम. (▽)
चैत्री १५ स्नानदानादि, स्वरोचिषमन्वादिः, कर्णवेधः, देवादिप्रतिष्ठा, **गृहारंभः** पूर्णिमायां, **द्विरागमनं, विवाहो** दिवारात्री, पूर्वदक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे **ततो** दक्षिणयात्रा।
(=) हनुमदध्वजदान, सोपकरणवारिपूर्णघटदानं, **सतुआइन,** प्रपागलन्तिकादानं, **नववर्षारंभः, सृष्ट्यादिः,** सौम्ययनारंभः **१६४१ शकाब्दारंभश्च** २७।१३ उपरि. **आर्यभटजयन्ती, सृष्टिगताब्दाः** १६७२६४६१२० भोग्याब्दाश्च २३४७०५०८८०, **विजया** १०, अपराजितापूजा, **देवीविसर्जनं,** जयन्तीधारण. नवरात्रव्रतपारणं यात्रा, नीलकण्ठखंजनादिदर्शनं. ग. ४२।१५ उ. ५७।५५ या. मीने शुक्र ५८।२६।

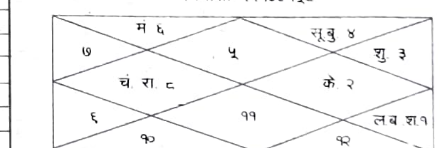
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमान	मे.अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ श.	१।०८।५५।३०	१०।२४।४७।२३	८।०२।३०।०७	१०।१६।५८।५२	८।२३।३१।०६	६।००।३६।०६	४५।३०	७।५०	६।४६	११।५६	१४।१७	१६।३३	१८।४८	२१।०५	२३।२२	१।२७	३।१३	४।४४	६।१३
२ र.	१।०६।३५।११	१०।२५।५८।१५	८।०२।३०।४०	१०।२१।१२।०८	८।२३।३२।४८	६।००।३२।५८	४५।३२	७।४७	६।४३	११।५६	१४।१४	१६।३०	१८।४५	२१।०२	२३।१६	१।२४	३।१०	४।४१	६।१०
३ च.	१।१०।१४।५२	१०।२७।०६।०६	८।०२।३१।१३	१०।२२।२५।२४	८।२३।३४।२७	६।००।२६।४७	४५।३४	७।४३	६।३६	११।५२	१४।१०	१६।२६	१८।४१	२०।५८	२३।१५	१।२०	३।०६	४।३७	६।०६
४ म.	१।१०।५४।३३	१०।२८।१६।५७	८।०२।३१।४५	१०।२३।३८।४०	८।२३।३६।०५	६।००।२६।३६	४५।३६	७।३६	६।३५	११।४८	१४।०६	१६।२२	१८।३७	२०।५४	२३।११	१।१६	३।०२	४।३३	६।०२
५ बु.	१।११।३४।१४	१०।२६।३०।४८	८।०२।३२।१७	१०।२४।५१।५५	८।२३।३७।४३	६।००।२३।२५	४५।३८	७।३५	६।३१	११।४४	१४।०२	१६।१८	१८।३३	२०।५०	२३।०७	१।१२	२।५८	४।२६	५।५८
६ ब.	१।१२।१३।५४	११।००।४१।३६	८।०२।३२।४६	१०।२६।०५।१०	८।२३।३६।२१	६।००।२०।१४	४५।४०	७।३२	६।२८	११।४१	१३।५६	१६।१५	१८।३०	२०।४७	२३।०४	१।०६	२।५५	४।२६	५।५५
७ शु.	१।१२।५३।३४	११।०१।५२।३०	८।०२।३३।२१	१०।२७।१८।२५	८।२३।४०।५६	६।००।१७।०४	४५।४२	७।२८	६।२४	११।३७	१३।५५	१६।११	१८।२६	२०।४३	२३।००	१।०५	२।५१	४।२२	५।५१
८ श.	१।१३।३३।१४	११।०३।०३।२१	८।०२।३२।५१	१०।२८।३१।४०	८।२३।४२।३७	६।००।१३।५४	४५।४४	७।२४	६।२०	११।३३	१३।५१	१६।०७	१८।२२	२०।३६	२२।५६	१।०१	२।४७	४।१८	५।४७
६ र.	१।१४।१२।३६	११।०४।३२।४०	८।०२।३१।५६	१०।२६।४४।३५	८।२३।४३।४५	६।००।१०।४३	४५।४६	७।२०	६।१६	११।२६	१३।४७	१६।०३	१८।१८	२०।३५	२२।५२	०।५७	२।४३	४।१४	५।४३
११ च.	१।१४।५२।०३	११।०६।०१।५६	८।०२।३१।०१	११।००।५७।३०	८।२३।४४।५३	६।००।०७।३२	४५।४८	७।१६	६।१२	११।२५	१३।४३	१५।५६	१८।१४	२०।३१	२२।४८	०।५३	२।३६	४।१०	५।३६
१२ म.	१।१५।३१।२७	११।०७।३१।१७	८।०२।३०।०६	११।०२।१०।२४	८।२३।४६।०१	६।००।०४।२१	४५।५०	७।१२	६।०८	११।२१	१३।३६	१५।५५	१८।१०	२०।२७	२२।४४	०।४६	२।३५	४।०६	५।३५
१३ बु.	१।१६।१०।५१	११।०६।००।३५	८।०२।२६।११	११।०३।२३।१८	८।२३।४७।०६	६।००।०१।१०	४५।५२	७।०८	६।०४	११।१७	१३।३५	१५।५१	१८।०६	२०।२३	२२।४०	०।४५	२।३१	४।०२	५।३१
१४ ब.	१।१६।५०।१५	११।१०।२६।५३	८।०२।२८।१५	११।०४।३६।१२	८।२३।४८।१६	८।२६।५७।५६	४५।५४	७।०५	६।०१	११।१४	१३।३२	१५।४८	१८।०३	२०।२०	२२।३७	०।४२	२।२८	३।५६	५।२८
१५ शु.	१।१७।२६।३६	११।११।५६।११	८।०२।२७।२१	११।०५।४६।०६	८।२३।४६।२३	८।२६।५४।४८	४५।५६	७।०१	८।५७	११।१०	१३।२८	१५।४४	१७।५६	२०।१६	२२।३३	०।३८	२।२४	३।५५	५।२४

१ शनौ वल्ली ८।३६।२८।३५
अयनांशा: २२।४७।५७



८ शनौ वल्ली ८।३६।२८।४२
अयनांशा: २२।४७।५८



विविधविषयाः—चैत्रशुक्लप्रतिपत्तो **नवमीं यावद् दुर्गापूजनोत्सवस्तत्र** घटे यन्त्रे चित्रे प्रतिमायां वा देवीं पूजयेत्सप्तशतीपाठादिकं **च कुर्यात्। चैत्रशुक्लाष्टम्या**मशोककलिकापानमन्त्रः—त्वामशोककरामीष्ट **मधुमाससमुद्भव। पिबामि** शोकसन्तप्तो मानशोकं सदा कुरु।। एतत्पानफलं, **लिंगपुराणे**—अशोककलिका ह्यष्टौ ये पिबन्ति पुनर्वसौ। चैत्रे मासि सिताष्टम्यां न ते शोकमवाप्नुयु। **ब्रह्मपुत्रस्नानमन्त्रः**—ब्रह्मपुत्र महाभाग शन्तनो कुलसम्भव। अमोघागर्भसम्भूत पापं लौहित्य मे हर।। **चैत्रशुक्लनवम्यां** रामनवमीव्रतन्तत्राङ्गदेवतापूजनपूर्वकं **श्रीरामं** सम्पूज्यार्घ्यं दद्यात्तन्मन्त्रः— दशाननवधार्थाय धर्मसंस्थापनाय च। राक्षसानां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च।। परित्राणाय साधूनां जातो रामः स्वयं हरिः। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं भ्रातृभिः सहितोऽनघ।। ततः परदिने इदं विष्णुरिति मन्त्रेण जुहुयाद् ब्राह्मणांश्च भोजयेत्। **मिथिलामाहात्म्यं**, वृहद्विष्णुपुराणे—मिथिलां ये नमस्यन्ति देशान्तरगता अपि। तेषां भुक्तिश्च मुक्तिश्च जायते नात्र संशयः।। मिथिलावासमासाद्य जीवन्मुक्तो भवेन्नरः। देहान्ते राघवं प्राप्य तद्भक्तैः सह मोदते।। **चक्षूरक्षार्थं पठनीयमन्त्रः**— शर्यातिञ्च सुकन्यां च च्यवनं शक्रमश्विनौ। भोजनान्ते स्मरेन्नित्यं तस्य चक्षुर्न हीयते।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजबुधशुक्रशनयः, मार्गी पूर्वोदितो गुरुः ७ तो वक्री।
वातावरणम्—पक्षस्य **पूर्वार्द्धे** तापाग्निभयमेघच्छायादयस्तदुत्तरार्द्धे झञ्झावातोपलपात– मेघचारादयः।

वैशाखकृष्णपक्षः

शकाब्दः १९४१, संवत २०७६, सन १४२६ साल, दि. २० ।४ ।१९ इ. तः दि. ४ ।५ ।१९ इ. यावत्। शुद्धः, वसन्तर्तुः, सौम्यगोलायने, दक्षिण कालः।

तिथयः दिनानि	तिथयः द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनांकाः रा.	सौ.	अं.
१ श.	२३ ।५०	दि. ३ ।०६	स्वा. ३३ ।३७	सं. ७ ।०४	व. ६ ।११	कौ. २३ ।५०	तुला	अहो.	० ।०६ ।०६ ।५५	३१ ।५६	५ ।३७	६ ।२३	३०	७	२०
२ र.	२१ ।०५	दि. २ ।०२	वि. ३२ ।५२	सं. ६ ।४५	सि. ४ ।०४	ग. २१ ।०५	तु. १८ ।०४	दि. १२ ।५०	० ।०७ ।०८ ।१८	३२ ।००	५ ।३६	६ ।२४	१	८	२१
३ च.	१६ ।३१	दि. १ ।२३	अनु. ३३ ।१७	सं. ६ ।५४	वरी. ५६ ।३०	वि. १६ ।३१	वृश्चिक	अहो.	० ।०८ ।०६ ।४१	३२ ।०३	५ ।३५	६ ।२५	२	९	२२
४ म.	१६ ।१०	दि. १ ।१५	ज्ये. ३४ ।५७	रा. ७ ।३४	प. ५४ ।१३	बा. १६ ।१०	व. ३४ ।५७	रा. ७ ।३४	० ।०९ ।०५ ।०४	३२ ।०६	५ ।३५	६ ।२५	३	१०	२३
५ बु	२० ।०६	दि. १ ।३८	मू. ३७ ।५१	रा. ८ ।४२	शि. ५२ ।५६	तै. २० ।०६	धनु	अहो.	० ।१० ।०३ ।२७	३२ ।०९	५ ।३४	६ ।२६	४	११	२४
६ ब.	२२ ।२४	दि. २ ।३२	पूषा. ४१ ।५७	रा. १० ।२१	सि. ५२ ।३५	व. २२ ।२४	ध. ५८ ।१५	रा. ४ ।५२	० ।११ ।०१ ।५०	३२ ।१२	५ ।३४	६ ।२६	५	१२	२५
७ शु	२५ ।४८	दि. ३ ।५२	उषा. ४७ ।०८	रा. १२ ।२४	सा. ५३ ।०४	ब. २५ ।४८	मकर	अहो.	० ।१२ ।०० ।१२	३२ ।१५	५ ।३३	६ ।२७	६	१३	२६
८ श.	३० ।०८	सं. ५ ।३५	श्र. ५३ ।०६	रा. २ ।४६	शु. ५४ ।१२	कौ. ३० ।०८	मकर	अहो.	० ।१२ ।५८ ।३४	३२ ।१८	५ ।३२	६ ।२८	७	१४	२७
९ र	३५ ।०२	रा. ७ ।३३	ध. ५६ ।३७	रा. ५ ।२३	शु. ५५ ।४२	तै. २ ।३५	म. २६ ।२२	दि. ४ ।०५	० ।१३ ।५६ ।४२	३२ ।२२	५ ।३२	६ ।२८	८	१५	२८
१० च	४० ।१०	रा. ६ ।३५	शत. ६० ।००	अहो.	ब्र. ५७ ।१७	व. ७ ।३६	कुम्भ	अहो.	० ।१४ ।५४ ।५०	३२ ।२५	५ ।३१	६ ।२९	९	१६	२९
११ म	४५ ।१३	रा. ११ ।३५	शत. ६ ।११	दि. ७ ।५८	ऐं. ५८ ।३८	ब. १२ ।४२	कुं. ५५ ।५१	रा. ३ ।५०	० ।१५ ।५२ ।५८	३२ ।२८	५ ।३०	६ ।३०	१०	१७	३०
१२ बु	४९ ।३५	रा. १ ।२०	पूभा. १० ।२४	दि. १० ।२८	वै. ५६ ।३१	कौ. १७ ।२४	मीन	अहो.	० ।१६ ।५१ ।०६	३२ ।३१	५ ।३०	६ ।३०	११	१८	१
१३ ब.	५३ ।०६	रा. २ ।४५	उभा. १७ ।५७	दि. १२ ।४०	वि. ५६ ।४१	ग. २१ ।२२	मीन	अहो.	० ।१७ ।४६ ।१३	३२ ।३४	५ ।२९	६ ।३१	१२	१९	२
१४ शु	५५ ।३०	रा. ३ ।४१	रे. २२ ।३२	दि. २ ।३०	प्री. ५८ ।५७	वि. २४ ।२०	मी. २२ ।३२	दि. २ ।३०	० ।१८ ।४७ ।२०	३२ ।३७	५ ।२९	६ ।३१	१३	२०	३
३० श.	५६ ।४३	रा. ४ ।०६	अ. २६ ।००	दि. ३ ।५२	आयु ५७ ।१५	च. २६ ।०७	मेष	अहो.	० ।१९ ।४५ ।२७	३२ ।४०	५ ।२८	६ ।३२	१४	२१	४

गृहारम्भो द्वितीयायाम्, पश्चिमदक्षिणयात्रा स्वात्याम्।

व्यतीपातदं. ५५ ।४३, **विवाहो** द्विरागमनमुत्तरयात्रा चानुराधायाम्, म ५० ।१८ उपरि।

वक्रतुण्ड ४ व्रतम्, **विवाहो द्विरागमनं गृहारम्भः** पश्चिमोत्तरयात्रा चानुराधायाम्, वक्री शनिः १९ ।१६, म. १९ ।३१ यावत।

वीरकुंवरसिंहजयन्ती, पश्चिमयात्रा ज्येष्ठायां ततः पूर्वयात्रा मूले, गं. २३ ।५७ उपरि ३८ ।५७ यावत्।

द्विरागमनं पूर्वयात्रा केतुवेधाद्विवाहो मध्यमश्च पञ्चम्याम्, द. ति. २० ।०६ उपरि।

कोकिला ६, **विवाह** उत्तराषाढे, पूर्वोत्तरयात्रा सप्तम्यां पूर्वाषाढे, द.ति. २२ ।२४ यावत्, म. २२ ।२४ उपरि ५४ ।०६ यावत्।

विवाहो दिवारात्रौ, पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायाम्।

पूर्वां विना यात्रा श्रवणायाम्, **पञ्चकारम्भो** रात्रौ घं. २ ।४६ उपरि. पूर्वास्तो बुधः ४६ ।२३।

भरण्यां रविः ८ ।१६, **विवाहो** दशम्यां धनिष्ठायाम्।

म. ७ ।३६ उपरि ४० ।१० यावत्।

वरुथिनी ११ व्रतं सर्वेषां, **वल्लभाचार्यजयन्ती,** पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे, अश्विन्यां मेषे बुधः २० ।४८।

नई ५, कुशोदकेन पारणम्, **विवाह** उत्तरभाद्रे, पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे।

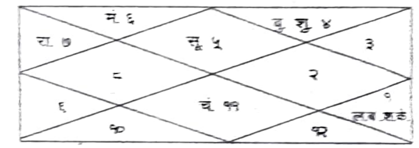
प्रदोष १३ व्रतम्, **विवाहस्त्रयोदश्याम्,** पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यां त्रयोदश्याम्, म. ५३ ।०६ उपरि।

प्रदोष १४ व्रतम्, उत्तरयात्रा रेवत्यां ततः पश्चिमां विना यात्रा चतुर्दश्यां, **पञ्चकान्तो** दिवा घं. २ ।३० उपरि, मं. १० ।३२ उपरि २५ ।३२ यावत्, म. २४ ।२० यावत्।

वैशाखी ३० स्नानदानादिः, शनैश्चरी ३०।

१ शनौ वल्ली ८ ।३६ ।२८ ।४६

अयनांशाः २२ ।४७ ।५६

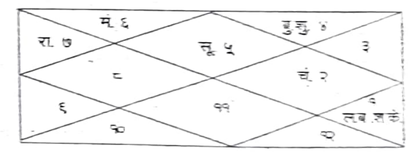


मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	व. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	व. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ श.	१ ।१८ ।०६ ।०३	११ ।१३ ।२८ ।२६	८ ।०२ ।२६ ।२६	११ ।०७ ।०२ ।००	८ ।२३ ।५० ।३०	८ ।२६ ।५१ ।३८	४५ ।५८	६ ।५७	८ ।५३	११ ।०६	१३ ।२४	१५ ।४०	१७ ।५५	२० ।१२	२२ ।२६	० ।३४	२ ।२०	३ ।५१	५ ।२०
२ र.	१ ।१८ ।४८ ।३२	११ ।१५ ।१० ।०४	८ ।०२ ।२४ ।०१	११ ।०८ ।१५ ।१४	८ ।२३ ।५१ ।२१	८ ।२६ ।४८ ।२७	४६ ।००	६ ।५३	८ ।४६	११ ।०२	१३ ।२०	१५ ।३६	१७ ।५१	२० ।०८	२२ ।२५	० ।३०	२ ।१६	३ ।४७	५ ।१६
३ च.	१ ।१९ ।२८ ।०१	११ ।१६ ।५१ ।३६	८ ।०२ ।२१ ।३६	११ ।०९ ।२८ ।२८	८ ।२३ ।५२ ।१२	८ ।२६ ।४५ ।१६	४६ ।०२	६ ।४६	८ ।४५	१० ।५८	१३ ।१६	१५ ।३२	१७ ।४७	२० ।०४	२२ ।२१	० ।२६	२ ।१२	३ ।४३	५ ।१२
४ म.	१ ।२० ।०७ ।३०	११ ।१८ ।३३ ।१४	८ ।०२ ।१९ ।१२	११ ।१० ।४१ ।४२	८ ।२३ ।५२ ।०३	८ ।२६ ।४२ ।०५	४६ ।०४	६ ।४५	८ ।४१	१० ।५४	१३ ।१२	१५ ।२८	१७ ।४३	२० ।००	२२ ।१७	० ।२२	२ ।०८	३ ।३९	५ ।०८
५ बु	१ ।२० ।४६ ।५६	११ ।२० ।१४ ।४८	८ ।०२ ।१६ ।४८	११ ।११ ।५४ ।५६	८ ।२३ ।५१ ।५४	८ ।२६ ।३८ ।५४	४६ ।०६	६ ।४१	८ ।३७	१० ।५०	१३ ।०८	१५ ।२४	१७ ।३९	१९ ।५६	२२ ।१३	० ।१८	२ ।०४	३ ।३५	५ ।०४
६ ब	१ ।२१ ।२६ ।२७	११ ।२१ ।५६ ।२२	८ ।०२ ।१४ ।२४	११ ।१३ ।०७ ।१०	८ ।२३ ।५१ ।४५	८ ।२६ ।३५ ।४३	४६ ।०७	६ ।३८	८ ।३४	१० ।४७	१३ ।०५	१५ ।२१	१७ ।३६	१९ ।५३	२२ ।१०	० ।१५	२ ।०१	३ ।३२	५ ।०१
७ शु	१ ।२२ ।०५ ।५५	११ ।२३ ।३७ ।५६	८ ।०२ ।१२ ।००	११ ।१४ ।२० ।२४	८ ।२३ ।५१ ।३४	८ ।२६ ।३२ ।३३	४६ ।०८	६ ।३४	८ ।३०	१० ।४३	१३ ।०१	१५ ।१७	१७ ।३२	१९ ।४९	२२ ।०६	० ।११	१ ।५७	३ ।२८	४ ।५७
८ श.	१ ।२२ ।४५ ।२३	११ ।२५ ।१९ ।३०	८ ।०२ ।०९ ।३६	११ ।१५ ।३४ ।३७	८ ।२३ ।५१ ।२४	८ ।२६ ।२९ ।२३	४६ ।०९	६ ।३०	८ ।२६	१० ।३९	१२ ।५७	१५ ।१३	१७ ।२८	१९ ।४५	२२ ।०२	० ।०७	१ ।५३	३ ।२४	४ ।५३
९ र	१ ।२३ ।२४ ।३२	११ ।२७ ।०८ ।२४	८ ।०२ ।०५ ।५०	११ ।१६ ।४७ ।४९	८ ।२३ ।५१ ।००	८ ।२६ ।२६ ।१२	४६ ।११	६ ।२६	८ ।२२	१० ।३५	१२ ।५३	१५ ।०९	१७ ।२४	१९ ।४१	२१ ।५८	० ।०३	१ ।४९	३ ।२०	४ ।४९
१० च	१ ।२४ ।०३ ।४१	११ ।२८ ।५७ ।१८	८ ।०२ ।०२ ।०४	११ ।१८ ।०१ ।०१	८ ।२३ ।५० ।३५	८ ।२६ ।२३ ।०१	४६ ।१३	६ ।२२	८ ।१८	१० ।३१	१२ ।४९	१५ ।०५	१७ ।२०	१९ ।३७	२१ ।५४	२३ ।५९	१ ।४५	३ ।१६	४ ।४५
११ म	१ ।२४ ।४२ ।५०	० ।०० ।४६ ।१२	८ ।०१ ।५८ ।१८	११ ।१९ ।१४ ।१३	८ ।२३ ।५० ।१०	८ ।२६ ।१९ ।५०	४६ ।१५	६ ।१८	८ ।१४	१० ।२७	१२ ।४५	१५ ।०१	१७ ।१६	१९ ।३३	२१ ।५०	२३ ।५५	१ ।४१	३ ।१२	४ ।४१
१२ बु	१ ।२५ ।२१ ।५६	० ।०२ ।३५ ।०६	८ ।०१ ।५४ ।३३	११ ।२० ।२७ ।२५	८ ।२३ ।४९ ।४५	८ ।२६ ।१६ ।३६	४६ ।१७	६ ।१५	८ ।११	१० ।२४	१२ ।४२	१४ ।५८	१७ ।१३	१९ ।३०	२१ ।४७	२३ ।५२	१ ।३८	३ ।०६	४ ।३८
१३ ब	१ ।२६ ।०१ ।०७	० ।०४ ।२४ ।००	८ ।०१ ।५० ।४८	११ ।२१ ।४० ।३७	८ ।२३ ।४६ ।२०	८ ।२६ ।१३ ।२८	४६ ।१८	६ ।११	८ ।०७	१० ।२०	१२ ।३८	१४ ।५४	१७ ।०९	१९ ।२६	२१ ।४३	२३ ।४८	१ ।३४	३ ।०५	४ ।३४
१४ शु	१ ।२६ ।४० ।१५	० ।०६ ।१२ ।५३	८ ।०१ ।४७ ।०३	११ ।२२ ।५३ ।४८	८ ।२३ ।४८ ।५५	८ ।२६ ।१० ।१८	४६ ।१९	६ ।०७	८ ।०३	१० ।१६	१२ ।३४	१४ ।५०	१७ ।०५	१९ ।२२	२१ ।३९	२३ ।४४	१ ।३०	३ ।०१	४ ।३०
३० श.	१ ।२७ ।१९ ।२३	० ।०८ ।०१ ।४६	८ ।०१ ।४३ ।१८	११ ।२४ ।०६ ।५९	८ ।२३ ।४८ ।३०	८ ।२६ ।०७ ।०८	४६ ।२०	६ ।०३	७ ।५९	१० ।१२	१२ ।३०	१४ ।४६	१७ ।०१	१९ ।१८	२१ ।३५	२३ ।४०	१ ।२६	२ ।५७	४ ।२६

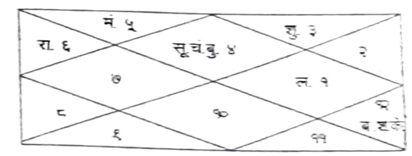
८ शनौ वल्ली ८ ।३६ ।२८ ।५६

अयनांशाः २२ ।४८ ।००



३० शनौ वल्ली ८ ।३६ ।२६ ।०३

अयनांशाः २२ ।४८ ।०१



विविधविषयाः—वैशाखे प्रातःस्नानमन्त्रः—वैशाखे सकलं मासं मेषसंक्रमणे रवेः। प्रातः सनियमं स्नास्ये प्रीयतां मधुसूदन॥ मधुहन्तुः प्रसादेन ब्राह्मणानामनुग्रहात्। निर्विघ्नमस्तु मे पुण्यं वैशाखस्नानमन्वहम्॥ माधवे मेषगे भानौ मुरारे मधुसूदन। प्रातःस्नानेन मे देव फलदो भव पापहन्॥ **प्रातःस्नानसमयः—**उत्तमं तु सनक्षत्रं मध्यं लुप्ततारकम्। सवित्र्युदिते भूप ततो हीनं प्रकीर्तितम्। **वैशाखे त्याज्यवस्तूनि—**कांस्यं मांसं मसूरान्नं चणकं कोद्रवं तथा। शाकं मधु परान्नं च पुनर्भोजनमैथुने॥ **वैशाखे दानवस्तूनि,** स्कान्दे—प्रपा कार्या च वैशाखे देवे देया गलन्तिका। उपानद्व्यजनं छत्रं सूक्ष्मवासांसि चन्दनम्। जलपात्राणि देयानि तथा पुष्पगृहाणि च। **विष्णुतत्त्वे—**ददाति यो हि मेषादौ सक्तूनम्बुघटान्वितान्। पितॄनुद्दिश्य विप्रेभ्यः सर्वपापैः प्रमुच्यते। **मासविशेषे स्नानम्—**कौशिकी माघवे स्नायान्माघे वै कमला तथा। दुग्धा विदलवती मार्गे कार्तिके यामुनी तथा। नृपते गैरिका चैत्रमाश्विने फलदा मता। भाद्रे जलाशिका पुण्या ज्येष्ठे व्याघ्रवती तथा। विरजा श्रावणे पुण्या नन्दना फाल्गुने मता॥ इक्षुमती तथा पौषे वै लक्ष्मणा शुभा। वाग्मती फाल्गुने शस्ता गण्डकी चापि कार्तिके। मलमासे विशेषेण गैरिका फलदायिनी॥ चन्द्रसूर्योपरागेषु सर्वा नद्यः शुभावहाः। गंगा तु सर्वदेति।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजशुक्रौ, मार्गी पूर्वोदितो बुधः ८तः पूर्वास्तः, मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वोदितः शनिः ३ तो वक्री।

वातावरणम्—पश्चाद्घनागमो [illegible] झंझावातादयः मेघचारादयः।

वैशाखशुक्लपक्षः

शकाब्दः १६४१, संवत् २०७६, सन् १४२६ साल, दि. ५।५।१६ ई. तः दि. १८।५।१६ ई. यावत्।
शुद्धः, वसन्तर्तुः, ११ तो ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलायने, दक्षिणे कालः, ११ तः पश्चिमे कालः।

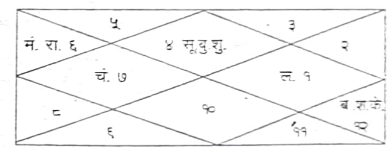
तिथयः दिनानि	तिथयः द. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनांकाः रा.	दिनांकाः सौ.	दिनांकाः अं.
१ र.	५६।३४	रा. ४।०५	भ. २८।०८	दि. ४।४२	सौ. ५४।३३	किं. २६।३६	मे. ४३।२२	रा. १०।४८	०।२०।४३।२२	३२।४४	५।२७	६।३३	१५	२२	५
२ चं.	५५।११	रा. ३।३१	कृ. २६।०३	दि. ५।०४	शो. ५०।५०	बा. २५।५३	वष	अहो.	०।२१।४१।१७	३२।४७	५।२७	६।३३	१६	२३	६
३ मं.	५२।३६	रा. २।२८	रो. २८।४६	दि. ४।५६	अग. ४६।१२	तै. २३।५४	व. ५८।०३	रा. ४।३६	०।२२।३६।१२	३२।५०	५।२६	६।३४	१७	२४	७
४ बु.	४६।००	रा. १।०१	म. २७।२०	दि. ४।२१	सु. ४०।४४	व. २०।४८	मिथुन	अहो.	०।२३।३७।०६	३२।५३	५।२५	६।३५	१८	२५	८
५ ब.	४४।३४	रा. ११।१५	आ. २५।०६	दि. ३।२६	घ. ३४।३४	ब. १६।४७	मिथुन	अहो.	०।२४।३५।००	३२।५६	५।२५	६।३५	१६	२६	६
६ शु.	३६।२४	रा. ६।१०	पुन. २२।०४	दि. २।१४	शू. २७।४७	कौ. ११।५६	मि. ७।५१	दि. ८।३२	०।२५।३२।५४	३२।५६	५।२४	६।३६	२०	२७	१०
७ श.	३३।४४	रा. ६।५४	पु. १८।२८	दि. १२।४७	गं. २०।३५	ग. ६।३४	कर्क	अहो.	०।२६।३०।४८	३३।०२	५।२४	६।३६	२१	२८	११
८ र.	२७।४७	दि. ४।३०	श्ले. १४।२६	दि. ११।११	व. १३।०४	वि. ०।४६	क. १४।२६	दि. ११।११	०।२७।२८।२६	३३।०६	५।२३	६।३७	२२	२६	१२
६ चं.	२१।३३	दि. १।५६	म. १०।२०	दि. ६।३०	ध्रु. ५।२५	कौ. २१।३३	सिंह	अहो.	०।२८।२६।१०	३३।०६	५।२२	६।३८	२३	३०	१३
१० मं.	१५।३०	दि. ११।३३	पूफ. ६।१३	दि. ७।५०	ह. ५०।२१	ग. १५।३०	सिं. २०।१५	दि. १।२७	०।२६।२३।५१	३३।१२	५।२१	६।३६	२४	३१	१४
११ बु.	६।४१	दि. ६।१३	उफ. २।२२	प्रा. ६।१८	व. ४३।१४	वि. ६।४१	कन्या	अहो.	१।००।२१।३२	३३।१५	५।२१	६।३६	२५	१	१५
१२ ब.	४।२३	दि. ७।०५	चि. ५६।१०	रा. ३।४८	सि. ३६।३७	बा. ४।२३	कं. २७।४७	दि. ४।२७	१।०१।१६।१३	३३।१८	५।२०	६।४०	२६	२	१६
१४ शु.	५५।५१	रा. ३।४०	स्वा. ५४।१७	रा. ३।०३	व्य. ३०।३६	ग. २७।४७	तुला	अहो.	१।०२।१६।५४	३३।२१	५।२०	६।४०	२७	३	१७
१५ श.	५३।०२	रा. २।३२	वि. ५३।१६	रा. २।३७	वरी. २५।२५	वि. २४।२७	तु. ३८।३२	रा. ८।४४	१।०३।१४।३४	३३।२४	५।१६	६।४१	२८	४	१८

शिवाजीजयन्ती।
चन्द्रदर्शनमु. ४५ सुश्रृंगफलं समर्घम्, **विवाहो** रोहिण्याम्, **द्विरागमनं** दक्षिणयात्रा व तृतीयायान्।
अक्षय ३, त्रेतायुगादिः, गंगास्नानदानादिः, **परशुरामजयन्ती,** परशुरामावतारः, पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां तत उत्तरां दिना यात्रा।
गणेश ४ व्रतं, मिथुने कुजः ५१।५५, म. २०।४८ उपरि ४६।०० यावत्।
शंकराचार्य (२५२६) जयन्ती, रामानुजाचार्य (१००१) जयन्ती, उपनयनं, गृहप्रवेशो द्विरागमनं पश्चिनयात्रा च पञ्चम्यां पुनर्वसौ, अश्विन्यां मेषे शुक्रः ३५।२७, द.ति. ४४।३४ उपरि।
गृहप्रवेशः सप्तम्याम्, द.ति. ३६।२४ यावत्। (×) पुण्यारण्ये (पुनौरायां) श्रीसीतारानदर्शनम्।
कृत्तिकायां रविः ५६।०५, म. ३३।४४ उपरि, **गृहप्रवेशः** पूर्वां विना यात्रा च पुष्ये, जह्नु७, जह्नुनुनेः कर्णरन्ध्राद् गंगायाः प्राकट्यम्, गंगास्नानदानादिः।
विवाहो मघाष्टम्योः, **षाण्मासिकरविव्रत-सप्ताडोरकविसर्गः,** गं. ३।२६ उपरि १८।२६ यावत्, म. ०।४६ यावत्।
व्याघातदं. ५२।२५, उत्तरयात्रा दशम्यां, **जानकी ६ व्रतं, मैथिलीदिवसः,** हनुमद्ध्वजदानं, दीक्षाग्रहणं, मूगर्भाज्जगज्जनन्या जानक्याः प्रादुर्भावः, सीतामढ्यां (×)
मासान्तः, जानकी ६ व्रतपारणम्, म. ४२।३६ उपरि, (१०–११) एको।   (+) **पुण्याहः,** वैशाखस्नान–हरिद्वारकल्पवाससमाप्तिः।
हस्तदं. ५६।३५, म. ६।४१ यावत्, **मोहिनी** ११ व्रतं सर्वेषां, **११ व्रतोद्यापनं, वृषे रविः** २४।१५ मु ३० फलं साम्यं, **विष्णुपदीसंक्रांतिपुण्यकालो** घं. ११।५१ उपरि घं. ६।१५ यावद्दिने, (+)
त्रयोदशीदं. **५५**।१६, वृषे बुधः २३।५४, मासादिः, मधुसूदन १२ कुशोदकेन पारणं, **प्रदोष** १३ व्रतम्।
प्रदोष १४ व्रतं, नरसिंहावतारः, **नरसिंह १४ व्रतं,** प्रदोषः घं. ८।१६ यावद्रात्रौ, दक्षिणयात्रा स्वात्याम्, म. ५५।२१ उपरि।
वैशाखी १५ गंगास्नानदानादिः, कूर्मावतारः, बुद्धावतारः, **बुद्ध (२६४३) जयन्ती,** पश्चिमोत्तरयात्रानुराधायाम्, म. २४।२७ यावत्।

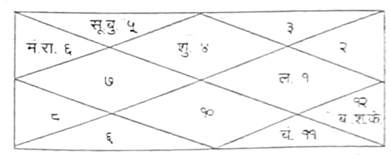
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	व. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	व. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ र.	१।२७।५८।३६	०।०६।५४।३६	८।०१।३८।२५	११।२५।२०।१७	८।२३।४७।१२	८।२६।०३।५७	४६।२२	५।५६	७।५५	१०।०८	१२।२६	१४।४२	१६।५७	१६।१४	२१।३१	२३।३६	१।२२	२।५३	४।२२
२ चं.	१।२८।३७।५५	०।११।४७।३२	८।०१।३३।३२	११।२६।३३।३५	८।२३।४५।५४	८।२६।००।४६	४६।२४	५।५५	७।५१	१०।०४	१२।२२	१४।३८	१६।५३	१६।१०	२१।२७	२३।३२	१।१८	२।४६	४।१८
३ मं.	१।२६।१७।११	०।१३।४०।२४	८।०१।२८।४०	११।२७।४६।५३	८।२३।४४।३६	८।२८।५७।३५	४६।२६	५।५२	७।४८	१०।०१	१२।१६	१४।३५	१६।५०	१६।०७	२१।२४	२३।२६	१।१५	२।४६	४।१५
४ बु.	१।२६।५६।२६	०।१५।३३।१६	८।०१।२३।४८	११।२६।००।११	८।२३।४३।१८	८।२८।५४।२४	४६।२८	५।४८	७।४४	६।५७	१२।१५	१४।३१	१६।४६	१६।०३	२१।२०	२३।२५	१।११	२।४२	४।११
५ ब.	२।००।३५।४१	०।१७।२६।०८	८।०१।१८।५६	०।००।१३।२८	८।२३।४२।००	८।२८।५१।१३	४६।२६	५।४४	७।४०	६।५३	१२।११	१४।२७	१६।४२	१८।५६	२१।१६	२३।२१	१।०७	२।३८	४।०७
६ शु.	२।०१।१४।५६	०।१६।१६।००	८।०१।१४।०४	०।०१।२६।४५	८।२३।४०।४२	८।२८।४८।०३	४६।३०	५।४०	७।३६	६।४६	१२।०७	१।२३	१६।३८	१८।५५	२१।१२	२३।१७	१।०३	२।३४	४।०३
७ श.	२।०१।५४।११	०।२१।११।५२	८।०१।०६।१२	०।०२।४०।०२	८।२३।३६।२५	८।२८।४४।५३	४६।३१	५।३७	७।३३	६।४६	१२।०४	१४।२०	१६।३५	१८।५२	२१।०६	२३।१४	१।००	२।३१	४।००
८ र.	२।०२।३३।०५	०।२३।०६।१२	८।०१।०३।०७	०।०३।५३।२६	८।२३।३७।२४	८।२८।४१।४२	४६।३३	५।३३	७।२६	६।४२	१२।००	१४।१६	१६।३१	१८।४८	२१।०५	२३।१०	०।५६	२।२७	३।५६
६ चं.	२।०३।११।५८	०।२५।००।३२	८।००।५७।०२	०।०५।०६।५६	८।२३।३५।२४	८।२८।३८।३१	४६।३५	५।२६	७।२५	६।३८	११।५६	१४।१२	१६।२७	१८।४४	२१।०१	२३।०६	०।५२	२।२३	३।५२
१० मं.	२।०३।५०।५१	०।२६।५४।५२	८।००।५०।५८	०।०६।२०।२३	८।२३।३३।२४	८।२८।३५।२०	४६।३७	५।२५	७।२१	६।३४	११।५२	१४।०८	१६।२३	१८।४०	२०।५७	२३।०२	०।४८	२।१६	३।४८
११ बु.	२।०४।२६।४४	०।२८।४६।११	८।००।४४।५४	०।०७।३३।४६	८।२३।३१।२४	८।२८।३२।०६	४६।३६	५।२२	७।१८	६।३१	११।४६	१४।०५	१६।२०	१८।३७	२०।५४	२२।५६	०।४५	२।१६	३।४५
१२ ब.	२।०५।०८।३७	१।००।४३।३०	८।००।३८।५०	०।०८।४७।१५	८।२३।२६।२४	८।२८।२८।५८	४६।४०	५।१८	७।१४	६।२७	११।४५	१४।०१	१६।१६	१८।३३	२०।५०	२२।५५	०।४१	२।१२	३।४१
१४ शु.	२।०५।४७।३०	१।०२।३७।४६	८।००।३२।४६	०।१०।००।४१	८।२३।२७।२४	८।२८।२५।४८	४६।४१	५।१४	७।१०	६।२३	११।४१	१३।५७	१६।१२	१८।२६	२०।४६	२२।५१	०।३७	२।०८	३।३७
१५ श.	२।०६।२६।२३	१।०४।३२।०८	८।००।२६।४२	०।११।१४।०७	८।२३।२५।२४	८।२८।२२।३८	४६।४२	५।१०	७।०६	६।१६	११।३७	१३।५३	१६।०८	१८।२५	२०।४२	२२।४७	०।३३	२।०४	३।३३

७ शनौ वल्ली ८।३६।२६।१०
अयनांशाः २२।४८।०२



१५ शनौ वल्ली ८।३६।२६।१७
अयनांशाः २२।४८।०३



विविधविषयाः—वैशाखशुक्लतृतीयायां **परशुरामार्घ्यदानमन्त्रः**—जामदग्न्य महावीर क्षत्रियान्तकर प्रभो। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं कृपया परमेश्वर। वैशाखशुक्लनवम्यां **जानकीनवमीव्रतं वृहद्विष्णुपुराणे**—वैशाखस्य सिते पक्षे नवमी तु मघायुता। सैव मध्याह्नयोगेन शस्यते व्रतकर्मणि।। तत्र जानकीं संपूज्य **प्रणमेत्तन्मन्त्रः**—दशाननविनाशाय जाता धरणिसंभवा । मैथिली शीलसंपन्ना पातु नः पतिदेवता। **मूलवासः—स्वर्गे** शुचिप्रौष्ठपदेषमाघे भूमौ नमः कार्त्तिकचैत्रपौषे। मूलं ह्यधस्तात्तु तपस्यमार्गे– वैशाखशुक्रेष्वशुभं च तत्र। **अभुक्तमूलविचारः**—अश्विनीमघमूलादौ त्रिवेदनवनाडिकाः। रेवतीसर्पशक्रान्ते मासरुद्ररसाः क्रमात्।। तस्मादेषूत्पन्नानां शान्तिः कार्या। मूलोत्पन्नानां विशेषण, यतोहि—मूलाद्यपादजो हन्ति पितरञ्च द्वितीयजम्। मातरञ्च तृतीयोऽर्थं शुमदस्तु तुरीयजः। सा शान्तिः जन्मानन्तरमग्रिममूलादिनक्षत्रेषु कार्या। **मूलवृक्षविचारः**—मूलस्तम्भस्त्वचा शाखा पत्रं पुष्पं फलं शिखा। मुनयोऽष्टौ दिशा रुद्राः सूर्याः पञ्चाब्धयोऽग्नयः । मूले मूलविनाशः स्यात्स्तम्भे वंशविनाशनम्। त्वचि मातुर्भवेत्क्लेशः शाखायां मातुलस्य च। पत्रे राज्यं विजानीयात्पुष्पे मन्त्रिपदं स्मृतम्। फले च विपुला लक्ष्मीः शिखायामल्पजीवितम्। **त्रीतरशान्तिरपि** विधेया। तत्र सजातीयापत्यत्रयानन्तरं विजातीयापत्यप्रसवस्त्रीतरः ।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजशुक्रौ, मार्गी पूर्वास्तो बुधः, वक्रिणौ पूर्वोदितौ गुरुशनी।

वातावरणम्—पक्षाद्यन्तभागयोः तापवाताग्निभयादयस्तन्मध्यभागे झंझावात–मेघचारादयः।

ज्येष्ठकृष्णपक्षः

शकाब्दः १६४१, संवत् २०७६, सन् १४२६ साल, दि. १६ ।०५ ।१६ ई. तः दि. ३ ।०६ ।१६ ई. यावत्।
शुद्धः, ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलायने, पश्चिमे कालः।

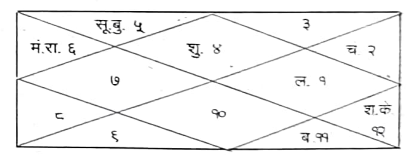
तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ र.	५१ ।२१	रा. १ ।५१	अनु. ५३ ।२५	रा. २ ।४१	प. २१ ।०१	बा. २२ ।१२	वृश्चिक	अहो.	१ ।०४ ।१२ ।०४	३३ ।२७	५ ।१६	६ ।४१	२६	५	१६
२ च.	५० ।५३	रा. १ ।३६	ज्ये. ५४ ।४७	रा. ३ ।१३	शि. १७ ।३५	तै. २१ ।०७	व. ५४ ।४७	रा. ३ ।१३	१ ।०५ ।०६ ।३४	३३ ।३०	५ ।१८	६ ।४२	३०	६	२०
३ मं.	५१ ।४३	रा. १ ।५६	मू. ५७ ।२६	रा. ४ ।१६	सि. १५ ।१०	व. २१ ।१३	धनु	अहो.	१ ।०६ ।०७ ।०४	३३ ।३२	५ ।१८	६ ।४२	३१	७	२१
४ बु.	५३ ।५३	रा. २ ।५०	पूषा. ६० ।००	अहो.	सा. १३ ।४७	ब. २२ ।४८	धनु	अहो.	१ ।०७ ।०४ ।३४	३३ ।३४	५ ।१७	६ ।४३	१	८	२२
५ ब.	५७ ।०८	रा. ४ ।०८	पूषा. १ ।१६	प्रा. ५ ।४७	शु. १३ ।१४	कौ. २५ ।३१	ध. १६ ।३०	दि. ११ ।५३	१ ।०८ ।०२ ।०४	३३ ।३६	५ ।१७	६ ।४३	२	६	२३
६ शु.	६० ।००	अहो.	उषा. ६ ।१५	दि. ७ ।४६	शु. १३ ।४२	ग. २६ ।१५	मकर	अहो.	१ ।०८ ।५६ ।३३	३३ ।३८	५ ।१६	६ ।४४	३	१०	२४
६ श.	१ ।२१	प्रा. ५ ।४८	श्र. १२ ।०६	दि. १० ।०६	ब्र. १४ ।४४	व. १ ।२१	म. ४५ ।१६	रा. ११ ।२४	१ ।०६ ।५७ ।०२	३३ ।४०	५ ।१६	६ ।४४	४	११	२५
७ र.	६ ।१३	दि. ७ ।४५	ध. १८ ।३१	दि. १२ ।४०	ऐ. १६ ।१५	ब. ६ ।१३	कुम्भ	अहो.	१ ।१० ।५४ ।२१	३३ ।४२	५ ।१६	६ ।४४	५	१२	२६
८ च.	११ ।२२	दि. ६ ।४८	शत. २५ ।०६	दि. ३ ।१७	वै. १७ ।५७	कौ. ११ ।२२	कुम्भ	अहो.	१ ।११ ।५१ ।३६	३३ ।४३	५ ।१५	६ ।४५	६	१३	२७
९ मं.	१६ ।२०	दि. ११ ।४७	पूभा. ३१ ।२६	सं. ५ ।५१	वि. १६ ।२६	ग. १६ ।२०	कुं. १४ ।५४	दि. ११ ।१३	१ ।१२ ।४८ ।५७	३३ ।४४	५ ।१५	६ ।४५	७	१४	२८
१० बु.	२० ।४२	दि. १ ।३२	उभा. ३७ ।११	रा. ८ ।०७	प्री. २० ।२६	वि. २० ।४२	मीन	अहो.	१ ।१३ ।४६ ।१५	३३ ।१५	५ ।१५	६ ।४५	८	१५	२९
११ ब.	२४ ।०६	दि. २ ।५५	रे. ४१ ।५७	रा. १० ।०२	आयु. २० ।५४	बा. २४ ।०६	मी. ४१ ।५७	रा. १० ।०२	१ ।१४ ।४३ ।३३	३३ ।४६	५ ।१५	६ ।४५	९	१६	३०
१२ शु.	२६ ।२८	दि. ३ ।५०	अ. ४५ ।४०	रा. ११ ।३१	सौ. २० ।२१	तै. २६ ।२८	मेष	अहो.	१ ।१५ ।४० ।५१	३३ ।४७	५ ।१५	६ ।४५	१०	१७	३१
१३ श.	२७ ।३८	दि. ४ ।१७	भ. ४८ ।०८	रा. १२ ।२६	शो. १८ ।५८	व. २७ ।३८	मेष	अहो.	१ ।१६ ।३८ ।०६	३३ ।४८	५ ।१४	६ ।४६	११	१८	१
१४ र.	२७ ।२७	दि. ४ ।१३	कृ. ४६ ।१५	रा. १२ ।५६	अग. १६ ।३२	श. २७ ।२७	मे. ३ ।२५	दि. ६ ।३६	१ ।१७ ।३५ ।१६	३३ ।५०	५ ।१४	६ ।४६	१२	१९	२
३० चं.	२६ ।०३	दि. ३ ।३६	रो. ४६ ।१२	रा. १२ ।५५	सु. १३ ।०४	ना. २६ ।०३	वृष	अहो.	१ ।१८ ।३२ ।२६	३३ ।५२	५ ।१४	६ ।४६	१३	२०	३

ज्येष्ठे वृन्ताकं त्यजेत्, **विवाहो**ऽनुराधायाम्, उत्तरयात्रा द्वितीयायाम्।
मुण्डनम्, केतुवेधाद्विवाहो मध्यमो मूले, पश्चिमोत्तरयात्रा तृतीयायां ज्येष्ठायां तत उत्तरयात्रा, गं. ४३ ।४७ उपरि ५८ ।४७ यावत्।
पूर्वयात्रा तृतीयायाम्, द.ति. ५१ ।४३, उपरि, म. २१ ।१३ उपरि ५१ ।४३ यावत्, **मूले धनुषि मध्यमो गुरुः** १७ ।३० ततएव प्रमाथीनामा सप्तचत्वारिंशन्मध्यमगुरुसंवत्सरारंभः।
आखुरथ ४ व्रतं, पूर्वयात्रा पञ्चम्याम्, वक्राद् वृश्चिके गुरुः ३१ ।२१, द.ति. ५३ ।५३ यावत्।
कर्णवेधो **विवाहश्**चोत्तराषाढे, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वाषाढे।
त्र्यहो जन्मदिनकृत्यम्, **विवाहो** दिवारात्रौ, पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायाम्।
रोहिण्यां रविः ४६ ।५६, भ. १ ।२१ उपरि ३३ ।४७ यावत्, **पञ्चकारम्भो** दिवा घं. १० ।०६ उपरि, पूर्वां विना यात्रा श्रवणायाम्।
विवाहो धनिष्ठायाम्।
।।००।।
पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे, भ. ४८ ।३१ उपरि, (१०) एको.।
नैर्ऋत्यामगस्त्यास्तः, **विवाहो** दिवारात्रौ, पश्चिमयात्रा रेवत्याम्, भ. २० ।४२ यावत्।
अपरा ११ व्रतं सर्वेषां, **विवाहो** दिवारात्रौ, पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यां ततो दक्षिणां विना यात्रा, **पञ्चकान्तो** रात्रौ घं. १० ।०२ उपरि, गं. २६ ।५७ उपरि ४४ ।५७ यावत्, (११) एको.।
तिलेन पारणम्, **प्रदोष** १३ व्रतम्, **विवाह** अश्विन्याम्, पश्चिमां विना यात्रा त्रयोदश्यश्विन्योः, पश्चिनोदितो बुधः १२ ।४०।
जून ६, **प्रदोष** १४ व्रतम्, मिथुने बुधः ३३ ।५४, भ. २७ ।३८ उपरि ५७ ।३२ यावत्।
वृषे शुक्रः २२ ।०५ ।
ज्यैष्ठी ३० स्नानदानादिः **वटसावित्रीव्रतम्, सोमवारीव्रतं** दिवा घं. ३ ।३६ यावत्, केतुवेधाद्विवाहो मध्यमः प्रतिपदि, दक्षिणयात्रा प्रतिपदि रोहिण्यां ततः पूर्वां विना यात्रा।

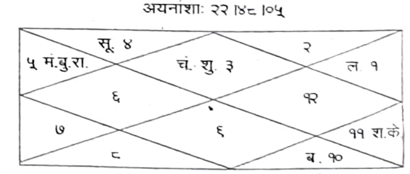
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	व. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	व. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ र.	२ ।०७ ।०५ ।१३	१ ।०६ ।२४ ।५५	८ ।०० ।१६ ।५०	० ।१२ ।२७ ।१८	८ ।२३ ।२२ ।४८	८ ।२८ ।१६ ।२७	४६ ।४४	५ ।०६	७ ।०२	६ ।१५	११ ।३३	१३ ।४६	१६ ।०४	१८ ।२१	२० ।३८	२२ ।४३	० ।२६	२ ।००	३ ।२६
२ च.	२ ।०७ ।४४ ।२२	१ ।०८ ।१७ ।४२	८ ।०० ।१२ ।५८	० ।१३ ।४० ।२६	८ ।२३ ।२० ।१२	८ ।२८ ।१६ ।१६	४६ ।४५	५ ।०२	६ ।५८	६ ।११	११ ।२६	१३ ।४५	१६ ।००	१८ ।१७	२० ।३४	२२ ।३६	० ।२५	१ ।५६	३ ।२५
३ मं.	२ ।०८ ।२३ ।२१	१ ।१० ।१० ।२६	८ ।०० ।०६ ।०६	० ।१४ ।५३ ।४०	८ ।२३ ।१७ ।३६	८ ।२८ ।१३ ।०५	४६ ।४६	४ ।५८	६ ।५४	६ ।०७	११ ।२५	१३ ।४१	१५ ।५६	१८ ।१३	२० ।३०	२२ ।३५	० ।२१	१ ।५२	३ ।२१
४ बु.	२ ।०६ ।०२ ।२०	१ ।१२ ।०३ ।१६	७ ।२६ ।५६ ।१४	० ।१६ ।०६ ।५१	८ ।२३ ।१५ ।००	८ ।२८ ।०६ ।५४	४६ ।४७	४ ।५४	६ ।५०	६ ।०३	११ ।२१	१३ ।३७	१५ ।५२	१८ ।०६	२० ।२६	२२ ।३१	० ।१७	१ ।४८	३ ।१७
५ ब.	२ ।०६ ।४१ ।१६	१ ।१३ ।५६ ।०३	७ ।२६ ।५२ ।२२	० ।१७ ।२० ।०२	८ ।२३ ।१२ ।२५	८ ।२८ ।०६ ।४३	४६ ।४८	४ ।५०	६ ।४६	८ ।५६	११ ।१७	१३ ।३३	१५ ।४८	१८ ।०५	२० ।२२	२२ ।२७	० ।१३	१ ।४४	३ ।१३
६ शु.	२ ।१० ।२० ।१८	१ ।१५ ।४८ ।५०	७ ।२६ ।४५ ।३०	० ।१८ ।३३ ।१३	८ ।२३ ।०६ ।५०	८ ।२८ ।०३ ।३२	४६ ।४६	४ ।४६	६ ।४२	८ ।५५	११ ।१३	१३ ।२६	१५ ।४४	१८ ।०१	२० ।१८	२२ ।२३	० ।०६	१ ।४०	३ ।०६
६ श.	२ ।१० ।५६ ।१७	१ ।१७ ।४१ ।३७	७ ।२६ ।३८ ।३८	० ।१६ ।४६ ।२३	८ ।२३ ।०७ ।१५	८ ।२८ ।०० ।२२	४६ ।५०	४ ।४२	६ ।३८	८ ।५१	११ ।०६	१३ ।२५	१५ ।४०	१७ ।५७	२० ।१४	२२ ।१६	० ।०५	१ ।३६	३ ।०५
७ र.	२ ।११ ।३८ ।०५	१ ।१६ ।३० ।२६	७ ।२६ ।३१ ।०१	० ।२० ।५६ ।४३	८ ।२३ ।०४ ।०३	८ ।२७ ।५७ ।११	४६ ।५१	४ ।३८	६ ।३४	८ ।४७	११ ।०५	१३ ।२१	१५ ।३६	१७ ।५३	२० ।१०	२२ ।१५	० ।०१	१ ।३२	३ ।०१
८ च.	२ ।१२ ।१६ ।५३	१ ।२१ ।१६ ।२०	७ ।२६ ।२३ ।२५	० ।२२ ।१३ ।०३	८ ।२३ ।०० ।५१	८ ।२७ ।५४ ।००	४६ ।५२	४ ।३४	६ ।३०	८ ।४३	११ ।०१	१३ ।१७	१५ ।३२	१७ ।४६	२० ।०६	२२ ।११	२३ ।५७	१ ।२८	२ ।५७
९ मं.	२ ।१२ ।५५ ।४१	१ ।२३ ।०८ ।११	७ ।२६ ।१५ ।४६	० ।२३ ।२६ ।२३	८ ।२२ ।५७ ।३६	८ ।२७ ।५० ।४६	४६ ।५३	४ ।३०	६ ।२६	८ ।३६	१० ।५७	१३ ।१३	१५ ।२८	१७ ।४५	२० ।०२	२२ ।०७	२३ ।५३	१ ।२४	२ ।५३
१० बु.	२ ।१३ ।३४ ।२६	१ ।२४ ।५७ ।०२	७ ।२६ ।०८ ।१३	० ।२४ ।३६ ।४२	८ ।२२ ।५४ ।२७	८ ।२७ ।४७ ।३८	४६ ।५४	४ ।२६	६ ।२२	८ ।३५	१० ।५३	१३ ।०६	१५ ।२४	१७ ।४१	१६ ।५८	२२ ।०३	२३ ।४६	१ ।२०	२ ।४६
११ ब.	२ ।१४ ।१३ ।१७	१ ।२६ ।४५ ।५३	७ ।२६ ।०० ।३७	० ।२५ ।५३ ।०१	८ ।२२ ।५१ ।१६	८ ।२७ ।४४ ।२७	४६ ।५४	४ ।२२	६ ।१८	८ ।३१	१० ।४६	१३ ।०५	१५ ।२०	१७ ।३७	१६ ।५४	२१ ।५६	२३ ।४५	१ ।१६	२ ।४५
१२ शु.	२ ।१४ ।५२ ।०५	१ ।२८ ।३४ ।४४	७ ।२८ ।५३ ।०१	० ।२७ ।०६ ।२०	८ ।२२ ।४८ ।०५	८ ।२७ ।४१ ।१७	४६ ।५४	४ ।१८	६ ।१४	८ ।२७	१० ।४५	१३ ।०१	१५ ।१६	१७ ।३३	१६ ।५०	२१ ।५५	२३ ।४१	१ ।१२	२ ।४१
१३ श.	२ ।१५ ।३० ।५२	२ ।०० ।२३ ।३५	७ ।२८ ।४५ ।२५	० ।२८ ।१६ ।३६	८ ।२२ ।४४ ।५४	८ ।२७ ।३८ ।०७	४६ ।५४	४ ।१४	६ ।१०	८ ।२३	१० ।४१	१२ ।५७	१५ ।१२	१७ ।२६	१६ ।४६	२१ ।५१	२३ ।३७	१ ।०८	२ ।३७
१४ र.	२ ।१६ ।०६ ।३१	२ ।०२ ।०४ ।३३	७ ।२८ ।३७ ।४०	० ।२६ ।३३ ।००	८ ।२२ ।४१ ।०८	८ ।२७ ।३४ ।५६	४६ ।५५	४ ।१०	६ ।०६	८ ।१६	१० ।३७	१२ ।५३	१५ ।०८	१७ ।२५	१६ ।४२	२१ ।४७	२३ ।३३	१ ।०४	२ ।३३
३० च.	२ ।१६ ।४८ ।१०	२ ।०३ ।४५ ।३१	७ ।२८ ।२६ ।५५	१ ।०० ।४६ ।२१	८ ।२२ ।३७ ।२२	८ ।२७ ।३१ ।४५	४६ ।५६	४ ।०६	६ ।०२	८ ।१५	१० ।३३	१२ ।४६	१५ ।०४	१७ ।२१	१६ ।३८	२१ ।४३	२३ ।२६	१ ।००	२ ।२६

६ शनौ वल्ली ८ ।३६ ।२६ ।२४
अयनांशाः २२ ।४८ ।०४



१३ शनौ वल्ली ८ ।३६ ।२६ ।३१
अयनांशाः २२ ।४८ ।०५



विविधविषयाः—अमायां वटसावित्रीव्रतम्—अमायाञ्च तथा **ज्येष्ठे** वटमूले महासती। त्रिरात्रोपोषिता नारी विधानेन प्रपूजयेत्।। सावित्रीप्रतिमां कुर्यात्सौवर्णीं वापि मृण्मयीम्। सप्तधान्येन संयुक्तां सावित्रीप्रतिमां शुभाम्।। सार्द्धं सत्यवता साध्वीं फलनैवेद्यदीपकैः। सावित्र्याख्यानकञ्चापि वाचयित्वा द्विजोत्तमैरिति विधिपूर्वकं सम्पूज्य ब्राह्मणाय **दद्यात्तन्मन्त्रः**—सावित्रीयं मया दत्ता सहिरण्या महासती। ब्रह्मणः प्रीणनार्थाय ब्राह्मणः प्रतिगृह्यताम्।। **कतिचिन्नियमाः**—समित्पुष्पकुशादीनि ब्राह्मणः स्वयमाहरेत्। शूद्रानीतैः क्रयक्रीतैः कर्न कुर्वन् पतत्यघः ।। **सन्तानप्रदसन्तानगोपालमन्त्रः**—देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।। इति मन्त्रस्य सपादलक्षसंख्यकजपः, तिलपायसघृतैस्तद्दशांशहोमः, तद्दशांशतर्पणं, तद्दशांशमार्जनं, तद्दशांशब्राह्मणभोजनञ्च कारयेत्। **काशीमाहात्म्यं**, स्कान्दे काशीखण्डे—कैलाशादधिका काशी काशी सर्वप्रकाशिका। कैलाशे शंकरोऽप्येकः काश्यां सर्वेऽपि शंकराः।। अन्यानि मुक्तिक्षेत्राणि काशीप्राप्तकरणानि च । काशीं प्राप्य विमुच्येत नान्यथा तीर्थकोटिभिः ।। **पितृतर्पणा- दिमहत्त्वमाह मनुः**—राजतैर्भाजनैरेषामथो वा राजतान्वितैः। वार्यपि श्रद्धया दत्तमक्षयायोपकल्पते।। देवकार्याद् द्विजातीनां पितृकार्यं विशिष्यते। दैवं हि पितृकार्यस्य पूर्वमाप्यायनं श्रुतम्।।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजशुक्रौ, मार्गी पूर्वास्तो बुधः १२तः पश्चिमोदितः, वक्रिणौ पूर्वोदितौ गुरुशनी।

वातावरणम्—पक्षादिभागे मेघचारतापच्छिन्नवृष्टयस्तदुत्तरार्द्धे झंझावाताभ्रचाराग्निभयादयः।

ज्येष्ठशुक्लपक्षः

शकाब्दः १६४१, संवत् २०७६, सन् १४२६ साल, दि. ४।६।१९ ई. तः दि. १७।६।१९ ई. यावत्।
शुद्धः, ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलायने, पश्चिमे कालः।

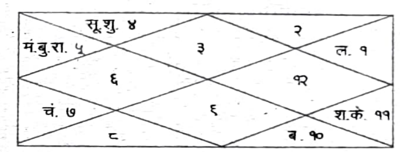
तिथयः दिनानि	तिथयः द. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनांकाः रा.	दिनांकाः सौ.	दिनांकाः अं.
१ म.	२३।२५	दि. २।३५	म. ४८।०१	रा. १२।२५	घ. ८।४०	ब. २३।२५	व. १८।३७	दि. १२।४०	१।१९।२६।३६	३३।५४	५।१३	६।४७	१४	२१	४
२ बु.	१९।४७	दि. १।०८	आ. ४६।००	रा. ११।३७	शू. ३।२४	कौ. १९।४७	मिथुन	अहो.	१।२०।२६।४६	३३।४५	५।१३	६।४७	१५	२२	५
३ ब.	१५।१८	दि. ११।२०	पुन. ४३।०५	रा. १०।२७	व. ५०।४८	ग. १५।१८	मि. २८।४६	दि. ४।४५	१।२१।२३।५६	३३।५६	५।१३	६।४७	१६	२३	६
४ शु.	१०।०५	दि. ६।१५	पु. ३६।३४	रा. ६।०३	ध्रु. ४३।४०	वि. १०।०५	कर्क	अहो.	१।२२।२१।०८	३३।५७	५।१३	६।४७	१७	२४	७
५ श.	४।२२	दि. ६।५७	श्ले. ३५।४०	रा. ७।३२	व्या. ३६।१६	बा. ४।२२	क. ३५।४०	रा. ७।३२	१।२३।१८।१७	३३।५८	५।१२	६।४८	१८	२५	८
७ र.	५२।०८	रा. २।०३	म. ३१।३०	सं. ५।४८	ह. २८।४१	ग. २५।१४	सिंह	अहो.	१।२४।१५।१६	३४।००	५।१२	६।४८	१९	२६	९
८ चं.	४६।००	रा. ११।३६	पूफ. २७।२२	दि. ४।०९	व. २१।०२	वि. १९।०४	सिं. ४१।२३	रा. ६।४५	१।२५।१२।२१	३४।०१	५।१२	६।४८	२०	२७	१०
९ मं.	४०।११	रा. ९।१६	उफ. २३।२५	दि. २।३४	सि. ९३।३५	बा. १३।०६	कन्या	अहो.	१।२६।०९।२३	३४।०२	५।१२	६।४८	२१	२८	११
१० बु.	३४।४६	रा. ७।०५	ह. १९।५३	दि. १।०८	व्य. ६।२६	तै. ७।२९	कं. ४८।२४	रा. १२।३३	१।२७।०६।२५	३४।०३	५।११	६।४९	२२	२९	१२
११ ब.	३०।००	सं. ५।११	चि. १६।५५	दि. ११।५७	प. ५३।३७	व. २।२३	तुला	अहो.	१।२८।०३।२७	३४।०४	५।११	६।४९	२३	३०	१३
१२ शु.	२६।०४	दि. ३।३७	स्वा. १४।५१	दि. ११।०७	शि. ४८।१३	बा. २६।०४	तु. ५८।५५	रा. ४।४५	१।२९।००।२९	३४।०५	५।११	६।४९	२४	३१	१४
१३ श.	२३।०८	दि. २।२६	वि. १३।३६	दि. १०।३७	सि. ४३।४१	तै. २३।०८	वश्चिक	अहो.	१।२९।५७।३१	३४।०६	५।११	६।४९	२५	३२	१५
१४ र.	२१।१८	दि. १।४१	अनु. १३।२८	दि. १०।३३	सा. ४०।०४	व. २१।१८	वश्चिक	अहो.	२।००।५४।२८	३४।०८	५।१०	६।५०	२६	१	१६
१५ च.	२०।४१	दि. १।२६	ज्ये. १४।३०	दि. १०।५८	शु. ३७।२८	ब. २०।४१	व. १४।३०	दि. १०।५८	२।०१।५१।२४	३४।१०	५।१०	६।५०	२७	२	१७

उत्तरां विना यात्रा द्वितीयामृगशीर्षयोः।
गण्डदं. ५४।०२, चन्द्रदर्शनमु. १५ सौम्यशृगफलं महार्घ, (२–३) एको.।
रंभा ३, पञ्चाग्निव्रतं, उमापूजनं, **गणेश** ४ व्रतं, **महाराणाप्रतापजयन्ती, मुण्डनं** कर्णवेधः पश्चिमयात्रा देवादिप्रतिष्ठा च तृतीयायाम्, द.ति. १५।१८ उपरि, म. ४२।४२ उपरि।
उपनयनं, मुण्डनं कणवेधो देवादिप्रतिष्ठा च पञ्चम्याम्, पश्चिमां विना यात्रा पञ्चमीपुष्ययोः, द.ति. १०।०५ यावत्, म. १०।०५ यावत्।
षष्ठीदं. ५३।५७, **मृगशिरसि रविः** ४८।४७, गं. २४।४० उपरि ३६।४० यावत्, अरण्य ६, विन्ध्यवासिनीपूजा।
विवाहो मघायाम्, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्, भ. ५२।०८ उपरि।
विवाह उत्तरफल्गुन्यष्टम्योः, उत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम्, भ. १६।०४ यावत्।
पूर्वदक्षिणयात्रा हस्ते। **(×)** तद्दर्शनपूजनादिकं, पूर्वदक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततो दक्षिणपश्चिमयात्रा।
वरीयानदं. ५३।१५, **उपनयनं, मुण्डनं,** कर्णवेधः, **विवाहो** दिवारात्रौ, देवादिप्रतिष्ठा, **गंगादशहरा,** गंगास्नानदानादिः, पृथिव्यां गंगावतरणं, रामेश्वरप्रतिष्ठादिनं **(×)**
निर्जला ११ व्रतं सर्वेषां, **उपनयनं, ११ व्रतोद्यापनं, मुण्डनं,** कर्णवेधश्चित्रायां, **विवाहो** दिवारात्रौ, देवादिप्रतिष्ठा, पश्चिमयात्रा, म. २।२३ उपरि ३०।०० यावत्।
त्रिविक्रम १२ तिलेन पारणं, **प्रदोष** १३ व्रतं, **विवाहो** देवादिप्रतिष्ठा च स्वात्याम्।
मिथुने रविः ४६।४० मु. ३० फलं साम्यम्, मासान्तः, **प्रदोष** १४ व्रतम्।
षडशीतिसंक्रान्तिपुण्यकालो घं. १२ यावद्दिने, **पुण्याहः**, भ. २१।१८ उपरि ५१।०० यावत्।
मासादिः, **ज्यैष्ठी १५** स्नानदानादिः, तिलदानं, **साम्प्रतिकवैवस्वतमन्वादिः,** श्रीकबीरजयन्ती, गं. ८।३० उपरि २३।३० यावत्।

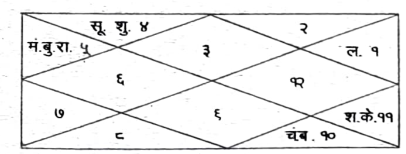
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	व. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	व. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ म.	२।१७।२६।४६	२।०५।२६।२६	७।२८।२२।११	१।०१।५६।४२	८।२२।३३।३७	८।२७।२८।३४	४६।५७	४।०२	५।५८	८।११	१०।२६	१२।४५	१५।००	१७।१७	१९।३४	२१।३६	२३।२५	०।५६	२।२५
२ बु.	२।१८।०५।२८	२।०७।०७।२७	७।२८।१४।२७	१।०३।१३।०३	८।२२।२६।५२	८।२७।२५।२३	४६।५८	३।५८	५।५४	८।०७	१०।२५	१२।४१	१४।५६	१७।१३	१९।३०	२१।३५	२३।२१	०।५२	२।२१
३ ब.	२।१८।४४।०७	२।०८।४८।२५	७।२८।०६।४३	१।०४।२६।२४	८।२२।२६।०७	८।२७।२२।१२	४६।५६	३।५४	५।५०	८।०३	१०।२१	१२।३७	१४।५२	१७।०६	१९।२६	२१।३१	२३।१७	०।४८	२।१७
४ शु.	२।१९।२२।४५	२।१०।२९।२२	७।२७।५८।५६	१।०५।३६।४४	८।२२।२२।२२	८।२७।१९।०२	४६।५६	३।५०	५।४६	७।५९	१०।१७	१२।३३	१४।४८	१७।०५	१९।२२	२१।२७	२३।१३	०।४४	२।१३
५ श.	२।२०।०१।२३	२।१२।१०।१९	७।२७।५१।१५	१।०६।५३।०४	८।२२।१८।३७	८।२७।१५।५२	४६।५६	३।४६	५।४२	७।५५	१०।१३	१२।२९	१४।४४	१७।०१	१९।१८	२१।२३	२३।०९	०।४०	२।०९
७ र.	२।२०।४०।०५	२।१३।३८।२८	७।२७।४३।०५	१।०८।०६।२९	८।२२।१४।२९	८।२७।१२।४१	४७।००	३।४२	५।३८	७।५१	१०।०९	१२।२५	१४।४०	१६।५७	१९।१४	२१।१९	२३।०५	०।३६	२।०५
८ च.	२।२१।१८।४७	२।१५।०६।३६	७।२७।३४।५५	१।०९।१९।५४	८।२२।१०।२१	८।२७।०९।३०	४७।०१	३।३८	५।३४	७।४७	१०।०५	१२।२१	१४।३६	१६।५३	१९।१०	२१।१५	२३।०१	०।३२	२।०१
९ मं.	२।२१।५७।२९	२।१६।३४।४४	७।२७।२९।४५	१।१०।३३।१८	८।२२।०६।१४	८।२७।०६।१९	४७।०२	३।३४	५।३०	७।४३	१०।०१	१२।१७	१४।३२	१६।४९	१९।०६	२१।११	२२।५७	०।२८	१।५७
१० बु.	२।२२।३६।१०	२।१८।०२।५२	७।२७।१८।३५	१।११।४६।४२	८।२२।०२।०७	८।२७।०३।०८	४७।०३	३।३०	५।२६	७।३९	९।५७	१२।१३	१४।२८	१६।४५	१९।०२	२१।०७	२२।५३	०।२४	१।५३
११ ब.	२।२३।१४।५१	२।१९।३१।००	७।२७।१०।२६	१।१३।००।०६	८।२१।५८।००	८।२६।५९।५७	४७।०३	३।२६	५।२२	७।३५	९।५३	१२।०९	१४।२४	१६।४१	१८।५८	२१।०३	२२।४९	०।२०	१।४९
१२ शु.	२।२३।५३।३२	२।२०।५९।०८	७।२७।०२।१७	१।१४।१३।३०	८।२१।५३।५३	८।२६।५६।४७	४७।०३	३।२२	५।१८	७।३१	९।४९	१२।०५	१४।२०	१६।३७	१८।५४	२०।५९	२२।४५	०।१६	१।४५
१३ श.	२।२४।३२।२३	२।२२।२७।१६	७।२६।५४।०८	१।१५।२६।५४	८।२१।४९।४६	८।२६।५३।३७	४७।०३	३।१८	५।१४	७।२७	९।४५	१२।०१	१४।१६	१६।३३	१८।५०	२०।५५	२२।४१	०।१२	१।४१
१४ र.	२।२५।१०।४८	२।२३।३४।४८	७।२६।४६।१४	१।१६।४०।१६	८।२१।४५।१५	८।२६।५०।२६	४७।०४	३।१४	५।१०	७।२३	९।४१	११।५७	१४।१२	१६।२९	१८।४६	२०।५१	२२।३७	०।०८	१।३७
१५ चं.	२।२५।४९।२३	२।२४।४२।२०	७।२६।३८।२०	१।१७।५३।३८	८।२१।४०।४५	८।२६।४७।१५	४७।०५	३।१०	५।०६	७।१९	९।३७	११।५३	१४।०८	१६।२५	१८।४२	२०।४७	२२।३३	०।०४	१।३३

५ शनौ वल्ली ८।३९।२९।३८
अयनांशाः २२।४८।०६



१३ शनौ वल्ली ८।३९।२९।४५
अयनांशाः २२।४८।०७



विविधविषयाः—ज्येष्ठमासे दानवस्तूनि, **वामनपुराणे**—उदक्कुम्भं जलं धेनुस्तालवृन्तं सचन्दनम्। **त्रिविक्रमस्य प्रीत्यर्थं** प्रदद्यात् ज्येष्ठमासि च ।। **कृत्यशिरोमणौ**— निदाघकाले पानीयं यस्य तिष्ठत्यवारितम्। स दुर्गं विषमं कृच्छ्रं न कदाचिदवाप्नुयात्।। छत्रदानात्तथा ज्येष्ठे सर्वान् कामानवाप्नुयात्। छत्रोपानहयोर्दानाज्ज्येष्ठे मासि द्विजोत्तमाः।। अक्षयं फलमाप्नोति नाकलोकं च गच्छति। **चतुर्थ्यां सौभाग्यवृद्धये उमापूजनं ब्रह्मपुराणे**—ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्यां तु जाता पूर्वामुमा सती। तस्मात् सा तत्र सम्पूज्या स्त्रीभिः सौभाग्यवृद्धये।। **अष्टम्यां चतुर्दश्या** च पञ्चाग्निव्रतधृक् तयोस्तिथ्योः सायंकाले व्रतान्ते सुवर्णस्य धेनोश्च दाता दिवं यातीति प्रोक्तं **कृत्यमहार्णवे**—ज्येष्ठे पञ्चतपास्सायं हेमधेनुप्रदो दिवि। यात्यष्टमी–चतुर्दश्यो रुद्रव्रतमिदं स्मृतम्।। **पूर्णिमायां तिलदानमहत्त्वमादित्यपुराणे**—ज्यैष्ठे मासि तिलान् दद्यात् पौर्णमास्यां विशेषतः। अश्वमेधस्य यज्ञस्य फलं प्राप्नोत्यसंशयम्।।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजशुक्रौ, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः, वक्रिणौ पूर्वोदितौ गुरुशनी।

वातावरणम्—पक्षस्य पूर्वार्द्धे वाताभ्रचारतापादयस्तदुत्तरार्द्धभागे वाताभ्रचारतापाग्नि– भयादयः।

आषाढकृष्णपक्षः

शकाब्दः १६४१, संवत् २०७६, सन् १४२६ साल, दि. १८।६।१६ ई. तः दि. २।७।१६ ई. यावत्।
शुद्धः, ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलायने, पश्चिमे कालः।

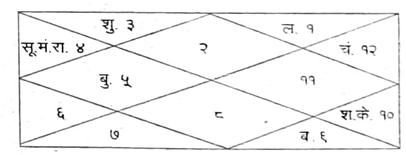
तिथयः दिनानि	तिथयः द. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनांकाः रा.	दिनांकाः सौ.	दिनांकाः अं.
१ मं.	२१।२५	दि. १।४४	मू. १६।५३	दि. ११।५५	शु. ३५।५३	कौ. २१।२५	धनु	अहो.	२।०२।४८।२०	३४।१२	५।१०	६।५०	२८	३	१८
२ बु.	२३।२४	दि. २।३१	पूषा. २०।२७	दि. १।२०	ब्र. ३५।१५	ग. २३।२४	ध. ३६।३८	रा. ७।४८	२।०३।४५।१६	३४।१३	५।०६	६।५१	२६	४	१६
३ ब.	२६।३१	दि. ३।४५	उषा. २५।१०	दि. ३।१३	ऐ. ३५।३०	वि. २६।३१	मकर	अहो.	२।०४।४२।१२	३४।१४	५।०६	६।५१	३०	५	२०
४ शु.	३०।३७	सं. ५।२४	श्र. ३०।४८	सं. ५।२८	वै. ३६।३१	बा. ३०।३७	मकर	अहो.	२।०५।३६।०८	३४।१५	५।०६	६।५१	३१	६	२१
५ श.	३५।२५	सं. ७।१६	ध. ३७।०४	रा. ७।५६	वि. ३७।५७	कौ. ३।०१	म. ३।५६	दि. ६।४३	२।०६।३६।०४	३४।१६	५।०६	६।५१	१	७	२२
६ र.	४०।२६	रा. ६।२१	शत. ४३।३७	रा. १०।३६	प्री. ३६।४१	ग. ७।५७	कुम्भ	अहो.	२।०७।३२।५७	३४।१४	५।०६	६।५१	२	८	२३
७ च.	४५।२४	रा. ११।१६	पूभा. ५०।००	रा. १।०६	आयु. ४१।१४	वि. १२।५७	कुं. ३३।२५	सं. ६।३१	२।०८।२६।५०	३४।१३	५।०६	६।५१	३	६	२४
८ मं.	४६।४६	रा. १।०४	उभा. ५५।५२	रा. ३।३१	सौ. ४२।२४	बा. १७।३५	मीन	अहो.	२।०६।२६।४३	३४।१२	५।१०	६।५०	४	१०	२५
६ बु.	५३।१६	रा. २।३०	रे. ६०।००	अहो.	शो. ४२।५८	तै. २१।३३	मीन	अहो.	२।१०।२३।३५	३४।११	५।१०	६।५०	५	११	२६
१० ब.	५५।३६	रा. ३।२६	रे. ०।५३	प्रा. ५।३१	अगं. ४२।३७	व. २४।२६	मी. ०।५३	प्रा. ५।३१	२।११।२०।२७	३४।१०	५।१०	६।५०	६	१२	२७
११ शु.	५६।५१	रा. ३।५४	अ. ४।४५	दि. ७।०४	सु. ४१।२६	ब. २६।१५	मेष	अहो.	२।१२।१७।१६	३४।०६	५।१०	६।५०	७	१३	२८
१२ श.	५६।४२	रा. ३।५१	भ. ७।२८	दि. ८।०६	ध. ३६।११	कौ. २६।४६	मे. २२।४६	दि. २।१८	२।१३।१४।११	३४।०८	५।१०	६।५०	८	१४	२६
१३ र.	५५।२०	रा. ३।१६	कृ. ८।५४	दि. ८।४५	शू. ३५।५७	ग. २६।०१	वष	अहो.	२।१४।११।०२	३४।०६	५।११	६।४६	६	१५	३०
१४ च.	५२।४५	रा. २।१७	रो. ६।०६	दि. ८।४६	गं. ३१।४२	वि. २४।०३	व. ३८।३८	रा. ८।३८	२।१५।०७।५३	३४।०५	५।११	६।४६	१०	१६	१
३० मं.	४६।०८	रा. १२।५०	म. ८।०६	दि. ८।२७	व. २६।३६	च. २०।५७	मिथुन	अहो.	२।१६।०४।४३	३४।०४	५।११	६।४६	११	१७	२

पूर्वयात्रा द्वितीयायाम्, बिल्वमाषाढके त्यजेत्।
गृहारम्भ उत्तराषाढे, सूर्यवेधाद्विवाहो नैवोत्तराषाढे, पूर्वयात्रा पूर्वाषाढे, भ. ५४।५८ उपरि।
विघ्नराज ४ व्रतं, **मुण्डनं** दक्षिणां विना यात्रा च तृतीयाश्रवणयोः, कर्णवेधो **गृहारम्भश्च** तृतीयायां, भ. २६।३१ यावत्।
विवाहः पञ्चम्याम्, पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायां ततः पूर्वयात्रा, **पञ्चकारम्भः** सायं घं. ५।२८ उपरि, **मैथिलवैवाहिकसभारंभः** (सौराठससौलयोः)।
आर्द्रायां रविः ५१।१७ पुंस्त्रीसूचंयोगो मेषलग्नमश्ववाहनं जलानाडीपतिर्बुधस्तेन वातातपझंझावातयोगः, कर्के बुधः २६।२४, पश्चिमयात्रा षष्ठ्यां धनिष्ठायाम्।
आर्द्रास्थे सूर्ये नवोदकनिमित्तकपार्वणश्राद्धं विधेयम्, भ. ४०।२६ उपरि।
कर्के कुजः १६।५३, द.ति. ४५।२४ उपरि, भ. १२।५७ यावत्।
पश्चिमयात्रा रेवत्याम्, द.ति. ४६।४६ यावत्।
विवाहः पश्चिमयात्रा च दशम्याम्, गं. ४८।५३ उपरि। **(×)** म. २४।२६ उपरि ५५।३६ यावत्।
विवाहो दिवारात्रौ, पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यां ततो दक्षिणां विना यात्रा, **पञ्चकान्तः** प्रातः घं. ५।३१ उपरि, मिथुने शुक्रः ४१।५०, गं. ३।५३ यावत्, **(×)**
योगिनी ११ व्रतं स्मार्त्तानाम्, **विवाहः** पश्चिमां विना यात्रा चाश्विन्याम्।
यवचूर्णेन पारणम्, **योगिनी** ११ व्रतं वैष्णवानाम्।
प्रदोष १३ व्रतम्, **विवाहो** दक्षिणपूर्वयात्रा च रोहिणीत्रयोदश्योः, म. ५५।२० उपरि, **मैथिलवैवाहिकसभासमाप्तिः** (सौराठससौलयोः)।
जुलाई ७, **प्रदोष** १४ व्रतम्, वक्री बुधः १२।१४, भ. २४।०३ यावत्।
आषाढी ३० भौमवती ३० गंगास्नानदानादिः—अमायाञ्च यदा वारो भवेद् भूमिसुतस्य च। गंगायां यदि लभ्येत कोटिसूर्यग्रहैः समा।।

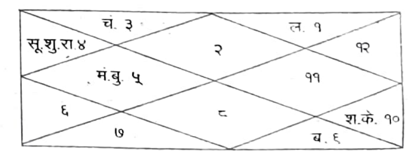
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	व.अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	व.अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ मं.	२।२६।२७।५८	२।२५।४६।५२	७।२६।३०।२६	१।१६।०७।००	८।२१।३६।१५	८।२६।४४।०४	४७।०६	३।०६	५।०२	७।१५	६।३३	११।४६	१४।०४	१६।२१	१८।३८	२०।४३	२२।२६	०।००	१।२६
२ बु.	२।२७।०६।३३	२।२६।५७।२४	७।२६।२२।३२	१।२०।२०।२२	८।२१।३१।४५	८।२६।४०।५३	४७।०७	३।०२	४।५८	७।११	६।२६	११।४५	१४।००	१६।१७	१८।३४	२०।३६	२२।२५	२३।५६	१।२५
३ ब.	२।२७।४५।०७	२।२८।०४।५५	७।२६।१४।३८	१।२१।३३।४३	८।२१।२७।१५	८।२६।३७।४२	४७।०८	२।५८	४।५४	७।०७	७।२५	११।४१	१३।५६	१६।१३	१८।३०	२०।३५	२२।२१	२३।५२	१।२१
४ शु.	२।२८।२३।४१	२।२६।१२।२६	७।२६।०६।४४	१।२२।४७।०४	८।२१।२२।४५	८।२६।३४।३१	४७।०८	२।५४	४।५०	७।०३	६।२१	११।३७	१३।५२	१६।०६	१८।२६	२०।३१	२२।१७	२३।४८	१।१७
५ श.	२।२६।०२।१५	३।००।१६।५७	७।२५।५८।५०	१।२४।००।२५	८।२१।१८।१५	८।२६।३१।२१	४७।०८	२।५०	४।४६	६।५६	६।१७	११।३३	१३।४८	१६।०५	१८।२२	२०।२७	२२।१३	२३।४४	१।१३
६ र.	२।२६।४०।५१	३।००।५५।२४	७।२५।५१।०७	१।२५।१३।३७	८।२१।१३।३६	८।२६।२८।१०	४७।०७	२।४६	४।४२	६।५५	६।१३	११।२६	१३।४४	१६।०१	१८।१८	२०।२३	२२।०६	२३।४०	१।०६
७ च.	३।००।१६।२६	३।०१।३०।५१	७।२५।४३।२५	१।२६।२६।४६	८।२१।०८।५८	८।२६।२४।५६	४७।०६	२।४२	४।३८	६।५१	६।०६	११।२५	१३।४०	१५।५७	१८।१४	२०।१६	२२।०५	२३।३६	१।०५
८ मं.	३।००।५८।०१	३।०२।०६।१८	७।२५।३५।४३	१।२७।४०।०१	८।२१।०४।२०	८।२६।२१।४८	४७।०५	२।३८	४।३४	६।४७	६।०५	११।२१	१३।३६	१५।५३	१८।१०	२०।१५	२२।०१	२३।३२	१।०१
६ बु.	३।०१।३६।३६	३।०२।४१।४५	७।२५।२८।०१	१।२८।५३।१२	८।२०।५६।४२	८।२६।१८।३७	४७।०४	२।३४	४।३०	६।४३	६।०१	११।१७	१३।३२	१५।४६	१८।०६	२०।११	२१।५७	२३।२८	०।५७
१० ब.	३।०२।१५।११	३।०३।१७।१२	७।२५।२०।१६	२।००।०६।२३	८।२०।५५।०४	८।२६।१५।२६	४७।०४	२।२६	४।२५	६।३८	८।५६	११।१२	१३।२७	१५।४४	१८।०१	२०।०६	२१।५२	२३।२३	०।५२
११ शु.	३।०२।५३।४६	३।०३।५२।३६	७।२५।१२।३७	२।०१।१६।३४	८।२०।५०।२६	८।२६।१२।१६	४७।०४	२।२५	४।२१	६।३४	८।५२	११।०८	१३।२३	१५।४०	१७।५७	२०।०२	२१।४८	२३।१६	०।४८
१२ श.	३।०३।३२।२१	३।०४।२८।०५	७।२५।०४।५५	२।०२।३२।४५	८।२०।४५।४८	८।२६।०६।०६	४७।०४	२।२१	४।१७	६।३०	८।४८	११।०४	१३।१६	१५।३६	१७।५३	१६।५८	२१।४४	२३।१५	०।४४
१३ र.	३।०४।१०।४३	३।०४।१८।३५	७।२४।५७।४३	२।०३।४६।०५	८।२०।४१।०५	८।२६।०५।५५	४७।०३	२।१७	४।१३	६।२६	८।४४	११।००	१३।१५	१५।३२	१७।४६	१६।५४	२१।४०	२३।११	०।४०
१४ च.	३।०४।४६।०५	३।०४।४४।१५	७।२४।५०।३१	२।०४।५६।२५	८।२०।३६।२२	८।२६।०२।४४	४७।०२	२।१३	४।०६	६।२२	८।४०	१०।५६	१३।११	१५।२८	१७।४५	१६।५०	२१।३६	२३।०७	०।३६
३० मं.	३।०५।२६।२७	३।०४।२६।४७	७।२४।४३।२०	२।०६।१२।४५	८।२०।३१।३६	८।२५।५६।३३	४७।०१	२।०६	४।०५	६।१८	८।३६	१०।५२	१३।०७	१५।२४	१७।४१	१६।४६	२१।३२	२३।०३	०।३२

५ शनौ वल्ली ८।३६।२६।५२
अयनांशाः २२।४८।०८



१२ शनौ वल्ली ८।३६।२६।५६
अयनांशाः २२।४८।०६



विविधविषयाः—ग्रहस्थितिवशेन **वृष्टिविचारः**—बुधः शुक्रसमीपस्थः करोत्येकार्णवां महीम् । तयोरन्तर्गतो भानुः समुद्रमपि शोषयेत्।। पुरतः पृष्ठतो भानुः शुभा यदि समीपगाः । तदा वृष्टिं प्रकुर्वन्ति न चेत्ते प्रतिलोमगाः।। ग्रहाणामुदये चास्ते राश्यन्तरगतेऽयने। संयोगो वापि पक्षान्ते प्रायो वृष्टिः प्रजायते।। उदयास्तगतः शुक्रः बुधश्च वृष्टिकारकः । चलत्यंगारके वृष्टिः ध्रुवा वृष्टिश्शनैश्चरे।। वारिपूर्णां महीं कृत्वा पश्चात्सञ्चरते गुरुः। शुक्रे वास्तमिते मन्दे त्रिविधोऽपि प्रजायते।।
सूर्यनक्षत्राणि—रोहिणि—मृगशिरा—पूर्वोत्तरफल्गुनी—हस्त—चित्रा—स्वाती—विशाखाऽनुराधा—ज्येष्ठा—मूल—शतभिषोत्तरभाद्रपदानीति त्रयोदशर्क्षाणि, शेषाणि चन्द्रनक्षत्राणि ज्ञेयानि। **एतत्फलम्**—चन्द्रे सूर्यर्क्षगे वृष्टिः सूर्ये चन्द्रर्क्षगे सति। उभौ चन्द्रर्क्षगौ स्यातां स्वल्पवृष्टिस्तदा भवेत्। तावेव यदि सूर्यर्क्षे तदा वृष्टिर्न जायते।।
नक्षत्राणां **पुरुषादिसंज्ञा**—मूलादीनि चतुर्दशर्क्षाणि पुरुषसंज्ञकानि, आर्द्रादिदश स्त्रीसंज्ञकानि, विशाखादि त्रीणि नपुंसकानि। तत्र पुंस्त्रीयोगे सुवृष्टिः स्त्रीनपुंसकयोगे स्वल्पवृष्टिरन्यथावृष्टेरभावः । **सजलादिराशयः**—कुम्भकर्कटकौ मीनमकरालितुला— धराः। सजला राशयः प्रोक्ता निर्जलाः शेषराशयः।।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजशुक्रौ, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः १४तो वक्री, वक्रिणौ पूर्वोदितौ गुरुशनी।

वातावरणम्—पक्षस्य पूर्वार्द्धे वाताभ्रचारतापच्छिन्नवृष्टयस्तदुत्तरार्द्धभागे तापाग्निभयादयः।

आषाढशुक्लपक्षः

शकाब्दः १६४१, संवत् २०७६, सन् १४२६ साल, दि. ३।७।१९ ई. तः दि. १६।७।१९ ई. यावत्।
शुद्धः, १२ तो शुद्धः, ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलायने, पश्चिमे कालः।

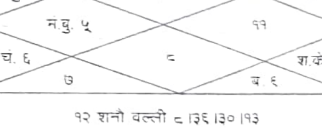
तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ बु.	४४।४२	रा. ११।०४	आ. ६।१६	दि. ७।४१	घ्रु. २०।४५	किं. १६।५५	मि. ४६।१३	रा. १२।५२	२।१७।०१।३३	३४।०३	५।११	६।४६	१२	१८	३
२ ब.	३६।३०	रा. ०६।००	पुन. ३।३१	दि. ६।३६	व्या. १४।१४	बा. १२।०६	कर्क	अहो.	२।१७।५८।२३	३४।०२	५।१२	६।४८	१३	१९	४
३ शु.	३३।४५	स. ६।४२	पु. ०।०८	प्रा. ५।१५	ह. ७।१०	तै. ६।३८	क. ५६।१४	रा. ३।४२	२।१८।५५।१३	३४।०१	५।१२	६।४८	१४	२०	५
४ श.	२७।४१	दि. ४।१६	म. ५२।०६	रा. २।०४	सि. ५२।१४	व. ०।४३	सिंह	अहो.	२।१९।५२।०३	३४।००	५।१२	६।४८	१५	२१	६
५ र.	२१।२८	दि. १।४७	पूफ. ४७।५६	रा. १२।२२	व्य. ४४।३२	बा. २१।२८	सिंह	अहो.	२।२०।४८।५५	३३।५८	५।१२	६।४८	१६	२२	७
६ च.	१५।१९	दि. ११।२१	उफ. ४३।५५	रा. १०।४७	वरी. ३७।०१	तै. १५।१९	सिं. १।५६	प्रा. ५।५६	२।२१।४५।४७	३३।५६	५।१३	६।४७	१७	२३	८
७ म.	९।२६	दि. ८।५९	ह. ४०।१६	रा. ९।१६	प. २६।४७	व. ६।२६	कन्या	अहो.	२।२२।४२।३६	३३।५४	५।१३	६।४७	१८	२४	९
८ बु.	३।५६	प्रा. ६।४७	चि. ३७।०७	रा. ८।०४	शि. २२।५६	व. ३।५६	कं. ८।४२	दि. ८।४२	२।२३।३९।३१	३३।५३	५।१३	६।४७	१९	२५	१०
१० ब.	५५।०५	रा. ३।१६	स्वा. ३४।४८	रा. ७।०६	सि. १६।४३	तै. २७।०५	तुला	अहो.	२।२४।३६।२३	३३।५२	५।१४	६।४६	२०	२६	११
११ शु.	५२।०१	रा. २।०२	वि. ३३।२१	स. ६।३४	सा. ११।१०	व. २३।३३	तु. १८।४३	दि. १२।४३	२।२५।३३।१५	३३।५१	५।१४	६।४६	२१	२७	१२
१२ श.	५०।०६	रा. १।१६	अनु. ३२।५५	स. ६।२४	शु. ६।२७	ब. २१।०४	वृश्चिक	अहो.	२।२६।३०।०७	३३।५०	५।१४	६।४६	२२	२८	१३
१३ र.	४६।२१	रा. १२।५८	ज्ये. ३३।४२	सं. ६।४३	शु. २।३८	कौ. १६।४४	व. ३३।४२	सं. ६।४३	२।२७।२७।०३	३३।४६	५।१४	६।४६	२३	२९	१४
१४ च.	४६।५६	रा. १।१२	मू. ३५।४४	रा. ७।३२	ऐं. ५८।०१	ग. १६।३६	धनु	अहो.	२।२८।२३।५८	३३।४८	५।१४	६।४६	२४	३०	१५
१५ म.	५१।५२	रा. २।००	पूषा. ३६।०३	रा. ८।५२	वै. ५७।१३	वि. २०।५४	ध. ५५।०६	रा. ३।१६	२।२९।२०।५३	३३।४७	५।१५	६।४५	२५	३१	१६

ग्रीष्मनवरात्रारम्भ, **कलशस्थापनं**, श्रीदुर्गापूजनोत्सवः, **कर्णवेधः** पुनर्वसौ, पश्चिमदक्षिणयात्रा पुनर्वसौ मिथुनस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा।
चन्द्रदर्शनम्. ३० सौम्यश्रृंगफल साम्यं, **जगन्नाथरथयात्रा**, समुद्रस्नानं जगन्नाथदर्शनञ्च, **मुण्डनं**, कर्णवेधः, पश्चिमास्तो बुधः ४४।०३, पश्चिमोत्तरयात्रा **(×)**
आश्लेषादं. ५६।०६, वजद. ५२।३७, ग. ४५।१४ उपरि, **गणेश** ४ व्रतम्, पश्चिमां विना यात्रा पुष्ये।
पुनर्वसौ रविः ५५।२३ स्त्रीस्त्रीसूर्ययोगो मिथुनलग्नं शिखिवाहनं जलनाडीपतिर्बुधस्तेन मेघच्छायाझंझावातयोगः, ग. ०।१४ यावत्, भ. ०।४३ उपरि २७।४१ यावत्।
करमूले पुलिकमूलबन्धनम्, **उपनयनम्, विवाह** उत्तरफल्गुन्याम्, पूर्वोत्तरयात्रा पञ्चम्यान्। (×) पुनर्वसौ ततो दक्षिणां विना यात्रा, तडागखननं पुष्ये, देवादिप्रतिष्ठा।
विवाहो दिवारात्रौ, कर्णवेधः, देवादिप्रतिष्ठा, **गृहप्रवेशो** वापीकूपखननञ्च सप्तम्यान् (६—७) एको।
पश्चिमास्तः कुजः ४५।५६, द.ति. ६।२६ उपरि, भ. ६।२६ उपरि ३६।४१ यावत्, पूर्वदक्षिणयात्रा सप्तम्यान्।
नवमीदं. ५५।१०, द.ति. ३।५६ यावत्, पश्चिमदक्षिणयात्रा दशम्याम्।
वक्रान्मिथुने बुधः ३६।४३, रैवतमन्वादिः, **मुण्डनम्**, पश्चिमयात्रा **गृहप्रवेशो विवाहश्च** स्वात्यान्, देवादिप्रतिष्ठा।
हरिशयन ११ व्रतं स्मार्त्तानां, चातुर्मास्यव्रतारम्भः, **गृहारम्भप्रवेशा**वनुराधायाम्, उत्तरयात्रानुराधैकादश्यो, भ. २३।३३ उपरि ५२।०१ यावत्।
हरिशयन ११ व्रतं वैष्णवानां, वासुदेव १२ यवचूर्णेन पारणं, **गृहारंभप्रवेशौ** अनुराधायान्, पश्चिमोत्तरयात्रा, क्षीणः **शुक्रोऽशुद्धारंभश्च** ४३।०२ उपरि।
ब्रह्मादं. ५७।१०, गं. २२।४२ उपरि ३७।४२ यावत्, करमूले पुलिकमूलबन्धनम्, **प्रदोष** १३ व्रतम्, उत्तरयात्रा ज्येष्ठायां ततः पूर्वोत्तरयात्रा त्रयोदश्याम्।
प्रदोष १४ व्रतम्, उत्तरयात्रा पूर्णिमायाम्, भ. ४६।५६ उपरि।
आषाढी १५ स्नानदानादिः, **गुरुपूर्णिमा**, गुरुव्यासयोः पूजनम्, **चाक्षुषमन्वादिः**, नातान्तः, **पूर्वास्तः शुक्रः** ४३।०२, न. २० ।५४ यावत्, **सन् १४२७ सालसंज्ञकवर्षारम्भः** पूर्णान्तात्।

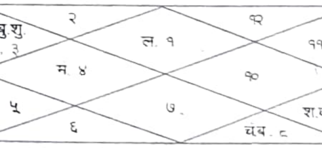
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	व.अं.	मि.अं.	क.अं.	सि.अं.	कं.अं.	तु.अं.	व.अं.	ध.अं.	म.अं.	कु.अं.	मी.अं.
१ बु.	३।०६।०५।४६	३।०४।१५।१६	७।२४।३६।०६	२।०७।२६।०५	८।२०।२६।५६	८।२५।५६।२२	४७।००	२।०५	४।०१	६।१४	८।३२	१०।४८	१३।०३	१५।२०	१७।३७	१९।४२	२१।२८	२२।५६	०।२८
२ ब.	३।०६।४४।११	३।०४।००।५०	७।२४।२८।५८	२।०८।३६।२५	८।२०।२२।१४	८।२५।५३।११	४७।००	२।०१	३।५७	६।१०	८।२८	१०।४४	१२।५६	१५।१६	१४।३३	१९।३८	२१।२४	२२।५५	०।२४
३ शु.	३।०७।२२।३२	३।०३।४६।२१	७।२४।२१।४७	२।०९।५२।४५	८।२०।१७।३२	८।२५।५०।०१	४७।००	१।५७	३।५३	६।०६	८।२४	१०।४०	१२।५५	१५।१२	१७।२६	१९।३४	२१।२०	२२।५१	०।२०
४ श.	३।०८।००।५३	३।०३।३१।५२	७।२४।१४।३६	२।११।०६।०५	८।२०।१२।५०	८।२५।४६।५१	४७।००	१।५३	३।४६	६।०२	८।२०	१०।३६	१२।५१	१५।०८	१७।२५	१९।३०	२१।१६	२२।४७	०।१६
५ र.	३।०८।३९।२०	३।०२।४८।००	७।२४।०८।१३	२।१२।१९।२६	८।२०।०८।०७	८।२५।४३।४०	४६।५६	१।४६	३।४५	५।५८	८।१६	१०।३२	१२।४७	१५।०४	१७।२१	१९।२६	२१।१२	२२।४३	०।१२
६ चं.	३।०९।१७।४७	३।०२।०४।०८	७।२४।०१।५०	२।१३।३२।५३	८।२०।०३।२४	८।२५।४०।२९	४६।५८	१।४५	३।४१	५।५४	८।१२	१०।२८	१२।४३	१५।००	१७।१७	१९।२२	२१।०८	२२।३९	०।०८
७ म.	२।०९।५६।१४	३।०१।२०।१६	७।२३।५५।२७	२।१४।४६।१७	८।१९।५८।४१	८।२५।३७।१८	४६।५७	१।४१	३।३७	५।५०	८।०८	१०।२४	१२।३९	१४।५६	१७।१३	१९।१८	२१।०४	२२।३५	०।०४
८ बु.	३।१०।३४।४१	३।००।३६।२४	७।२३।४९।०४	२।१५।५६।४१	८।१९।५३।५८	८।२५।३४।०७	४६।५६	१।३६	३।३२	५।४५	८।०३	१०।१९	१२।३४	१४।५१	१७।०८	१९।१३	२०।५६	२२।३०	२३।५९
१० ब.	३।११।१३।०८	२।२९।५२।३३	७।२३।४२।४२	२।१७।१३।०४	८।१९।४९।१५	८।२५।३०।५६	४६।५५	१।३२	३।२८	५।४१	७।५९	१०।१५	१२।३०	१४।४७	१७।०४	१९।०९	२०।५५	२२।२६	२२।५५
११ शु.	३।११।५१।३५	२।२९।०८।४२	७।२३।३६।२०	२।१८।२६।२७	८।१९।४४।३२	८।२५।२७।४६	४६।५५	१।२८	३।२४	५।३७	७।५५	१०।११	१२।२६	१४।४३	१७।००	१९।०५	२०।५१	२२।२२	२३।५१
१२ श.	३।१२।३०।०१	२।२८।२४।५१	७।२३।२९।५८	२।१९।३९।५०	८।१९।३९।४९	८।२५।२४।३६	४६।५५	१।२४	३।२०	५।३३	७।५१	१०।०७	१२।२२	१४।३९	१९।५९	१९।०१	२४।४७	२२।१८	२३।४७
१३ र.	३।१३।०८।१९	२।२७।४८।०७	६।२३।२४।३७	२।२०।५३।१०	८।१९।३५।०७	८।२५।२१।२५	४६।५४	१।२०	३।१६	५।२९	७।४७	१०।०३	१२।१८	१४।३५	१९।५२	१८।५७	२०।४३	२३।१४	२३।४३
१४ चं.	३।१३।४६।३७	२।२७।११।२३	७।२३।१९।१६	२।२२।०६।३०	८।१९।३०।२५	८।२५।१८।१४	४६।५३	१।१६	३।१२	५।२५	७।४३	९।५९	१२।१४	१४।३१	१९।४८	१८।५३	२०।३९	२२।१०	२३।३९
१५ मं.	३।१४।२४।५५	२।२६।३४।४०	७।२३।१३।५५	२।२३।१९।५०	८।१९।२५।४३	८।२५।१५।०३	४६।५२	१।१२	३।०८	५।२१	७।३९	९।५५	१२।१०	१४।२७	१९।४४	१८।४९	२०।३५	२२।०६	२३।३५

४ शनौ वल्ली ८।३६।३०।०६
अयनांशाः २२।४८।१०



१२ शनौ वल्ली ८।३६।३०।१३
अयनांशाः २२।४८।११



विविधविषयाः—आषाढे शकुनविचारः—आषाढकृष्णाष्टम्यां चन्द्रोदये मेघे वृष्टिरुत्तना सुभिक्षं चान्यथा **दुर्भिक्षं**, तथैव कृष्णनवम्यां मेघे विद्युति सत्यां सुवृष्टिः। आषाढशुक्लद्वितीयायां नवम्याञ्च शुभग्रहवारो वृष्टिकारकः समर्घकारकश्च। पूर्णिमायामाषाढे पूर्वाषाढे सति सुभिक्षं प्रजापीडा चोत्तराषाढे। आषाढशुक्लद्वितीयायां **जगन्नाथरथयात्रा** तद्दिने रथस्थरामावलोकनेन नैव विपद्यते। पूर्णिमायां **वायुपरीक्षणम्**—तत्र पूर्वपश्चिमवायुकोणोत्तरैशानवायुषु घन्योत्पत्तिः सुवृष्टिः प्रजासुखञ्च जायते तदितरवायुषु भीतिः दुर्भिक्षादिकञ्चेति।आषाढशुक्लपक्षे रविवासरे करमूले **पुलिकमूलबन्धनमन्त्रः**—शुचिसितदिनकरवारे करमूले बद्धपुलिकमूलस्य। नागारेरिव नागाः प्रयान्ति किल दूरतस्तस्य।। एवं कृते सर्पभयं न जायते । चातुर्मास्यव्यतीते तु मुक्तिस्तस्य करात् भवेदित्यनेन कार्तिकशुक्लद्वादश्यां तस्य करान्मुक्तिः । आर्द्रानक्षत्रस्थे सूर्ये **पायसभोजनमहत्वम्**—आर्द्रायाः प्रथमे पादे क्षीरमश्नाति यो नरः । अपि रोषयुतस्तस्य तक्षकः किं करिष्यति ।क्षीरमत्र पायसमिति ।

ग्रहस्थितिः—मार्गी पूर्वोदितः कुजः ७तः पश्चिमास्तः, वक्री पश्चिमोदितो बुधः २तः पश्चिमास्तः, वक्रिणौ पूर्वोदितौ गुरुशनी, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः १५तः पूर्वास्तः।

वातावरणम्—पक्षस्य पूर्वार्द्धे **वातखण्डवृष्टिमेघचारादयः** [illegible]रभागे वातमेघचारच्छिन्नवृष्टयः।

ग्रहाणां दानादिपदार्थाः

सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	केतुः
माणिक्य	वंशपात्र	विद्रुम	कांस्य	पीतधान्य	श्वेततण्डुल	माषान्न तैल	गोमेद, माषान्न	माषान्न
गोधूम	श्वेततण्डुल	भूमि	हरितवस्त्र	पीतवस्त्र	श्वेतचित्रवस्त्र	कृष्णतिल	तुरग, तिल	कम्बल, कस्तूरी
गुड़, ताम्र	श्वेतवस्त्र	मसूरद्विदल	हरितपुष्प	पीतपुष्प	श्वेतचन्दन	कृष्णवस्त्र	नीलवस्त्र	तिलतैल
रक्तपुष्प	श्वेतपुष्प	रक्तव षभ	कर्पूर, शंख	पीतचन्दन	घी, सोना	कृष्णपुष्प	नीलपुष्प	कृष्णवस्त्रादि
रक्तचन्दन	श्वेतचन्दन	गुड़, ताम्र	फल, मुद्ग	सोना, घृत	रजत, स्फटिक	कंबल, उपानह	तिलतैल	सुवर्ण, लौह
रक्तवस्त्र	दधि, शंख	रक्तवस्त्र	गजदन्त	पीतफल, दधि	दधि, शंख	कस्तूरी, सोना	सप्तधान्य	छाग, खड्ग
सुवर्ण	सिता, चांदी	रक्तचन्दन	घृत, सोना	पोखराज	गोधूम, शक्कर	लौह, कुल्थी	लौह, सुवर्ण	कस्तूरी
केसर	कर्पूर	रक्तपुष्प	मोथा	अश्व, मधु	सुगन्धद्रव्य	महिषी, छत्र	कृष्णपुष्प	वैदूर्यमणि
मूँगा	श्वेतव षभ	सुवर्ण, केशर	मणि	पुस्तक, छत्र	श्वेताश्व	कृष्णधेनु	कम्बल	उपानह
सवत्सगौ	घृत, कूढ	कस्तूरी	षड्रसभोजन	भूमि, शक्कर	भूमि, श्वेतगौ	कज्जल, शमी	शस्त्र, छाग	कृष्णतिल
लाजा	मोती	बला	पन्ना	हरिद्रा	हीरा	नीलम	लाजावर्त्त	लाजावर्त्त
जप७०००	जप११०००	जप१००००	जप८०००	जप१६०००	जप११०००	जप२३०००	जप१८०००	जप७०००

ग्रहाणां दानरत्नधारणजपादिकालः—सूर्यादीना च यद्दान जपहोमार्चनादिकम् । तेषां वारे प्रकुर्वीत सन्तुष्टास्ते भवन्ति हि । कन्यामीनपत्यो राहुकेत्वोर्जपादिकं शनौ बुधे वा कार्यम्। धर्मप्रशंसा—धर्मेण हन्यते व्याधिर्धर्मेण शुभदा ग्रहाः। धर्मेण हन्यते शत्रुर्यतो धर्मस्ततो जयः ।।

• विंशोत्तरीमहादशान्तर्दशाचक्रम् •

सूर्यदशावर्ष ६				चन्द्रदशावर्ष १०				भौमदशावर्ष ७				राहुदशावर्ष १८			
कृ. उफ. उषा				रोहि. ह. श्रवणा				म. चि. ध.				आर्द्रा स्वा. शत			
अन्तर्दशा १८				अन्तर्दशा ३०				अन्तर्दशा २१				अन्तर्दशा ५४			
ग्र	व	मा.	दि.	ग्र	व	मा.	दि.	ग्र	व	मा.	दि.	ग्र	व	मा.	दि.
सू.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७	रा.	२	८	१२
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८	व.	२	४	२४
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	व.	०	११	६	श.	२	१०	६
रा.	०	१०	२४	व.	१	४	०	श.	१	१	६	बु.	२	६	१८
व.	०	६	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७	के.	१	०	१८
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७	शु.	३	०	०
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०	सू.	०	१०	२४
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६	चं.	१	६	०
शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	चं.	०	७	०	मं.	१	०	१८

गुरुदशावर्ष १६				शनिदशावर्ष १६				बुधदशावर्ष १७				केतुदशावर्ष ७				शुक्रदशावर्ष २०			
पुन. वि. पूभा				पुष्य. अनु. उभा				आश्ले. ज्ये. रेव.				मघा.मू.अश्वि				पूफ. पूषा. भर			
अन्तर्दशा ४८				अन्तर्दशा ५७				अन्तर्दशा ५१				अन्तर्दशा २१				अन्तर्दशा ६०			
ग्र	व	मा.	दि.	ग्र	व	मा.	दि.	ग्र	व	मा.	दि.	ग्र	व	मा.	दि.	ग्र	व	मा.	दि.
व.	२	१	१८	श.	३	०	०३	बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
श.	२	६	१२	बु.	२	८	०९	के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
बु.	२	३	६	के.	१	१	९	शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	चं.	१	८	०
के.	०	११	६	शु.	३	२	०	सू.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
शु.	२	८	०	सू.	०	११	१२	चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
सू.	०	९	१८	चं.	१	७	०	म.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	व.	२	८	०
चं.	१	४	०	मं.	१	१	९	रा.	२	६	१८	व.	०	११	६	श.	३	२	०
मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६	व.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
रा.	२	४	२४	व.	२	६	१२	श.	२	८	०९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

• योगिनीदशान्तर्दशाचक्रम् •

मंगला १	पिंगला २	धान्या ३	भ्रामरी ४	भद्रिका ५	उल्का ६	सिद्धा ७	संकटा ८
श्र.आ.चि.	ध.पुन.स्वा.	श.पु.वि.	अ.आश्ले. अनु. पूभा	भर.म.ज्ये. उभा	कृ.पूफ मूरे	रो.उफ पूषा	म.ह.उषा
मा. १२ चं	मा. २४सू	मा. ३६व.	मा ४८मं	मा. ६०बु.	मा. ७२श.	मा. ८४शु.	मा. ९६के.
मं. ०।१०	पिं. १।१०	धा. ३।०	भ्रा. ५।१०	भ. ८।१०	उ. १२।०	सि. १६।१०	सं. २१।१०
पिं. ०।२०	धा. २।०	भ्रा. ४।०	भ. ६।२०	उ. १०।०	सि. १४।०	सं. १८।२०	मं. २।२०
धा. १।०	भ्रा. २।२०	भ. ५।०	उ. ८।०	सि. ११।२०	सं. १६।०	मं. २।१०	पि. ५।१०
भ्रा. १।१०	भ. ३।१०	उ. ६।०	सि. १।१०	सं. १३।१०	मं. २।०	पि. ४।२०	धा. ८।००
भ.१।२०	उ. ४।०	सि. ७।०	सं. १०।२०	मं. १।२०	पि. ४।०	धा. ७।०	भ्रा. १०।२०
उ. २।०	सि. ४।२०	सं. ८।०	मं. १।१०	पि. ३।१०	धा. ६।०	भ्रा. ६।१०	भ. १३।१०
सि. २।१०	सं. ५।१०	मं. १।०	पि. २।२०	धा. ५।०	भ्रा. ८।०	भ. ११।२०	उ. १६।०
स. २।२०	मं. ०।२०	पि. २।००	धा. ४।००	भ्रा. ६।२०	भ. १०।०	उ. १४।०	सि. १८।२०

। योगिनीदशाभुक्तभोग्यानयनम् ।

जन्मर्क्षं त्रियुतं भक्तमष्टभिः शेषतः क्रमात् । मङ्गलाद्याः सङ्कटान्ता वर्षवृद्ध्या दशाः स्मृताः । ततो विंशोत्तरीदशावद् भुक्तभोग्यवर्षानयनं कार्यम् ।

। योगिनीशान्तिमन्त्राः ।

मङ्गला—ॐ ह्रीं मंगले मंगलायै स्वाहा ।
पिङ्गला—ओं ग्लौं पिंगले वैरिकारिणि प्रसीद फट् स्वाहा। **धान्या**—ओं श्रीं धनदे धान्यायै स्वाहा।
भ्रामरी—ॐ भ्रामरि जगतामधीश्वरि क्लीं स्वाहा।
भद्रिका—ॐभद्रिके भद्रं देहि अभद्रं नाशय स्वाहा ।
उल्का—ओं उल्के मम रोगं नाशय जूँभय स्वाहा।
सिद्धा—ओं ह्रौं सिद्धे मे सर्वमानसं साधय स्वाहा।
सङ्कटा—ओं ह्रीं सङ्कटे मम रोगं नाशय स्वाहा।

गरुडादिवर्गवशेन शुभाशुभज्ञानप्रकारः

नामग्रामदिशाऽऽद्यक्षरवशेन शरसङ्ख्यान् संयोज्याष्टभिर्भक्त्वा एकादिशेषे क्रमशः सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शनि, वृहस्पति, राहु, शुक्राणां दशा ज्ञातव्याः। तत्र शुभग्रहाणां दशाः शुभदाः, पापग्रहाणाञ्च हानिकरा भवन्ति।। स्वनामाद्यक्षरवशेन यो वर्गस्तस्माद्दिग्वर्गेशस्य शत्रुवर्गे पतनात्तद्दिशि यद्गृहं तन्न शुभप्रदम्। अतएव स्ववर्गमित्रवर्गदिग्गृहवासः शुभः, समवर्गदिग्गृहवासो मध्यमः, शुत्रुदिग्गृहवासश्च हानिप्रदः।

• गरुडादिवर्गचक्रम् •

वर्गेशः	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	इन्दुर	गज	मेष
शरसंख्या	८	५	६	४	७	१	३	२
वर्गनाम	स्वरवर्ण	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
वर्गदिक्	पू.	आ.	द.	नै	प.	वा.	उ.	ई
वर्गशत्रुः	सर्प	इन्दुर	गज	मेष	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान
वर्गसमः	सिंह	श्वान	सर्प	इन्दुर	गज	मेष	गरुड	मार्जार
वर्गमित्रम्	श्वान	सर्प	इन्दुर	गज	मेष	गरुड	मार्जार	सिंह

• अंगस्फुरणफलम् •

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तके	भूमिलाभः	वक्षसि	सुखम्	कण्ठे	ऐश्वर्यम्
ललाटे	पदलाभः	हृदये	इष्टसिद्धिः	ग्रीवाघः	शत्रुभयम्
स्कन्धे	भोगः	कटिदेशे	प्रमोदः	पष्ठे	पराजयः
भ्रूमध्ये	सुखम्	नाभौ	स्त्रीनाशः	मुखे	मधुभोजनम्
भ्रूवोः	सुखम्	कटिपार्श्वे	प्रीतिः	कपोलौ	व्यभिचारः
कपाले	शुभम्	आन्त्रिके	कोषव द्धिः	बाहौ	प्रियलाभः
नेत्रयोः	धनाप्तिः	भगे	पतिसमागमः	बाहुमध्ये	धनागमः
नेत्रकोणयोः	धनम्	कुक्षौ	प्रीतिः	वस्तिदेशे	उन्नतिः
नेत्रसमीपे	प्रियसमागमः	उदरे	धनम्	उरसी	वस्त्रलाभः
नेत्रपक्ष्मणि	राज्याप्तिः	लिङ्गे	स्त्रीसमागमः	जागुन्योः	भयम्
नेत्रपक्ष्मणोः	विजयः	गुदे	वाहनाप्तिः	जंघे	स्वामिप्राप्तिः
नेत्रपांगे	स्त्रीलाभः	व षणौ	पुत्रलाभः	पादयोरुपरि	स्थानलाभः
नासिकयोः	सुखम्	ओष्ठे	इष्टसिद्धिः	पादतले	पराक्रमः
हस्ते	धनलाभः	हनौ	भयम्	पादयोः	हानिः

● **नेत्रस्फुरणफलम्**—नेत्रस्योर्ध्वं हरति सकलं मानसं दुःखजालं नेत्रोपान्ते दिशति च धनं नासिकान्ते च मृत्युः । नेत्रस्याधः सफुरणमसकृत् संगरेऽभद्रहेतुः वामे चैतत्फलमविकलं दक्षिणे वैपरीत्यम्। एतानि फलानि पुरुषाणां ज्ञेयानि, स्त्रीणान्तु प्रोक्तवैपरीत्येन बोध्यानि ।

शतपदचक्रम् नक्षत्रवर्णाः	चु. चे चो. ल. अश्विनी	लि. लु. ले लो. भरणी	अ. इ उ ए. कृत्तिका	ओ. ब. वि. बु. रोहिणी	वे. वो. क. कि. मृगशिरा	कु. घ. ङ. छ. आर्द्रा	के. को. ह. हि. पुनर्वसु	हु. हे हो. ड. पुष्य	डि. डु डे. डो. आश्लेषा	म. मि. मु. मे. मघा	मो. ट. टि. टु. पूफ	टे. टो प. पि. उफ	पु. ष. ण. ठ. हस्त	पे. पो र. रि चित्रा	रु. रे. रो. त. स्वाती	ति. तु. ते. तो. विशाख	न. नि. नु. ने. अनुराधा	नो. य. यि. यु. ज्येष्ठा	ये. यो भ. भि. मूल	भु. ध. फ. ढ. पूषा.	भे. भो. ज. जि. उषा.	खि. खु. खे. खो. श्रवणा	ग. गि गु. गे. धनिष्ठा	गो. स. सि. सु. शतभिषा	से. सो. द. दि. पूभा	दु. थ झ. । उभा	दे. दो च. चि रेवती
राशि	मेष	मेष	मेष३	वृष	वृ२मि२	मिथुन	मि३क१	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिं१कं३	कन्या	कं२तु२	तुला	तु३वृ१	वृश्चिक	वृश्चिक	धनु	धनु	ध१म३	मकर	म२कु२	कुम्भ	कु३मी३	मीन	मीन
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्ष१वै३	वैश्य	वै२शू२	शूद्र	शू३वि१	विप्र	विप्र	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्ष१वै३	वैश्य	वै२शू२	शूद्र	शू३वि१	विप्र	विप्र	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्ष१वै३	वैश्य	वै२शू२	शूद्र	शू३वि१	विप्र	विप्र
वश्य	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	च२म२	मनुष्य	म३ज१	जलचर	जलचर	वनचर	वनचर	व१म३	मनुष्य	मनुष्य	मनुष्य	म३की१	कीट	कीट	मनुष्य	म।।च३।।	चतुष्पद	च१।।ज२।।	ज२म२	मनुष्य	म३ज१	जलचर	जलचर
युंजा	पूर्व	पूर्व	पूर्व	पूर्व	पूर्व	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	पूर्व
हंसक	अग्नि	अग्नि	अ१भू३	भूमि	भू२वा२	वायु	वा३ज१	जल	जल	अग्नि	अग्नि	अ१भू३	भूमि	भू२वा२	वायु	वा३ज१	जल	जल	अग्नि	अग्नि	अ१भू३	भूमि	भू२वा२	वायु	वा३ज१	जल	जल
योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	सर्प	श्वान	मार्जार	मेष	मार्जार	मूषक	मूषक	गो	महिष	व्याघ्र	महिष	व्याघ्र	मृग	मृग	श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गो	गज
योनिवैर	महिष	सिंह	वानर	नकुल	नकुल	मृग	मूषक	वानर	मूषक	मार्जार	मार्जार	व्याघ्र	अश्व	गो	अश्व	गो	श्वान	श्वान	मृग	मेष	सर्प	मेष	गज	महिष	गज	व्याघ्र	सिंह
राशीश	मंगल	मंगल	मं१शु३	शुक्र	शु२बु२	बुध	बु३च१	चन्द्रः	चन्द्र	सूर्यः	सूर्यः	सू१बु३	बुध	बु२शु२	शुक्र	शु३मं१	मंगल	मंगल	गुरु	गुरु	गु१श३	शनि	शनि	शनि	श३गु१	गुरु	गुरु
गण	देव	मनुष्य	राक्षस	मनुष्य	देव	मनुष्य	देव	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	देव	राक्षस	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव
नाडी	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

पल्लीपतनफलबोधकचक्रम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	दक्षिणकर्णे	आयुर्वृद्धिः	स्तनयोः	सौभाग्यम्	स्कन्धयोः	विजयः	मुखे	मधुरभोजनम्
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	वामकर्णे	लाभः	उदरे	भूषणाप्तिः	नाभौ	धनाप्तिः	केशान्ते	कष्टम्
भ्रूमध्ये	सम्मानम्	नेत्रयोः	धनलाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः	कटिभागे	पशुलाभः	गुल्फयोः	धनम्
उत्तरोष्ठे	धनहानिः	द. भुजे	पराक्रमः	जानुद्वये	शुभः	द. मणिबंधे	हानिस्तापः	द. चरणे	भ्रमणम्
अधरोष्ठे	ऐश्वर्याप्तिः	वामभुजे	राजभयम्	जघयोः	शुभः	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	वा. चरणे	बन्धुनिग्रहः
नासाग्रे	रोगः	कण्ठे	शत्रुनाशः	हस्तद्वये	लाभः	हृदये	धनाप्तिः	पादान्ते मध्ये	स्त्रीनाशः

पल्लीपतनफलम्—यदि पतति च पल्ली दक्षिणांगे नराणां स्वजनधनवियोगी लाभदा वामभागे । उदरशिरसि कण्ठे पृष्ठदेशे च मृत्युः करचरणहृदिस्था सर्वसम्पत्तिदा स्यात् ।। एतानि फलानि पुरुषाणां, स्त्रीणान्तु वैपरीत्येन ज्ञेयानि । अनिष्टपल्लीपतने स्नात्वा तिलमाषादिदानं कार्यम्। शिवालये दीपं दद्यादष्टोत्तरशतसंख्यक "ॐ नमः शिवाय" इति मन्त्रस्य जपश्च कार्यः ।

जन्मराशेः सायुररिष्टदवर्षाणि

राशिः	अरिष्टदवर्षाणि	आयुः
मेष	१ ।१३ ।५० ।६२	७५
वृष	३ ।६ ।८ ।३३ ।४६ ।५२ ।६३	७५
मिथुन	६ ।१० ।११ ।१८ ।२४ ।५३ ।६३	७५
कर्क	१ ।१६ ।२२ ।२७ ।३५ ।४५ ।५५ ।६०	७०
सिंह	१ ।१० ।१५ ।२५ ।४५ ।५१ ।६१	६५
कन्या	१ ।३ ।१३ ।२६ ।३३ ।४३	६८
तुला	२ ।४ ।१६ ।२१ ।३३ ।४१ ।५१ ।६१	६५
वृश्चिक	३ ।७ ।८ ।१३ ।३२ ।३५ ।४५ ।६३	७५
धनु	३ ।६ ।१० ।१६ ।२३ ।३६ ।४७ ।५७ ।६७	६५
मकर	३ ।१० ।३२ ।३३ ।४२ ।५१ ।५६ ।६१	१००
कुम्भ	१८ ।३२	६१
मीन	१८ ।३३	६१

जन्मलग्नात् सायुररिष्टदवर्षाणि

लग्नं	अरिष्टदवर्षाणि	आयुः
मेष	४ ।११ ।१६ ।४४ ।५८	१००
वृष	१ ।२८ ।३३ ।४४	६०
मिथुन	४ ।१० ।१४ ।३८ ।५८	६४
कर्क	५ ।२५ ।४० ।४८ ।६२	१००
सिंह	५ ।१३ ।२८ ।३६ ।४८	६३
कन्या	४ ।१६ ।२३ ।३६ ।४५	१००
तुला	१५ ।३१ ।३५ ।५४ ।६२	७५
वृश्चिक	११ ।२८ ।३८ ।५२ ।६२	१००
धनु	२ ।८ ।१० ।१८ ।३१ ।३८ ।४२ ।६७	८१
मकर	५ ।१३ ।२७ ।३६ ।५७ ।६२	८५
कुम्भ	२ ।२८ ।३३ ।४८ ।६४	६०
मीन	१ ।८ ।१३ ।३६ ।४८	८३

माहेन्द्रादियोगचक्रम्

चैत्रवैशाखश्रावणभाद्रमाघफाल्गुनमासेषु

रवि—मा२ अ८ व१० शू८ मा२ शू२ अ६ शू८ व६ मा२ व४ अ२
चन्द—मा४ शू६ व१२ मा२ अ२ शू४ व२ मा६ व २२
मंगल—व४ शू२ मा६ व४ शू२ अ४ शू४ अ६ व४ शू२ व८ अ६ शू४ अ४
बुध—व४ अ४ व६ अ४ शू२ व४ मा२ व४ शू४ अ६ शू६ व८ अ६
गुरु—अ६ शू४ व४ अ६ व६ अ४ व४ मा४ अ२ व८ अ४ शू४ अ४
शुक्र—शू२ अ१६ व८ अ२ शू२ व४ शू८ अ६ व८ अ२ शू२
शनि—शू४ व४ शू६ अ४ शू२ अ४ शू२ अ४ शू४ व४अ४व४ अ६ व४ अ२ शू२

ज्येष्ठाषाढमासयोः

रवि—शू४ अ६ मा६ व६ शू२ व४ अ२ शू४ मा६ शू४ व६ शू२ मा४ व४
चन्द—व८ अ४ शू६ अ६ मा६ व६ अ८ व८ शू४ व४
मंगल—अ४ शू४ व४ शू२ अ४ व२ मा८ शू२ व६ अ४ व४ अ२ शू२ व२ अ६ व४
बुध—शू२ व४ अ८ व६ अ८ शू२ अ१० शू२ व८ अ६ शू२ अ२
गुरु—अ२ शू२ अ४ व८ अ६ शू२ अ६ शू४ अ४ शू२ व६ अ६ शु४ व४
शुक्र—शू४ अ१४ व८ अ२ शू२ व४ शू२ अ६ शू६ अ८ मा२ शू२
शनि—शू४ व६ अ६ शू२ व४ अ४ शू६ व४ अ६ व४ अ४ शू२ अ२ व६

आश्विनकार्तिकमार्गपौषमासेषु

रवि—मा६ व८ अ८ शू२ मा४ शू६ व४ अ४ व४ अ६ शू२ अ४ शू२
चन्द—अ४ व४ अ६ व२२ अ८ व६ अ४ व६
मंगल—मा२ व६ अ१० व६ शु२ व१२ अ२ शू२ अ६ व४ मा४ व४
बुध—शू४ अ४ मा६ शू४ व६ शू२ व८ अ४ व८ अ६ शू८
गुरु—अ४ व६ अ८ शू४ व६ शू६ अ८ व४ अ६ व६ मा२
शुक्र—अ२ व६ शू६ व६ अ८ व१४ शू४ मा२ व६ मा६
शनि—मा४ शू४ अ८ शू८ अ४ शू२ अ१२ शू४ व६ मा२ शू६

फलम्—ज्योतिषां ग्रहशास्त्राणां सारमुद्धृत्य यत्नतः । क्रियते मिहिरेणेदं नराणां हितकाम्यया। न वारतिथिनक्षत्रं न योगः करणन्तथा । शिवस्याज्ञां समासाद्य देवकार्यं विचारयेत्।। माहेन्द्रे विजयो नित्यमम ते कार्यशोभनम् । वक्रे कार्यविनाशः स्याच्छून्ये च मरणं ध्रुवम् ।। अयं रव्यादिवारेषु माहेन्द्रादियोगः प्रोक्तदण्डप्रमाणकालेन व्यतीतो भवतीति चक्रे विलोकनीयम्।

१ वर्णगुणाः वरस्य

(कन्यायाः)

वर्णा	विप्र	क्षत्रि	वैश्य	शूद्र
विप्र	१	०	०	०
क्षत्रि	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

२ वश्यगुणाः वरस्य

वश्यः	चतु.	म.	जल	वन	कीट
चतु.	२	१	१	०	१
मानव	१	२	।।	०	१
जलचर	१	।।	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

३ तारागुणाः वरस्य

ता.	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
२	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
३	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
४	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
५	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
६	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
७	१।।	१।।	०	१।।	०	१।।	०	१।।	१।।
८	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३
९	३	३	१।।	३	१।।	३	१।।	३	३

५ ग्रहमैत्रीगुणाः वरस्य

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	व.	शु.	श.
सू.	५	५	५	४	५	०	०
चं.	५	५	४	१	४	।।	।।
मं.	५	४	५	।।	५	३	।।
बु.	४	१	।।	५	।।	५	४
व.	५	४	५	।।	५	।।	३
शु.	०	।।	३	५	।।	५	५
श.	०	।।	।।	४	३	५	५

७ राशिकूटगुणाः वरस्य

(कन्यायाः)

राशयः	१ मे.	२ व.	३ मि.	४ क.	५ सि.	६ कं.	७ तु.	८ व.	९ ध.	१० म.	११ कु.	१२ मी.
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	७
वृष	०	७	०	७	७	७	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
वृश्चि	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	६	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

४ योनिकूटगुणाः वरस्य

(कन्यायाः)

	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
मेष	४	२	३	२	२	३	३	३	१	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	२	२	२	२	०
मेष	३	३	४	३	२	३	३	३	३	१	३	०	३	०
सर्प	२	२	३	४	२	२	१	१	२	२	२	२	२	०
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जार	२	२	३	२	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक	२	२	२	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	३	२	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
महिष	१	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	२	१	२	२
मग	३	२	३	२	०	२	२	३	२	१	४	२	२	३
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	३
नकुल	२	२	३	०	२	२	२	३	२	२	२	४	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	२	२	२	३	२	२	२	२	४

नैसर्गिकग्रहमैत्रीचक्रम्

ग्रहाः	सूर्यः	चन्द्रः	मंगलः	बुधः	वह	शुक्र	शनिः
मित्राणि	चं.मं.व.	सू.बु.	सू.चं.व.	सू.शु.	सू.चं.मं.	बु.श.	बु.शु.
समाः	बुधः	मं.व.शु.श.	शुक्रः शनि	मव. शनि	शनिः	मं. वह	गुरुः
शत्रवः	शु.श.	×	बुधः	चन्द्रः	बु.शु.	सू.चं.	सू.चं.मं.

अष्टौ वर्गास्तदीशाश्च

अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग
गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान
तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
सर्प	मूषक	मग	मेष

८ नाडीगुणाः

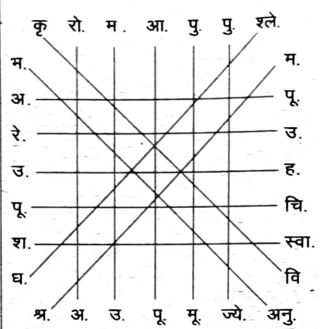
ना.	अ.	म.	अं.
आ.	०	८	०
म.	८	०	८
अं.	८	८	०

६ गणगुणाः

(कन्यायाः)

गण	दे.	मा.	रा.
दे	६	५	०
मा.	५	६	०
रा.	०	०	६

विवाहे पञ्चशलाकाचक्रम्



विवाहे रविचन्द्रगुरुशुद्धिः

ग्रहाः	सूर्यः	चन्द्रः	गुरुः
शुभ	३।६।१०।११	३।६।७।१०।११	२।५।७।९।११
पूज्यः	१।२।५।९	१।२।५।९	१।३।६।१०
निन्द्य	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२

विवाहे रेखाप्रदग्रहाः

सूं.	चं.	मं.	बु.	ब.	शु.	श.	ग्र.
३।।	५	१।।	२	३	२	१।।	सं

राहुकेत्वोः शनिवत् । सू. श. रा. के. ३।६।८।११ चं. २।३।११ मं. ३।६।११ बु. व. १।२।३।४।५।६।९।१०।११ शु. १।२।४।५।९।१०।११ ।। **उक्तस्थानस्थग्रहांकान्** संयोज्य विवाहलग्ने ग्रहवलविश्वा बोध्याः। लग्नेशनवमांशेशौ १।४।७।१०।११ स्थौ सर्वदोषनाशकौ भवतः ।

मेषसंक्रमे वारिपूर्णघटदानं—कुशादिकं गृहीत्वा ओ सोपकरणवारिपूर्णघटाय नमः ३ । कुशोपरि ओ ब्राह्मणाय नमः ३ । घटं सिक्त्वा—ओमद्यामुके मासि अमुकेपक्षेऽमुकतिथौ मेषार्कसंक्रमणप्रयुक्तपुण्याहे (पुण्यकाले) अमुकगोत्रस्य मम श्रीअमुकशर्मणः सकलमनोरथसिद्धिपूर्वकपितृ स्वर्गकाम इमं सोपकरणवारिपूर्णघटं वरुणदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणायाहं ददे। ततः कुशत्रयतिलजलान्यादाय—ओमद्य कृतै तत्सोपकरणवारिपूर्णघटदानप्रतिष्ठार्थमेतावद् द्रव्य मूल्यकहिरण्यमग्निदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणामहन्ददे। ततः—एष धर्मघटो दत्तो ब्रह्मविष्णु शिवात्मकः। अस्य प्रसादात्सफला मम सन्तु मनोरथाः। इति प्रार्थयेत् ।

वर्षप्रवेशसारिणी । प्रतिवर्षक्षेपकदिनादि ।

गतवर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
दिन	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५
दण्ड	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००
गव	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१०.०	
दिन	४	२	१	६	५	४	२	१	६	
दण्ड	१०	४५	२१	५६	३१	६	४२	१७	५२	
पल	३०	४५	००	१५	३०	४५	००	१५	३०	
विपल	००	००	००	००	००	००	००	००	००	

विंशोत्तरीमुद्दादशाचक्रम्

पति	सू.	चं.	मं.	रा.	व.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	१	०	१	१	१	१	०	२
दिन	१८	००	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०

गतवर्षसंख्या जन्मनक्षत्रसंख्यायुक्ता द्विहीना नवभक्ता शेषक्रमेण दशापतिः ।

त्रिपताकिचक्रे ग्रहस्थापनम्—सैका गताब्दसंख्या या विभक्ता नवभिस्ततः । शेषांके जन्मनिगताच्चन्द्रराशिरिह न्यसेत् । शेषग्रहाश्चतुर्भक्तशेषसंख्यासु विन्यसेत् । त्रिपताके वर्षलग्नादौ स्थाप्यौ विधूदयौ । शुभैर्विद्धौ शुभफलौ पापैः पापफलप्रदौ ।।

त्रिराशिपतिः

लग्न	मे.	व.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	व.	ध.	म.	कु.	मी
दिवा	सू.	शु.	श.	शु.	व.	चं.	बु.	म.	श.	म.	व.	च.
रात्रि	व.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	व.	चं.

वर्षमुन्थानयम्—(गतवर्षसंख्या + जन्मलग्नसंख्या) + १२ । एकादिशेषे मेषादिमुन्थाराशिः । **वर्षेशनिर्णयः**— वर्षलग्नेश—जन्मलग्नेश—मुन्थेश—त्रिराशिपति—दिवारविराशीश—रात्रौचन्द्रराशीशेषु लग्नद्रष्टा सर्वाधिकबलवत्तरो वर्षेशः ।

गोचरफलबोधकचक्रम्

भावाः	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	केतुः
तनुः	स्थानहानि	सौख्यम्	बन्धनम्	भयम्	अभयम्	शत्रुनाशः	नाशः	कष्टम्	रोगः
धनम्	भयम्	धनम्	धननाशः	धनाप्तिः	धनाप्तिः	धनागम	हानिः	धनम्	धननाशः
सहजः	धनम्	लाभः	धनाप्तिः	भीतिः	लाभः	शोकः	लाभः	नेरुज्यम्	सुखम्
सुहृद	मानहानिः	रोगः	भयम्	धनम्	धनहानिः	लाभः	शत्रुवृद्धिः	शत्रुवृद्धिः	भीतिः
सुतः	दैन्यम्	कार्यसिद्धिः	धनक्षयः	रोगः	पुत्रसुखम्	पुत्राप्तिः	धनपुत्रनाशः	शोकः	शोकः
रिपुः	विजयः	शत्रुभयम्	विजयः	अलाभः	शोकः	शत्रुभयम्	द्रव्यलाभ	धनम्	धनाप्तिः
जाया	भ्रमणम्	लाभः	व्ययः	विग्रहः	मानम्	अशोकः	स्त्रीकष्टम्	हानिः	दुर्गतिः
मत्यु	पीड़ा	कष्टम्	कष्टम्	लाभः	क्लेशः	विपत्तिः	शत्रुभयम्	रोगः	राजभयम्
धर्मः	धर्महानिः	मानम्	पीड़ा	रोगः	धर्मरतिः	लाभः	धर्महानिः	पापरतिः	बन्धनम्
कर्मः	कार्यसिद्धिः	सुखम्	शोकः	सुखम्	उन्नतिः	दैन्यम्	दौर्मनस्यम्	वैरम्	शोकः
आयः	धनम्	लाभः	धनाप्तिः	सौख्यम्	लाभः	धनाप्तिः	आयुवृद्धिः	सौख्यम्	सुयशः
व्ययः	कष्टम्	व्ययः	हानिः	नाशः	चिन्ता	हानिः	हानिः	शोकः	धनक्षयः

७।। **वर्षीय शनेः मासभेदेन फलम्**—मस्तके ७ मासाः—सर्वांशे हानिः। नेत्रे ६ मासाः—सर्वांशे हानिः। मुख ८ मासाः भोजनादिलाभः। कण्ठे ६ मासाः—भूषणादिलाभः। हृदये १० मासाः—यन्त्रादिलाभः। उदरे ११ मासाः अन्नादिलाभः। नाभौ ४ मासाः—कष्टमुदरे। गुह्ये ५ मासाः—सर्वांशेहानिः। जानुनि १४ मासाः—राजवलेन जयः। जंघयोः ११ मासाः स्त्रियादौ सौख्यम्। पादयोः ५ मासाः—व्यर्थभ्रमणम्।

● गुणयोगबोधक (मेलापक) चक्रम् ● पार्श्वे कन्यानक्षत्राणि ● उपरि वरनक्षत्राणि ●

नक्षत्र	अ	भ.	कृ.१	कृ३.	रो.	म२.	म.२	आ.	पुन.३	पुन.१	पुष्य.	श्ले.	म.	पूफ.	उफ.१	उफ.३	ह.	चि.२	चि.२	स्वा.	वि.३	वि.१	अनु.	ज्ये.	मू.	पूषा॥	पूषा३॥	उषा१	उषा३	श्र१॥	श्र२॥	ध२	ध२	श.	पूभा.३	पूभा.१	उभा	रे.
अश्वि	२८	३३	२८॥	१८॥	२१॥	२२॥	२६	१७	१८	२२॥	३१॥	२७	२०॥	२६	१७॥	११	६	१३	२२॥	२६॥	२२॥	१६॥	२६॥	१५	१३	२६	२७	२४॥	२६	२६	२४	२१	२१	१५	१६	१४॥	२४॥	२६
भरणी	३४	२८	२६	१९	२२॥	१४॥	१७	२६	२६	३०॥	२३॥	२४॥	२१	१९	२८	२१॥	१६	६	१४॥	२६॥	२२॥	१६॥	१७॥	२०	२०	१९	२०	२७	२८॥	२८	२६	१०	१०	२०	२४	२२॥	१६॥	२८
कृति १	२७॥	२७॥	२८	१६॥	६	१५॥	१९	२०	२१	२५॥	२६॥	२३॥	१७॥	२१	२२	१५॥	१५॥	१८॥	२७॥	१५॥	१६॥	१६॥	२०॥	२६॥	२४॥	१८	१९	१४	१५॥	११॥	१०॥	२५	२५	२७	१६॥	१७॥	१६॥	११॥
कृति ३	१८॥	१८॥	१९	२८	१९	२५॥	१६॥	१७॥	१८॥	२२	२३	२०	१६॥	२३	२४	२१	२१	२३॥	२२॥	१०॥	१४॥	२१॥	२५॥	३१॥	२०	१२॥	१३॥	६॥	१४	१२	१०	२२॥	२६॥	३१	२३॥	२०	२२	१४
रोहिणी	२३॥	२३॥	१०	१९	२८	३६	२७	२३॥	२३॥	२७	२८	१३	१२॥	२६॥	२८	२५	२६	२०	१९	१५॥	६॥	१६॥	३०॥	२४॥	१४	१९	२०	१२॥	१७	१६	१८	२०	२६	२४	३०॥	२७	२६	१६
मग २	२३॥	१३॥	१८॥	२८॥	३४	२८	२०	२५	२३॥	२६	२२	२२	२१॥	१७॥	२५॥	२३॥	२७	१३	१२	२५	१७॥	२३॥	२२॥	२५॥	१५	१२	१९	१८	२१	२४॥	२४	१३	१६	२७	२६॥	२६॥	१७	२७
म. २	२७	१८	२१	१८॥	२५॥	२०	२८	३३	३१॥	१६॥	१३	१५॥	२४	२०॥	२८॥	३०॥	३४	२१	१४	२७	१६॥	१४	११	१३	२३	१६	१८	२४	२०॥	२५	२५	१२	१३	२१	२३॥	२७॥	१७	२७
आर्द्रा	१६	२७	२१	१८॥	२४॥	२६	३४	२८	२५	१३	२०॥	१३॥	२३॥	२६॥	२२॥	२४॥	२४॥	२७	२०	२७	२०	१३॥	१७	४	१६	२८	२७	२७	२२॥	२२॥	२२॥	१७	२०	११	१६	१६	२७	२७
पुन ३	१६	२६	२३	१६॥	२३॥	२४॥	३२॥	२४	२८	१६	२३	१६॥	२२॥	२७॥	२१॥	२३॥	२४॥	२५॥	१८॥	२७	२१	१३॥	२०॥	५	१३	२७	२६	२७	२२॥	२२॥	२३॥	१७॥	१८॥	११	१७	१६॥	२७	२८
पुन१	२१॥	२८	२५॥	२०	२४	२५	१९	१०॥	१४॥	२८	३५	२८॥	१५॥	२०	१४॥	१७	१८	२०॥	२०	२७	२०	१९	२६	१०॥	८	२१	२०॥	२१॥	२६	२५	२७	२१	१२॥	७	११	१७	२५	२५॥
पुष्य	३०॥	२१॥	२६॥	२३	२४	१७	१०	१८	२१॥	३५	२८	३०	१८॥	१४॥	२३॥	२६	२७	१२	११॥	२६	२१	२०	१९	२२	१७	१९	११॥	२१॥	२६	२४	२५	१३	४॥	१४॥	१८	२४	१८	२७
आश्ले.	२५	२३॥	२२॥	१९	१२	२१	१३	१२	१५	२८॥	२८॥	२८	१५	१५॥	१७॥	२०॥	२०	२६	२५	११॥	१६॥	१५॥	२०	२६	२२॥	१६	१७॥	८॥	१२	१३	१३	२७	१८॥	१८॥	१२॥	१८॥	२०	१२
मघा	२१	२१	१७॥	१८॥	११॥	१६॥	२२॥	२२॥	२१॥	१६॥	१८॥	१६	२८	३०	२६॥	१६॥	१६॥	२२॥	२५॥	११॥	१७॥	२४॥	२६॥	३४	२४	२०	२१	११॥	५॥	५॥	४॥	१८॥	२४॥	२५॥	१८॥	१८॥	१७॥	११
पूफ.	२७	१९	२१	२२	२५॥	१७॥	२०॥	२८॥	२७॥	२२॥	१६॥	१६॥	३०	२८	३४॥	२४	२२॥	८॥	११॥	२५॥	१६॥	२६॥	२४॥	२४॥	१९	१८	१९	२७	२१	१६॥	१८॥	४॥	११॥	१६॥	२४॥	२३॥	१६॥	२४॥
उफ१	१८॥	२७	२२	२३	२७	२५॥	२८॥	२१॥	२१॥	१६॥	२५॥	१८॥	२६॥	३४	२८	२८	१६॥	१४॥	१७॥	२६॥	१७॥	२४॥	३०	१६॥	१०	२३	२७	२८	२२	२५	२१	११॥	१८॥	१२॥	१६॥	१५॥	२६॥	२४॥
उफ३	१३	२१॥	१६॥	२१	२५	२३॥	३०॥	२३॥	२३॥	१६॥	२८॥	२१॥	१७॥	२५	१६	२७	२५॥	२४॥	१६॥	२५॥	१६॥	१८	२७	१३	१५॥	२६॥	२८॥	२६॥	२६	२५	२५	१६॥	१६॥	१०॥	१४॥	१८	२६	२७
हस्त	१०	२०	१६॥	२१	२६	२६	३३	२३॥	२३॥	१६॥	२८॥	२२	१७॥	२२॥	१७	२६	२८	२७	१६	२६॥	१७॥	१६॥	२६	१२	१४	२७	२६	२७॥	२३	२४	२४	१६	१६	८॥	१४॥	१६	२७	२७
चित्रा२	१३	६	१९	२५॥	२०	१२	१६	२६	२४॥	२०॥	१२॥	२६॥	२३॥	६॥	१५॥	२४	२७	२८	२०	१६	२६॥	२८॥	१६	२५	२८	१४	१३	२१	१७॥	१६	११	१८	१८	२४	१८॥	२२	११	२१
चित्रा२	२२॥	१५॥	२८॥	२३॥	२०	१२	१३	२०	१८॥	२०	१२	२६	२५॥	१०	१७॥	१७॥	२१	२१	२८	२७	३४॥	२४॥	७॥	२१॥	२८	१४	१३	२१	२५॥	२७	२७	२६	२०	२६	२१	१५	४	१३
स्वाती	२७॥	२६॥	१७॥	१२॥	१६॥	२७	२७	२६	२६॥	२८	२८	१५॥	१३॥	२५॥	२५॥	२५॥	२७॥	२१	२८	२८	२०	१०	२३॥	१८॥	१३	२७	२६	१८	२२॥	२३॥	२३॥	२७	२१	२०	२५	१६॥	२०	१३
वि. ३	२२॥	२२॥	२०॥	१५॥	१०॥	१८॥	१६॥	२१	२१	२२॥	२१॥	१६	१७॥	१६॥	१८॥	१७॥	१८॥	२७॥	३४॥	१८	२८	१८	१७	२१॥	२८	२२	२१	१३	१७॥	१७	१७॥	३२॥	२६॥	२६॥	२२	१६॥	१३॥	५
वि. १	१६॥	१६॥	१४॥	१६॥	१४॥	१२॥	१३	१४॥	१४॥	१६	१८	१५॥	२१	२३	२१॥	१८	१६	२८	२३॥	८	१७	२८	२७	३१॥	२३॥	१७॥	१६॥	६॥	१२	१२	१२	२७	२७	२६॥	२२॥	२१	१८	६॥
अनु.	२४॥	१४॥	१६॥	२४॥	२७॥	२०॥	११	१६	२१॥	२६॥	१८	२१	२४॥	२०॥	२१॥	२६	२७	१२	७॥	२२॥	१७	२८	२८	३१	१६॥	१४॥	१४॥	२२	२५	२६	२६	१२	१२	२२	२४॥	२४	१८	२७
ज्ये.	१२	१८॥	२४॥	२६॥	२२॥	१२॥	१३	३	६	१०॥	२०	२६	३१	२३॥	१६॥	१३	१२	२५॥	२०॥	१६॥	२०॥	३१॥	३०	२८	१५	१७॥	१७॥	१७॥	२०	२०	२०	२५	२५	१६	११	६॥	२१	२१
मूल	१२	२०	२४॥	१६	१३	२३	२१	१५	१२	८॥	१७॥	२४	२५	१६	६॥	१३	१३	२७	२७	२१	२७	२४॥	१६॥	१६	२८	२८	२७	२५॥	१५॥	१५॥	१५॥	१५॥	२५	२१	१५॥	१६॥	२५॥	२७
पूषा॥	२६	१६	८	१२॥	१६	११	१६	२७	२७	२३॥	१३॥	१७॥	२१	१६	२५	२८॥	२७	१२	१२	२७	२०	१६॥	१८॥	१८॥	२८	२८	२७	३३	२३	२३॥	२३॥	८॥	१६॥	२३॥	३१॥	३२॥	२३॥	३२॥
पू३॥	२७	२०	१६	१३॥	२०	१२	१८	२६	२६	२३॥	१३॥	१७॥	२१	१६	२७	२७	२६	११	११	२६	१९	१८॥	१८॥	१६	२७	२७	२८	३५	२४	२४	२३॥	८॥	१५॥	२२॥	२६॥	३२॥	२३॥	३२॥
उ. १	२५॥	२७	१४	८॥	११॥	१८	२४	२६	२६	२३॥	२४॥	६॥	११॥	२७	२८	२८॥	२७॥	२०	२०	१६	१२	११॥	२५॥	१६॥	२५॥	३३	३४	२८	१८	१६	१५॥	१५॥	२२॥	२२॥	२८॥	३१॥	३२॥	२३॥
उ. ३	२८	२६॥	१६॥	१४	१७	१८	२०॥	२२॥	१२॥	२७	२८	१३	६॥	२२	२३	२६	२५	१७॥	२४॥	२३॥	१६॥	१४	२८	२२	१६॥	२६	२५	१६	२८	२६	२५	२५॥	१७॥	१७॥	२३॥	३०॥	३२॥	२३॥
श्र१॥	२८	२७	१४॥	१२	१८	२८	२४	२१॥	२१॥	२७	२५	१५	५॥	१६	२०	२४	२५	१६॥	२६॥	२३॥	१६॥	१४	२८	२३	१७॥	२३॥	२४॥	१७	२५	२८	२७	३०	२२	१८॥	२३॥	३१॥	३०॥	२२॥
श्र२॥	२७	२६	१३॥	१०	१७	२६	२३॥	२१	२३॥	२८॥	२६	१५	६॥	१८॥	२१॥	२३॥	२४	१८॥	२५॥	२३	१६	१४	२८	२२	१६	२३	२५॥	१५	२४	२७	२८	३०	२०	१८॥	२३	२६॥	३१॥	२४॥
धनि २	२०॥	१०॥	२६	२३॥	२०	१२	८॥	१७॥	१७॥	२२	१३	२८	१८॥	५॥	१२॥	१६	१७॥	१६॥	२४॥	२६	३०	२८	१४	२६	२१॥	६	६॥	१६॥	२५॥	२८	२८	२८	१८॥	२३॥	२१॥	२६॥	१५॥	२२॥
धनि २	२०	११	२६	३०॥	२७॥	१६	१०	२०	१६	१४	५	२०	२५॥	११॥	१६॥	१७॥	२१	१८	१६	२२	२५॥	२८	१२	२६	२६॥	१७॥	१६॥	२३॥	१८॥	२१॥	२१	२०॥	२८	३३	२८॥	१८॥	७॥	१४॥
शत	१५	२१	२८	३२॥	२५॥	२५	१८	१०	१०	७॥	१५	२०	२६॥	२०॥	१३॥	११	८॥	२६	२६	१६	२६॥	२६॥	२१	२०	२२॥	२४॥	२३॥	२३॥	१८॥	१८॥	१८॥	२५	३३	२८	१६	६	१७॥	१६॥
पू३	१८	२५	२०	२४॥	३१॥	३१॥	२४॥	१७	१७	२३॥	२०॥	१४	१६॥	२५॥	१६॥	१५॥	१७॥	१८॥	१६॥	२८	२१	२१॥	२७	१२	१५॥	३१॥	३०॥	२६॥	२४	२५॥	२५॥	२०॥	२७॥	१६	२८॥	१८	२३	२०॥
पू१	१४॥	२१॥	१६॥	१६	२६	२६॥	२५॥	१८	१८	१८	२५	१८॥	२६	२२॥	१४॥	१६॥	१८॥	१६॥	१२॥	१६	१४	२१	२७	११॥	१७	३१॥	३१॥	३०	२८	२६॥	३०॥	२५॥	१७	७॥	१६॥	२८	३३	३०॥
उभा	२४॥	१५॥	१८॥	२१	२५॥	१६॥	१६॥	२५॥	२७	२६	१६	२०	१७॥	१५॥	२५॥	२७॥	२६	६॥	५	१६॥	१२	१६	२०	२३	२४	२२	२२॥	३१॥	२६॥	२८॥	२६॥	१५॥	६	१६॥	२१॥	३३	२८	३४॥
रे	२५	२४॥	११॥	१४	१७	१६	२५॥	२४	२५॥	२४॥	२७	१३	१२	२२	२२	२४॥	२६॥	२०॥	१३॥	११॥	५॥	१२॥	२७	२२	२७	३०	३०॥	२१	१६	२०	२२॥	२२॥	१४	१६	१८	२८	३३	२८

गुणविचारः—**गुणैः षोडशभिर्निन्द्यो मध्यमा विंशतिस्तथा। श्रेष्ठस्त्रिंशद्गुणं यावत्परतस्तूत्तमोत्तमम् ।।** वर्णादिपरिहारः—**मैत्र्यां राशिस्वामिनोरंशनाथ—द्वन्द्वस्यापि स्याद्गणानां न दोषः। खेटारित्वं नाशयेत्सद्भकूटं खेटप्रीतिश्चापि दुष्टं भकूटम्।। राशीशयोरमित्रत्वे मित्रत्वे चांशनाथयोः। गणादिदौष्ट्येऽप्युद्वाहः पुत्रपौत्रप्रदः स्मृतः।। राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव। नाडीदोषो नो गणानाञ्च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्।। रोहिण्यार्द्रामृगेन्द्राणां पुष्यश्रवणपौष्णभम्। अहिर्बुध्न्यर्क्षमितेषां नाडीदोषो न विद्यते ।**

वरकन्ययोर्मेलापकविचारः—**लग्ने व्यये च पाताले यामित्रे चाष्टमे कुजः। कन्या भर्तृविनाशाय भर्ता कन्याविनाशकः।। इदं लग्नचन्द्राभ्यां विचार्यम्। सप्तमेशे षष्ठाष्टव्ययगते न शोभनः। परं सप्तमेशे स्वोच्चमूलत्रिकोणमित्रगृहगते शोभनः।। अस्य परिहारः**—**यामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुकेऽथवा। अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत् ।। शनिर्भौमोऽथवा कश्चित्पापो वा तादृशो भवेत्। तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत् ।। लग्नाद्विधोर्वा यदि जन्मकाले शुभग्रहो वा मदनाधिपश्च। द्यूनस्थितो हन्त्यनपत्यदोषं वैधव्यदोषं च विषाख्यदोषम्। केन्द्रे कोणे शुभाः सर्वे त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः । तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा। उभयोर्वरकन्ययोर्नामनक्षत्रानुसारं जन्मर्क्षानुसारं वा मेलापकं गणनीयम्। यतो हि व्यत्ययोऽशुभप्रदः।**

● नित्यपूजाविधिः ●

देवताओं की पूजा दिन में उत्तर या पूर्वाभिमुख होकर और रात्रि में उत्तराभिमुख होकर करें। पूजा के आरम्भ में दिन में सूर्यादि पञ्चदेवता एवं विष्णु की तथा रात्रि में गणपत्यादि पञ्चदेवता एवं विष्णु की पूजा करनी चाहिएं अक्षत लेकर—ॐ भूर्भुव स्वः सूर्यादिपञ्चदेवता इहागच्छत इह तिष्ठत इस मन्त्र से आवाहन कर एतानि पाद्यार्घाचमनीयस्नानीयपुनराचमनीयानि ॐभूर्भुवः स्वः सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नभः इस मन्त्र से जल दें । इसके बाद इदमनुलेपनम् ॐ सूर्यादि पञ्चदेवताभ्यो नमः इस मन्त्र से चन्दन तथा इसी तरह अन्य वस्तु भी समर्पित करें। रात्रि में सूर्यादि के स्थान पर गणपत्यादि पढ़ें। इसी तरह ॐ भूर्भुवः स्वर्विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ से आवाहन कर ॐ भूर्भुवः स्वर्विष्णवे नमः से पूजा करें (मूर्ति या शालग्राम हो तो आवाहन विसर्जन न करें) इसके बाद स्वेष्टदेवता की पूजा जप आदि करें। इसके बाद ॐभूर्भुवः स्वः कीर्तिमुख इहागच्छ इह तिष्ठ इस मन्त्र से पूर्ववत् पूजा करें। ततः ॐ हराय नमः इस मन्त्र से पवित्र मृत्तिका ग्रहण कर ॐ महेश्वराय नमः इस मन्त्र से महादेव बनाकर शूलपाणये नमः ॐशूलपाणे इह सुप्रतिष्ठितो भव इस मन्त्र से अक्षत लगाकर पात्र में शिव को सामने रखें उसके बाद निम्नलिखित मन्त्र से ध्यान करें—

ॐ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्। पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्। तत—ॐपिनाकधृगिहागच्छ इह तिष्ठ से आवाहन कर एतानि पाद्यादीनि ॐ नम शिवाय नमः। ततः इदमनुलेपनम्, एतानि पुष्पाणि एतानि विल्वपत्राणि, एतानि गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलयथाभागनाना विधनैवेद्यानि ॐ पशुपतये नमः इस मन्त्र से क्रमशः चन्दनाक्षतपुष्पविल्वपत्रगन्ध पुष्पधूपदीपनैवेद्य आदि दें। इसके बाद फूल अक्षत चन्दन से महादेव के पूर्व, ईशान, उत्तर आदि चारों ओर और अन्त में महादेव के उफपर निम्नलिखित मन्त्रों से क्रमशः अष्टमूर्त्ति की पूजा करें—

ॐ शर्वाय क्षितिमूर्त्तये नमः १ । ॐभवाय जलमूर्त्तये नमः २ । ॐ रुद्रायाग्निमूर्त्तये नमः ३ । ॐ उग्राय वायुमूर्त्तये नमः ४ । ॐ भीमायाकाशमूर्त्तये नमः ५ ॐपशुपतये यजमानमूर्त्तये नमः ६ । ॐ महादेवाय सोममूर्त्तये नमः ७ । ॐ ईशानाय सूर्यमूर्त्तये नमः ८ । ॐ महादेवाय नमः । अन्त में जल पुष्पाक्षतचन्दनादि से ॐ ब्रह्मणे नमः इस मन्त्र से ब्रह्मा की पूजा एक बार ही भूमि पर करें। उसके बाद पूजा क्रम से जल लेकर विसर्जन करें। ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताः पूजिताः स्थः क्षमध्वं स्वस्थानं गच्छत। ॐ भगवन् विष्णो पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ। ॐ कीर्त्तिमुख पूजितोऽसि प्रसीद क्षनस्व स्वस्थानं गच्छ। ॐ महादेव पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ। ॐ विष्वक्सेनाय नमः मन्त्र से भगवान पर से तथा ॐ चण्डेश्वराय नमः इससे महादेव पर से निर्माल्य हटावें ।

निवेदनम्

कौशिकीन्तु समारभ्य गण्डकीमभिगम्य वै । योजनानि चतुर्विंशद् व्यायामः परिकीर्त्तितः ।।
गंगाप्रवाहमारभ्य यावद्धैमवतं वनम् । विस्तारः षोडश प्रोक्तो देशस्य कुलनन्दन ।।
मिथिला नाम नगरी तत्रास्ते लोकविश्रुता ।। (वृहद्विष्णुपुराण, मिथिलामाहात्म्य, अ १४, श्लो. ४२–४४)

जाता सा यत्र सीता सरिदमलजला वाग्वती यत्र पुण्या, यत्रास्ते सन्निधाने सुरनगरनदी भैरवो यत्र लिङ्गम्।
मीमांसान्यायवेदाध्ययनपटुतरैः पण्डितैर्मण्डिता या, भूदेवो यत्र भूपो यजन वसुमती साऽस्ति मे तीरभुक्तिः ।।
(श्रीशंकरमिश्र (१४४० ई.–१५३० ई.) कृत, द्रष्टव्य विद्याकरसहस्रक, म.म. उमेशमिश्रसम्पादित, १६४२ ई. प्रयागविश्वविद्यालयप्रकाशित)

गंगा वहथि जनिक दक्षिणदिशि पूर्व कौशिकीधारा । पश्चिम वहथि गण्डकी उत्तर हिमवत वन विस्तारा ।।
कमला त्रियुगा अमृता धेमुरा वागमती कृतसारा । मध्य वहथि लक्ष्मणा प्रभृति से मिथिला विद्यागारा ।।
(कवीश्वर चन्दा झा)

उपर्युक्त प्रमाणों के आधार पर कोशी से गण्डकी (हरिहरक्षेत्रस्थ शालग्रामी या नारायणी) तक, पूरव से पश्चिम तक २४ योजन (६६ कोश) लम्बा एवं गङ्गाप्रवाह से हिमालय वन तक (दक्षिण से उत्तर तक) १६ योजन (६४ कोश) चौड़ा तीरभुक्ति अथवा मिथिला क्षेत्र कहा गया है। इस आधार पर वर्त्तमान समय में उत्तर से दक्षिण तक क्रमशः नेपाल के तराई क्षेत्र (दक्षिणीभाग) से मुंगेर तक तथा पश्चिम से पूरब तक क्रमशः चम्पारण्य–वैशाली से पूर्णियाँ–भागलपुर तक का क्षेत्र तिरहुत अथवा मिथिला क्षेत्र है। १८१५–१७ ई. में सुगौली सन्धि के समय विविध राजनीतिक स्थितिवश उक्त तराई क्षेत्र नेपाल के अधीन हो गया। किन्तु आचार–विचार, सभ्यता–संस्कृति की दृष्टि से आज भी सर्वथा साम्य है।

वेद, उपनिषद् रामायण, भागवत, गीता, पुराण, महाभारत आदि प्राचीन ग्रन्थों एवं विविध भाषा के मानक (ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, धार्मिक आदि) ग्रन्थों में तीरभुक्ति (तिरहुत) क्षेत्र का महत्वपूर्ण वर्णन मिलता है। प्राचीनकाल से ही यह क्षेत्र विद्या, उपासना एवं आध्यात्मिक चिन्तन के क्षेत्र में विश्वविख्यात रहा है। यहाँ देवरात, मिथि, निमि, जनक, विशाल, गार्गी, मैत्रेयी, अष्टावक्र, वाल्मीकि, गौतम, कपिल, कणाद, मण्डन–भारती, आयांची, वाचस्पति, उदयन, कालिदास,विद्योत्तमा, श्रीधर, रामदत्त, वीरेश्वर, विद्यापति, महात्मा बुद्ध, भगवान् महावीर,रूद्रधर, तान्त्रिकशिरोमणि मदन उपाध्याय, भक्तशिरोमणि बाबासाहेब राम, सन्तशिरोमणि लक्ष्मीनाथ गोस्वामी, नव्यन्यायप्रवर्त्तक गंगेशोपाध्याय, म.म. गोकुलनाथ, महार्घ्य मधुसूदन ओझा, देवीकान्त ठाकुर, गोविन्द ठाकुर, दैवज्ञरत्न गेनालाल चौधरी, डॉ. म.म. सर गंगानाथ झा, सर्वतंत्रस्वतंत्र बच्चा झा, म.म. जयदेवमिश्र, म.म. परमेश्वर झा, म.म. बालकृष्ण मिश्र, आचार्य जानकी वल्लभशास्त्री, राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर, गोपाल सिंह नेपाली, रामवृक्ष बेनीपुरी, भिखारी ठाकुर, फणीश्वरनाथ रेणु, वैद्यनाथमिश्र यात्री–नागार्जुन, सुरेन्द्र झा सुमन आदि अनेक मनीषिगण हो चुके हैं जिनके कार्यकलापालोक से समस्त विश्व आलोकित हो रहा है।

सिमरियाधाम में क्षीरसागरमन्थन से अमृतप्राप्ति (रूद्रयामलोक्तामृतीकरण, श्लो ११–४२, १२३–१२८ तथा वाल्मीकिरामायण, बालकाण्ड, सर्ग ४५, यामलसारोद्धार, मिथिलाखण्ड, पटल ४, श्लो. २–३) वैकुण्ठांशनिर्मित मिथिला(तत्रैव पटल ३, श्लो १५–१६) एवं मिथिलायात्रा महापुण्यप्रद तथा वास से मोक्ष(वृहद्विष्णुपुराण–मिथिलामाहात्म्य अ १३ श्लो १७, अ १६ श्लो १३८) सुप्रसिद्ध है ।

सीतामढ़ी में दुर्भिक्षनिवारणार्थ सम्पन्नयज्ञ के पश्चात् सीरध्वज जनक द्वारा स्वर्णहलप्रवाहावसर पर पुण्यारण्य (पुनौरा) में भूगर्भ से **आदिशक्ति-जगज्जननी** जानकी का प्रादुर्भाव, (यामलसारोद्धार, मिथिलाखण्ड, पटल १ श्लो ३६, वा.रा. बा.का. सर्ग ६६ श्लो १३–१४) **याज्ञवल्क्य** का ब्रह्मविद्योपदेश (श्रीमद्भागवत स्क १२ अ ६ श्लो. ६१–७३ एवं वृहदारण्यकोपनिषद्) **बलराम-श्रीकृष्ण** की मिथिलायात्रा (हरिवंश पर्व, अ ३६ श्लो. २३, २८ श्रीमद्भागवत स्कं. १० अ. ८६, विष्णुपुराण ३, ५) कर्म की उत्कृष्टता निरूपणावसर पर भगवान श्रीकृष्ण द्वारा–कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः, (श्रीमद्भगवद्गीता, अ ३, श्लो. २०) जनकादि का उदाहरण के रूप में उल्लेख तथा पिता (श्रीव्यास) जी की आज्ञा से **शुकदेव** जी द्वारा विदेहाधिपति जनक से (श्रीमद्देवीभागवत् स्क. १, अ १४–१६) गार्हस्थ्यधर्मोपदेश एवं आत्मज्ञान की प्राप्ति सर्वविदित ही है। अतः कहा गया है–"नमस्ते मिथिले पुण्ये सीतारामपदांकिते" ।

हिमालय के सान्निध्य एवं गंगादि विविध नदियों के प्रवाह होने के कारण यहाँ का वातावरण शुद्ध एवं भूमि ऊर्वराशक्ति सम्पन्न है। अतएव सम्पूर्ण क्षेत्र जीवनोपयोगी कन्द, मूल, वनस्पति, लता, गुल्म, फूल, फल, औषधि तथा शरद, हेमन्त एवं ग्रैष्मिक धान्यादि विविध वस्तुओं के उत्पादन के लिए मशहूर है। विशेषतः हाजीपुर का केला, मुजफ्फपुर की शाही लीची, समस्तीपुर का विविध कृषि उत्पादन, चम्पारण का धान, भागलपुर के कतरनी धान का चूड़ा, दरभंगा का मालदह आम एवं सकल मिथिलाञ्चल का पान, माँछ तथा मखान प्रसिद्ध है।

यहाँ के लोग शालीनता, कर्मठता, सौम्यस्वरूप, आचार–विचार, प्रतिभा, मेधाविता एवं उच्चविचार के लिये प्रसिद्ध हैं। मनोरंजन–हास्य–गीत–संगीत–नृत्य क्षेत्रों में रामलीला, भजन–कीर्त्तन, कथा–प्रवचन, लोरिक, दीनाभद्री, विहुला, राजा–सलहेश, सामाचकेवा, कठपुतली एवं जटजटिन आदि सुप्रसिद्ध है।

यह संपूर्ण क्षेत्र शक्तिपीठ के नाम से विख्यात है। आदि शक्ति सती के योगाग्निदग्ध शरीर के विभिन्नावयवपात से जब इस धराधाम पर ५१ सिद्धपीठ बन गये तो जहाँ उनका तीनवार साक्षात् प्राकट्य हो उस धाम के संबंध में कुछ कहने की आवश्यकता ही क्या है?यहाँ हरिहरनाथ, सोमेश्वरनाथ, गरीबनाथ, उग्रनाथ (उगना), कपिलेश्वर, सिंहेश्वर, कुशेश्वर, कल्याणेश्वर, जलेश्वर, हलेश्वर, विदेश्वर, वृद्धेश्वर, क्षीरेश्वर, त्रिपुरसुन्दरी, चण्डी, कात्यायनी, छिन्नमस्तिका, रमेश्वरीश्यामा, काली, कंकाली, दुर्गा, उग्रतारा, जयमंगला, बगला, वनदुर्गा, भुवनेश्वरी, राजराजेश्वरी, अहल्या–गौतम स्थान, गिरिजास्थान(फुलहर), जानकीस्थान, जनकपुरधाम आदि शिव–शक्तिक्षेत्र सतत् प्रेरणास्रोत के रूप में इस क्षेत्र में विद्यमान है ।

यह विश्व में एकमात्र ऐसा क्षेत्र है जिसमें वैवाहिक संबंध हेतु अधिकारमूलक जानकारी के लिये पञ्जीप्रबन्ध की व्यवस्था है। यहाँ (मधुबनी) की चित्रकला सर्वत्र विख्यात है। यह भूमि (चम्पारण) महात्मा गांधी की एवं (मुजफ्फरपुर) जयप्रकाश नारायण की कर्मभूमि रही है। इस तरह हर क्षेत्र में इसका अपना महत्त्वपूर्ण अवदान अति प्राचीन काल से ही रहा है। अस्तु ।

उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य में अन्य विद्याओं के साथ–साथ ज्योतिष के क्षेत्र में भी तीरभुक्ति का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यहाँ अनेक गन्थकार, टीकाकार एवं संपादक हुए हैं जिनकी कृति ज्यौतिष जगत् में सदैव शिरोमणि की तरह समादृत है। इनमें सिद्धान्तशेखरकार श्रीपति एवं तट्टीकाकार बबुआजी (श्रीकृष्ण) मिश्र, कृत्यचिन्तामणिकार चण्डेश्वर, अद्भुतदर्पणकार महामहोपाध्याय माधव, सिद्धान्तसेतु रचयिता एवं सिद्धान्त शिरोमणि प्रभा टीकाकार मुरलीधर ठाकुर, सिद्धान्ततत्त्वविवेक टीकाकार गंगाधर मिश्र, गोलप्रकाशकार नीलाम्बर, भावकुतुहलादि ग्रन्थकार जीवनाथ दैवज्ञ, व्यवहाररत्नकार भानुनाथ, चापीयत्रिकोणमिति–गोलीय रेखागणितटीकाकार–चन्द्रशेखर झा, चापीयंत्रिकोणमिति–टीकाकार महावीर पाण्डेय, ज्योतिषरत्नाकरकार देवकीनन्दन सिंह मोखतार, आर्यभटीय टीकाकार बलदेव मिश्र, मकरन्दोपत्तिकार गोकुलनाथ, शताधिकग्रन्थप्रणेता म. म. मधुसूदन ओझा, वृहज्जातक–सूर्यसद्धान्तादिटीकाकार सीताराम झा, वृहत्संहितादिग्रन्थटीकाकार अच्युतानन्द झा, जातकक्रोडकार–कृष्णदत्त झा, सिद्धान्त–सुधाकार परमानन्द, बीजगणितादिटीकाकार देवचन्द्र झा, ग्रहणमालाकार म.म. हेमाङ्गद ठाकुर, रत्नशतककार जीवेश्वरदैवज्ञ, टिप्पणी विवरणकार बुद्धिनाथ झा, सूर्यसिद्धान्तटीकाकार कपिलेश्वर चौधरी, सिद्धान्ततत्त्वविवेकादिग्रन्थ संपादक म. म. मुरलीधर झा एवं कुण्डलीदर्पणादिग्रन्थकार अनूप मिश्र आदि प्रमुख हैं। वर्तमान समय में भी उच्चकोटि के ग्रन्थकार, टीकाकार, संपादक, अध्यापक एवं चिन्तक ज्योतिर्विद् यहाँ हैं।

सभी प्रकार के शास्त्रीय एवं व्यावहारिक कार्यों के लिए शुभ मुहूर्त्त का ज्ञान उपेक्षित होता हैं। शुभमुहूर्त्त की जानकारी ज्योतिषशास्त्र की गणनानुसार निर्मित पञ्चाङ्ग से होती है। तदनुसार विवाहादि सकल शास्त्रीय एवं व्यावहारिक शुभकार्य सम्पन्न किये जाते हैं।

तीरभुक्ति क्षेत्र में प्राचीन काल से ही पञ्चाङ्ग निर्माण की परम्परा है। मुद्रण व्यवस्था से पूर्व हस्तलिखित पञ्चाङ्ग का प्रचलन था। तत्पश्चात् मुद्रित पञ्चाङ्ग का प्रचलन हुआ। मुद्रित–पञ्चाङ्गकारों में गोवर्धन–दुमनी–बालकृष्ण–रूपनारायण–लोकनाथ–कण्टीर–महीधर–उमानाथ–उमाकान्त–झारिखण्डी–महेन्द्रनारायण–विद्यानाथ जगदीश– अम्बिकानाथ–जगन्नाथ–मुनीन्द–जयनारायण–हरिनन्दन– वासुदेव– लक्ष्मीनारायण–लषणलाल–अभिराम–रमानन्द–पुलकित–यशस्पति–कपिलेश्वर–परमानन्दन–बलदेव– ब्रजकिशोर–अयोध्यानाथ– लक्ष्मीकान्त आदि ज्योतिर्विदो के नाम प्रमुख हैं।

मिथिला की उक्त मर्यादा को अक्षुण्ण बनाये रखने के उद्देश्य से महाराधिराज–सर–कामेश्वरसिंह ने १९६१ ई. में उत्तम पुस्तकालय से सुसज्जित अपना आवास भवन "लक्ष्मीश्वर–विलास–प्रासाद" दान देकर इस विश्वविद्यालय की स्थापना की जिसका उद्देश्य संस्कृत (पाली–प्राकृत सहित) विद्या का अध्ययन–अध्यापन एवं प्रचार–प्रसार है। इसी परिप्रेक्ष्य में पण्डित सभा के निर्णयानुसार १९७८–७९ ई. से "विश्वविद्यालय पञ्चाङ्ग" का निरन्तर प्रकाशन हो रहा है जिसका आधार मकरन्द सारिणी है । मकरन्दाचार्य ने समूलमकरन्दसारिणी या मकरन्दसारिणी नामक एक ग्रन्थ लगभग ५५० वर्ष पहले लिखा है । यथा–

श्रीसूर्यसिद्धान्तमतेन सम्यग् विश्वोपकाराय गुरूपदेशात् ।
तिथ्यादिपत्रं वितनोति काश्या-मानन्दकन्दो मकरन्दनामा ।। (मकरन्दसारिणी, श्लो.१)

यद्यपि स्थानादि का उल्लेख इन्होंने स्वयं नहीं किया है। तथापि परपरया लोग इन्हें तीरभुक्ति परंपरा (मकरन्दा, दरभंगा) के मानते हैं । इनका जन्म शकाब्द १४०० माना गया है। तत्पश्चात् उनके ग्रन्थ पर दिवाकर दैवज्ञ ने शकाब्द १५२८ में मकरन्द विवरण, विश्वनाथ ने शकाब्द १५४० में उदाहरण तथा शकाब्द १६८८ में गोकुलनाथ ने उपपत्ति लिखी है। अन्त में शकाब्द १८३१ में नारायण शर्मा (मिथिलावयव–नेपालराज्यान्तर्गत–रौतहटजिलान्तःपाति–लक्ष्मीपुरग्रामवासी) ने सारिणी के साथ–साथ फलादेश आदि विषययुक्त सरल एवं मनोरम मकरन्दप्रकाशनामक ग्रन्थ बनाया, जो उनके निम्नलिखित कथन से स्पष्ट है–

शशिशिखीगजभूमिशके समे सितदलेऽमलकार्त्तिक-मासके ।
शशिसुतस्य दिने हरिवासरे विरतिरस्य बभूव तिथौ हरेः ।। (ग्रन्थकर्तृपरिचय, श्लो. ६)

इससे स्पष्ट होता है कि मकरन्दसारिणी ग्रन्थ को ही विद्वानों ने यथासमय गणित, उदाहरण, उपपत्ति एवं फलादेश आदि द्वारा परिष्कृत किया है। इनमें दिवाकर ने दो महत्वपूर्ण बातें लिखी हैं–(१) कुजादि ग्रहों में बीज संस्कार तथा फलचतुष्टय के स्थान पर फलत्रय संस्कार। इनमें परवर्ती विद्वानों ने बीजसंस्कार को अंगीकार नहीं किया किन्तु फलत्रय संस्कार को माना। श्री लषणलाल झा के अनुसार विष्णुदैवज्ञ आदि आचार्यों ने भी इसी को स्वीकार किया है। (मकरन्द प्रकाश, आमुख, पृ४)। आजकल इसी आधार पर पञ्चाङ्ग बनाये जाते हैं। बीज संस्कार एवं ३ या ४ फलों के संस्कारादि के विषय में चिरकाल से विद्वानों के बीच मतैक्य का अभाव रहा है। इसी क्रम में गुरु–शुक्र का शीघ्रकेन्द्रांश के स्थान पर क्रमशः ११–६ उदयास्त कालांश स्वीकार कर इसके बाल्य वार्द्धक्य तीन–तीन दिन स्वीकार किये गये हैं ।

देशान्तर–अतिप्राचीनकाल से ही मिथिला देशान्तर तिथ्यादि में १।३५ दण्डादि धन का प्रचलन है, मकरन्दाचार्य के पहले से भी। मकरन्दाचार्य ने इसे लिपिबद्ध किया। नारायणदैवज्ञ का इस अंश में अपना कोई नया योगदान नहीं अपितु पूर्वतः व्यवहारविहित उक्त देशान्तर को यथावत् इन्होंने भी स्वीकार किया है। इस संबंध में मैंने नारायण दैवज्ञ से १४ वर्ष पूर्व १८१६–१७ शकाब्द, १८६४–६५ ई., सन् १३०२ साल, विक्रमसंवत् १६५१–५२ के पञ्चाङ्ग के वैशाखकृष्णद्वितीया २६।१७ दण्डादि, स्वाती १२।२६ दण्डादि, दि. ११।४।१८६५ ई. वृहस्पति दिन के तिथ्यादिमान का साधन मकरन्द की उक्तविधि से किया तो २६।१६ दण्डादि द्वितीया का मान आया। (एक पल का अंतर सारिणी की भिन्नता से संभव है)। इससे सिद्ध हुआ कि १।३५ देशान्तर के संस्थापक नारायण दैवज्ञ नहीं, अपितु उनके पूर्ववर्ती मकरन्दाचार्य अथवा उनसे भी पूर्ववर्ती आचार्य माने जा सकते हैं।

विभिन्न ग्रन्थों, पञ्चाङ्गों एवं मानचित्रों के देखने से स्पष्ट होता है कि देशान्तर (रेखांश) के मान में ५ से १० कला तक का अंतर प्राप्त होता है। यह अन्तर व्यवहार– योग्य है। तदनुसार मिथिला का उक्त देशान्तर जगज्जननी–जानकी की जन्मभूमि अर्थात् सीतामढ़ी का है तथा इसका मान ८५।३० रेखांश पूरब है। पूर्ववर्ती विद्वानों ने काफी मनन–चिन्तन के पश्चात् यह मान/स्थान निर्धारित किया होगा। इसकी धार्मिक महत्ता, प्राचीनता एवं मान्यता पूर्वोक्त विवेचन से स्पष्ट है। अतः इसमें किसी प्रकार का परिवर्त्तन सर्वथा अनुचित होगा।

अक्षांश–देशान्तर की भाँति अक्षांश में भी ५–१० कला का अन्तर ग्रन्थभेद अथवा मानचित्रभेद अथवा पञ्चाङ्गभेद से पाया जाता है किन्तु बहुसम्मत पक्षावलम्बन के पश्चात् यह कह सकते हैं कि २६।३५ अंशादि उत्तर अक्षांश (मिथिला) सीतामढ़ी का है ।

पलभा–देशान्तर एवं अक्षांश की भाँति पूर्वतः मिथिला की षडङ्गुल पलभा भी सीतामढ़ी का सिद्ध होता है। इसी के आधार पर राशियों के मिथिलोदयमान अधोलिखित मान्य हैं–

अष्टेन्दुपक्षाः शशिबाणपक्षा गुणाभ्ररामा गुणवेदरामाः ।
शैलाब्धिरामा वसुरामरामाः क्रमोत्क्रमान्मेषतुलादिमानम् ।। (रत्नशतक, श्लो. १४)

कोई भी पञ्चाङ्ग किसी खास रेखांश, अक्षांश एवं पलभा के आधार पर बनता है। तदनुसार "विश्वविद्यालय–पञ्चाङ्ग" का रेखांश ८५।३० पूरब, अक्षांश २६।३५ उत्तर तथा पलभा ६ अंगुल है। मिथिला के सभी पञ्चाङ्ग इसी रेखांश एवं अक्षांश के आधार पर प्राचीनकाल से बनते आ रहें हैं।

सूर्योदय–ज्ञातव्य है कि स्थानीय समय प्रत्येक स्थान में भिन्न–भिन्न होते हैं किन्तु प्रामाणिक समय आजकल प्रायः देशस्तर पर एक होता है । इससे सरकारी कार्यों (रेल–डाक परिचालनादि) में सुविधा होती है। किन्तु वास्तविक फलदान शक्ति स्थानीय समय में ही है। अतएव प्रामाणिक समय को स्थानीय समय में बदलकर निर्मित कुण्डली के आधार पर फलादेश किया जाता है। वैसे पञ्चाङ्ग प्रामाणिक समयानुसार भी बन सकता है किन्तु फलदायकता, परंपरा एवं मर्यादा की दृष्टि से स्थानीय समयानुसार पञ्चाङ्ग में तिथ्यादि का उल्लेख उचित है। अन्य स्थानों में शास्त्रविहित रीति से अपेक्षित संस्कार कर उनकी जानकारी प्राप्त की जाती है।

"विश्वविद्यालय पञ्चाङ्गम्" का सूर्योदय स्थानीय है। मकरन्दाचार्य की अथवा आर्षपरंपरा भी यही है। अतः जैसे प्रामाणिक (स्टैण्डर्ड) समय मे देशान्तर–बेलान्तर संस्कार कर उसे स्थानीय समय (जन्मकुण्डली–फलादेश हेतु) बनाया जाता है, उसी तरह इसके विपरीत संस्कार द्वारा स्थानीय समय को भी प्रामाणिक समय में बदला जा सकता है। उदाहरण–प्रतिहारषष्ठी प्रातःकालिक अर्घ के दिन दि. १४।११।२०१८ को इस पञ्चाङ्ग में स्थानीय सूर्योदय मान ६।३७ (घण्टा–मिनट) है। इस दिन उक्त नियमानुसार ६।३७–०।१६ (वेलान्तर) = ६।२०, ६।२१–०।१२ (देशान्तर) = ६।०६ = प्रामाणिक समय होगा जानकी जन्मभूमि–सीतामढ़ी, शिवहर, मुजफ्फरपुर, नालन्दा एवं राँची का । उक्त विधि से उक्ततिथि को किशनगंज में ५।५६, कटिहार में ६।००, पूर्णिया–अररिया में ६।०१, विराटनगर में ०६।०२, फारबिसगंज, सहरसा, सुपौल, मधेपुरा में ६।०३, देवघर, सिन्दरी, भागलपुर में ६।०४, बोकारो, बेगूसराय, खगड़िया, मुंगेर में ६।०५, समस्तीपुर, जमुई, जयनगर, जमशेदपुर, झाझा में ६।०६, दरभंगा, मोकामा, मधुबनी में ६।०७, जनकपुर में ६।०८, हाजीपुर, सोनपुर, पटना, वैशाली, काठमाण्डू में ६।१०, वीरगंज, दानापुर में ६।११, छपरा, मोतिहारी, रक्सौल, आरा, नरकटियागंज में ६।१२, बगहा–बेतिया में ६।१३, बक्सर, सासाराम में ६।१५, भभुआ में ६।१७, काशी में ६।१९, प्रयाग में ६।२४, कलकत्ता में ५।५८, दिल्ली में ६।४२ तथा मुम्बई में ६।५६ तथा लखनऊ में ६।२७ बजे प्रामाणिक समयानुसार सूर्योदय होगा। इसी तरह अन्य दिनों में भी ज्ञातव्य है । उक्त तिथि को बेलान्तर परमाधिक (१६ मि. धन) है। १५–१६ अप्रील एवं जून को बेलान्तर शून्य रहने के कारण अन्तर परमाल्प होगा। अतः प्रत्यक्ष प्रतीतित्वात् इस मकरन्दीय पञ्चाङ्ग का सूर्योदयादिमान सर्वथा शुद्ध है ।

भूकैन्द्रिक गणना के आधार पर धर्मकृत्य का संपादन तथा फलादेश उचित है। इस दृष्टि से सूर्यसिद्धान्त के अनुसार निर्मित मकरन्द सारिणी के आधार पर बना हुआ "विश्वविद्यालय–पञ्चाङ्ग" सर्वथा उपयुक्त है। भूकैन्द्रिक गणना (आर्षमत) में अदृष्टफलदान की शक्ति है। पृष्ठाभिप्रायिक गणना ग्रहण–शृङ्गोन्नति दर्शन के लिये मान्य है। अतएव पञ्चाङ्ग में अदृश्य और दृश्य दोनों ही गणना अपेक्षित है। अतः ग्रहणादि के दर्शन के लिये दृश्यगणित तथा तिथ्यादिसाधन में अदृश्यगणित मान्य है। आचार्य गिरिजा प्रसाद द्विवेदी जी ने भी यह बात स्पष्टतया सिद्धान्तशिरोमणि की टीका में लिखी है। (स्पष्टाधिकार श्लोक ७१–७५ की टिप्पणी)। सिद्धान्ततत्त्वविवेक में कमलाकर ने भी लिखा है–

अदृष्टफलसिद्ध्यर्थ यथार्काद्युक्तितः कुरु । गणितं यद्वि दृष्टार्थं तद्दृष्ट्युद्भवतः सदा ।। (म. अ., श्लो. ३२६)

पृथ्वी के संकोच एवं प्रसार, समुद्रजल स्तर में वृद्धि, हिमजल की न्यूनाधिकता, ग्रहों के बिम्ब–स्थानोदय में भेद, ग्रहों की ऊर्ध्वाधर, याम्योत्तर एवं पूर्वापर गति की प्रतिक्षण विलक्षणता एवं भूकम्पादि विविध प्राकृतिक ज्ञाताज्ञात कारणों से ज्योतिष शस्त्रीय गणना में भी आचार्य एवं कालभेद से अन्तर की संभावना रहती है। तात्कालिक सत्यता की जानकारी वेधादि द्वारा हो जाने पर भी दीर्घकालीन अथवा भविष्य की सत्यता का ज्ञान केवल अतीन्द्रियज्ञानियों को ही संभव हो पाता है। इन सभी परिस्थितियों को सही रूप में जानबुझकर ही हमारे पूर्वजों ने आर्षमूलक सिद्धान्त की स्थापना की। यह सिद्धान्त स्थायी है, क्योंकि यह दिव्य दृष्टि सम्पन्न ऋषियों, तपस्वीगणों एवं ज्ञानियों द्वारा स्थापित है। अतः त्रिकाल सत्य है। मनुष्यकृत सिद्धान्त स्थायी नहीं होते हैं। ये सतत् परिवर्तित होते रहते हैं क्योंकि इन्हें दीर्घकालीनज्ञान अथवा अतीन्द्रियज्ञान नहीं होता है। उदाहरणस्वरूप लगभग १०० वर्षों से मनुष्य द्वारा ग्रहकोटि में स्वीकृत प्लुटो ग्रह का अभी–अभी लगभग १२ वर्ष पहले वैज्ञानिकों ने ग्रहत्व समाप्त कर दिया है, किन्तु हमारे यहाँ बहुत से ऐसे पञ्चाङ्ग हैं जिनमें इनके समावेश (फलादेश के लिंये) कर लिये गये हैं। कम्प्युटर–निर्मित कुण्डली की भी यही दशा है। यह स्थिति चिन्तनीय है। फलतः आर्षमत में किसी प्रकार का आक्षेप अनुचित हैं। अतएव यह पञ्चाङ्ग शास्त्रानुमोदित, व्यवहारविहित, परंपरासंपोषक एवं धर्मकृत्योपयोगी है।

अन्त में धर्मानुरागी विद्वज्जनों एवं ज्यौतिषशास्त्र के मूर्धन्य विद्वानों से निवेदन है कि कृपा करके उक्त विषयों के आलोक में अपना बहुमूल्य सम्मति प्रदान कर हमें अनुगृहीत करते रहेंगे । शमिति ।

मेषसंक्रान्ति
सौर. दि.-०१।०१।१९४०

निवेदक
पं. श्रीरामचन्द्र झा
पं. श्रीवरुणकुमार झा

कुरुक्षेत्र महाकुम्भयोग

ताटङ्कमण्डलविभूषितगण्डभागां चूडामणिप्रभृतिमण्डनमण्डिताङ्गीम्।
कौशेयवस्त्रमणि-मौक्तिकहारयुक्तां ध्यायेद्विदेहतनयां शशिगौरवर्णाम्।।
ध्यायेत् कल्पतरोरधःप्रविलसे सौवर्णचिन्तामणौ नानारत्नविराजितेऽत्र भवने सद्रत्नसिंहासने।
दूर्वानूतनपत्रसुन्दरतनुं चापं सबाणं महद्बिभ्राणं मुकुटादि-भूषणयुतं पीताम्बरं राघवम्।।

(यामलसारोद्धार, मिथिलाखण्ड, पटल ५, श्लो. ७६-८०)

लक्ष्मीः कौस्तुभ-पारिजातक-सुरा धन्वन्तरिश्चन्द्रमाः धेनुः कामदुघा सुरेश्वरगजो रम्भादि-देवाङ्गनाः।
अश्वः सप्तमुखो विषं हरिधनुः शङ्खोऽमृतं चाम्बुधे रत्नानीति चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्वन्तु नो मङ्गलम्।।

(मधुस्राविणीमीमांसा, पृ. ६६)

जिस धराधाम के गर्भ से अवतार लेकर महालक्ष्मी–जगज्जनी–जानकी ने "माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः" के अनुसार माता की तरह पृथ्वी संरक्षण–आदर सम्मान का सन्देश सम्पूर्ण विश्व को दिया है, जहाँ से गौतम–याज्ञवल्क्य–मण्डन–वाचस्पति–कुमारिल आदि राजर्षि–महर्षि–ब्रह्मर्षियों ने प्रवृत्तिमूलक (कर्मप्रधान) वेदान्त, त्यागपूर्वक सांसारिक जीवन–यापन, योग के साथ भोग का समन्वय, यज्ञ–दान तप–विद्याध्ययन की महत्ता एवम् आत्मतत्त्व पर प्रकाश डालते हुए, शुक्लयजुर्वेद–शतपथब्राह्मण–बृहदारण्यकोपनिषत्–छान्दोग्योपनिषत्–ईशावास्योपनिषद्–वाल्मीकि रामायण–श्रीमद्देवीभागवत–ब्रह्मसिद्धि–भामती–तन्त्रवार्तिक आदि ग्रन्थरत्नों के माध्यम से लोककल्याणार्थ ज्ञानराशि प्रसारित किया है, जहाँ से कात्यायनी–मैत्रेयी–गार्गी–भारती एवं विद्योत्तमा सदृशी महिला विदुषियों की विद्वत्ता का प्रकाश सर्वत्र फैल रहा है ऐसे सर्वत्र विख्यात परम पुण्यप्रद तीरभुक्ति (तिरहुत) क्षेत्र में ही देहमन्थन एवं शास्त्रमंथन की भाँति क्षीरसागर का मंथन कर देवताओं ने अमृत कुम्भ (अमृतकलश–अमृतघट) प्राप्त कर यहीं **सिमरियाधाम** में उत्तरवाहिनी गंगातट पर बैठकर अमृतपान किया था।

ऋग्वेद, शतपथब्राह्मण आदि प्राचीन ग्रन्थों के अनुसार यह भूभाग जलमयप्रदेश (आर्द्रभूमि) के रूप में था। राजा विदेघ (विदेह), माथव (माधव) तथा उनके पुरोहित रहूगण गौतम ने वैश्वानर की उपासना के माध्यम से यज्ञ के द्वारा इस भूभाग को उर्वराशक्ति सम्पन्न तथा वासयोग्य बनाया। आधुनिक भूगर्भवैज्ञानिक, इतिहासकार एवं भूगोलशास्त्र के विशेषज्ञ भी इस विषय को स्वीकार करते हैं। **श्रीमद्देवीभागवत महापुराण** में भी इस क्षेत्र की अवस्थिति, हिमालय के पार्श्व (बगल) तथा सागर के अतिसन्निकट में कही गई है। यथा—

राजाऽपि विमना भूत्वा गौतमं प्रत्यपूजयत्। इयाज हिमवत्पार्श्वे सागरस्य विशेषतः ।। (स्क. ६, अ. १४, श्लो.३५)

कुम्भपर्व मुख्यतया क्षीरसागरमन्थनपूर्वक अमृतप्राप्ति कथा से सम्बद्ध है। क्षीरसागरमंथन की कथा स्कन्दपुराण (१।६–१२), विष्णुपुराण (१।६), मत्स्यपुराण (अ.२४६–२५१) तथा पद्मपुराण (१।४) आदि ग्रन्थों में उपलब्ध होती है। स्कन्दपुराण के माहेश्वरखण्ड में प्राप्त कथानुसार–देवगुरु बृहस्पति के अपमान तथा एक अन्य कथा के अनुसार शिव प्रदत्त पारिजातपुष्पमाल्य को दुर्वासा द्वारा उपहारस्वरूप देने के पश्चात् देवराज इन्द्र द्वारा स्वयं धारण नहीं करके हाथी को पहनाने तथा हाथी द्वारा उस माला को अपने शुण्ड से उतारकर पाँव से कुचल दिये जाने के फलस्वरूप दुर्वासा द्वारा दिये गये शाप के कारण देवराज इन्द्र त्रैलोक्य राजलक्ष्मीविहीन हो गये। इसी मध्य असुरों ने उक्त वृत्तान्त सुनकर स्वर्ग पर चढ़ाई कर दी तथा स्वर्ग की सारी सम्पत्ति लूट ली किन्तु अभिशप्ततत्वात् बलि आदि असुरों के हाथ से वह सारी सम्पत्ति क्षीरसागर (क्षीरोदकी सागर सङ्गम) में गिर पड़ी। इस तरह देवता एवं दैत्य–दोनों श्रीविहीन हो जाने के कारण दुःखी रहने लगे। दुःखनिवृत्ति के लिये उपायान्तर नहीं देखते हुए देवता एवम् असुरगण अपने–अपने गुरु बृहस्पति एवं शुक्राचार्य से परामर्श कर देवाधिदेव महादेव के नेतृत्व में नष्ट राजलक्ष्मी की पुनः प्राप्ति के लिए क्षीरसागरमंथन का निश्चय किया।

उक्त कथा अधिकांश ग्रन्थों में मिलती है किन्तु क्षीरसागरमंथन स्थान के विषय में ये सभी ग्रन्थ मौन हैं। स्थान का निरूपण आदिकाव्य–वाल्मीकि रामायण एवं रुद्रयामलोक्तामृतीकरणप्रयोग (आगम) ग्रन्थों में मिलता है। यथा **वाल्मीकिरामायण** में—

अथ रामो महाप्राज्ञो विश्वामित्रं महामुनिम्। प्रपच्छ प्राञ्जलिर्भूत्वा विशालामुत्तमां पुरीम्।।
श्रूयतां राम शक्रस्य कथां कथयतः श्रुताम्। अस्मिन् देशे हि यद्वृत्तं शृणु तत्त्वेन राघव।।
पूर्वं कृतयुगे राम दितेः पुत्रा महाबलाः। अदितेश्च महाभागा वीर्यवन्तः सुधार्मिकाः।।
ततस्तेषां नरव्याघ्र! बुद्धिरासीन् महात्मनाम्। अमरा विजराश्चैव कथं स्यामो निरामयाः।।
ततो निश्चित्य मथनं योक्त्रं कृत्वा तु वासुकिम्। मन्थानं मन्दरं कृत्वा ममन्थुरमितौजसः।।
उत्पपाताग्निसङ्काशं हालाहलमहाविषम्। तेन दग्धं जगत्सर्वं सदेवासुरमानुषम्।।
हालाहलं विषं घोरं सञ्जग्राहामृतोपमम्। देवान् विसृज्य देवेशो जगाम भगवान् हरः।।
उच्चैःश्रवा हयश्रेष्ठो मणिरत्नं च कौस्तुभम्। उदतिष्ठन् नरश्रेष्ठ! तथैवामृतमुत्तमम्।।

(बा०का., सर्ग ४५, श्लो. ११, १४-१६, १८,२०, २६, ३६)

अर्थात्, देवराज इन्द्र द्वारा सुनी हुई कथा को, धनुर्यज्ञावसर पर जनकपुर जाते हुए, गंगा पार करने के पश्चात् महामुनि विश्वामित्र भगवान श्रीराम को सुनाते हुए कहते हैं कि प्राचीनकाल में कृतयुग में इस तीरभुक्ति क्षेत्र में हिमालय पर्यन्त समुद्र का विस्तार था। उसी के उत्तर तट पर कैलाश से थोड़ी दूर पर गंगा–सागर का संगम तथा वहीं दक्षिण तट पर मन्दार पर्वत भी था। इसी स्थान पर अजरत्व–अमरत्व एवम् आरोग्य लाभ के लिए देवता एवं राक्षसों ने मिलकर वासुकी की डोरी, कच्छप के पीठ पर स्थिर कर मन्दार पर्वत को मथनी बनाकर समुद्र मन्थन कर अमृत प्राप्त किया। यह स्थान सम्प्रति बिहार प्रान्त के बेगूसराय जिला मुख्यालय से नैर्ऋत्यकोण में अवस्थित शाल्मलीवन (सिमरियाधाम) सिद्ध होता है।

इसी तरह **रुद्रयामलोक्तामृतीकरणप्रयोग** ग्रन्थ में भी कहा गया है—

आर्यावर्त्तस्य पूर्वस्यां समुद्रोऽस्ति सनातनः। हिमवद्धनपर्यन्तं विस्तारोऽभूत् कृते युगे।।
तस्योत्तरस्मिन् पुलिने गङ्गासागरसङ्गमः। ततोऽप्यनतिदूरे वै मम स्थानं सनातनम्।।
जाह्नव्या दक्षिणे भागे मन्दारकुसुमैर्युतः। यत्र वृक्षकृतच्छाये साक्षान्नारायणः स्वयम्।।
मन्दारस्य गिरेः पार्श्वे पुरा सिन्धुर्बभूव ह। जाह्नवी चापि तत्रैव सङ्गता सागरं प्रति।।
मुरारिचरणाज्जाता गच्छन्ती चोत्तरां दिशम्। जाह्नवी सा महापुण्या विशिष्टा शाल्मलीवने।।
तत्रैव कमठपृष्ठे दण्डं संस्थाप्य पर्वतम्। मन्दारं शेषनागञ्च रज्जुं कृत्वा सुरासुराः।।
ममन्थुः सागरं सर्वे विष्णुं कृत्वा तु सन्निधौ। अमृतैकान्तचित्तास्तु ममन्थुः सागरं शुभे।
ततोऽमृतघटं धृत्वा भासयन् तेजसा भुवम्। आविर्बभूव सहसा देवि! धन्वन्तरिः पुमान्।।
त्रयोदश्यां कृष्णपक्षे तुलार्के च शुभे दिने। कार्त्तिके मासि सूर्यश्च तुलारूढो यदा भवेत्।।
चन्द्रोऽपि देवकार्यार्थमसिते मम वासरे। गुरावपि तुलारूढे पिबन्त्यमृतमक्षयम्।।

(श्लो. १४,१५,२०,२६,४३,२७, २८ पूर्वार्द्धः, ३६, ४०, ८८ उत्तरार्द्धः, ८६),

पूर्वापर सन्दर्भवशात् **हरिहरक्षेत्र** (गंगा–गंडकी संगमक्षेत्र) के समीप क्षीरसागर की अवस्थिति सिद्ध होती है। (द्रष्टव्य–**श्रीमद्भागवत** ८।२–६)

उक्त प्रमाणों के आधार पर कार्तिककृष्ण त्रयोदशी–चतुर्दशी को तुलागत सूर्य–चन्द्र–गुरुयोग पर्यन्त पूर्वोक्तस्थान सिमरियाधाम (शाल्मलीवन) में क्षीरसागरमन्थन, अमृतप्राप्ति तथा देवताओं द्वारा अमृतपान सिद्ध होता है।

वर्तमान समय में उक्त **सिमरियाधाम** के दक्षिण भूभाग के बौंसी क्षेत्र में अवस्थित मन्दार पर्वत, संथाल–परगना के दारुकवन में वासुकीनाग द्वारा स्थापित वासुकीनाथ महादेव, जनकपुर से ५० मील उत्तर ठोसे मेगजेन नामक स्थान पर "जूटा पोखरि" नाम से प्रसिद्ध पुष्करिणी के मध्य भाग में विषपानोत्तर नीलकण्ठ महादेव का विश्रामस्थल, अहल्यास्थान से पश्चिम ब्रह्मपुर में गौतम कुण्ड तक प्रवाहित क्षीरोदेकी (क्षिरोई) नदी, नेपाल का सागरमाथा जिला एवं दरभंगा से ईशान कोण में अवस्थित

बलिराजगढ़—उक्त विषय में प्रमाणस्वरूप अद्यापि विद्यमान है। एतदर्थ मधुस्राविणीमीमांसा (डा. रामकिशोर झा विभाकर), द्वादश कुंभस्थल (श्रीधनाकर ठाकुर), रुद्रयामलोक्तामृतीकरणप्रयोग (अनुवादक डॉ. विद्येश्वर झा एवं डॉ. श्रवण कुमार चौधरी) सिमरिया कुंभदर्पण (डॉ. विजय कुमार, प्रो. अवधेश कुमार झा एवं प्रो. विजय कुमार झा) एवं वाराहपुराणाङ्क कल्याण (गीताप्रेस) भी देखा जा सकता है।

अमृत प्राप्ति के बाद अमृतपान के लिए देवताओं एवं दानवों में भयंकर युद्ध छिड़ गया। इस क्रम में सूर्य, चन्द्र एवं बृहस्पति ने "अमृतघट" की रक्षा करते हुए ११ वर्षों तक ११ स्थानों—कामाख्या, पुरी आदि में विश्राम क्रम में संरक्षित किया। अन्त में १२वें वर्ष में उसी सिमरियाधाम में भगवान विष्णु के मोहिनीरूप के प्रभाव से देवताओं ने **दीपावली** के दिन अमृतपान किया। यथा—

अथ तस्य कृते राम महानासीत् कुलक्षयः। अदितेस्तु ततः पुत्रा दितिपुत्रानयोधयन्।।
एकतामगमन् सर्वे असुरा राक्षसैः सह। युद्धमासीन्महाघोरं वीर त्रैलोक्यमोहनम्।।
यदा क्षयं गतं सर्वं तदा विष्णुर्महाबलाः। अमृतं सोहरत्तूर्णं मायामास्थाय मोहिनीम्।।
ये गताभिमुखं विष्णुमक्षरं पुरुषोत्तमम्। सम्पिष्टास्ते तदा युद्धे विष्णुना प्रभविष्णुना ।। (वा.रा. बा.का., सर्ग ४५, श्लो. ४०-४३)

रुद्रयामलोक्तामृतीकरणप्रयोगग्रन्थ में भी कहा गया है—

एतस्मिन्नन्तरे काले विष्णुर्नारायणः स्वयम्। मोहिनीरूपमास्थाय ययौ दैत्यान् विमोहितान्।।
तां सम्मान्य तदा दैत्यराजो बलिरुवाच ह। सुधा त्वया विभक्तव्या सर्वेषां सममेव च।।
अद्योपवासः कर्त्तव्यः सुधापानसमुत्सुकैः। रात्रौ जागरणं कृत्वा स्नातव्यं स्वर्णदी जले।।
अत्रैव जाह्नवीतीरे ह्युत्तरे तु महद्वनम्। शाल्मल्याः शोभते देवि गंगा चोत्तरवाहिनी।।
पुलिने तत्र पपुर्देवाः स्नात्वा सुविमले जले ।। (श्लो. ६१, ६४, ६७, ८७ एवं ८८ पूर्वार्द्ध)

धर्मसम्राट् परमहंस स्वामी करपात्रिमहोदय ने भी अपने कुम्भपर्वनिर्णय ग्रन्थ की पृष्ठसङ्ख्या २२ में "देवताओं के १२ दिनों में अथवा मनुष्यों के १२ वर्षों में १२ कुम्भ पर्व होते हैं" ऐसा उल्लेख किया है। यथा—

देवानां द्वादशाहोभिर्मार्त्यैर्द्वादशवत्सरैः। कुम्भपर्वाणि जायन्ते तथा द्वादशसङ्ख्यया।।

उक्त सफल द्वादश कुम्भयोग घटित द्वादश स्थान के विषय में रुद्रयामलोक्तामृतीकरणप्रयोग ग्रन्थ में इस प्रकार उल्लेख किया गया है—

देवाश्चागत्य मज्जन्ति तत्र मासं वसन्ति च। तस्मिन् स्नानेन दानेन पुण्यमक्षय्यमाप्नुयात्।।
सिंहे युतौ च रेवायां मिथुने पुरुषोत्तमे । मीनभे ब्रह्मपुत्रे च तव क्षेत्रे वरानने।।
धनूराशिस्थिते भानौ गङ्गासागरसङ्गमे।। कुम्भराशौ तु कावेर्यां तुलार्के शाल्मलीवने।।
वृश्चिके ब्रह्मसरसि कर्कटे कृष्णशासने। कन्यायां दक्षिणे सिन्धौ यत्राहं रामपूजितः।।
अथाप्यन्योऽपि योगोस्ति यत्र स्नानं सुधोपमम्। मेषराशिस्थिते भानौ कुम्भे चैव गुरौ स्थिते।।
गङ्गाद्वारे भवेद्योगो भुक्तिमुक्तिप्रदः शिवे। मेषे गुरौ तथा देवि! मकरस्थे दिवाकरे।।
त्रिवेण्यां जायते योगः सद्योऽमृतफलं लभेत्। शिप्रायां मेषगे सूर्ये सिंहस्थे च बृहस्पतौ।।
मासं यावन्नरः स्थित्वाऽमृतत्वं यान्ति दुर्लभम्।। (श्लो. १२२-१२८)

अर्थात्, सूर्य, चन्द्र एवं गुरु के यथोक्तयोगवशात् सिंह राशि में नासिक (महाराष्ट्र) में, मिथुन राशि में जगन्नाथ (ओडिशा) में, मीन राशि में कामाख्या (आसाम) में, धनु राशि में गङ्गासागर (पश्चिम बंगाल) में, कुम्भराशि में कुम्भकोण (तमिलनाडु) में, तुला राशि में शाल्मलीवन अर्थात् सिमरियाधाम (बिहार) में, वृश्चिक राशि में कुरुक्षेत्र (हरियाणा) में, कर्क राशि में द्वारका (गुजरात) में, कन्या राशि में रामेश्वर (तमिलाडु) में, मेषार्क—कुम्भराशिगत गुरु में हरिद्वार (उत्तराखण्ड) में, मकरार्क—मेषराशिगतगुरु में प्रयाग (उत्तर प्रदेश) में एवं मेषार्क—सिंहस्थ गुरु में उज्जैन (मध्यप्रदेश) में कुम्भयोग होता है। इन सभी तीर्थस्थानों में अमृतघट के संयोग से जल अमृतमय कहा गया है। अतएव इन स्थानों में स्नान, दान, दर्शन, मार्जन, जप, पूजन, हवन, कीर्त्तन, तर्पण, पिण्डदानादि विविध धर्मानुष्ठान से अक्षय फल की प्राप्ति होती है।

चन्द्रमा प्रतिमास, सूर्य प्रतिवर्ष तथा गुरु प्रतिद्वादशवर्ष में इन राशियों में आते हैं। अतएव सूर्य—चन्द्रयोगानुसार प्रतिवर्ष वैशाख (मेषार्क), कार्त्तिक (तुलार्क) एवं माघ (मकरार्क) मास में क्रमशः हरद्वार, सिमरियाधाम एवं प्रयाग में कल्पवास का आयोजन होता है।

इसी तरह उक्त तीनों ग्रहों के योग से प्रति द्वादश वर्ष कुम्भयोग लगता है। जैसे—२०१३ ई. के मिथुनार्क में जगन्नाथ में, २०१४ ई. के कर्कार्क में द्वारका में, २०१५ ई. के सिंहार्क में नासिक में, २०१६ ई. के मेषार्क—सिंहराशिगत गुरु में उज्जैन में, २०१६ ई. के कन्यार्क में रामेश्वरम में, २०१७ ई. के तुलार्क में सिमरियाधाम में, इस वर्ष २०१८ ई. के वृश्चिकार्क में कुरुक्षेत्र में, २०१९ ई. के धन्वर्क में गंगासागर में, २०२१ ई. के मेषार्क—कुम्भराशिगत गुरु में हरद्वार में, २०२१ ई. के कुम्भार्क में कुम्भकोण में, २०२२ ई. के मीनार्क में कामाख्या में तथा २०२३ ई. के मकरार्क—मेषगत गुरु में प्रयाग में महाकुम्भयोग सिद्ध होता है।

तीरभुक्ति या मिथिला क्षेत्र वैकुण्ठ लोक के समान है। अतएव यहाँ वास करने से मनुष्य जीवन्मुक्त होता है। यहाँ की यात्रा परम पुण्यप्रद कही गई है। काशी में एक वर्षवास से एवं प्रयाग तथा पुष्कर में तीन वर्षों तक वास से जो फल मिलता है वही फल मिथिला में एक दिन वास मात्र से प्राप्त होता है। अयोध्या के समान फल देने वाली मिथिलापुरी है। जैसे यामलसारोद्धार के मिथिलाखण्ड में कहा गया है—

वैकुण्ठगान् पुरस्कृत्य लोकाल्लँक्ष्मीरवातरत्। वैकुण्ठस्तु निजांशेन मिथिलाभूमिमाविशत्।।
अतो निवासभूमिस्ते सर्वस्थानाद्विशिष्यते। वैकुण्ठान्न कलान्यूना दृश्यते मिथिला मया।। (पटल ३, श्लो. १५-१६)
अविमुक्ते मम क्षेत्रे संवत्सरनिवासतः। यत्फलं लभते मर्त्यो मिथिलायां दिने दिने।
तीर्थराजे विधिक्षेत्रे वर्षत्रयनिवासतः। यत्फलं समवाप्नोति मिथिलायां दिनेन तत्।।
अयोध्यायां निवासेन यत्फलं लभते नृप। तत्फलं समवाप्नोति समानं नात्र संशयः।
गयायां पिण्डदानेन पितृणां यत् फलं भवेत्। तत् फलं समवाप्नोति पिण्डदानान्न संशयः।।
कुरुक्षेत्रे तु यद्दानं ब्राह्मणेभ्यः प्रदीयते। तस्मात् कोटिगुणं पुण्यं मिथिलायां धरेश्वर।। (पटल ६, श्लो. २६—३४)

बृहद्विष्णुपुराण के मिथिला माहात्म्य में भी कहा गया है—

कथञ्चित्तत्र चेद्वास उद्धाराय भवेदलम्। तत्र यात्रा महापुण्या सर्वकामसमृद्धिदा।। (अ. १, श्लो. १७)
मिथिलां ये नमस्यन्ति देशान्तरगता अपि। तेषां भुक्तिश्च मुक्तिश्च जायते नात्र संशयः।। (अ. २, श्लो. ३६)
मिथिलावासमासाद्य जीवन्मुक्तो भवेन्नरः। देहान्ते राघवं प्राप्य तद्भक्तैः सह मोदते।। (अ. ४, श्लो. १६)
महापुण्यातिरेकैश्च जनुर्लब्ध्वा च भारते। मिथिलाया निवासस्य नराः संयान्ति योग्यताम्।। (अ. ६, श्लो. १३)

अतएव धर्मानुरागियों, साधु—सन्तों एवं विद्वज्जनों से करबद्ध निवेदन है कि उक्त विषय के आलोक में **"वृश्चिके ब्रह्मसरसि"** वचनानुसार इस वर्ष दि. १६।११।१८ से १६।१२।१८ ई. तक **ब्रह्मसरोवर, कुरुक्षेत्र,** हरियाणा में अगहन (वृश्चिकार्क) में आयोज्यमान महाकुंभ में तथा दि. १५।१।१६ से १३।२।१६ तक **प्रयाग अर्द्धकुम्भ** में अवश्यमेव पधारने तथा इस सम्बन्ध में अपनी सम्मति प्रदान कर अनुगृहीत करने की कृपा करेंगे।

अक्षयतृतीया
सौर दि. ५।१।१६४०

निवेदक
पं. श्रीरामचन्द्र झा
पं. श्रीवरुणकुमार झा